प्रस्तावना

समस्त चतुरबिधि संघको विदित होकि इस पांचमे आरेमे शुद्ध सम्यक्त ब्रतादि धर्म्म आराध्यासे इस लोक और परलोकमे तेह जीव सुखी होय सिद्ध स्थानक प्राप्त होय ऐसा श्री जैन धर्म अनादी श्री बीतराग उपदेश दयामय धर्म भव्य जीवोंको आनंद करता है जिसते अंतस्करण शुद्ध होताहै इस ग्रंथ सत्यार्थ सागर नाम का प्रथम भाग नाम धर्मा चरण रक्खाहै जो इसको शीखणे वा वाचनेका उद्यम करेगा शुद्ध श्रावक धर्म्म वा साधु धर्म्म मारगकी पहचान होगी और विना शास्त्रके पढे इस जीवकी कुमति दूर नही होती और शास्त्रके पढने वालोको ज्ञान दर्सन चारित्र तपका जाणपना शुद्ध होताहै सो इस वास्ते इस पुस्तकमे धर्म मारग प्रधान लक्षण सम्यक्त दृष्टी जीवोंके योग्य दरसायाहै और एह पुस्तक भव्य जीवोंके उपगारार्थ श्री स्वामी ऋखराजजीने सत्यार्थ सागर का धर्म्माचरन नाम प्रथम भाग प्रसिद्ध किया

समस्त चतुर बिधि संघसे ग्रंथ करता पूर्वक यह प्रार्थना करताहै कि शीघ्रता लिखनेमे वा तुछ बुद्धि के प्रभावसे कोई लिपी दोष जरूर रह्या होगा यह निश्चै नियमहै और इस ग्रंथमे जो कोई सूत्र पाठो वा अर्थोमे मेरी अज्ञान बुद्धीके दोषकर जो अर्थ

वा पाठ अशुद्ध लिखे होय तो सज्जन पुरुषोंसे मेरी प्रार्थनाहै कि कृपा नजरसें शुद्ध कर बाचना उचित है और जो इस ग्रंथमे सूत्र पाठ लिखहै सो सूत्रों से मिलते हुएहै जो कही अक्षर मात्रा का फरक हो तो शुद्ध करलेना और धर्म्म श्री जीव दया जिना ज्ञा परिमाण जहां होय वोही धर्म्म प्रधान है ग्रंथ की जो रचना बुद्धिमान जन करतेहै सो दूष्ट जनो के वास्ते नही करते परंत तत्वार्थि वा सम्यक्ती जी वोके लिये तथा गुण ग्राहिक मनुषोंके लिये जो जि नेश्वर देव धर्मके रागी पुरुषहै उनको सनातन धर्म मे लानेके वास्ते ग्रंथ करता उद्यम ग्रंथ रचनेका करते है और इस ग्रंथमे किसीका नाम से निंदा रूप कथन नही लिखा फकत् प्रश्नोका भावार्थ सि द्ध कियाहै और ग्रंथ संग्रह करताने अपनी बडाई करानेका आशय नही रकखा सिर्फ बिबेकी जन जो भूलसे नकलके जैन मतको यथार्थ समझतेहै सो तिनोके उद्धारके लिये सत्य धर्म्म असली तत्व संज मादि मारग दरसानेके लिये इस सत्यार्थ सागर के च्यार भाग अनेक सूत्र वा ग्रंथोके परिमानसे संग्र ह करने का परिश्रम कराहै जो कोई ग्रंथको समझ कर वाचकर देखेंगेतो सुध देव सुधगुरु सुध धर्म्म सुध शास्त्रको परख लेंगे.

साधु श्रावको को चाहिये कि एकांत वादी नहो

य क्यों कि श्री वीतरागदेवका उपदेस अनेकांत नय मत करिकेहै एकेक बात पहिले जिस अपेक्षासे निषेध करी है फिर वोही बात दुसरी अपेक्षासे लीन करीहै और भगवती सूत्रमेभी साधुकंखा मोहनी कर्म बांधता कह्या सोई ऐसी अपेक्षा अर्थात (रीती) जाननेसे साधु कंखा मोहनी कर्म बांधे तो अब चाहिये कि शुद्ध धर्म्म पहिचानकर समकित निर्मल करे और इस सत्यार्थ सागर के तीसरे भागमे सूत्र पाठ बहोत लिखेहै वो समझने बांचने योग्यहै परंत राग द्वेष बडाना योग्य नहीहै फकत तत्व बातको समझ तथा सरध कर अंगीकार करलेनी योग्यहै और यथा शक्ति साधु तथाश्रावक धर्म्म पालना युक्तहै और पराई निंद्या वा ईर्षा करणी युक्त नही दस पूर्वधारी तथा १४ पूर्व धारीयोंके प्रश्नोके उत्तर यथार्थ केवली महाराजोंने दीये है तथा आहारीक लब्धधारी मुनीओने लब्धि से प्रश्न पूछे है जब उनके संदेह दुर हुये अबपूर्ण शुद्ध शब्द शास्त्रार्थ तो समझने आताही नही बुद्धी तुब प्रश्न समुद्र सरीखे गंभीर बुद्धी बिना कैसेसमझे जाय इस वास्ते साधु श्रावको को विद्या वा शास्त्रार्थ का जाणपणा चाहोतो व्याकर्ण तथा संस्कृत ग्रंथादि पढकर अनेक अपेक्षासे गुरु महाराजके उपदेश से देखो तब न्यायवंत होकर शुद्ध मारग मुक्तिका समझो और प्रश्न व्याकर्ण सूत्र वा अनुयोग द्वार सूत्रमे व्या

कर्ण शास्त्र पढनेकी आज्ञा है और जो नही इतना बोध होय तो दया सहित देस वृत्ती तथा सर्व वृती धर्म्म वा शुद्ध भावसे दान देणा दया पालणी पंच इंद्री दमन अर्थात बस्य करणी इत्यादि ऐसे श्रद्धावान गुरुकी सम्यक्त सहित आज्ञा आराधन करो ज्यूं मनुष जनम सुफल होय ॥ तथास्तु ॥

इस सत्यार्थ सागर ग्रंथमे जैन मतके अनेक मत जो हो रहेहै तिनके प्रश्न उत्तर लिखेहै प्रथम तो जैन धर्म निश्चैमे एक धर्म है परंतु इस समेके प्रभावसे जैन धर्म वृक्षपेसे कितनी साखा प्रतिसाखा हो रहीहै अपनी अपनी ग्रहण करी साखा वा प्रति साखा पर खैचतान कर रहेहै सो तत्वार्थी पुरुषो को चाहिये कि जिन धर्म्ममे ईर्षा भाव न करे और यथार्थ बातको समझे कोई सा जैन शास्त्र हो तिस्का भावार्थ वा हेय ज्ञेय उपादेय इनको जाणकर गुण ग्राहिक होवे अवगुण ग्राहिक होनेसे अनेक दोषोमे सामिल होना पडताहै और इस समेकी मूजिब श्री जिन धर्म्ममे बहोत साध साधवी श्रावक श्राविका धर्मे स्थिर होरहेहै और कोई चतुर्थ कालकी वृत्ती ऊपर ख्याल करे तो इसकालमे वह उतनी वृती नही क्यों कि सरीरके शक्ति प्रमाण से वृती साधु वो साधवी श्रावक वा श्राविकाओंकी है कि जैसे पाहिले वक्तोके संघेण संठाण आयु सरीरकी उचाई वैसी नही

है तैसेही उतनी वृती नही ह परंतु भगवान श्री म हाबीर के वचन है कि मेरा धर्म २१ हजार वर्ष त क साध साधवी श्रावक श्राविका इन चारो तीर्थोसे रहेगा पाचमे आरे के उतरते समे तांई इस वास्ते चाहिये कि जो समकित सहित महाव्रतादि तथा दे स व्रतादि धर्म पालते है ते येही च्यार तीर्थ प्रधान है, शुद्ध भावाश्री जिन धर्म्मको पालनेसे स्वर्गा पवर्ग के धारक होते है.
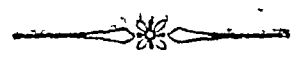
चूक दुरूस्ती

इस ग्रंथके पहिले भागके पृष्ठ २९ केमे आठमा बडा व्रतके आगे नवमा बडा व्रत छपना भूलसे र हगयाहै सो नवमा बडा व्रत इसतरे है सो लिख्यते

॥ नवमा सामायिक व्रत सावज्जं जोगं पचखामि जाव नेम पज्जवासामी दुविहं तिविहेणं नकरेमि न कारवेमि मनसा बयसा कायसा एहवी सद्दहणा परू पणा फरसना करूं तिवारे सुद्ध यहवा नवमा सामा यिक बिरतना पंच अईयारा पियाला जाणीयवा नस मारियवा तंजहा ते आलोऊं मण दूप्पडीहाणे वय दूप्पडीहाणे काय दुप्पडी हाणे सामायियस्स अक रणियाए सामायियस्स अणवठियस्स कराणिआए जो मे देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ९ ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर ग्रंथकी अनुक्रमणिका ॥

विषयांक ॥ प्रथम भागस्य अनुक्रमणिका ॥ पृष्ठांक

विषयांक द्वितीय भागस्थ अनुक्रमणिका पृष्टांक

विषयांक तृतीय भागस्य अनुक्रमणिका पृष्टांक

सत्यार्थ सागर शुद्धि पत्र चार पाने आगे है पांचवा पाना पहेले एहै सो जानना

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
बुडता	वूडता	४८३	१२
अज्ञनी	अज्ञानी	४८५	२३
हाय	होय	४८६	५
काहेकए	कायकहे	४८७	१४
समछे	समेछे	४८८	१७
महाज	महाराज	४९०	१९
आज्ञा	ज्ञाता	४९४	१
भपरो	भारव्यारो	४९७	१९
वाजे	वीजे	४९९	९
तारतीनें	तीर्थीनें	४९९	१८
बतारे	वतावेरे	४९९	२३
नहा	नही	५०२	९
थामोरे	ठामोरे	५०२	१३
दोपदो	दोषतो	५०६	७
उषना	उपना	५०६	१०
त्यांगी	त्यागी	५११	२३
उढाया	उठाया	५१३	११
भागा	भाग	५१३	१६
जणानें	जणाने पाप	५१४	२
वताके	वतावे	,,	२
दुष्ट	दुष्टां	,,	२
पुतजी	पूतजी	,,	१६
धीगजी	धीगजी	५१५	१८
स्त्रा	स्त्री	५१७	१५
भागाछे	भागांछे	५१८	१
उठपर	उठरप	,,	४
टोणारे	ठाणेरे	,,	२२
उलखीख	उलख	५२१	१२
भागोती	भगोती	५२२	१५
पूंजी	पूजी	५२३	२१
बोलोजी	वालोजी	५२५	१९
नपारेपि	नपारेमि	५३०	११
उझोयगेर	उज्झोयगरे	५३०	१६
विचार	निवार	५४६	१३
कछव	कच्छप	५४७	१४
आरे	अरे	५४९	४
केहैथी	कहैथी	५५०	१०
दूख	दुख	,,	१६
कार	कर्ण	,,	२२
पुणफनाम	पुप्पकनाम	५५१	२१
मुहपति	मुहमति	५५२	१४
गवा	गदा	५५८	६
किसको	किसकी	,,	१४
नजरांद	नजरांजद	५५९	२
प्राय	प्रिय	,,	७
श्रुध	शुध	,,	१५
दूरमे	दुरमे	५६०	२
लीनी	लानी	,,	८
॥ टेक	टेक ॥	५६१	११
ग्रामेरे	ग्राममेरे	५६२	१०
भाखी	भाखीवोर	,,	१४
धनदा	धनधानादी	,,	२२
सदाही	सदा	५६३	१
धन	घन	,,	१५
दुर	दूर	५६५	२३
च्यार	०	५६८	९
होवेगा	होवैगा	,,	१३
तावद	तावद	,,	२१

॥ अथ सत्यार्थ सागर शुद्धी पत्र लिख्यते ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
दुर	दूर	२	३
समकीत	समकित	२	७
पशु	पशू	३	१९
तारे	तारो	४	७
दिधा	दीधा	४	१२
सुद	सुध	४	२२
चालिस	छयालिस	५	६
चास्त्र	चाख	५	१३
करनेको	करनको	५	१९
नहींआखे	नहींभाखे	५	२३
साल	साठ	६	१
जगा	जग्ग	६	२
होज	होजग	८	६
,,	साथ	९	२
जीवकी	जीवांकी	९	४
यात्रा	पात्रा	१२	११
पाईजी	प्याईजी	१३	१०
,,	तीज	१३	२३
छौय	छोये	१४	७
महा	मह	१४	१३
भगवान	भगवन्	१४	२०
तिन्हंगुणं	तिन्हंगुत्तीणं	१७	१८
,,	परिभोग	२२	५
,,	कोई	२३	८
बुदी	बुद्धी	२७	२०
करी	कारी	२८	८
,,	तत्थणंजेते	२८	१२
,,	कम्मोयस	,,	१३
,,	मणो	,,	,,
कीधाछे	कीधीछे	२९	१५
,,	नसमारि	३०	२१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
,,	यव्वा	३०	,
पहणीया	पेहणीया	३०	२२
सर्व	सव्वं	३१	२०
पार	पर	३२	११
,,	नवदर्सना	३४	८
	वयसम	,,	,,
,,	धारणया	३६	१५
	कायस	,,	,,
	मधारणया	३६	,,
अत	अंत	३६	२०
सर्व	सव्वं	३७	१६
वरिस्स	वीरस्स	३९	२१
दिडी	दिठी	३९	२१
श्माण	प्रमाण	४३	५
कछेक	कुछेक	४३	१६
समझावा	समझावो	४५	३
नही	,,	४७	६
भिण	पिण	४७	८
झुटो	झूठो	४८	१६
साख्न	सख्न	५०	२२
,,	किम	५९	९
बुद्धो	बुध्दी	५९	१४
आहारीका	आहारीके	६१	८
आहारना	आहारनी	६१	८
करता	करना	६१	१७
सुधा	शुध्द	६२	१८
तेहनो	देहनो	६३	३
वातेछे	खातेछै	६३	२२
निरमैं	निरमे	६४	७
निधा	निंधा	६४	८
उतानें	जनानें	६६	१५

अशुध्द	शुध्द	पृष्ठ	पंक्ति
अकर	अक	७१	७
वाई	खाई	७१	७
लागरहे	लागस्ये	७४	७
ऋषभा	ऋषभा	७६	१२
स्वामी	स्वामि	७७	१
,,	मारीयोजी	७८	४
जिमछै	जिमवै	,,	११
वाणीना	वाणीया	,,	१२
लींवेजी	लीयेजी	,,	१३
विषेजी	हिवेजी	,,	१६
देवदी	देवढी	८८	१४
देवट्टीगाणी	देवढीगणी	,,	१९
पगपंडावे	पगमंडावे	८९	१०
षर्व	पूर्व	,,	१४
भगवंरो	भगवंतरो	९२	११
रुख	रिख	९२	१४
पार	पर	९३	८
सूर्चा	सूत्रां	९४	२२
हिस्या	हिंस्या	९५	३
वखण	वखाण	९६	१
गणिविक	गणिविज्ञा	९८	१०
लियते	लिख्यते	,,	२०
अहं	अर्ध्दं	,,	२१
सूत्रो	सूत्रों	१००	७
,,	प्रश्न	१०६	२
कासी	किसी	११०	,,
गदवुधकी	गऊदुधकी	,,	८
वचनाथा	वचनात्	,,	१९
नंदी	नदी	११२	११
लागनेसं	लगनेसे	११३	१८
नाव	नाम	११६	१
वांधयवा	वधायवा	११८	२३
काहिके	कहिये	१२०	१९

अशुध्द	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
पछ	पव्व	१२२	३
णनहा	न्हाया	,,	७
यव	यव्वं	१२३	३
मंझाण	मंज्जण	,,	४
वस्त्राहिरी	वस्त्रपहिरी	,,	६
हसीतरें	इसीतरें	,,	१९
सिखना	लिखना	,,	२२
लिकम्मा		,,	२२
शब्दनो अ,		,,	,,
थं जिन प्र,,		,,	२३
तिमा पूजा,,		,,	,,
नो अ	,,,	,,	,,
दुवाक्षिता	दुर्वाक्षता	१२४	५
अर्थात	अर्थात्	,,	११
पूर्वइति	इतिपूर्व	,,	२२
प्रतिओके	प्रतिमाओके	१२९	१०
वझ्रए	वझ्रए	,,	१८
वढ	वढ	१३२	२३
कुच	कुछ	१३६	११
जिनो	जनो	,,	१४
एव	एवं	१३६	२०
जीयंस	सीयंस	१३८	११
गरु	गऊ	१३९	,,
तुकडा	टुकडा	१४२	१४
प्रतिमाकुं	,,	,,	,,
देखके	,,	,,	१८
विकाणस	ठिकाणेसें	१४३	६
उपरजा	उपरजा	,,	७
वणा	पणा	१४४	१५
मलव	मतलव	१४७	१२
करी	करा	,,	१६
पझवा	पज्झवा	१५१	१९
लक्या	रुक्खा	१५२	१

अशुध्द	शुध्द	पृष्ट	पंक्ति
रुक्खे	रुक्खे	१५२	४
साधुकी	सोधुको	,,	७
उपास	उवास	,,	,,
दसा	शदसा	,,	११
पुछि	पुव्वि	१५२	५०
वुंदु	वंदु	१५३	१४
कारण	करणा	१५४	२१
पझु	पझ्झु	१५५	१६
जैन	जेन	,,	१७
तिसरा	तीसरा	१५६	३
रुध्दि	ऋध्दि	१५७	१८
भारतार	भरतार	१५८	१४
घांछवी	वाछयो	१५९	२०
हिस्या	हिंस्या	१६०	१५
तिरयकी	तिर्थंकरकी	१६०	२२
चीतराग्गो	वीतरागो	१६२	१३
संभलवा	संभलवो	१६६	९
परिज्ञा	,,	,,	१३
थलयनी	वलयनी	१७०	१६
खिउध्दई	विउव्वई	,,	,,
,,	विउव्वई	,,	२१
खेद	स्वेद	१७१	७
कीटेः	कोटेः	,,	१०
वृव्य	वृष्टय	,,	१४
स्वधर्म	खेधर्म	,,	१५
मुज्वल	सुज्वलं	,,	१६
ध्वजौःद्रि	ध्वजौऽद्रि	,,	१७
चतुर्मुखा	चतुर्मुखी	,,	१८
कंटका	कंटकाः	,,	१९
द्रमान	ऋद्धमान	,,	,,
कुलत्व	कूलत्व	,,	२२
श्वतुस्त्रि	श्वतुस्त्रि	,,	,,
शत्र	शच्च	,,	२३

अशुध्द	शुध्द	पृष्ट	पंक्ति
अभिला	अभिलो	१७२	१३
खा	खी	,,	,,
करीसें	कारीसें	,,	१८
राकह्यो	येकह्यो	१७३	७
परिएसा	परितसंसा	१७५	१७
रीए	रीए	,,	,,
परवेवे	परवेवे	१७६	१
थीरथी	तीरथी	१७७	२३
पुजतेहै	पूजतेहै	१७८	१०
उंचरा	उंदरा	१८१	१८
महिमानें	प्रतिमानें	१८८	८
होततो	होतातो	१९७	२१
खाढयो	खाटयो	२००	१६
अनेकाथी	अनेकार्थी	२०१	१२
सगृह	संगृह	२०२	११
वर्णणा	वर्गणा	२०४	१५
ओरके	आरेके	२१०	१४
वीदीया	वींदीया	२१७	२
निरमला	निरमलो	,,	२१
काले	,,	२१८	२०
जिन	जन	२२०	९
आधा	आघा	२२१	१३
उववाहै	उववाई	,,	२१
सी	सीत	२२२	४
सहहेणा	सद्दहणा	,,	१४
काकानो	कायानो	२२४	४
मथ्थे	मध्ये	,,	८
निनूव	निन्हव	,,	,,
तोअकाम	,,	२२७	३
तो	,,	,,	,,
दिसे	हिंसे	२२९	१९
गर्मता	गर्भवा	२३०	१५
प्रायचित्	प्रायच्छित	२३२	१८

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
मो	,,	२३९	१८
क	,,	२४०	१
,,	ल	,,	१४
वोलवो	वोलोछो	,,	१८
केताला	केतला	,,	,,
एक	एक	,,	१८
वर्तिने	वर्तिनें	२४७	५
सिलादिक	सीलादिक	२४८	७
लेना	लेतां	२५२	८
एए	एदोयमा	,,	१८
जाड	उजाड	२५६	९
केरो	फेरव्यो	२६७	२२
सोनीनी	सोनानी	२६८	९
हिएयं	हिरायं	२७०	८
उथापकनां	उथापतां	,,	१८
वद्दणं	वट्टणं	२७५	१०
देना	देतां	२८२	१०
वरजेछ	वरजसी	२८३	११
दरगण	दरसण	२८५	८
अधर्मी	अधरमी	२८७	१२
तत्तणं	तत्तेणं	३०७	३
गामाणंगामं	गामाणुगामं	३१०	१३
लझइ	लभइ	३१७	१४
कोई	कोई	३२२	२३
मार	भार	३२३	४
कर्मी	कर्मा	३२३	१८
भोगसु	भोगेसु	३४१	२०
वाली	वली	३५४	८
एव्वएसु	पव्वयेसु	३६६	९
महदियाइ	महदिशाओं	,,	१२
मातके	शतके	३६८	८
सभ्याय	सभ्पाय	४०२	८
भ्याणा	झाणा	,,	,,

अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	पंक्ति
एवंवयाति	एवंवयासि	४०३	२
गंधवादि	गंधवाट्टि	४०४	१७
पूजानिक	पूजनीक	४११	१०
थडलो	थंडलो	४१२	१२
कहगें	कहेगो	४१४	३
आहरादि	आहारादि	४१९	१७
मनसं	मनसुं	४२१	९
थास्याहै	स्थाप्याहै	४२२	८
सस्यक्तदृष्टी	सम्यक्तदृष्टी	,,	८
मिथ्यादृष्टी	मिथ्यादृष्टी	,,	१०
जोगम	जोगमें	४२४	१४
मोनछे	मानेंछै	४२५	९
साठा	साठ	४३०	२१
अव्वमि	अठमि	४३२	१७
संजोपकारी	संजमोपकारी	४३५	,,
हुई	हुई	४३७	९
,,	काणैं	४४०	१६
दुरो	गुरो	४४२	६
समजणे	सत्यजणे	४४७	१९
पुरा	पूरा	४५२	९
मसग्गन्ना	मग्गसन्ना	४५५	१४
मसग्गाना	मग्गसन्ना	,,	१५
अजोव	अजीव	,,	१९
दुर	दूर	४५६	९
काधा	कीधा	४६६	६
सुग	सूग	,,	१७
मधवा	मघवा	४६९	,,
देसको	देसके	४७४	२०
वंदनी	वंदना	४७५	२१
अर्थे	अर्थ	४७६	९
गुणम	गुणमे	४८०	३
समभिरुद्द	समभिरुढ	,,	१४
सक्तने	सम्यक्तनें	४८२	१०

॥ श्रीशांतिनाथायनमः ॥

॥ अथ सत्यार्थसागर ग्रंथस्य प्रथमोभागप्रारंभः ॥

॥ अथ श्री पंचपरमेष्ठी स्तुति ॥ मंगला चरण ॥

अर्हंतो ज्ञानभाजः सुरवरमहिताः सिद्धिसौधस्थ सिद्धाः । पंचाचार प्रवीणाः प्रगुण गणधराः पाठका श्चागमानां ॥ लोके लोकेश वन्द्याः सकल यतिवराः साधुधर्माभि लीनाः ॥ पञ्चाप्येतसदाप्ता विदधतु कुश लं विघ्ननाशं विधाय ॥ १ ॥ श्रीबीरं क्षीरसिंधूदक बिमलगुणं मन्मथारिप्रवातं ॥ श्रीपार्श्वं विघ्न वल्ली बन दलन विधौ विस्फुरत् कान्तिधारं ॥ सानंदंचन्द्रभू त्याहत बचन रसं दत्तदक्कर्णबोधं ॥ वन्देहं भूरि भक्त्या त्रिभुबन महितं वाङ्मनः काय योगै ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ सुमति देव प्रणमी कहूं, धर्माचरण इत नाम ॥ सत्यार्थसागरतनों, प्रथमभाग सुखधाम ॥ १ ॥ स्याद्वाद वाणी कठिन् बहोसुरती मुनिराय ॥ सुगम करी उपदेसदें, समकित योतिदिपाय ॥ २ ॥

॥ श्रीॐ नमःसिद्धं ॥

॥ अथ प्रथम वीस वेहरमान स्तवन लिख्यते ॥

श्रीसीमंदिर साहिबाजी,प्रणमुं तुह्मारे पाय ॥ जुग मंदिर मुझऊपरेजी, मेहर करो महाराय ॥ जिनेश्वर धन धन तुम अवतार ॥ १ ॥ बाहूस्वामी सेवतांजी, जनम जनम दुःख जाय ॥ सुबाहू जिन ध्यावतांजी,

संकट दूर पलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ २ ॥ ध्याऊं श्री सुजातनेजी, स्वयंप्रभू भगवान ॥ ऋषभानन वंदू सदाजी, धर तन मनसें ध्यान ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनंत वीर्य सुरै प्रभूजी, विशाल प्रभू जिनराय ॥ बज्रधर चंद्राननेजी, चंद्रबाहू सुखदाय ॥ जि० ॥ ४ ॥ भुजं गम ईश्वर प्रभुजी, नेमीश्वर जगतात ॥ वीरसेन महाभद्रजेजी, देवजस्स विख्यात ॥ जि० ॥ ५ ॥ अजितवीर जिनदीपताजी, महाबिदेहमें जान ॥ दोय कोमडे केवलीजी, जघन कहे भगवान ॥ जि० ॥ ६ ॥ लाख चौरासी पूर्वनीजी, आयू तनें परिमान ॥ काया पाचसें धनुषनीजी, दीपे सोवनवान ॥ जि० ॥ ७ ॥ जंवूद्वीपना भरथमेंजी, ध्याउं तुह्मारा ध्यान ॥ सुख दायक तुम नामसेंजी, होवें परम कल्याण ॥ जि० ॥ ॥ ८ ॥ जंबूद्वीपनें धात्रकीजी, पुस्कर अर्द्ध बखान ॥ महा विदेह इन पंचमेंजी, बीस कहे भगवान ॥ जि० ॥ ९ ॥ इनका ध्यान धरूं सदाजी, मन वचनें करि काय ॥ मनुष जन्म सुफलो करूंजी, श्रीजिनना गुण गाय ॥ जि० ॥ १० ॥ संवत उन्नीसे जाणियेजी, विक्रम अवधि प्रमाण सेंतालिस उपर कह्याजी, लिसाद ग्राम परधान ॥ जि० ॥ ११ ॥ चतुरमासमे वीनतीजी, एम कहे ऋखराय॥ देव धर्म गुर आदरो जी, भव भवमें सुख दाय ॥ जिनेश्वर धन धन तुम अवतार ॥ १२ ॥ इति

॥ अथ उपदेश लावणी लिख्यते ॥

इस जगमे फिरता समकित दुर्लभ पाई, पिण सुणी घणाने सरधा बिरलें आई ॥ दोष अठारह दुर करें जिन देवा, निग्रंथ गुरुकी कीजो मनसे सेवा ॥ नय निखेपा परिमान कही जिनवांनी, बहुश्रुती मुनि राय अपेक्षा जानी ॥ इनका सत गुरसें भेद लहो तुम भाई ॥ इस जगमें फिरतां समकीत दुर्लभ पाई ॥ १ ॥ ज्ञानध्यानसें देख धर्म सुधताई, थिर श्रद्धा मनआन कुमत तजि भाई ॥ सुध चारितसे रोक कर्मकी नाली, तपकर पूर्व कर्म इंधन कर जाली ॥ जब चेतनतज करम अचल पद पावे, जनम जरा ओर मरन रोग टल जावे ॥ तज अब मनसें क्रोध सुमति चित लाई ॥ इस० ॥ २ ॥ जबहो अधिका पाप नरकमें जावे, ओर पुन्न परभावें देवगती नर पावे ॥ दगा कपट कर पशुजों न दुख पायो. जब वध्यो पुण्य तब मानुष कुलमें आयो ॥ तु सत गुरुकी कर सेव सुनो जिनवांनी, धरम तनी कर परख दया मन आनी ॥ अब देस विरत वा सरव विरत कर भाई ॥ इस० ॥ ३ ॥ समकित सरधा सहित बिर्तजो पाले, ते पशुजोन ओर नरक तना दुख टाले ॥ उत्तम आरज देश मनुष कुलपावे, आराधिकहोकर देवलोकमें जावे ॥ ए बिक्रम संवत उगनीसे उनचासें, वडसत ग्रामके मांहि कीया चोमासें, ॥ यह धर्म तना उपदेश कहे ऋख राइ, इस जगमें

फिरता समकीत दुर्लभ पाई० ॥ ४ ॥ इती

॥ अथ उपदेश लावणी दुसरी लिख्यते ॥

तु सुन सतगुरकी सीख समझकर प्राणी, अब कर तु सरधा शुद्ध परख जिनवानी ॥ यह उतम नरभव पाय द्वादसांगवानी, निश्चे कर मनधार विरतहित आनी ॥ विन समकित पाये जीव अनंत भव धारो ॥ नवग्रीवेग के माहिलीयो अवतारे ॥ जहां इकतीस सागर लगें सुख वहुपायो, फिर विन समकित सुर लाख चोरासी आयो ॥ १ ॥ रागद्वेषके जीत कहे जिनदेवा, सुरनर इंद्र जास करतहें सेवा ॥ जिनवचनोंके परमान धरम सुध पालो, समकितको कीजे सुद्ध कुमति तुम टालो ॥ निरमल सरधा धार प्रदेसी राया, राणीनें दिधा जहर क्रोध नही आया ॥ तव समकितका रस शुद्ध भावसें पायो, फिर विन समकित सुर लाख चौरासी आयो ॥२॥ देवधरम गुर पायो राय उदाई, समकितमें परधान हुवो मन भाई ॥ वैरिने मारा व्रत पोसहके माहिं, नही आना मन क्रोध करी द्रिढताई ॥ करमतना सहु दोप दोस नही केहना, असा उजला ध्यान हुवा तव तेहना ॥ तीर्थंकर गोत्र बांध तव सुर भव पायो ॥ फिर वि० ॥ २ ॥ विनसमकित मिथ्यात मतीकी करनी, कहीं सूत्रांके मांहिसंक नही धरनी ॥ उत्राध्यैनके वीच देखो सुद ज्ञानी, नोमें अध्येनके मांहि कथा जिन आनी ॥ जो मास मासका कष्ट करे

अज्ञानी, तो बिन जिन आज्ञा परिमान नही सुध
प्रानी ॥ तिन करनीके परिमान देव सुख पायो ॥
फिर० ॥ ३॥ मनुष जनमको पाय सुफल मन कररे,
तु सुन नरकाके दुःख उनोसें डररे ॥ गरभा वासका
वास महा दुख दाई,सो जाने जिनदेव कहुं कहाताई॥
यह संवत उन्नीसे उपर चालिस जानो, वभसत ग्राम
के बीच चोमासा मानो ॥ ऋखराज कहें अब प्रभू
चरणे चितलायो ॥ सरनाचित्तलायो ॥ फिर० ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश लावणी त्रीजी लिख्यते ॥

तु सुन सतगुरके वचन सुमत कर प्रानी, यह
भवजीवाके काज कही जिन बानी ॥ चारगतीके मा-
हिमनुष देह पाई, करले श्रीजिनधरम सुफल कर
भाई ॥समता रसको चाख दया दिल लाई, जिनमा-
रगका सार समझ सुखदाई ॥ छोड कुमतिका संग
सुमतिकर प्राणी, अब इक चित्त कर सुनो जिनेसर
वाणी ॥ १ ॥ तीर्थंकरके समोसरण सुर आवें, फूलों-
के वादल करी फूल वरसावें ॥ रायप्रसेनीके बीच
अचित तुम जानों, मत कीजो कोई संक दया मन
आनो ॥ राजादिक जो दर्सन करनेको आवें, फूला-
दिकको त्याग दरस मन भावे ॥ बहु सूत्राके मांहि
कहें सुधज्ञानी ॥अब० ॥ २ ॥ अबसुनो प्रश्नव्याकर-
णकी साखे, पहिलें हिंस्या द्वार श्रीजिन भाखें ॥ ज-
हां छहकायाके आरंभमें कारन, नही भाखे जिनराज

थहीकहीं तारन ॥ दयातणे कहे नाम सालके तांई, पूजा भाव और जगा दयाके मांहिं ॥ फिर हिंस्या कारिकें धरम कहें अभिमानी ॥ अबइक० ॥ ३ ॥ मनुष भली परधान कहें जिनदेवा, इंद्रादिक जिनकी आन करतहें सेवा ॥ साध श्रावकका धर्म इहांसे पावे, जनम मरणका दोष सभी टल जावे ॥ सुरक्षितका कुल करम अविरती जानो, तीनों गतिसें नहीं मुक्त कही जिनवानो ॥ पालो सुधबिरती समकितमें हितआनी ॥ अबइक० ॥ ४ ॥ अब धन वो दिवस होय कब मेरा, जिन आज्ञा आराध मिटे भव फेरा, ऋखराज कहे करजोड मुझें भव भवमें, ए जिनवरजीको धर्म लहु इस जगमे ॥ ए संवत उन्नीससे बयालिस वडसत जानो, आसोज सुदीकी तीज शुक्र दिन मानो ॥ यह कही लावणी सरधा द्रिढमन आणी, अब इक चित्तकर ० ॥ ५ ॥

॥ अथ चोवीसी स्तवन लिख्यते ॥

ए नर भव आई मिल्याहो, पुर्व पुन्यजु सार ॥ दुख संकट दूरें टल्याहो, पाम्या धर्म उदार ॥ ए टेक ॥ ऋषभ अजित जिन ध्यावतांहो, होवें शुभ परिणामें ॥ संभव अभिनंदन प्रभूहो, आनंद कारी स्वामें ॥ सुमत पदम मुझ मन वसोहो, वीतराग भगवाने ॥ सुपारस चंदाप्रभूहो, चंद्रसरिखाध्यानें ॥ ए न० ॥ १ ॥ सुवद्धनाथ सीतल प्रभुहो, वंद्या सीतल भावें ॥ श्रेआंस वासपु

जजीहो, सिसरथा सिवसुख पावें ॥ विमल अनंत अ
रिहंतजीहो, अनंत गुणोके धामे ॥ धर्मनाथ अरु शां
तिजीहो, साता कारी स्वामें ॥ ए न० ॥ २ ॥ कुंथुना
थ अर्हनाथजीहो, अतिसें चौतीस धारें॥मल्लि मुनिसुव्रत
स्वामिजीहो, पेंतीसवांणी उचारें ॥ नमीनाथ अरु नेम
जीहो, सब जीवां हितकारें ॥ पारस प्रभु महावीर
जीहो, सासणके सिरदारें ॥ ए न० ॥ ३ ॥ चौदासें बाव
न नमुंहो, गणधरमहा गुणधारें ॥ चौबीसौं जिनजी त
णाहो, आगम अर्थ भंडारे ॥ वेहेरमान वंदुसदाहो बी
स जुहे जिनरायें ॥ मन बचनें काया करीहो, ध्यान
धरुं चितलायें॥ ए न० ॥ ४ ॥ आर्य देस उत्तम कुलें
हो, मनुष तणा भव पायें॥श्रीजिनवर गुण गावतांहो,
जनम सुफल होजायें ॥ संवत उन्नीस पंचासमेंहो क
रनाल नगर चोमासें ॥ ऋखराज कहें जिन ध्यावतां
हो ,पुरें मनकी जु आसें ॥ ए नरभव आई ०॥ ५ ॥
॥ अथ साधुजी ऋषिराज कृत ॥ दस लक्षण मुनीधर्मके
झुलणे दोहा सहित लिख्यते

दोहा ॥ सिव सुख दायक जिन चरन, नमता होय
कल्यान ॥ मुनिके दस लक्षण कहुं, द्यो बांणी बरदान
॥१॥झुलणा ॥अजी द्यो बांणी वरदानके,माननो सेवगनें
सुखकारीजी ॥ तुमरी कीरत अब मुखसें गाऊं, सुनो
सहु नर नारीजी ॥ अष्ट करम को जीत लीये तुम, हु
ये सुद्ध आचारीजी ॥ ऋषराज कहे में बेकर जोडुं, तु

महो गुणाके धारीजी ॥ २ ॥ दोहा ॥ अतिसे चोतिस के धणी, बांणी गुण पैतीस ॥ एक सहिस अठ लक्षणें, तुम तन सोभें ईस ॥ ३ ॥ झुलणा ॥ अजी तुमतन सोभे ईसके, निस दिन सुरपत सेवा सारेजी इस भव दधिके बीच, तुमारो नामतणो आधारेजी ॥ तिरण तारण तुम होज स्वामी, कीजो खेवा पारेजी ॥ ऋषराज कहे में तुम परसादें, कहुं धरम सुविचारेजी ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बीत्तरागके ब चनमें ॥ दस विध धर्म बखान ॥ तिनका अब वरन न करूं ॥ सुनो चतुर दे ग्यान ॥५॥ झुलणा ॥ अजी सुनो चतुर दे ग्यानके, ध्यान जो निरमल होवे थारा जी ॥ तुम धरम भावना धर कर मनमें, करोजु सुध्ध विचाराजी ॥ नरक देव तिरजंच मनुषमें, भमतां अंत न पाराजी ॥ ऋष राज कहे अब धरम रतन, कोई पुंण्य उदेसें धाराजी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मनुष जनम अब पाईकें ॥ सुफल करो हित आण॥दुरगतिके दुख से डरो ॥ तजो मिथ्या अग्यांन ॥ ७ ॥ झुलणा ॥ अजी तजो मिथ्या अज्ञानके, ज्ञान दिल अंतर मांहि विचारोजी ॥ ए नर भव रतन चिंतामणि सम तुम, कुमति संग मति हारोजी ॥ सुमत भावसें विरत आ राधो, अरु समकित सुख कारोजी ॥ ऋषराज क हे धन जिन वाणीको ॥ जिस तें हो निस्तारोजी ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तारण तिरण मुनिश्वरू, छहकायाके

नाथ ॥ पांचों इंद्री बसकरें ॥ टालें मोह मिथ्यात॥९॥ झुलणा ॥ अजी टालें मोह मिथ्यातके, कुटंबको तिन त्याग्याहै ॥ तन मन को बस कर धरें ध्यान, मुनि मुक्त पंथ चित लाग्याहै ॥ दया करतहैं सब जीवकी, तिन कुमतीसें मन त्याग्याहै॥ ऋषराजकहे धन ते मुनिवरको, जो मोह नींदसें जाग्याहै ॥१०॥ दोहा॥ पहिला लक्षण धरमका ॥ सुनो सवि चित लाय ॥ मुक्तिपंथ साधनतणा ॥ कह्या श्री जिनराय ॥ ११ ॥ झुलणा ॥ अजी कह्या श्री जिनरायके, लायक भव जीवाके ताईजी ॥ क्षिमा धरमकी करी बराई, प्रथम मुनीके माहिंजी ॥ कठिन बचन लोकोके सुनके, क्षिमा करें सुख दाईजी ॥ ऋषराज कहे धन ते मुनिवरको, सिव रमणी जिनपाईजी ॥ १२ ॥ दोहा ॥ क्रोध अगन सीतल करे, धरें क्षिमा परिणाम ॥ आतम गुण आराधतां, पांमे अविचल ठाम ॥ १३ ॥ झुलणा ॥ अजी पांमें अविचल ठामके, तामस मनका जिन सब मारा है ॥ अरी मितर जानें एक सरीखे, तब समण बिरत गुण धाराहै, जो कंचन काच बराबर जाणें ॥ चाकर ठाकर इक साराहै, ऋषराज कहे ए परथम लक्षण, धारत मुनि सुखकाराहै ॥ १४ ॥ दोहा ॥ दूना लक्षण मुनि तणा, कह्या आप भगवान ॥ श्रोता जन सुणज्यो हिवे, मनमें धारके ज्ञान ॥ १५ ॥ झुलणा अजी मनमें धारके ज्ञानके, जानत जिन बानीकुं सुख

दाईजी, तो तजे जगतसे लोन महा मुनि, ते जा
दुरगतिकी शाईजी ॥ मात पिता नारी सुत ममत
त्यागे चितने समझाईजी ॥ ऋषराज कहे मुनिवर
बैठे, जिन चरणो चितलाईजी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अ
तीजा लक्षण कहुं, आगमके परिमाण॥ नविजन इ
चित सानलो, जिनवाणी हित आण ॥ १७ ॥ झूलणा
अजी जिन बाणी हित आणके, मानत नव नव
सुख कारीहे, अथिर जान संसार जगतसे, मुनि मह
ब्रत धारीहे ॥ जिन आज्ञा परिमाण करी मुनि, क
टाई दूर निवारीहे ॥ ऋखराज कहे कीया सरल नाव
जिन आतम को निस्तारीहे ॥१८॥ दोहा ॥ नविजन
कपटाई तजो, सरल नाव मन राख ॥ धरम ध्यान
चित लाईये, जिन बाणी रस चाख ॥ १९ ॥ झूलणा॥
अजी जिन बाणी रस चाखके, नाषत मुखसें मीठी
बाणीजी ॥ करम मैलको दूर करत हें, मुनि आतमनें
हित जाणीजी, जप तप करिकें जो पूर्व नवके, करम
हटें दुःख दानीजी ॥ ऋषराज कहे तब ते सिवपुर
पावें, जगमें उत्तम प्राणीजी ॥२०॥ दोहा॥ चौथा ल
क्षण मुनि तणा, कह्या श्री अरिहंत ॥ नविजन अ
[illegible] तुम सानलो, राखी मन एकांत ॥ २१॥ झूठणा॥
अजी राखी मन एकांतके, भ्रांति सब दूर करो नवि
प्राणीजी, मद आठ तजो मन अपनेसे ए, खोटी
गतिके दानीजी, मान त्यागके विने करें मुनि ते जगमें

कहिए ग्यानीजी ॥ ऋषराज कहे जे सिव पद साधें, मुनिवर आतम ध्यानीजी ॥२२॥ दोहा॥ सुध संजम मुनिवर धरें, करे नही अभिमान ॥ ग्यान दरिसन चारित्र तप, इनमें राखे ध्यान ॥ २३ ॥ झूलणा॥ अजी इनमें राखे ध्यानके, दान अभै जिन दीनाहे, कुरणा करतेहें सब जीवापर, तत्व धरम जिन लीनाहे॥ ज्ञानादिक गुणका मद नही आणें, क्रिया मांहि परबीनाहे॥ ऋषराज कहे मुनि अथिर जान जग उत्तम कारज कीनाहे ॥ २४ ॥ दोहा॥ पांचो इंद्री बस करे, पालें सुद्ध आचार ॥ तिनका लक्षण पांचमां, सुणो सहु नर नार ॥ २५ ॥ झूलणां ॥ अजी सुनों सहु नर नारके, तारक मुनी महा बिरत धारीजी, बस्त्र पात्र हलके राखें, छोडें बहु मोला भारीजी ॥ राग द्वेष और हास रितारत, जिन मोह दसा को टारीजी ॥ ऋषराज कहें धन उनकी करणी, जिन तनसें ममत निवारीजी ॥ २६ ॥ दोहा ॥ छह कायाके नाथजी, छठा लक्षण धार ॥ नाम कहुं अब तेहना, भवि जन सुणों बिचार ॥ २७ ॥ झूलणा ॥ भविजन सुणो बिचारके, सार बचन भग सत बाणीजी, झूठी भाषा टालें मुनिवर, सत्य कहें हित आणीजी ॥ कोई नर खडगादिक करि मारें, होकर दुष्ट अग्यानीजी, ऋषराजकहे तहुं झूठन बोले, दोष असतका जानीजी ॥ २८ ॥ दोहा ॥ अब कहुं ल

क्षण सातमा, सुणो सवि हित लाय ॥ संजम सतेर भेदका, पाळें श्री मुनिराय ॥ २९ ॥ फूलणा ॥ अजी पाळें श्री मुनिरायके, राज मुक्तिका ते पावेंजी, धर ध्यान जतनसें संजम साधे, जीव दया मन ल्यावेंजी ॥ पांचों थावर चार तरस का, संजम जिनजी बतावेंजी ॥ ऋषराज कहें ए नव परकारें, संमज तो मन भावेंजी ॥ ३० ॥ दोहा ॥ जतना बस्त्र पाकी, लेई धरें मुनि आप ॥ पडिलेहन विध आदरें, संजममें मन थाप ॥ ३१ ॥ फुलणा ॥ अजी संजममें मन थापके, आप मुनि चित्तन चलावेंजी ॥ परिठवणे की विध सुध देखे, दया धरम मन भावेंजी॥ यात्रादिकको आछी विध करिकें, देखत धरम कहावेंजी ॥ ऋषराज कहें मन बचन काया करि ये, सतरा संजम थावेंजी ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ अब मुनि लक्षण आठमा, सुणिये मन धरज्ञान॥ बारा भेदी तप तपें, तिनका करुं बखान ॥ ३३ ॥ फूलणा ॥ आजी तीनकाकरू बखानके, ग्यानवान मुनि तप साधेंहें ॥ धरें नही देही पर ममता, जिन आज्ञा आराधेंहे॥ पांचो इंद्री जीत करें बस मन तो, ग्यान धरम अति बाधेहे, ऋषराज कहे ते मुनिबर जानें, सिव पदवीको लाधेंहे ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अनसन और अनोदरी, भिक्षाचरी प्रवान ॥ रस परित्याग मुनिकरें कायकिलस बखान ॥ ३५ ॥ फूलणा ॥ अजी काय किलेस बखानके, पडिसलेहन जा

णोजी ॥ प्रायछित्त और बिनय बियावच, सिझाय ध्यां न मन आणोजी ॥ द्वादसमा तप विउसग मुनिवर का, श्री जिनराज वखाणोजी॥ ऋषराज कहे ए तप आराध्या, पावें कोड कल्यांनोजी ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ नोंमा लक्षण अब कहुं, सुणिये भविजन लोग ॥ ग्यान धरम चितमें बसे, जब मुनि साधे जोग ॥ ३७ ॥ झूलणा ॥ अजी जब मुनि साधें जोग के, भोग तजें दुःख दाईजी, समकित ज्ञान करी सहु जानें, जो किरिया जिनबतलाईजी ॥ आप तिरें औरांको त्यारे, समकित का रस पाइजी ॥ ऋषराज कहे जो ग्यान सहित मुनि, सिव रमणी तिन पाईजी ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ दसमे लक्षणमें मुनी, पाले सील रतन ॥ सब विरतां में मोटका, बस कर राखे मन्न ॥ ३९ ॥ झूलणा ॥ अजी बसकर राखें मन्नके, तन साधक गुणधारीहे ॥ निंद्या विकथा दूर तजें मुनि, सुध मारग सुविचारीहे॥ सुध बुध करिके बहु जीवांकी, दुरगतितो दूरि निवारीहे, ऋषराज कहे ए दस लक्षण मुनिके, आतम गुण हित कारीहे ॥ ४० ॥ दोहा ॥ दस लक्षण मुनि झूलणे, दोहे बीच वखान, कहे निरपडे ग्राममें ॥ जिन आज्ञा परिमाण ॥ ४१ ॥ झूलणा ॥ अजि जिन आज्ञा परिमानके, ग्यान करि समझें उत्तम प्राणीजी॥ असुभ करमको टाली होवे, ते नर अमर विमाणीजी उन्नीसै चुमालीस संवत, भादों सुकल व

ताणं ॥ ध्यानके विषें मन बचन कायाका जोग माठा परबरताया होय तसमिछामि दुक्कडं॥पहिला आवसक पूराहुवा॥दुजे आवसककी आज्ञा लोगस्स उजोयगरे॥ सर्व पाठ कहे ॥ दूजा आवसक पूरा हुवा ॥ तीजे आव सककी आज्ञा इछामि खिमासमणो ॥ बंदिए ॥ जव णिज्जाए ॥ निस्सहीआए ॥ अणुजाणहमेमी ॥ उग्ग हं निस्सही ॥ अहो कायं काय ॥ संफासं खमणजोन्ने ॥ कल्लामो ॥ अप्प ॥ किलंताणं बहुसन्नेनन्ने ॥ देवसी वइकंतो ॥ जत्तान्नेजवणी जंचन्ने खामेमि खि मासमणो ॥ देवसी बईकम्मं ॥ आवसीयाए ॥ पडक मामी ॥ खिमासमणो देवसीआए ॥ आसायणाए ॥ तेतीसणयराए ॥ जंकिंचि मिछाए ॥ मन दुक्कडाए बय दुक्कडाए कायदुकडाए ॥ कोहाए ॥ माणाए ॥ मायाए ॥ लोहाए ॥ सवकालियाए ॥ सवमिछोवियाराए सव धम्म अईकम्मणाए ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स खिमा समणो ॥ पमकमामी निंदामि ॥ गिरिहा मि ॥ अप्पाणंवोसरामि ॥ एहपाठ दो बार पढणा ॥ गुरुको बंदना करिकें कहे, तीन आवसग पूरा हुवा ॥ चोथे आवसग की आज्ञा.

अथ निन्याणवे अतिचारका पाठ लिख्यते.

आगमें तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागम्मं अत्थागमें ॥ तदुभयागमें ॥ येहवा श्रुतज्ञानके विषें जो कोई अ तिचार लाग्या होयते आलोऊं ॥ जंभाइद्धं १ वच्चा

मोलियं २हीणखरं ३ अचखरं ४ पयहीणं ५ बिनें हीणं ६ जोगहीणं ७ घोषहीणं ८ सुठुदिन्नं ९ दुठुप भिछियं १० अकालेको सिझाउ ११ कालेनको सिझा उ १२ असिझाय सिझाईयं १३ सिझाय नसिझाईयं १४ जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं॥ दरसण श्रीसमकत रतन पदारथके बिषें जो कोई अ तिचार लाग्याहोय ते आलोउं॥ श्री जिन बचन स में साचा सरधा न होय प्रतिता ना होय रुचा नां होय ॥ १ ॥ पर दरसनीकी कंख्या कीधी होय ॥२॥ फल परते संदेह आण्याहोय ॥ ३ ॥ पर पाखंडी की परसंसा कीधीहोय ॥ ४ ॥ परें पाखंडीसें संचा परचा कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिछामि दुकडं ॥ पहिला थूला प्राणाति पात बेरमन बरतके बिषे जो कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ रीस बसें गाढा बंधन बांधा होय ॥ १ ॥ गाढा घाव घाला होय ॥ २॥ अती भार घा ला होय ॥ ३ ॥ अबयवना बिछेद कीधा होय ॥ ॥ ४ ॥ भात पाणीना बिछेद कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अइयारको तस मिछामि दुकडं ॥ १ ॥ बीजा थूल मृखा वाद बेरमण बरतके विषे जो कोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं, सहसातकारें क ही परतें कूडा आल दीधा होय ॥ १ ॥ रहस गनी बात परगट कीधी होय ॥ २ ॥ इस्त्री पुरसका मर

म प्रकास्या होय॥३॥कही परतें पाय पाडवा नणी मृषा उपदेस दीधा होय ॥ ४ ॥ कूमा लेख लिखा होय ॥ ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयार को तस्स मिछामि दुक डं ॥ २ ॥ तीजा थूल अदत्ता दान वेरमन, बिरतके विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ॥ ते आलोऊं चोरकी चुराई बसत लीधी होय ॥ १ ॥ चोरकुं साहज दीधा होय ॥ २ ॥ राज बिरुद्ध कीधा होय॥ ॥ ३ ॥ कूडा तोल कूडा माप कीधा होय ॥ ४॥ बस तु मांहि नेल संनेल कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देव सी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ ३ ॥ चोथा थूल मेहुणाउ, वेरमण वरतके विषे जे कोई अतीचा र लाग्या होय ते आलोउं ॥ इतरिया थोडा कालकी राखीसें गमण कीधा होय ॥ १ ॥ अपारि गहियासें गमण कीधा होय ॥ २ ॥ अनंग क्रीमा कीधा होय॥ ॥ ३ ॥ पर बिबाहना नाता जोडाया होय ॥ ४ ॥ काम नोगकी तिव्र अनिलाषा कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिछामि दुकडं ॥ ६ ॥ पांचमा थूल परिग्रह परिमान वेरमन विरत के विषें जो कोई, अतिचार लाग्या होय ते आलोउं खेत्र ब थु पमाणाई कम्मे ॥ १ ॥ हिरन सुवन पमाणाई कम्मे ॥ २ ॥ धन धान पमाणाइ कम्मे ॥ ३ ॥ दोप द चोपद पमाणाई कम्मे ॥ ४ ॥ कुवि धात पमणाइ कम्मे ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिछामि

दुकडं ॥ ६ ॥ छठा दिस परमाण बेरमन बिरतके बि
षे जो कोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ उंची
दिस पमाणाई कम्मे ॥ १ ॥ नीची दिस पमाणाई क
म्मे ॥ २ ॥ तिरिछी दिस पमाणाई कम्मे ॥ ३ ॥ षे
त्रवधायाहोय ॥ ४ ॥ पंथना संदेह पडा आगें चला हो
य ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिछामि दुकडं
॥ ६ ॥ सातमा भोग परिभोग वेरमन बरतके विषे जे
कोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ पचखान
उप्रांत, सुचितनों आहार कीधा होय ॥ १ ॥ सुचित
पडी वधनो आहार कीधा होय ॥ २ ॥ अपक्कना आ
हार कीधा होय ॥ ३ ॥ दुपक्कना आहार कीधा होय
॥ ४ ॥ तुछ बसतु ना आहार कीधाहोय ॥
॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं
॥ ७ ॥ पंदरा करमादान समणो बासएणं जाणीय
व्वा नसमारीयव्वा तंजहा ते आलोउं ॥ इंगाल कम्मे ॥
॥ १ ॥ वण कम्मे ॥ साडी कम्मे ॥ ३ ॥ भाडी कम्मे
॥ ४ ॥ फोडी कम्मे ॥ ५ ॥ दंत बणिज्जे ॥ ६ ॥ लख
बणिज्जे ॥ ७ ॥ रस बणिज्जे ॥ ८ ॥ बिस बणिज्जे ॥ ९ ॥
केस बणिज्जे ॥ १० ॥ जंतु पिलणीया कम्मे ॥ ११ ॥
नलंछणीया कम्मे ॥ १२ ॥ दवग दावणीया कम्मे ॥ १३ ॥
सरदह तलाव सोसणीया कम्मे ॥ १४ ॥ असई जन
पोसणिया कम्मे ॥ १५ ॥ जोमें देवसी, अईयारको त
स्स मिछामि दुकडं ॥ ७ ॥ आठमा अनरथा दंड बे

र्थन बरतके विषे जो कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं, कंदरप्पनी कथा कीधी होय ॥ १ ॥ भंड चेष्टा कीधी होय ॥ २ ॥ मुखारी बचन बोला होय ॥ ३ ॥ अधिकरण जोमी मुका होय ॥ ४ ॥ उप भोग अधिका बधाया होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अई यारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ ८ ॥ नवमा समायक बिरतके विषे जो कोई, अतीचार लाग्या होय ते आलोउं मन १ बचन २ कायाका ३ जोग पाभवा ध्यान परबरताया होय समायकमें समता न कीधी हो य ४ बिन पूगें पारी होय ५ जोमें देवसी अईयार को तस्स मिछामि दुकडं ॥ ९ ॥ दसमा दिसा बिगा सी बरतके विषे जो कोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं, निवी भूमिका बाहरथी बस्तु अनाई होय १ अथवा मोकलाई होय २ सबद करी जनाई होय ३ रूप कारि दिषाई होय ४ पुद्गल नाखीनें अपना आपा जणाया होय॥५॥जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ १० ॥ ग्यारमा पमिपुन पोषद बिरत के विषे जो कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ अपमीलेहिये. दुपडीलेहिये सिज्जा सं थारा ॥ १ ॥ अप्पडी लेहीये दुप्पडी लेहीये उच्चार पा स वण भोमिका ॥ २ ॥ अप्पमांजिए दुप्प मंजिए सिज्जा संथारा ॥ ३ ॥ अप्प मांजिएं दुप्पमंजीए उच्चा रपास वणभोमिका ॥ ४ ॥ पोसह मांहि जो बि

कथा परमाद कीधा होय ॥ ९ ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिछामि दुकडं ॥ ११ ॥ बारमा अतिथ संविभाग बरतके बिखे जोकोई अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ सुझती वसतु सुचित उपर मुकी होय ॥ १ ॥ सुचित करढांकी होय ॥२॥ काल अतिक्रमा होय॥३॥अपनी वसतु पारकी कीधी होय ॥ ४ ॥ मछर भावें दान दीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयार को तस मिछामि दुकडं॥१२॥ संलेषनाके बिखे जो अतीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ इहलोगा संसपउगा ॥ १ ॥ परलोगा संसपउगा ॥ २ ॥ जीवीयासंसपउगा ॥ ३ ॥ मरना संसपउगा ॥ ४ ॥ कामभोगा संसपउगा ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ चउदाग्यानके ॥ पांचसमकतके॥साठ बारा बरतांके॥पंदराकरमादानके ॥ पांचसंलेषनाके ॥ ए निन्याणवें अतिचार मांहिं कोई दोष पाप लाग्या होय जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ अठारे पाप थानक ते आलोउं प्राणातिपात १ मृषाबाद २ अदत्तादांन ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ९ लोभ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभिख्यान १३ पिशुन १४ परपरबाद १५ रत्तारत्त१६ मायामोसो १७ मिथ्या दंसन सल्ल १८ ए अठारे पाप थानक सेवेहोय १ सेवाये होय २ सेवता प्रतें अनुमोद्या होय ३ जोमें दे

वसी अईयारको तस्स मिछामि दुकरुं॥ पंच अनुव्रत मूल गुन सात सिषा वरत उतरगुन ॥ इनबिषे कोई अतिकरम ॥ बतीकरम अतीचार अणाचार जाण तें अजाणतें ॥ कोई दोष पाप लाग्या होय जोमें देव सी अईयारको तस मिछामि दुकडं ॥ इछामि ठामि आलोइयं जोमें देवसी अईयारकोसर्व पाठ कहणा ॥ सब सवदेवसीयं दुन्नासियं दुचिंतियं दुचिठियं हिवे समणो वासग सूत्र नणेमि बंदना करिकहे ॥ श्रावक सूत्र पढनेकी आग्या ॥ नवकार कहना ॥ करेमिभंत्ते का पाठ कहना ॥ चत्तारिमंगलं॥अरिहंतामंगलं॥सिद्धा मंगलं॥साधु मंगलं केवली पन्नते धम्मो मंगलं॥ चत्ता रि लोगुत्तमा॥ अरिहंत्ता लोगुत्तमा॥ सिद्धा लोगुत्तमा॥ साधु लोगुत्तमा॥केवली पन्नते धम्मो लोगुत्तमा॥चित्तारि रि सर्णं पवज्जामि ॥ अरिहंता सर्णं पवज्जामि ॥ सिद्धा सर्णं पवज्जामि ॥ साधु सर्णं पवज्जामि ॥केवली पन्नते धम्मो सरण पवज्जामि ॥ इछामिठामि पडकमीयो जो में देवसी अईयारको सरव पाट कहणा॥इछाकारेणका पाट कहणां॥ आगमें तिविहे पन्नते का पाठ कहणा॥ दरसन समकत परमथ संथवोवा सुदिठ परमथ से वणा वावि॥वावन्न कुदंसन बज्जणाए॥ ए समत्त सद्दह णा ॥ येहवा समकतना ॥ समणो वासएणं, समत्त स पंच अइयारा ॥ पियाला जानियवा, नसमारीयवा, तंजहा ते आलोउं ॥ संक्या ॥ कंख्या ॥ बितिगिंछा

॥ परपाखंडीकी परसंसा, परपाखंडीसंथोवा ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिछामि दुकडं ॥ १ ॥ पहिला अनु वरत थूलाउ पानाईबायाउ बेरमणं तस्सजीव बेइंद्री तेइंद्री चउइंद्री पंचइंद्री जानी पूगी संकलपी सगा संबंधी सरीर माहिला पीडा कारी सअपराधी तिस उपरांत निरअप्राधी ॥ आकूटीनें हणवानी बुद्धसें हणवानों पचखाण ॥ जाव जिवाय दुविहं ॥ तिविहेणं ॥ नकरेमि नकारवेमि ॥ मनसा बायसा कायसा येहवा पाहिला थूल परनातपात बेरमन बिरतनां पंच अईयारा पियाला जानीयव्वा नसमारीयव्वा तंजहा ते आलोउं ॥ बंधे बहे छवी छेय अईमारे मातपाणी बोछेये जोमें देवसी अइयारको तस्समिछामि दुकडं ॥ १ ॥ बीजाअनुबिरत थूलाउमुसाबायाउबेरमणं कन्नाली, गोवाली, भोमाली, थापनमोसा मोटकीकुडीसाख ॥ ५ ॥ इत्यादिक मोटका झुठ बोलनेका पच्चखान जावजीवाए दुबिहं तिबिहेनं नकरेमि नकारवेमी मनसा बायसा कायसा येहवा बीजा थूल मृषावाद बेरमण बिरतना पंचअईयारा पियाला जाणियव्वा नसमारीयव्वा तंजहा ते आलोउं ॥ सहसाभखाने रहसाभखाने सदारमंतभेये मुसो वयेसे कूडलेहकरने॥जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ २ ॥ तीजा अनुबरत थूलाउ अदिन्ना दाणाउ बेरमणं खातरखणीं १ गाठडी छोडी २तालापडंकूची३

वसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ पंच अनुव्रत मूल गुन सात सिषा व्रत उतरगुन ॥ इनविषे कोई अतिकरम ॥ वतीकरम अतीचार अणाचार जाणतें अजाणतें ॥ कोई दोष पाप लाग्या होय जोमें देवसी अईयारको तस मिछामि दुकडं ॥ इछामि ठामि आलोइयं जोमें देवसी अईयारकोसर्व पाठ कहणा ॥ सब सवदेवसीयं दुभासियं दुचिंतियं दुचिठियं हिवे समणो वासग सूत्र भणेमि बंदना करिकहे ॥ श्रावक सूत्र पढनेकी आग्या ॥ नवकार कहना ॥ करेमिभंत्ते का पाठ कहना ॥ चत्तारिमंगलं॥अरिहंतामंगलं॥सिद्धा मंगलं॥साधु मंगलं केवली पन्नते धम्मो मंगलं॥ चत्तारि लोगुत्तमा॥ अरिहंत्ता लोगुत्तमा॥ सिद्धा लोगुत्तमा॥ साधु लोगुत्तमा॥केवली पन्नते धम्मो लोगुत्तमा॥चित्तारि सर्णं पवज्जामि ॥ अरिहंता सर्णं पवज्जामि ॥ सिद्धा सर्णं पवज्जामि ॥ साधु सर्णं पवज्जामि ॥केवली पन्नते धम्मो सरणं पवज्जामि ॥ इछामिठामि पडकमीयो जोमें देवसी अईयारको सरव पाट कहणा॥इछाकारेणका पाट कहणां॥ आगमें तिविहे पन्नते का पाठ कहणा॥ दरसन समकत परमथ संथवोवा सुदिठ परमथ सेवणा वावि॥वावन्न कुदंसन वज्जणाए॥ ए समत्त सदहणा ॥ येहवा समकतना ॥ समणो वासएणं, समत्तस पंच अइयारा ॥ पियाला जानियवा नसमारीयवा, तंजहा ते आलोउं ॥ संक्या ॥ कंख्या ॥ विदिगिंछा

॥ परपाखंडीकी परसंसा, परपाखंडीसंथोवा ॥ जोमें दे वसी अईयारको, तस्स मिछामि दुकडं ॥ १ ॥ पहिला अनु बरत थूलाउ पानाईबायाउ बेरमणं तस्सजीव बेइंद्री तेइंद्री चउइंद्री पंचइंद्री जानी पूछी संकलपी सगा संबंधी सरीर माहिला पीडा कारी सअपराधी तिस उपरांत निरअपराधी ॥ आकूटीनें हणवानी वृद्धसें हणवानों पचखाण ॥ जाव जिवाय दुविहं ॥ तिविहेणं ॥ नकरेमि नकारवेमि ॥ मनसा वायसा कायसा येहवा पहिला थूल परनातपात बेरमन बिरतनां पंच अईयारा पियाला जानीयव्वा नसमारीयव्वा तंजहा ते आलोउं ॥ बंधे बहे छवी छेय अईनारे नातपाणी वोछेये जोमें देवसी अइयारको तस्समिछामि दुकडं ॥ १ ॥ बीजाअनुबिरत थूलाउमुसाबायाउबेरमणं कन्नाली, गोवाली, न्नोमाली, थापनमोसा मोटकीकुडीसाख ॥ ५ ॥ इत्यादिक मोटका झुठ बोलनेका पच्चखान जावजीवाए दुबिहं तिबिहेनं नकरेमि नकारवेमी मनसा बायसा कायसा येहवा बीजा थूल मृषावाद बेरमण बिरतना पंचअईयारा पियाला जाणियव्वा नसमारीयव्वा तंजहा ते आलोउं ॥ सहसान्नखाने रहसान्नखाने सदारमंतन्नेये मुसो वयेसे कूडलेहकरने॥जोमें देवसी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ २ ॥ तीजा अनुवरत थूलाउ अदिन्ना दाणाउ बेरमणं खातरखणीं १ गाठडी छोडी २तालापडकूची३

वाटपाम्री ४ पडीबसतू मोटकी धनाती जाणी ५ इत्या दिक मोटका अदत्तादान सगा संबंधी पडी बसतु नि रन्नरमी इत्यादिक मोटका अदित्ता दान लेवानो पच खांन ॥ जावजिवाए दुविहं तिविहेनं, नकरेमि नकार वेमी मनसा वयसा कायसा येहवा तीजाथूल अदित्ता दान वेरमन बिरतना॥ पंच अईयारा पियाला जानी यव्वा नसमारीयव्वा॥ तंजहा ते आलोउं॥तेनाहरे तक्क रपउगे बिरुधरजाई कम्मे कुम्तोले कूडमाणे तप्प डी रुवग विवहारे ॥ जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥ चौथा अणुव्रत थूलाउ मेहु णाउ वेरमणं सदार संतोस ॥ अवसेस मेहुण सेवा नो पचखान जावजिवाये देवता देवी संबंधी दुविहं तिविहेणं न करेमी नकारवेमी मनसा वायसा का यसा तथा मनुष्य तिरजंच संबंधी इक्कविहं इकवीहे णं नकरेमी कायसा येहवा चौथा थूल मेहुणका वेरम ण विरतना पंच अईयारा पियाला जाणियव्वा नस मारीयव्वा तंजहां ते आलोउं॥इत्तरीया परिगाहिया ग मणे अपरी ग्राहिया गमणे अनंग कीडा परविवाहक रणे कामभोगातिव्वाभिलासा जोमें देवसी अईयारको तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ४ ॥ पाचमाथूल परिग्गहाउ वेरमणं ॥ षेत्रवथूनो यथा परिमाण ॥ हिरन सोवननो यथा परिमाण ॥ धन धाननो यथा परमाण ॥ दोपद चोपदनो यथा परिमाण ॥ कुविधातनो यथा परिमा

ए येहवा यथा परिमाणकीधाछे तेउपरांत पोताना करी परिग्रह राखवाना पचखाण॥ जाव जिवाए इक विहं तिविहेणं नकरेमि वयसा कायसा येहवा पांचमा थूल परिग्रह परिमान वेरमन बिरतना पंच अईयारा पियाला जानियव्वा नसमारीयव्वा तंजहा तेअलोउं ॥ षेत्रवथु पमाणाई कम्मे हिरन सोवनपमाणाई कम्मे ॥ धनधान पमाणाई कम्मे ॥ दोपद चौपद पमाणाई कम्मे कुविवात पमाणाई कम्मे ॥ जोमेंदेवर्सी अईयारको ॥ तस्सामिच्छामि दुकडं ॥५॥ छठा दिस विरत उद्ददिसनों जथा परमान ॥ अधो दिसनो जथा परिमाण तिरछी दिसनो यथा परिमाण येहवा यथा परिमाण कीधाछे ते उप्रांत पोतानी सइछा कायाकरी जाईनें ॥ पांच आश्रव सेवानों पचखान जाव जिवाए दुविहं तिविहेणं नकरेमि ॥ नकारवेमी मनसा वयसा कायसा ॥ तथा ॥ मांहि रहीनें इक वीहं तिविहेणं नकरेमी मनसा वायसा कायसा यहवा छठा दिस बेरमण विरतनां पंच अईयारा पियाला जाणियव्वा ॥ नसमारीयव्वा तंजहा तेआलोउं ॥ उद्ददिस पमाणाई कम्मे अधो दिस पमाणाई कम्मे तिरछी दिस पमाणाई कम्मे खेत्तर वुद्दी सयंतरधा ॥ जोमें देवसी अईयारकोतस्स मिछामि दुकडं ॥ ६ ॥सातमा उपभोग परिभोगबिरत, बिहंपचखायमाने ॥ उल्लणियाबीहं ॥ १ ॥ दंत्तनबीहं २ फलबिहं ३ अभंगण

विहं ४ उवट्टण विहं ५मंजण बिहं ६ वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुष्फविहं ९ अभरन बिहं १० धूप विहं ११ पेजविहं १२ भखण बिहं १३ उवट्टन विहं १४ सूप विहं १५ विघे विहं १६ ॥ साग विहं १७ महोर विहं १८ जीमन विहं १९ पाण बिंहं २० मु खवासविहं २१ बाहन विहं २२ ॥ पणही विहं २३ सयंन विहं २४ सूचित विहं २५ दरब विहं २६ पो ताना भोग विनां हिंस्या करी, तथा सय विकारी सबद रूपादिक पदारथ उदारीनें जोवा जावानो पच खान जाव जिवाए दुविहं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वयसा कायसा एहवा सातमाभोग परिभोग ॥ दुविहे पन्नते ॥ तंजहा भोयनाय ॥ कम्मोय ॥ भोयना य ॥ वासएणं ॥ पंच अईयारा पियाला जानियवा नस मारियव्वा ॥ तंजहा ते आसुचित आहारे सुचित प डी बध आहारे अपोलोसही भखनीया ॥ दुपोलो सही भखणीया ॥ तुछेसही भखणीया ॥ जोमें देव सी अईयारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ ७ ॥ कम्मो य पन्नरस्स कम्मादाणाय ॥ जाणियवा ॥ नसमारी यवा तंजहा ते आलोउं, इंगालकम्मे ॥ १ ॥ जाव अ सई जन पोसणीयाकम्मे ॥ १५ ॥ जोमें देवसी अई यारको तस्स मिछामि दुकडं ॥ ७ ॥ आठमा अनर थादंड ॥ चउ बीहे ॥ पन्नते ॥ तंजहा ॥ अवझाय च रियं ॥ पमायचरियं ॥ हिंसप्पयाणं ॥ पावकम्मो व

यस्स ॥ येहवा अनरथा दंड सेवानो पचखान ॥ जा
व जिवाये दुविहं तिविहेणं ॥ नकरेमि नकारवेमी मन
सा वायसा कायसा येहवा आठमा अनरथादंम बेर
मन बिरतना पंचअईयारा ॥ पियाला जाणीयवा, न
समारीयवा ॥ तंजहा ॥ ते आलोउं ॥ कंदप्पे ॥ कुकुई
ए ॥ मोहरीए ॥ संजुत्ता अहिगरणे ॥ भोग परिभोग
अईरते॥जोमें देवसी, अईयारको तस्स मिछामि दुक
डं ॥ ८ ॥ दसमा दिसा बिगासी बरत दिन दिन प
रतें परभातथी प्रारंभीनें पूरवादिक छहदिस मांहि ॥जे
तली भूमिका मोकली राखीछे ते उपरांत सइछा का
याकरी ॥ जाईनें पांच आश्रव सेवानो पचखान, जा
व अहोरत्तं ॥ पुजवास्वामी दुविहं तिविहेणं, नकरेमि
नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तथा जेतली भू
मिका मोकली राखीछे ॥ तमाहिं जे दरवादिकनी म
रजादा कीधाछे ॥ ते उपरांत भोग परिभोग भोगवा
॥ निमतें भोगवानो पचखान ॥ जाव दिवस पुजवा
स्वामी इकबीहं तिबिहणं नकरेमी मनसा वयसा का
यसा एहवी सरधना परुपना फरसना करुं तिवारेसु
ध येहवा दसमा दिसा बिगासीं बरतना पंच अईया
रा पियाला जानीयवा नसमारीयवा तंजहा ते आलो
उं आणमण पउगे पेसमण पउगे ॥ सदाणुवाये ॥ रू
वाणुवाए ॥ बहिया ॥ पोगळ परिखेवे जोमें देवसी
अईयारको तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १० ॥ इग्यारमा

पसीपुन पोपद बिरत चउबिहंपी आहारं असणं पाणं खायमं सायमं नो पचखान अबंम्न सेवानो पच खाण उमुकमणी सेवानो पचखाण माला विलेवणनो पचखाण ससतर मूसलादिक सावज जोगनो पच खान जाव अहोरत्तं पुजवास्वामी दुविहं तिविहेणं न करेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा येहवी सर धना परूपना फरसना करुं तिवारे सुध ॥ येहवा ग्या रमा पोषध बरतना पंच अईयारा पियाला जानीयवा नसमारीयवा तंजहा ते आलोउं अप्पडीलेहिय दुप्पडी लहियेसिज्या संथार॥अप्पडीलेहिय दुप्पडीलेहियउच्चा र पास वणन्नोमिका अप्पमंजीए दुप्पमंजीए सिज्या सं थार॥अप्पमंजीए दुप्पमंजीए उच्चार पास वण न्नोमि का॥पोसह सम अणुपालणया, जोमें देवसी अईयारका तस्स मिच्छामि दुकडं॥ ११ ॥ बारमा अतिथ संविभाग वरत समणे निगंथे फासुएसणीजेणं ॥ असणं १ पाणं २ खायमं ३ सायमं ४ वत्थं ५ पडिग्गहं ६ क बलं ७ पाय पुछणं ८ पडिहारे ॥ पीढ ९ फलग १० सिज्या ११ संथारा १२ उसही १३ भेसेजेणं १४ पडि लाभेमाणे ॥ विहरामि येहवी सरधना परूपना फरस ना करूं तिवारै सुद्ध यहवा बारमा अतित्थ संविभा ग विरतना पंच अईयारा पियाला जाणीयवा तंजहा ते आलोउं सुचित निखेवणीया सुचितपहणीया कालाई क्कमे परोवयसे मछरीयाये जोमें देवसी अईयारको त

स्स मिछामि दुकडं॥१२॥ अपछिमा मरणंतीय संलेहणा झूसणा आराहणा पोषदसाला पुंजी पुंजीनें ॥ उच्चारपा स बणनोमिका पडिलेही पडिलेहीनें ॥ गमणा गमणे पडकम्मी पडकम्मीनें॥दानादिक संथारा संथरी संथरी नें दानादिक संथारा दुरही दुरहीनें ॥ पूर्व तथा उत्तर दिस पलंकादि ॥ आसण बैसी बैसीनें करयल संप गाहियं सिरसावतं मत्थए अंजली कट्टु एवं बयासी न मोथुणं अरिहंत्ताणं ॥ भगवंताणं ॥ जाव संपत्ताणं ॥ इम ॥ बरतमान ॥ तीरथंकर ॥ तथा अनंते सिद्धजी ने ॥ नमस्कार करीनें ॥ पोताना धरमाचार्जजीनें न मस्कार करीनें ॥ पूरवें जे बिरत आदरयाछे ॥ते आलो ई पडकम्मी निंदी साधु प्रमुख चार तीरथ खमाईनें ॥ निसल्लथईनें ॥ सवं पाणाईबायाउ पचखामी ॥ सवं मुसाबायाउ पचखामी ॥ सवं अदिन्नादाणाउ पचखामी सवंमेहुणाउ पचखामी ॥ सवं परिगाहाउ पचखामी सवं कोहं माणं माया लोभं जाव ॥ मिछा ॥ दंसण स ल्ल ॥ अकरणीज्जं जोगं पचखामी ॥ जावजिवाए ॥ तिविहं तिविहेणं ॥ नकरेमी ॥ नकारबेमी करंतं पि नाणु जाणामी मनसा बायसा कायसा इम अठारा पाप थानकने पचखीनें सवं असनं पाणं खाइमं सा इमं पचखामी जावजिवाए इमचार आहार पचखीनें जंपीयं इम्मं सरीरं इठं ॥ कंत्तं ॥ पीयं मणुणं ॥ मणा मं ॥ धिज्जं वेसासियं समयं ॥ अणुमयं बहुमयं ॥ भं

पक्षीपुन पोपद बिरत चउविहंपी आहारं असणं पाणं खायमं सायमं नो पचखान अबंम्र सेवानों पच खाण उमुकमणी सेवानो पचखाण माला विलेवणनो पचखाण ससतर मूसलादिक सावज जोगनों पच खान जाव अहोरत्तं पुजवास्वामी दुविहं तिविहेणं न करेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा येहवी सर धना परूपना फरसना करुं तिवारे सुध॥ येहवा ग्या रमा पोषध बरतना पंच अईयारा पियाला जानीयवा नसमारीयवा तंजहा ते आलोउं अप्पडीलेहिय दुप्पडी लहियेसिज्जा संथारा॥अप्पडीलेहिय दुप्पडीलेहियउच्चा र पास वणज्ञोमिका अप्पमंजीए दुप्पमंजीए सिज्या सं थारा॥अप्पमंजीए दुप्पमंजीए उच्चार पास वण ज्ञोमि का॥पोसह सम अणुपालणया, जोमें देवसी अईयारका तस्स मिच्छामि दुकडं॥ ११ ॥ बारमा अतिथ संविभाग वरत समणे निगंथे फासुएसणीज्जेणं ॥ असणं १ पाणं २ खायमं ३ सायमं ४ वत्थं ५ पडिग्गहं ६ क बलं ७ पाय पुछणं ८ पडिहारे ॥ पीढ ९ फलग १० सिज्या ११ संथारा १२ उसही १३ भेसेजेणं १४ पडि लाभेमाणे ॥ विहरामि येहवी सरधना परूपना फरस ना करूं तिवारे सुद्ध यहवा बारमा अतित्थ संविभा ग बिरतना पंच अईयारा पियाला जाणीयवा तंजहा ते आलोउं सचित निखेवणीया सुचितपहणीया कालाई क्कमे परोवयसे मछरीयाये जोमें देवसी अईयारको त

रसमिछामि दुकडं॥१२॥अपछिमा मरणंतीय संलेहणा
झूसणा आराहणा पोषदसाला पुंजी पुंजीनें॥उच्चारपा
स वणञोमिका पमिलेही पमिलेहीनें॥ गमणा गमणे
पडकम्मी पडकम्मीनें॥दाजादिक संथारा संथरी संथरी
नें दाजादिक संथारा दुरही दुरहीनें॥ पूर्व तथा उत्तर
दिस पलंकादि॥ आसण वैसी बैसीनें करयल संप
गहियं सिरसावतं मत्थए अंजली कट्टु एवं बयासी न
मोथुणं अरिहंत्ताणं॥ भगवंताणं॥ जाव संपत्ताणं॥
इम॥ बरतमान॥ तीरथंकर॥ तथा अनंते सिद्धजी
ने॥ नमस्कार करीनें॥ पोताना धरमाचार्जजीनें न
मस्कार करीनें॥ पूरवें जे बिरत आदरयाछे॥तें आलो
ई पडकम्मी निंदी साधु प्रमुख चार तीरथ खमाईनें
॥ निसल्लथईनें॥ सवं पाणाईबायाउ पचखामी॥ सवं
मुसावायाउ पचखामी॥सवं अदिन्नादाणाउ पचखामी
सवंमेहुणाउ पचखामी॥ सवं परिगाहाउ पचखामी
सवं कोहं माणं माया लोभं जाव॥ मिछा॥ दंसण स
ल्ल॥ अकरणीज्जं जोगं पचखामी॥ जावजिवाए॥
तिविहं तिविहेणं॥ नकरेमी॥ नकारवेमी करंतं पि
नाणु जाणामी मनसा वायसा कायसा इम अठारा
पाप थानकने पचखीनें सवं असनं पाणं खाइमं सा
इमं पचखामी जावजिवाए इमचार आहार पचखीनें
जंपीयं इम्मं सरीरं इठं॥ कंतं॥ पीयं मणुणं॥ मणा
मं॥ धिज्जं वेसासियं समयं॥ अणमयं बहुमयं॥ भं

डकरंडग समानं ॥ रयण ॥ करंमगभुयं ॥ माणंसीयं ॥ माणंउएहं ॥ माणंखुहा ॥ माणंपिवासा माणंवाला माणंचोरा ॥ माणं डंसमंसगा ॥ माणं बाईया पीती या कप्फीया सवे सन्निवाईया बिविहा रोगायंका परी सा उवसग्गा ॥ फासाफुसंति इम्मं पीयेणं चरिम्मेहिं उसास निसासेहिं बोसरामी तिकट्टु इम सरीर बोस रामीनें कालें अणव कंख माणे बिहरई ॥ येहवी सर धना ॥ परूपणां फरसनां करुंतिवारें सुध एहवा अ पछिमा मरणांति संलेहणा झूसणा आराहणाना पंच अईयारा पियाला जानीयवा नसमारीयवा तंजहा ते आलोउं इहलोगासंप्पउगा पारलोगा संसप्पउगा जीवीया संसप्पउगा मरणा संसप्पउगा काम भोगा संसप्पउगा ॥ मामुझहुज मरणंत्ते ॥ जोमें देवसी अ ईयारकोतसमिछामि दुकरं ॥ १ ॥ इम समकत ॥ पूर्व क बारा बिरत संलेखना सहित इनबिखे कोई अती करम बतीकरम अतीचार अणाचार ॥ जाणतें ॥ अ जाणतें ॥ कोई दोपपापलागाहोय ॥ जोमें देवसी अ ई यारको ॥ तस्समिछामि दुकडं ॥१॥ अठारे पापका पाठ कहणा ॥ तस्सधम्मस्स केवलीपन्नतस्स अभुठि योमि आराहणाए॥ बिरोमिबिराहणाए॥ बंदामी जिन चौवीसं ॥ इति वडे बारा वरत संपूर्ण ॥ १ ॥ फिर पांचों पदांको बदना कहणा ॥

॥ अथ पांच पदोंकुं बंदना लिख्यते ॥

णमो अरिहंत्ताणं॥ णमो कहता नमस्कारहुजो अ
रिहंत्ताणं कहता अरिहंतजीनें ॥ अरिहंतजी केहवाछे
चौतीस अतिसै पैंतीसवाणी करी विराजमान चउस
ठ इंद्रोंके पुजनीक एकहजार आठ लक्षणों के धरण
हार अठारा दोष रहित वारै गुन करी विराजमान ज
घन बीस तीर्थंकर उत्कृष्टे एकसोसाठ तथा एकसो
सत्तर तीर्थंकर जघन दोय कोड़ केवली उत्कृष्टे नवकोड
केवली पाच महाविदेह क्षेत्रांमांहिं जैवंता वरत मान
काले बिचरें छे अनंता ज्ञान अनंता दरसन अनंता चा
रित्र अनंता तप अनंता बलवीर्य पांच अनंता के ध
रणहार भव्य जीवांके त्यारण हार हाथजोडी मान
मोडी मनवचनकायाकरी यहवा श्री अरिहंतजी महा
राज प्रतें हमारी बंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल ती
खुत्तोके पाटसें १००८ वार वारंवार मथएण बंदामी
हुजो॥१॥णमोसिद्धाणं॥नमो कहता नमस्कार हुजो सि
द्धाणं कहता सिद्धजीनें॥ सिद्धजी केहवाछे निरंजननि
राकार ज्योति सरूप॥ आठ करम खपाई सिद्ध सिद्धा
लय पहोंचा इकत्तिस अतिसें इकतीस गुणकरी बि
राजमान पंदरे भेदी सिद्ध सीद्धा जिनासिद्धा १ अजि
न सिद्धा २ तिरथसिद्धा ३ अतिरथसिद्धा ४ सय
लिंगासिद्धा ५ अनलिंग सिद्धा ६ ग्रहीलिंगासिद्धा ७
स्त्रीलिंग सिद्धा ८ पुरस लिंगसिद्धा ९ नपुंसक लिंग

सिद्धा १०स्वयंबुद्धी सिद्धा ११ प्रत्येक बुद्धीसिद्धा१२
बुद्धबोहि सिद्धा १३ एक सिद्धा१४ अनेकासिद्धा १५
पाच वर्ण नही पाच रसनही पाचसंठाण नही८फरस न
ही२गंघनही ३वेद नही काया नही करमनही ओता
रनही अलेसी अवेदी अजोगी अकषाई जरानही ज
नम नही मरण नही रोगनही सोगनही बिजोगनही
५ज्ञानावरणी करम खय कीया अनंता केवलज्ञान पा
या दरसनावरणी कर्मखय कीया अनंता केवल दर्सन
पाया २वेदनी करम खय कीया व्याधपीडासें रहित
हुये २मोहनी कर्म खय कीया क्षायक सम्यक्तकेधणी
हूये च्यार आऊखा कर्म खय कीये अमूरती हूए दो
गोत्र कर्म खय कीये अगुरलघुहुए पाच अंतराय क
र्म खय कीये अनंत सक्तकेधणी हुये एहवा श्रीसिद्धजी
महाराज प्रतें हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल
तिखुत्तोके पाटसें १००८ वार वारंबार हुजो ॥२॥ ण
मो गणधराणां नमस्कार करूं गणधरजी महाराज प्रते
४ ज्ञान १४ पूर्वों के पाठी सूत्रार्थकेगूथनाहार २४ती
र्थं करोंके १४५२ गणधरांजी महाराज प्रतें हमारी
वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुत्तोके पाठ पढ
कर १००८ वारंवार हुजो ॥ णमो आयेरियाणं॥ नमो
कहता नमस्कार हुजो आयरीयाणं कहता आचार्य
जीनें आचार्यजी केहवाबें पाच आचार आपपालें औ
रोंको पलावै ज्ञानाचार दरसन आचार चारित्रा चार

तप आचार बलबीर्य आचार पाच महाव्रत पालें ५ इं
द्री जीतें ४ कषाय टालैं ९ वाड ब्रह्मचर्य पालें ५सुम
ति ३गुप्त करी सहित ३६ गुण करी बिराजमान५६
बोलोंके धरण हार आठ आचार्यजीकी संपदाके धा
रनहार गच्छ नायक जिन संघ टोला परवरतावें यह
वा श्री आचार्यजी महाराज प्रतें हमारी बंदना नम
स्कार तिखुत्तोके पाटसे १००८ वार त्रिकाल त्रिका
ल हुज्यो ॥ ३ ॥ णमो धम्मायरीयस्स नमस्कार करूं
पोताना धर्म गुरु आचार्यकुं ते श्रीपरम पंडित
जिन बाणीको प्रकास कर मिथ्यात तिमिरको
टालें जिनधर्मको दिपांवैं सम्यकतरतनकेदातार
धर्म उपदेसके उपकार सुध मारगधर्मका बतावें यह
वा धर्मगुरु बरतमान श्री ऋखराजजी महाराज प्रतें
हमारी बंदना नमस्कार तिखुत्तोके पाटसें १००८ वा
र वारंवार हुज्यो ॥णमोउवज्झायाणं ॥ नमो कहता नम
स्कार हुज्यो उवज्झायाणं कहतां उवज्झायजीनें उवज्झाय
जी केहवाबें २५ गुणकरी विराजमान आचारांग १ सू
यगडांग २ ठाणांग ३ समवायांग ४ भगवती ५
गिनाता ६ उवासगदसा ७ अंतगढ ८ अनुत्रोव
वाई ९ प्रश्नव्याकरन १० विपाक ११ उवाई, राय
पसेंणी २ जीवाभीगम ३ पन्नवणा ४ जंबुद्वीप
पन्नती५ चंद पन्नती ६सुर पन्नती ७कापिया८काप्पव
डिंसिया ९ पुफिया १० पुप्फ चूलिया ११ वन्हिदसा

१२ग्याराअंग बारै उपाग च्यार मूल सूत्र दसवीकाल क १ उत्तराध्ययन २ नंदी ३ अणुयोगद्वार ४ च्चार छेद सूत्र दशाश्रुत स्कंध १ व्यवहार २ वृहत्कल्प ३ नसीत ४ आवश्यक सूत्र १४ पूर्वके पाठी द्वादशांग बांणीके धरणहार आपपढें औरोंको पढावै एहवाश्री उपाध्यायजी प्रतें हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुत्तो के पाटसें १००८ वार वारं वार हूज्यो ॥४॥णमो लोए सव्व साहूणं॥नमो कहता नमस्कार हूजो लोए कहतां ढाईद्वीप पंदरा क्षेत्रां मांहिं सव्व साहूणं कहता सर्व साधूजीनें सर्व साधुजी केहवाछे जघन दोय हजार क्रोड़ साध साधवी उतकृष्टे नव हजार कोड साध साधवी छहकायाके दियाल छहकाया के रिछपाल छह कायाके पीहर ५ महाव्रत पालें ५ इंद्री जीतें ४ कषायटालें ९ बाड ब्रम्हचर्य पालें मनसच्चे भावसच्चे जोगसच्चे करणसच्चे मनसम धारणया का यसमधारणया बयसमधारणया नाण संप्पन्ने दंसण संप्पन्ने चारित्र संप्पन्ने खिमावंत वैराग वंत सीतादिक बेदना सहें मरणांति उपसर्ग सहे पाच सुमते सुम ता तीनगुप्ते गुप्ता ४२दोषांके टालनहार २२ परी साके जीतन हार १० विधिजती धर्मके धारन हार अ त अहारी पंत अहारी अरस अहारी विरस अहा री लुक्ष अहारी तुछ अहारी अंतजीवी पंतजीवी अ रसजीवी विरसजीवी लुक्खजीवी तुछजीवी यहवा सर्व

साधसाधवीजी प्रते हमारी वंदनां नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुत्तोके पाठसें १००८वार वारंवारहुज्यो ॥ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अनंत चौबीसी जे नमुं, सिद्ध अनंते कोड ॥केवल ज्ञानी थेवरसवी, वंदुं बेकर जोम॥१॥दो य कोमि केवलिधरा, विहरमान जिनबीस॥सहसजुगल कोटेनमुं, साधनमुंनिसदीस॥२॥जोमें जीवाविराहिया,से वेपाप अठार॥प्रजु तुह्मारी साखसें वारवार धिकार॥३॥ सातलाख पृथवी काय ७ लाख अप्पकाय ७ लाख तेउकाय ७ लाखबाउकाय १० लाख प्रत्येक विन्स्प ती १४ लख कंदमूलकी जात दोयलाख बेइंद्री २ ला ख तेइंद्री २ लाख चउरिंद्री ४ लाख तिर्यंच पचेंद्री ४ लाखदेवता ४ लाखनारकी १४ लाख मनुषकी जात ४ गति एवं ८४ लाख जीवा जोनसें बारंबार खि माउं ॥ गाथा ॥ खामेमीसव्वेजीवा सव्वेजीवाखम्मं तुम्मे॥ मित्तिमे सवे नूयेसु वैरमज्झं नकेणइ ॥१॥एवं मह आ लोइयं, निंदियं गिरहियं दुगंछियं॥सवं तिविहेण पडि क्कंत्तो, वंदामी जिण चोवीसं ॥ २ ॥ चार आवसग पूरा हुवा पांचमे आवसग की आज्ञा ॥ इछामि खिमास मणो का पाठ दोबेर कहणा, आवस्सही इछाकारेण ॥ संदेसह नगवान् देवसी पायछित, बिसोधना अर थं करेमी कावसग्गं ॥ इछामि ठामीका पाठ कहणा, त.सोत्तरीका पाठ कहणा ॥ लोगस्सका ध्यान करणा ॥ नवकार कह कर॥ ध्यान पारणा ॥ खुली लोगस्स

पढणी ॥ पांच आवसग पूराहूवा ॥छठा आवसगकी आज्ञा ॥ इछामि खिमासमणा दो बार कहणा ॥ पचखान करणा ॥ समायक एक ॥ चोवीसस्था दो वंदना तीन ॥पडकोंनाचार कावसग्ग पांच ॥ पचखांन छह ॥ इन विषें कोई दोष पाप लाग्या होय ॥ जो में देवसी अइयारको तसमिछामि दुकडं ॥ दो नमो थुणं पढें ॥ इति श्रावग पडिकमणा संपूर्णं ॥

॥ अथ चोवीसी लिख्यते ॥

श्री ऋषभ अजित संभव अभिनंदन ॥ निरंजन निराकारो ॥ सुमत पदम सुपारस चंदाप्रभु ॥ करग थे खेवापारो ॥श्री जिन मुझनें पारउतारो, म्हारी आवागमण निवारो॥श्री जिन मुझनें पार उतारो, अर्जी में सेवगचरणारो, श्री जिन मुझनें पारउतारो॥ए टेक ॥१॥ सुबध सीतल श्री अंस बासपूज ॥ मुकत तणा दातारो ॥ बिमल अनंत धरम शांति जिनेश्वर, सांति तणा करतारो ॥ श्री जिन० ॥ २ ॥ कुंथ अरह मल्लि मुनसुव्रतजी ॥ जगत्यारण संसारो ॥ नमीय नेम पारस महावीरजी ॥ सासनरा सिरदारो॥श्री०॥३ ॥ग्याराही गणधर बीस विहरमांन ॥साधसती गुणधारो॥ अनंत चोवीसीनें नित प्रत बंदूं ॥ तो नमस्कार बारंबारो॥ श्री० ॥ ४ ॥ रागद्वेष दोनों बैरीजीते, अष्ट करम कीये छारो ॥ केवल ज्ञान अरु केवलदरसन, अष्टगुणतुम लारो॥श्री० ॥ ५ ॥ तिरन त्यारन तुम

विरुद सुनीनें, सरना लीयामें तुम्हारो ॥ ऋषि लाल चंदकी एही बीनती, तो मेरा करो निस्तारो॥श्री जिन मुझनें पार उतारो ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ महावीर जिनस्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धारथकुल सिणगार ॥ तिसला नंदन जगत आधार॥स्वामी सुंदर सोवन बान ॥ सरणतुम्हारो श्री वृद्धिमान ॥ १ ॥ तुमनामें लहिये संपदा, तुमनामे मनबछंत तमुदा ॥ तुम नामें दिन दिन कल्यान॥ सर्ण०॥ २ ॥ तुम नामें नही आवे आपदा, भूत प्रतव्यंतर नही कदा ॥ रोग सोगचिंत्या नही जान॥ सर्ण०॥ ३ ॥ दुरजन दुष्ट बैरी बिकराल ॥ तुम नामें नासें ततकाल॥तुमनामें आदर सनमान॥ सर्ण०॥४॥ ग्रहगोचर पीडानकरे, सर्ण तुम्हारी जो चितधरे ॥ धरम सिंहमुनी भाव प्रधांन, सर्ण तुम्हारी श्रीवृद्धिमान ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दिगांबर मतकी उतपत्ती स्थेवरकल्पी साधु॥ ॥ वांसें है ते लिख्यते ॥

श्री महावीरके निर्वाण पीछे जब ६०९ बर्स गये तब आठमा महा निन्हव बहुतर विसम्बादी शिव भूति वोटिक हूवा ॥ गाथा ॥ छवासएहिंनव्वुत्तरेहिं, तइया सिद्धिगयस्सवीरस्स, तो वोडिआणदिडी रहवीरपुरंस मुप्पन्ना ॥ १ ॥ ओर जिन सेनाचार्य दिगंबर आम्नाके अपने कीये ग्रंथमें लिखताहै॥गाथा॥

छत्तीस वाससए विक्कम, निवस्समरणपत्तस्स, सोर ठवल्लहीये, सेयवरू संघ समुपन्नो॥१॥अर्थः—विक्रमरा जासें १३६ वर्ष पछें सोरठ देसकी वल्लभी नगरीमें स्वेतांबर संघउत्पन्नहूवा इत्यर्थ और स्वेतांबर मतमें जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण विक्रम संवत ४०० में हुवा सो लिखतेहें॥श्लोक॥न वाधिकैःशतैः षाड्भिः अब्दा नां वीरतोगतैः॥महात्सवं विसंवादात्, सोष्टमो बोटि को भवेत् ॥१॥ अर्थः—श्री महावीरसें ६०९ बरष रथ वीर पुरमें दीपकोद्याने आर्य कृष्णाचार्य समोसरे तिन अवसरे एक राजाका शिवभूतीनामें सहश्रम ल्ल सुभट राजाको वहोत प्याराथा तिसनें माता त था स्त्रीसें क्रोधकर श्री कृष्णआचार्य पास दिक्षा लीधी तब तिहांसें ओर देसमें विचरनें लगे फिर कितनेकबरसा पछें रथवीर पुरमें आये तबराजा बंदनार्थ आयकर गुराकी आज्ञासें शिवभूतीको अ पने घर लाया पहिले विशेष राग करिके रतन कंब ल दीधा ते लेइ गुरूपास आण दिखाया गुरुनें क ह्या की यह बहु मोलका वस्त्रहै एह तुमको लेना जो ग नहीथा परंतु अबतो तुम इसको अपने सरीरमें धारण करो आगें औसा वस्त्र नही धारण करना औ सा सुनते सिवभूति ममता भावसें धरलीया कवी कवी पडिलेहणा करतां देखकर खुसीहोताथा तव गुरूनें देखाकी इसको रतन कंवलका ममतभाव होग

या तब गुरूनें उसके विना पुछे तिस रतन कंब लके खंड खंड कर साधुवांको पग पूछने वास्तें बांट दीए जबसिष्य बहोत क्रोधमें हुया परंत कुछगु रुको कहनसक्या एकदासमें गुरूजीने साधुवांके कलपका व्याख्यान दिया तिसमें ६ प्रकारके कलप के साधु कहे बृहत्कल्प सूत्रसें जाणलेने (छविहाकप्पाठि ईपन्नता तंजहा समाइसंजयकप्पाठिय १ छेउवगाणिय संजयकप्पाठिए २ णिव्विसमाण कप्पठिई ३ निविठ काईयकप्पाठिय ४ जिणकप्पाठिई ५ थेवरकप्पाठिई ६ तिबेमी) इन छहों कल्प स्थितिकी जुदी जुदी मर्या दहै जिसमें जिनकल्पका वर्णनकराकीजिनकल्पी मुनी ८ प्रकारके होतेहै तिनमेंसें सर्व उत्कृष्ट जिनकल्पी मुनिके दो उपकरणहै एक तो रजोहरण १ मुखपो तियं २जब सिष्य पूछनें लगाकी तुम औसा मारगकी व्रती क्योंनही करते गुरुनें कहाके जंबु स्वामी पछें १० बोल व्यवछेद होगये यथाख्यातचारित्र १ सु क्ष्म संप्रायचारित्र २ परिहार विशुद्धिचारित्र ३ परमा वधिज्ञान ४ मनः पर्यायज्ञान ५ केवल ज्ञान ६ जिन कल्प ७ पुलाकलब्धि८ आहारिकलब्धि ९ मुक्तिहोवा १०सो जिनकल्पमार्ग इसकालमेंनही तबशिष्यनेंकहा क्योंनही जो परलोकार्थी होयतो औसा कठिन मारग धा रण करे सर्वथा परिग्रह रहित होय ते श्रेष्ठहै गुरूने उत्सर्ग अपवाद मार्गदर्शाया सिष्य प्रतें उक्तं जो धरम

उपकरणहै ते नही परिग्रहमें संजम निर्वाहअर्थहै ॥ श्लोक ॥ जन्तवो वहवः सन्ति, दुर्दश्यामासचक्षुषां॥ते भ्यः स्मृतंदयार्थंतु, रजोहरणधारणम्॥१॥आसनेशयने स्थाने, निक्षेपेग्रहणेतथा॥गात्रसंकुचनेचेष्ठं, तेनपूर्वंश्मा र्जनं॥२॥तथासम्पातिमासत्वा,सुक्ष्माश्चव्यापिनापर ते षां रक्षानिमितंच,विज्ञेयामुखवस्त्रिका॥३॥नवन्तिजन्त वोय स्मादन्नपानेषुकुत्रचित् ॥तस्मातेषांपरीक्षार्थं पात्र ग्रहणमिष्यते॥४॥सम्यक्तज्ञानशीलानि,तपश्चेतोहासिद्ध ये॥तेषांमुपग्रहार्थाय स्मृतंचीवरधारणम्॥५॥शीतवाता तपैर्दंशै,मंशकै श्चापिखेदिताः॥मासम्यक्तादिषुध्यानम् नसम्यक् सम्भिधास्यति॥६॥तस्यत्वग्रहणयस्मात् क्षुद्र प्राणि विनाशनम् ॥ ज्ञानध्यानोपघातोवा, महानदोष स्तदैवतु॥७॥यएतान् वर्ज्जये दोषान्, धर्म्मोपकरणाद्र ते, तस्यत्व ग्रहण युक्तं, यस्याज्जिनइवप्रभुः॥८॥ व सिष्यनें कह्या के ये सब वस्त्रादि परिग्रहमेंहै गुरुनें कह्या की (मुछा परिग्गहो वुत्तो) ममत्व कर तो पारि ग्रहमें होय इत्यादि उपदेस मानानही तवसिष्यनें क ह्या तुमसें यह दृती पलती नही में पालुंगा इमकह वस्त्रछोड दीये. तिसकी वहन उत्तरानें उनको देख व स्त्रतजदीये जव नगरमें आहारके वास्ते आई तव एक गणिकानें ऊपरसें वस्त्र गेरा तो उसकानग्नपणा दूर कीया भाईसें कहाकी मुझको देवांगणानें वस्त्र दी याहै जव भाईनें समझकर कह्याके तुं वस्त्र रखले परं

स इसकारणसें स्त्रीको मुक्त न होय ऐसा कथन करा
तब शिवभूतीके चेले२ हुये॥ कोण्डिन्य १ कोष्टवीर २
तब तिनके सिष्य भुतिवल ओर पुष्पदंतनें श्रीमह
वीरसें ६८३ वर्ष पीछे ज्येष्ठ सुदी५केदिनें ३ सास्त्र र
चे धवलनामाग्रंथ७००००श्लोक इमाणजयधवलनामा
ग्रंथ६००००श्लोक महाधवलनामा ग्रंथ४००००श्लोक
ए तीनो ग्रंथ करणाटक देसकी लिपीमें लिखेगये ओर
शिवभूतीके नग्नसाधु बहोतसे करणाटक देसकी तर्फ
फिरतेहैं क्योंकि दणक्षदेसमें शीत कमहै जब उनके
मतकी वृद्धि होगई तब महावीरसें १००० बर्स पीछें
इसमतके धारक आचार्योंके ४ नाम परसिद्धकीये नं
दीसेन देवसिंहनें जैसें पद्मनंदि १ जिनसेन २ योगिं
द्र देव ३ बिजयसिंह ४ इनके लगभग कुंदकुंद नेम
चंद्र बिद्यानंदी वसुनंदी आदि आचार्यो जबहुये तब
तिनो श्वेतांबरकी निंद्या तथा हीनता करनेवास्ते मु
नीकेआचार विवहारके अपने वुद्धीप्रमाणक छेक जि
न बैणकु छेक स्वकुबुद्धिकर स्वमत कल्पित अनेक
ग्रंथरचे जिनसें श्वेतांबरोको कोईभी साधू नमानें ब
हुत कठिन वृती वर्णन करी ओर दिगांबरोंनें अपने
मनकी उक्तसे श्वेतांबर धर्मके अवगुण वादकरे परंत
सनातन धर्म श्वेतांबरका उत्सर्गापवादमार्ग जा
णा नही,एकांतबादी होकर बहोत निंद्या शास्त्रोमें क
री सोइ इनके शास्त्र परसिद्धहै जिसको संदेह होय

वह देखलेना श्वेतांबरके शास्त्रोंमें इनके मतकी कहीं निंद्या नही इस वास्तें निश्चै मालुम होताहै कि स्वे तांबर मतमेंसें दिगांबरमत निकला परंत इन दिगां बरके ग्रंथ करताओनें दिगांबर मतके गुरुका विछेद करदीया क्योंकि ऐसी काठिन वृती पालने वाला भर त क्षेत्रके इस पांचमें आरेमें होनहीं सक्ता क्योंकि ऐसा संघेण अर्थात् बलधारक सरीर नही होता ओ र एकसा समें आरोका नही है द्रव खेत्र काल भाव की अपेक्षा नही जाणी तब दिगांबरोमें कपाइ उत्प न्न भई जब इनके ४ संघहुये॥काष्टासंघ १ मूलसंघ २ माथुर संघ ३ गोप्पसंघ ४ चमरी गायके बालोंकी पीछी काष्टासंघमें रखतेहैं॥मूलसंघमें मोर पीछीरखते हैं॥मांथुरसंघमें पीछी रखतेनहीं॥ओर गोप्पसंघमें मो र पीछी रखें ओर स्त्रीकोभी मोक्षकहेहैं॥बाकी ३ में स्त्रीको मुक्त नहीं कहे ओर गोप्पसंघवाले वंदना क रने वालेको धर्म लाभकहे॥ बाकी ३ धर्म वृद्धिकहे॥ अब इस पांचमें आरेमें इसमतके २० पंथी वा १३ पंथी वा गुमान पंथी इत्यादि भेद बरतमान कालमें वरत रहे हैं तिनमें २० पंथी पुराने कहलातेहे॥बाकी दोनो नवीन कहलाते हे॥अब इनके मतका सरधान तथा शास्त्र ओर श्वेतांबर आम्नासें कितनेक फरक है सो चर्चा विस्तार सहित ग्रंथ संग्रह करता प्रथम सम्यक्त परिक्षाकी वचनका लिख्यते

श्री जिनराज वीतरागदेव मारग मुक्तिनो प्रकास्यो पिण पंचमा कालना दोषथी आतम ग्यानको भेद अम्ह सरीखा मोही जीवानें समझावो कठिन छे॥ सुलभबोधी हलुकरमी जीवछे भवस्थित जे जीवनी पाकी थईछे ते उत्तमजीवानें आतम ग्याननो रस चाख्योछे ते संसार समुद्रथी तिरयाछे तिरेछे अनें तिरसी पिण हिवडा सुध सामगरी पिण कठिनछे सुध धरम परूपक थोडा दीसेछे अने गाडरी प्रवाहवत देखा देखी पक्ष ग्राही आबोध जण मत पक्षना वाह्या घणादीसेछे ॥ पिण जिन राजना बचनामें खांच करणी उचित नहीछे परिक्षा करणी उचित छे ॥ परिक्षा सुधसमकितनो कारणछे सम्यक्तछे ते मोक्षमारगनो मूलछे ते भणी सम्यक्त धरमनी परिक्षा बुद्धि अनुसार किंचत कहे छइये. बीतरागदेव श्री जिनेंद्र देव शास्त्रपरूप्या ते मांहिं कह्योछे॥नाणदंसणस्सन्नाणं नाणे विनां न हुंति चरण गुणा, अगुणस्स नस्थितोमोखो॥ नत्थी अमोखस्स निवाणं ॥ १॥ इहां दंसण सम्यक्त ने कह्यो, सुध द्रष्ट करीनें निज स्वरूप देखवो, ते हिज सम्यक्त कहिजे॥ ते सुध समकित विनां अनेक क्रिया कलाप तपश्चरण परमुख करे छे ते सरव बंध रूपछे पिण मोक्ष रूप नथी अरु सुध समकित सहित क्रिया तपश्चरण मोक्ष रूपछे॥ दंसणभठाजीवा आराहए दवचरणसुहजोगे ते सबेहिसुभबंधो मो

खस्ससाहणो नथी ॥ १ ॥ इति वचनात्, सम्यक्त धरम तो मूलछे ते सम्यक्त दोय प्रकारनीछे ते बिवहार सम्यक्त १ अने निश्चै सम्यक्त २ ए दोय नेद बिचारवा जोग्यछे जे जीव संसार भ्रमणथी नयानक जीव संसारथी मोक्ष थावाने अभिलाखीछे तेहिज जीव सुध सम्यक्तनी परिक्षा करिस्यै त नणी अहो नव्यजीव मत पक्ष छोडी जिनराज श्री जिनेंद्र देवनां बचननी सुधता करीने कीजे ॥ इति उपदेशः॥ हिवे वेकर जोरी सिष्य प्रश्न करे छे अहो दीन दयाल संसाररूप समुद्रना तारक गुरुजी सम्यक्तनो निश्चय बिवहार पणो जिमछे तिम कृपा करिने सुणायो चाहिजे॥ हिवे गुरु उत्तर कहे छे ॥ अहो सिष्य, निश्चय सम्यक्त तो एह कहिजें जे जीवने काललबधिना जोगथी दंसण मोहनी जे सम्यक्तावरणी कर्म ते सम्यक्तनो ढांकणों छे ते करमना स्थिति पाकां क्षयोपसम नावथी॥ ते आतमनो उज्वल पणो थयो, ते गुणथी पुदगलनी जे आसा अने पुदगलीक सुखथी उन्नग्या आतमाना निजगुण ॥ सम्यक ज्ञान सम्यक दरसण॥सम्यक चारित्र गुणमें रमण थाय निज स्वन्नावमे रमण छे आतमा अनुन्नवमे रक्त छे, निश्चै सम्यक्त कहिज्ये छे ते॥उपसम १ क्षाइक२ क्षयोपसम ३ नेदछे तेहना गुणस्थान क्रमारो इणथी जाणज्यो अत्र विस्तार नहीं लिख्यो ॥ एहनो बि

चार कठिनछे, ते तत्ववेता बिचारस्ये अने बिवहा
र समकित ते कहिज्ये ॥ जे सम्यक्तीनो विवहार सु
ध देव १ सुधगुरु २ सुध धर्म सास्त्र ३ जेहनी प्रती
त ज्यारा हिरदाविषे थईछे॥ कुदेव कुगुरु कुसास्त्रनी
रुची नही करे त्याने सेवन नही करे देव गुरु धर्म
ने नमस्कार नही करे इत्यादि कृतव्यथी विवहार स
म्यक्त कहिज्ये॥अत्र सिष्य प्रश्न करेछे निश्चै सम्यक्त
नो विचार सुक्षमतासुं जणाय मिण विवहार सम्यक्त
नो भेद दयाकरीने बतायो चाहिज्ये देव गुर सास्त्रनी
परिक्षा किणभांत कीजे ॥तव गुरु उत्तर कहेछे अहो
सिष्य, देव अरिहंत ३४ अतिसय ३५ बाणी १८
दोष रहित १२ गुण ८ महा प्रातिहार्य एकह
हजार आठलक्षण करिनें संजुक्त सो देव॥१॥ओर राग
द्वेष संजुक्त आयुध आभुषण बाहण करीनें सहितते कु
देव ॥अनें गुरु साधु सुध मारग परुपक२७गुणें संजु
क्त ते गुरु॥अनें असुध मारग परूपक जिन बचनोंसें
विपर जे परुपे ते कुगुरु ॥२॥अनें जे सास्त्र मांहिं पू
र्वापर बिरोध नथी जे सास्त्रमें किणी मतनो नाम
धरीनें निंद्या नथी षट द्रव्य नव पदार्थनो द्रव्य गुण
परजाय भंग नय निक्षेप परिणाम सहित छै ते सास्त्र
३अनें जे सास्त्रमें पूर्वापर विरोधछे, नाम लेइनें निं
द्या बचनछे॥ एक सास्त्रनें बीजो सास्त्र उडावेछे
ते रागी द्वेषी, मनुष्य कृत्य मत पक्ष थापकना कृत्य

ते कुशास्त्र ॥ ३ ॥ सिष्य पूछे सास्त्र कुशास्त्रनी परिक्षा करयासुं गुण नीपजे॥ गुरु कहे सास्त्र कुसास्त्रसु देव गुरु धर्मनों भेद जणायछे तिण कारण सास्त्र कुसास्त्रनी परिक्षा अवश्य कीजे ते किस्या भणी॥ सास्त्र सुणतां ग्यान बिग्यान परगटे ॥ कुसास्त्र सुणवाथी मिथ्यात प्रदीपन थायछे॥ ते माटे, सम्यक्ती जीवनें कुसास्त्र सुणवो बरजेछे अत्र प्रश्न अहो गुरु ग्यान सागर सास्त्र तो नाम घणाही कहावेछे ते सास्त्र कहिज्ये अथवा कुसास्त्र कहिज्ये हिवे उत्तर अहो भव्य पंचम कालमें जेतला मत मतांतरछे ते सबही सास्त्र करी मानछे पिण जे एक सास्त्रनें बीजो सास्त्र उडावेछे सास्त्र सास्त्र परस्पर लभ्भें एकनें बीजो झुटो कहेछे अनें श्रोता पिण पक्ष झालीनें निरणय न करे अैसा शास्त्र सुणवाथी भव भवमें भमणों पभ्भस्ये तेमाटे कुशास्त्र सुणबो बरजे कुसास्त्र सुणवाथी समकित मलीन थायछे अैसो सांभली श्रोता पूछे युक्ति युक्तिकरी समझावो किण किण भांतिसुं पूर्वापर विरोध जाणज्ये इम पूछ्यां गुरु कहेछे परितिक्ष परिमाणथीपरिक्षा सांभलो अनमतीनां सास्त्रानों बिरोधतो कहां तांई कहिज्ये पिण लोकांमें जैनी कहावेछे २४ तीरथंकरांना बचनानें परिमाण कहेछे॥ पंच परमेष्टी सुमरे छे ॥ अने बिवहार पिण जिन धरमनो राखेछे, भोजन कंद मुलादिकनों आहार त्यागेंछे पिण शास्त्र

कुशास्त्रनी परिक्षा नकरें जिम करछी सरव रसमें फि रे पिण जढता स्वभावसुं स्वाद न चाख सके तिम म त माही शास्त्र सुणें पिण गहिलता स्वभावसुं परि क्षा नकरे येहवा अबोध जननें सम्यक ग्यान दरस ण किहांथी थाइ, अपीतु नथाइ तिन कारणसुं सुध सम्यक्त अभिलाषी शास्त्रना पूर्वापर वचन मिले ते परि माण कीजे तव सिष्य पूछ्यो तुमनें गुरुजी किसा शास्त्र परिणाम कीधा तव गुरु कहेछे ॥ श्री जिन भाषित गणधर रचित आगम हमने परिमाणछे, तव सिष्य कहे अहो गुरुजी सास्त्र तो सर्वही सर्व ज्ञना वचन जाणेछे ॥ इम पूछयां गुरु कहेछे जे शास्त्रमें निंद्या बचन बिरुद्ध वचनछे ते सरवज्ञना बच न नथी ते छद्मस्तना वचन जाणज्यो जेहनें प्रत्यक्ष पणो दिखावेछे अनमतीना शास्त्रमेतो विपरजय व चन घणाछे तेहना बिस्तार आगले कहिस्युं पिण हि वडां वरतमान काले पंचमकालना दोसथी जिणमतमे पिण मतना बाह्या जीवाने मत पक्ष थापण भणी विरुद्ध वचन घणा कहेछे तेहना ब्योरा दिगांबर म तना शास्त्रमें सितांबर शास्त्रानी निंद्या घणी करेछे ते मांहिं केतलाएक झूठ घाल्याछे ते दिगांबरना शास्त्र कहेछे स्वेतांबरना शास्त्रमें एतला झूठा वचन लिख्या छे तेहना ब्योरा केवलीकुं केवली नमस्कार करे, केव ली स्तुति पढे २ निंदक मारेका पाप नहीं ३ श्री

ते जिन मारगनी सेलीनां अजाणछे, सूधी वातनें उ
लटी बोलेंतो ॥ आपणा जीवनें दुःखदाईछे ॥ जिमद्द
ष्टांत ॥ कोई पाडोसीने अपसकुन करवा भणी पोता
नों नाक कटाईने, पाडोसीनें सनमुख आवे ते पा
डोसीने तो अपशकुनथयो ॥ १॥ कारजमें घातथया
पिण नाक कटावन वालानें १ वारतो हरष मा
न्यों पिण पछे सारोही जन्म लजावे उपहास करावे,
तिम सुध वस्तुनी निंद्या करतां मिथ्यात मोहनी कर
म बंधावे. ते घणो संसारमें दुःख पामस्ये ॥ इम क
ह्यां श्रोतां कहे छे, एतो परितक्ष परिमाण दीसेछे ॥
निर्ग्रंथ पद विनां केवल किम ऊपंजे, इम पूछ्या गु
रु उत्तर कहेछे ॥ एतो सत्यछे, पिण दीर्घ बुद्धीसे वि
चारयांथी सुखे समझो॥ द्रव्य निर्ग्रंथ ॥ १ ॥ बीजो
भाव निर्ग्रंथ ॥ २ ॥ ए विचारवो चाहिज्ये द्रव्य नि
र्ग्रंथ ते द्रव्य पुदगलनी गाठरहित भाव निर्ग्रंथ ते मु
नि व्रतना घातक करम काल लबधथी क्षय थया ॥
नद भावनिर्ग्रंथ पद पाम्यो तथा चारित्रावरणी क
रम क्षय हुवां केवलग्यान प्रगट थावानो कारणछे,
पिण आत्म करमना स्वरूपनां अजाण मछरताद्वेष
संयुक्त अबोध जण कुहेतु लगावेछे भोलाजीवानें वि
प्रतारेंछे पिण साक्ष देखतांतो॥ निसर्ग ॥ १ ॥ उपदे
स ॥ २ ॥ए दो कारण सम्यक्त तथा ॥ ज्ञानना ॥ क
हेछे ॥ ते कारण विचारता तो ए ६ नें केवल

उपजावो सत्यछे, अने बाऊ दिगंबरी मत पक्ष ग्राही अंतरात्मानां अजाण एहनें निंदेछे ॥ मिथ्यात मोहनी करम बांधेछे तब सिष्यकहे, स्वामी भावनिक्षेथ पद किण भांतसुं जाणजे तब गुरुकहे अंतरात्मा १ बहिर आतमा २ सुधआतमा ३ ए तीन आत्मानों स्वरूप जाणयाछे जेहनें येहनो भर्म नथी अने जे अजाणछे. ते मिथ्यातनी गहिलतासुं ॥ मद्य पानीनी परें, अचेत थई रह्याछे ॥ तेहनें अंतरातमां कह्यो ॥ बहिरातमा सुधातमा, तीननो भेद स्युं जांणे ॥ अनें दिगांबर मतनां, सास्त्रमें कह्योछे, अपूर्व करण ॥ ॥ १ ॥ जथा परवृत करण ॥ २ ॥ निवृत करण ॥ ॥ ३ ॥ ए ३ करण घणां सास्त्रमें छे, तिहां पिण करमनां क्षयथी ॥ आतमाना सुध पणाथी तीन करण कह्याछे, तिण न्यायें जोवतां ॥ केवल ज्ञान उपजवो तदावरणी तद गुण घाती करमना क्षयथी केवल उपजेछे, तथा गुणस्थांन मारगणा ॥ गोमठ सारमें, कहीछे, तिहां पिण करमनी परकिरत क्षिपवानी गुणनी श्रेण चढेछे, इण न्याये विचारतां तो भरता दिकने केवल उपजवो सत्यछे अनें ने निषेद करेछे ते जिन मारगणा अजाणछे ॥ इति उत्तरं ॥ अनें ओर पिण कहेछे स्वेतांबरना सास्त्रमें॥केवलीने रोग॥ १ ॥ केवलीनें आहार ॥ २ ॥ केवलीनें निहार ॥ ३ ॥ केवलीनें विहार ॥ ४ ॥ केवलीनें उपसर्ग ॥ ५ ॥ ए बो

ल केवलीनें कहेछे, ते सांभलीनें अण विवेकी पुरष जांणें ॥ ए बात विरुद्धछे, ते माटें पक्ष झालीनें अ जाणतां जिन वचनानी निंद्या करे छे. पिण पोता ना पगनें कुठार वाहेछे ते घणा दुःखनो कारणछे दि गांबर मतनां ग्रंथमध्ये पिण रोगादि, केवलीनें सं भवेछे॥तेहनो ब्योरा ॥ सुधानुभवधारी आत्म तत्व वेता जिनधरमनां अनेकांत स्वरूपनां जाणजो॥ कृ पा करिनें, ते परोपकार निमतें, उपदेस करिलें जि न वांणी दिढावेछे ॥ हे भाई तुम कहो, हम जैनाश्रि तछां ॥ पिण जैन धरम रहस्य जाणता नथी दीसो छो ॥ तेहनो ब्योरो दिगांबरके, ग्रंथोंमें गोमठ सा र गुणस्थांन मारगणामें १३ में गुणस्थानें ४२ प्रकृतिनो उदय कह्योछे ॥ ते ४२ मांही साता असा ता दोनों प्रकृतिनो उदेछ अनें ८५ प्रकृतिनी सत्ता छे ॥ तेहनो उत्तर॥कोई कहेगो ४२ प्रकृतनों उदेछे, पिण जरी जेवरी समानछे इम कहे तेहनें पूछीए मनुष आउनो उदेछे॥ ते पिण जरी जेवरी समानछे, तेतो भोगव्या विनां मोक्ष क्यौंन जाय, इण न्यायें साता असाता भोगव्यां विना मोक्ष किम जाय, उ दे भावछे ते भोगव्या विना मोक्ष किम जाय इम देखतां निश्चे नयनी अपेक्षांये चारीत्रावरणी करम काल लबधना प्रयोगथी क्षय हुवां केवलग्यान पर गट थाइछे घातीया करमनी प्रकृति स्थिति सुध अ

नुभव अनित्यादि भावनाथी अनुक्रमें ॥ क्षय थया केवल ग्यान ऊपजे ॥ तो किसो संदेह छे पिण ऐसो विचार ॥ सुबोध जनने झलकस्ये, क्षपन सार लवधि सारनो ॥ रहस्य बिचारतां, जे करम क्षय थयो ॥ ते क्षयथी, क्षायक निज गुणनी लवधि उपजी ॥ पिण जे करम उदेछे, तेहना उदेथी ॥ जीवने साता असाता क्षुधा तृषानो संभवछे ॥ इतिज्ञेयं ॥ तथा समयसार समाधी तंत्र चरचा सतकमें ११ परीसहनों उदेछे, तेरमे गुणस्थाने कहेछे जे बेदनी करमथी जे परीसह थायछे ते केवलीने कह्या छे ॥ तिहां क्षुधा १ तृषा २ सीत ३ उष्ण ४ डांसमास ५ चरिया ६ सिज्या ७ बंध ८ रोग ९ तृणस्पर्स १० जल्ल ११ सवार्थसिधी टीका नवमा सूत्र मध्यें कह्या परीसह कह्योछे, ते सास्त्रना अर्थ उलटा झलकेछे ते कहे छे क्षुधा तृषा परिसह जरीजेवरी समानछे इम कहे ॥ तेतो सत्यछे पिण आउखानी जरी जेवरी समान छे ते पिण क्षय थया बिनां मुक्ति न जाय, तिम बेदनी ॥ पुद्गलना सुभासुभनें संजोगथी, क्षुध्या तृषा उपजे छे ॥ जद केवलीनें इछा अने राग द्वेष न उपजे॥किम मोहनी करम क्षय गया तेहथी, अनें बेदनी करमनों उदेछे, तेथी पुद्गलने विपाकादिछे ते कारणथी ॥ साता असाता क्षुधा तृषानो उदेछे, निरागी पणे पुद्गलने आहारे छे ॥ इम कह्या थकां प्र

में प्रत्यक्ष बिरुध बातहै॥ निरणो करयो जोइज्ये सो निरणों नांहि करे॥ एक पुराणमें लिख्या कीचक न रक गया॥ १॥ बीजे पुराणमें कीचक राजा मुक्त गया, वहुर सीता चारित्रमें सीताका पिता जनक॥ माता बिदेहा, भामंडल सीता जुगल पणें जनम्यां॥ पद्म पुराणमें रावणकी बेटी मंदोदरी सीताजीनी माता ओर एक पुरानमें श्री भगवान नेमनाथ बा ईसमां जिन राजना गर्भ जन्म कल्यानक सोरी पुरमे थया॥ ओर बीजा पुराणमें दोइ कल्याणक द्वारकामे थया द्वारकामे सोरीपुर पाडा कहे॥ अरु सिखर महातम में सिरखजीकी जात्रा करे, सो नरक तिरजंचकी गति न जाय, अरु पदम पुराणमें रावण लक्ष्मण, दो नानें सिखरजीकी जात्रा करी॥ रावणने दिगबिजय करी जद लक्ष्मणजी कोडासिला उठाइवानें गया, जब अरु बह दोइ बिलयमे पहुंच्या इत्यादिक ठाम २ बिरुध बचनछे पिण पंचम कालना दोसथी आंधाने आंधा मारग बतावे छे ऐसा बिरुद्ध बचन संजुक्त सास्त्र सुणनें अबोध जण भरममें पड्या सु णेंछे, सुध न करे ओर कोई बतावे तो जैसे नकटा ने दरप्पण दिखाया खीजै तिम क्रोध ऊपजे परिक्षा परधानी होइ सो बिचारे हिवे स्वेतांबरना सास्त्रनी दिगांबर खंडण इण बोलासु करेछे स्वेतांबरी स्त्रीको महा व्रत कहे॥ ओर मुक्ति कहे॥ ए बात सुणनें अ

बोध जण बोधा लोक भरममें आवे एहनों न्याय को ई कहे मेंतो बाऊ पुत्रगों तिम ए पिण जाणवा॥ ते किम गोमट सार आश्रव तृभंगी चरचा सतकमें दे खो नोंमा गुणस्थांन ताई ॥ स्त्री १ पुरष २ नपुंसक ३ ए तीन बेदनो उदे कह्योछे ॥ घणा सास्त्रमें नोंमा गु णस्थांन लगे स्त्री होइ, पिण छठो न होइ ॥ बुद्धिवं त होइ सो बिचारे, आंख सहित पुरषने दीपक उ द्योत करे, पिण अंधे पुरषने दीपक उद्योत न करे तिण द्रष्टांते रूढ पक्षीनें ग्यान आवे ॥ नोंमा गुण स्थानतो होय, अने महा व्रत न होइ ॥ इसी बिप्री त किम संभवे, और कोई सुबुद्धि पूछेतो कु हेतु लगायने भरमावेछे, कुहेतु इम कहेछे ॥ नोंमा गुण स्थान भाव इस्त्रीने द्रव्य इस्त्रीने नथी इम सुणनें मं द बुद्धो हरष माने ॥ अने जाणे साचो कह्यो पिण तेहने पूछे द्रव्यइस्त्रीमे घणा मेला परिणाम होय, त था भाव इस्त्रीमे मेला परिणाम होइ ॥ भाव असु द्धथी द्रव्य सुध होइ अक नही, तद कहे पूर्वापे क्षया अस्त्रीछे पूर्वे ॥ पुरुषने इस्त्रीना परिणाम हुंता, ते अस्त्रीनें नोंमा गुणस्थान कह्या छे ते पिण विपरजय बचन दीसेछे॥ इम करतां तो अनंतानुबंधी अप्रत्या ख्यानी ॥ प्रत्याख्यानी परमुख प्रकृतिनो पिण उदे कह्यो जोइज्ये ॥ इम जाणी सुबोध बिचारेतो स्त्री नें महाव्रत अस्त्रीने मुक्ति सुखे संभवछे, ति

ण किण ठामे गाथा पिणछे ॥ षट पाहुडना तीजा पाहुडा मध्ये गाथा ॥ वीसनपुंसकवेया इत्थी वेयाहुंति चालीसा, पुवेया अठियाला समयणे गेणासि ऊंति॥१॥ तथा एह गाथा गोमठ सारमे कहीछे ॥ इति वचनात् ॥ अस्त्रीनें मुक्त कहीछे॥दिगांबर कहे अस्त्री असुद्धछे, तेहथी मुक्तनही॥तेहनें पूछीए अस्त्री असुद्ध छे तो पुरष पिण असुद्धछे सप्त धातू सप्त उपधातूछे ते सर्व अपवित्रछे इमजाणीने सुध विचार करो जद मुखें समझस्यो, जिम दरप्पणमें सूधो मुख करी देखे सूधो दीसे ॥ वांको मुख करीने देखेतो वाको मुखदीखे, तिणन्यायें निज गुण निज स्वभाव देखतां तो सर्व वात सूधी परगमें ॥ विवहार दृष्टे, खेंचता उलटा परिणाम परिगमें ॥ और दिगांबरी कहे, स्वेतांबर सुद्रका आहार लेवें ॥ इम करिने स्वेतांवरनें, निंदेछे तेहनो न्याय इम पूछजो ॥ चौथा आरामे ४ वर्णका वरताराहोता, च्यारुंही वर्णका खांन पान मिलता था ॥ कदाचित् परिणीजन पिण होइथा सो मिल ब्राम्हणकी बेटीसे परणेतकी इछा कृष्णनीने करी थी तेतली प्रधानने पोटला सुनारी व्याहीथी ॥ इण कारणे शुद्रका आहारकी निषेधनही, सास्त्रामे अव पंचम कलूकालमें श्रावक कहावे छे ते पिण विरुद्ध दोषी ठहरेछे किसवास्ते प्रथमतो अग्रवाल खंडलवाल परमुख क्षत्री वर्ण छोड कर, न्याति वांधीछे ॥

मने आपणा मनमे वैस्य बरणमे ठहरेहे ॥ पिण चो
ा आरामे वैस्य बर्णमेथा, उसवर्णमे ठहरेतो ॥ अ
ाररराजासे उतपाति क्यो कहते हो अरु अगररा
जा क्षत्रीथा मो मांसा आहारीथा तुम वैस्य किस
ोतिस्युं कहोगे इण न्यायसे बर्णसे बिबर्ण थया ॥ शु
द्र आपणी जातिसे पूराहै तुम सुद्रके आहारकुं अ
जोग कहोतो जोग किसका कहोगे कदाचित् मांसा
आहारीका घरका आहारीना हीलणा कहोगे तो
मांसा आहारीने सिष्य करणा कैसे ठहरेगा पदम
पुराणमे राजा सिवदास मनुषका मुरदार मांस खाया
तथा पछे बालक मांस खाया ते पातर सुध किम थ
या तो मुनी पद किम पाम्यो ॥ ते मांसा आहारीने
सिख कीधोतो, मांसाहारीनो घरनो आहार किम
निषेध्यो ॥ पिण जे पात्रमें मांस रांधे ते पातरनो
आहार न लेवे, मांसना संघटा भणी न लेवो ॥ अ
हो भव्य सुध अनुभव बिचारनें कुलाभिमान छो
डिनें, बिचार करता उचितहै ॥ पुनः दिगांबरी कहे
स्वेतांबर घरघरकी भिक्षा करे है॥ उपाश्रय जकने कि
वाड जकने आहार करे ॥ तेहनो उत्तर, एछजो यह
वा अबोध जण, आपणा घर देख्या बिना मूरख
तासुं कहेछे ॥ जिसका परिमाण, मूलाचारमे जत्या
चार में ॥ आहारना ४६ दोष कह्याछे, सुबोधजण
बिचारस्ये, भामरके आहारमें अंतरायतो संभवेछे

पिण आधाकरमीयादी दोष नामरके आहारमें
किम संभवे, थापना उद्देसिक परमुख मिश्र जाति ए
दोष किणरीतिसें टले ॥ अने जाचना परीसह आ
लाभ परीसह किण रीतिसु होइ पिण मूलाचारने अ
नुस्वार घरघरकी भिक्षा संभवे, एक घरकी भि
क्षा मुनीनें संभवती नहीं अनें अभिग्रह पिण कोई
कोई घर घरनी भिष्या विना नहीं दीसेहे ॥ इतिश्री
यं॥ और दिगांबरी कहे छे स्वेतांबर सास्त्रमें मुनीजे व
स्त्र धारण करे छे ते वस्त्र परीग्रहछे ते माटे वस्त्र
धारीने पांच महा विरत न होइ सर्वथा परिग्रह
त्याग न थयो इम कहेछे ते अजाण दीसेछे, ते कि
म, परिसह २२ कह्या ते मांहि, पहिलो क्षुध्या परिस
ह ॥ अने छठा अचेल परिसह, ए दोय परिसह क
ह्या ॥ ते दोइ एक सरीखा विचारज्य, भोजन आ
छादन ॥ देह धारण भणी कह्याछे, पिण एकेक मूरख
पक्षना ग्राही एक आंखने मीचे, एक आंखने खो
ले ॥ तेहने जिन धरमनो लाभ किहार्थी थाइ तेहनो
इम विचार ॥ क्षुधा परिसह उपजे जद, सुधा आ
हार निमत्त गृहस्तना द्वारा पेखण करे ॥ अन्नादिक
३२ कवलका आहार लईजे, ते आहार परिग्रहमे
नगिणे ॥ अने अचेल परिसह थयां वस्त्रनी गवेष
णा करतो परिग्रहमें कहे, इसा कदाग्राही हठ ग्रा
ही जीवांने कहां लग गुरु समझावे ॥ बालबुद्धीनी

समझे भोजन थोमो परिग्रह वस्त्र अधिक परिग्रह साधुने थोडो तथा परिग्रह ॥ घणो नो त्यागछे. तब वादी कहेहै आहार परिग्रहमे नही ॥ एतो तेहनो आधारछे, तब सुधज्ञानी कहेछे ॥ भो भव्य जनों व स्त्र किस्यो मोक्ष कारणछे ए पिण देहनो आधा रछे, तद वादी कहे आहारनी मरजादा ३२ कवल नी छे तेहने कहिजे ॥ वस्त्रनी मरजादा परिमाणें कह्योछे, पछे कहे वस्त्रमे जूवादिक पमेतो अजय णा थाइ ॥ तेहने कहिजे, भोजनथी पेटमें चुरणादि पडेंतो अजेणा थाइ, तद वादी कहे वस्त्रनी ममता रक्षा करणी थाइ तेहने कहिज्ये भोजननी ममता बि ना गवेषणा किम करे इम उत्तर पडुत्तर घणाछे पि ण सुध मारगनी देह धारण भणी ॥ देहसुं धरम सा धन भणी तिमज वस्त्र देह धारण निमत्तछे सोतो परिग्रह नही कह्योछे ॥ आहार तथा वस्त्रनी मम ताछे सो परिग्रहछे ॥ मुर्छा परिग्गहो वुत्तो॥इति वच नात्, दोनोही पुदगलछे हेय पदार्थ छे निश्चेनय आ हार वस्त्र दोनोही त्यागवा जोग्यछे, पिण दोनोही देह धारवा भणी कह्या छे ॥ जिम माल क्रियाणानो भाडो, ते क्रियाणां ठिकाणे पहुंचावण भणी दीयेछे॥ तिमहीज भोजन आछादनछे, इम समके तो ॥ भो जन वस्त्र एक बातछे, भो भव्य कदाग्रह छोडी आत्मानु भव बिचारतां वस्त्र मरयाद बरती परि

गृहमें नथी अने भोजन पिण मरयाद वरती परिग्र
हमें नथी यह बातका अर्थ अनेकांत तथा निज प
र तथा कारण कारज निमित उपादान निश्चे बिव
हार अंतरंग बाह्य तत्वा तत्व इत्यादिक घणा बोल जि
न धरममें कह्याछे ॥ तेह बिचारयां सुधता थाइछे ॥क
दाग्रह रूढमतीथी न्यारो थाइ, हिवे दिगांबरी बारे कु
ल आहार १ चर्म निरमे २ तथा धोवणादि पाणी ले
वें जिसकी निंद्या करे ॥ अने चीनी खांड खांचीमे अ
नंत निगोद रास पड़े हे, नीच जाति मरदन करे पं
चेंद्रीयादी जीवाका पिण सरीर खांचीमे गलेहे ॥ क
लेवर पिण परतिक्ष खांडमें दीसेछे तथा सांभर लू
णकी उतपाति पिण देखता महा अपावनछे अनें क
दाचित दूध पिण कच्चा मांसथी उतपाति प्रत्यक्षछे
तेहनें तो खाणो गमे नही अने चाम नीरमे अनंता
दोस बतावे एहवा अबोध जणने गुरु समझावेतो
हठ झालीनें बचनाडंबरथी विषवाद झाले पिण क
दाग्रह न मूके ॥ हिवे दिगांबरी कहेछे स्वेतांबरना
दोस काढे ते इम श्री बीर उपसरग ॥१॥ श्री बीर गर्भ
प्रहार ॥२॥ श्री महावीरजीरी प्रथम वाणी निफल ॥३॥
चंद्र सूर्ज मूल विमाण गमण ॥ ४ ॥ चमर इंद्र नव
णपतीना इंद्र प्रथम देव लोके गया ॥ ५ ॥ मल्लीना
थ स्त्री लिंग तीर्थंकर ॥ ६ ॥ कृष्ण अमर कंका गमण
द्रोपदी पंच भरतारी ॥ ७ ॥ हरिवास क्षेत्रका युगली

या नरक बासी ॥ ८ ॥ उतकृष्ट अवगाहणाका धणी १०८ एक समें सीझें ॥ ९ ॥ सुवधनाथजीके सास नसें असंजतीकी पूजा हूई ॥ १० ॥ इत्यादि अछेरा स्वेतांबरी कहेछे, ऐसी अजोग बारता जिन सास्त्रामें है॥ इत्यादि कहीनें बोघा लोकानें नरमावे छे पिण तेहनो परमारथ समझे नही ओर आपणा आचारजीना बचनतो पूर्वा पर विरोध देखीनें कुहेतु काहि काहिने अनेक कुजुगति करिनें दिढावेछे, कीचक नरक मुक्त ॥ इत्यादिक पूर्वे कह्याछे ॥ और स्वेतांबराचार्य, अछेरा नमानता तो किस्यो पद अटके था॥ इम बिचारता तो, मतकलपनासे कह्या नही दीसे है तो किम जाणजे ॥ तेहनों ए बिचार करणों चाहिज्ये ए बोल आश्चर्य रूपछे॥ ते इमछे, अनंतज्ञानी श्री जिनराजनें॥ अतीतकालकी अनंत अवसर्प्पणी उतसर्प्पणी केवल ग्यानसें जाणें, केवल दरसणसें देख्या ॥ अनें ते काल चक्रका द्रव्य क्षेत्र काल नाव अनें काल चक्रका द्रव्य गुण परजाय सर्व देख्या, तिस कालचक्रका द्रव्य गुण परजायमें षट गुणी हानि वृद्धि देखी कालका नियत पिण अनेकांत स्वरूप कालका जाण्या देख्या॥ पछे बाणीका प्रकाश हूवा अमोघ धारासें बाणी प्रकासी, जद नव जीवा प्रतें॥ कालका नेद प्रकास्या॥ जैसे १२ महीनोंमे सीत उष्ण प्रमुख कालका प्रबरतनहोय ॥ तिस काल च

ऋका जुदा जुदा परबरतनहै, ऐसा स्वरूप काल
का अनंत रूप जाण्या देख्याछे ॥ जिस मध्ये १
हुंडा नाम अवसर्प्पणी आवेछे जिसमें, ए दस अ
श्चर्य नियमा होयछे ॥ ए नियत भावछे, हुंडा नाम अ
वसर्प्पणी आवेछे जद आश्चर्यकारी होइवानी नि
यमाछे, इसमें संदेह नहींहै पिण कूपका मींडक समु
द्रकी लहिर कांई जाणे दिगांबर मतना आचार्य
कुंदकुंदाचार्य स्वेतांबर धर्मसुं नीकल्या तिवारे जुदा
पक्ष थापण भणी, आश्चर्य रूप वात निषेध करी
पिण कुछतो लोकीक विरुद्ध जाणीने ॥ कुछ ग्यानकी
हीणतासे, बुद्धि बिस्तरी नही ॥ अरु गुरुके बचन उ
थापण भणी अपणी बुद्धिना अभिमानथी निषेध
स्वेतांबरकी करी ॥ प्राचीन ग्रंथामे निषेध करी, थो
डीसीतो पछे मत ग्राही ॥ जिन धर्मना अजाण, कदा
ग्रही सोधमती सरावग नाम कहाया ॥ छताने अ
धिक अधिक स्वेतांबर निषेधताईसे घणी बात नि
षेध करीछे ॥ पिण ए स्वरुप अणंत ज्ञानी ज्ञेय पदा
र्थ अणंत स्वरूप छद्मस्त मंद बुद्धी कांइ जाणे ॥
ए सांभलीनें सिष्य प्रश्न करेछे ॥ नियत भाव आ
श्चर्य होइतो अछेरा क्यो कहो॥इम पूछ्या गुरु उत्तर
कहेंछे अहो सिष्य ! प्रश्न भला कर्या ॥ इसका उत्तर
एहहै, कि जे वस्तु अनंता काल पछे होइहै इस का
रणे विवहार पक्षमें अश्चर्य कहणा पडेहे ॥ श्री जि

ने राजको मारग निश्चय बिबहार २ नय करी ने युक्तछे, बिबहार पक्षमें जिम कोई हजार बरसांप छे ॥ कारण होइ तिसकुं लौकीकमें, आश्चर्य कहेहै ॥ तिण न्यायसें अणंत काल पछे होइतो आश्चर्य क हुणा पडे, पिण कालकी परजाय नियत भावहे ॥ दि गांबरमती ऐसा ग्यान समझें नांहि, जिम ६३ सला का पुरष कोडा कोड सागर झाझेरामे नियत है, तिमज अनंत काल पछे हुंआ उतसर्प्पणी १० अछेरा नियत भावहे सो ए दिगांबरका आचार्यानें मत कलपनासे उठायाहे जिसमे कोई बैसनव सिव मतकी सरदहणा मिलाईहे ॥ सोधि तथा पद पर मुखका बणाय गांवणा, कुछ जातिका मद आपणा ऊं च पणा जाणीने ॥ अभिमानसे कुछ जिन धरमकी सरधा लई रात्रीभोजन त्याग, कंद मूल अभक्षका त्याग ॥ तीर्थंकर नाम पंच परमेष्टी स्मरण, इत्यादि क जिन धरमकी सरदहणलई कुछ मत कलपनासें मिलाया ॥ कुछ गुरुना द्वेषभणी गुरुके बचनांकी उथा पना कीधी ॥ इम दिगांबर मत श्री भगवानजीना निरवाणथी छसों नों ६०९ बरसां पछे थयो छे कोई कहेगो तुम कांई जाणो स्वेतांबरथी नीकल्यो, जिस को परिमाण प्रत्यक्ष दीसेछे दिगांबरना सास्त्रमे ठा म ठाम ॥ स्वेतांबर मतनो खंडन कीधोछे, अने स्वे तांबरना ४५ आगममें दिगांबर मतनो नामभी

दीसे नही, तिण परमाणसुं जणायछे ॥ स्वेतांबरथीं पछे वणाया प्रत्यक्षदीसे छे पहिलानी निंद्या पावला करे छे ते सुवोध जन होस्ये सो बिचारस्ये हठ ग्राही मत पक्षी कुजुक्तघणी वोलस्ये अने जो छदमस्त कृत ग्रंथ बहोतहे तिणमे न्युनाधिक बचन होइ तेह ना पक्ष न करणा ॥ सूत्र सो मिलें सो परिमाणछे अनें आगम ४५ मांहि जे परूपणाछे ते प्रमाणछे, सर्व ज्ञ भाखित बचनामें ॥ संदेह नाहि करणा सर्वज्ञ अ णंत नयात्मक ग्यानीछे तेहने किसो कार्ण जासुं बि प्रीत बचन बोलस्ये पिण जे भाख्यो ते सर्व सत्य छे जो कोई चतुर नर दीर्घ दृष्टीसु विचारे सो तत्व ग्यान पावे ॥ अरु जिन ग्रंथामे निंद्या करीहै नांम लेइने, अधिकी ओछी विप्रीत बात बहोतसीहै ॥ छ दमस्त रागद्वेषीयांका बणायाहै ॥ जिणकी आसता रूढमती, घणी राखेतो आपणने वीतरागना वचन किसीकी निंद्या नही ॥ आपणी असतुत नही धारा प्रवाह वचन जिसकी आसता विसेप रखणा उचित है सुणवा जोगहै॥ सुणवाथी समकित निरमल थाइ॥ इतिज्ञेयं ॥ हिवे-दिगांवरी कहे स्वेतांबर स्वप्न १४ मा ने १६ न माने एहनो उत्तर इमछे स्वप्न १४ कह्या छे पिण१६ न कह्या इणमें कुछ विसेस विरुध नही॥ ते किम ग्यारमें स्वप्न समुद्र देख्या ते मांहि मछ पि ण गरभितछे ॥ नारकसे तीर्थंकर आवे तेहनी माता,

नवणदेखे अनें बिमाणकथी तीर्थंकर आवे तेहनी मा
ता बिमाण देखे ॥ ते कारणें १४ कहेछे॥मछ पाणी
बिना देखवो मंगलीक नही इत्यादिक अनेक हेतु
जाणवा ॥ दिगांबरी कहे बाहूबळजीरो अवगाहना
५२५ धनुषकी कहे छे, पिण बिचारतां सास्त्रथी वि
प्रीत बचन दीसेछे ॥ ते किम पांचसे धनुष वालो मु
क्ति पहुंचे, तेहनी अवगाहना ३५९ धनुषनी चा
हिज्ये ॥ ते बिचारतां सास्त्र विप्रीत दीसेछे, बुद्धिमांन
होइसो बिचारी जो जो ॥ नगवान श्री महाबीरजीका
माता पिता नगवान दीक्षा लीया पहिली देवलोका
गए इस बातमें किसा धरमकी हानि थई ॥ ए किस्यो
विप्रीत पणो थयो दिगांबर कहे स्वेतांबरी सलाका६३
पुरसाने उर जुगलीयाने निहार माने ॥ इसी स्वेतांब
रनां सास्त्रमें बिरुधछे, इम कहे॥ तेहने पूछणो ॥ आ
हार होइतो निहार किम न होइ एतो प्रत्यक्ष प्रमा
णछे सलाका पुरषाने न कहोतो प्रत्यक्ष दीसेछ ॥ इ
तिज्ञेयं॥ दिगांबरी १६ स्वर्ग माने स्वेतांबरी १२ स्व
र्गमानें एहमेंतो मात्र बिरुधछे ॥ दिगांबर ८ जु
गना १६ कहे स्वेतांबर ४ जुग बिचला च्यारमें द
क्षिणोत्तर नेद नथी एक एकछे ॥ तिण न्याये १२
मानेछे ॥ इतिज्ञेयं ॥ स्वेतांबरी जादवानें मांस नक्षी
माने तेहनें दिगांबरी बिरुध कहे ॥ तेहनो परिमाण
सास्त्रथी जाणज्येछे नेमनाथजीरा ब्याहमे पशु पंखी

ना वाडा पिंजरा भरया तेहनें रूढमती थया कहे छे, कृष्णजी कपट करयो ॥ श्री नेमनाथजीने घरथी काढण भणी येहवो असुध वाक्य कहेछे ऐसा श्री कृष्ण वासुदेव जूध सूरा मरजादा पुरसोत्तम एहवो कपट करे ऐसो अन्याय बोलोछो ॥ और कृष्णजीनें सम्यक्त वंत कहोछो, बासकी मूल कपट करयो देवा णुप्रिया ॥ एहवो कह्या संसार भमण क्यौं बधावो छो॥स्वेतांबरीयारो जादवांसुं किसो द्वेषछे कूडो आल मांस भक्षणनो देइ ॥ तथा बीजो परमाण जादवानें कुमरे मद्य पांन पीधां द्विपायननें संतायो, एहमें पि ण कुहेतु लगायनें भोला जीवाने विप्रतारेंछे॥ तेहना कुबुद्धिना भूमाया कब सुगुरारो बचन मानस्ये ॥ का मदेव न मांने इस्यो कहेछे सो कामदेवकी स्वेतांबर उथापनाभी नही विसेप थापनाभी नही प्रकरणामें कामदेव मानेछे ॥ अनें नाभिराजा मोरादेवीनें जुग लीया न माने तेहनो प्रत्युत्तर विचारज्यो जिणारा व चनामे बंध नही कहेतो कहे॥ जुगला धरम श्री ऋष भदेवजी दूर करयो ॥ कदे कहे ऋषभदेवजी जन म्या पहिले जुगले पणो दूर थयो ए बिरुद्ध देखतां तो झूठा दीसेछे अने स्वेतांबरना ४५ आगममें मू ल पाठमे नाभराजा मोरादेवी, जुगलीया इसा अ क्षर किहांई दीसता नही ॥ पिण अनुमान, परिमा णसें बिचारतां ए कहेछे ॥ जुगला धरम ऋषभदेव

जी निवारयोछे ते प्रमाणथी जाणज्येछे ॥ तत्व केव
ली गम्यं॥ इणरो कुछ पक्ष नही ॥ तीर्थंकरको पांच
थावरकी हिंस्या नमानें सजोगी पिण कहे ए दिगांब
रनो सास्त्रछे जिम कोई गाहिलो बोले बोल्यानी पक्ष
नही तिम ए दीसें छे ॥ ते किम जोगछे ते व्यापारछे
संकंपमाणछे, ते सक्रियछे तेथी हिंस्या पिण छे
पिण ते हिंस्या तीरथंकरनें लागे अकरवाई
माटे सुध जोग थयो इरियावही क्रियाछे पिण
पाप नही ॥इतिज्ञेयं॥ दिगांबर अनारज देसमें भग
वान महावीरजी ते नमांने ते पिण भगवंतजीने तु
छ गिणता हुस्ये पिण हमतो भगवानजीने अनं
त बली जाणाछे कलपावतीत छे॥ ते माटे अनारज
देसमें विहार करवो असंभव नही करम क्षय निम
त कीधोछे ॥ तप पिण मोटो थयोछे, आहारना अ
लाभथी ॥ इति ज्ञेयं॥अनें तीर्थंकरजीके सरीरकुं दाग
इंद्रादि देइ ते नमांने, ते जिन मारगरा अजाणछे॥
ते कहें तीर्थंकरके सरीरका पुदगल खिरजाइ॥ ते बा
त विप्रीतछे तीर्थंकर भगवानका सरीर उदारीकछे ॥
परमौदारीकछे बज्रऋषभ नारायच संघेणछे तेहतो खि
रण स्वभाव नथी जे षिरणा कहे ॥ तेहनें पूछणो उ
दारीक, सरीरमें स्वयमेव षिरवानो गुणकिसा करम
नी पराकिरत छे तथा जीवनो गुणछे ते बतायो चाहि
ज्ये बेक्रिय स्वभावछे षिरणनो उदारीकनों स्वभाव

षिरवानो नही संघेण सहितछे ॥ बंधन संघातन स हितछे ते माटें सरीरनो षिरण स्वज्ञाव विरुद्धछे॥इति ज्ञेयं॥दिगांबरी कहे द्रव्य चारित्र विना मोक्ष नही इ म कहेछे, ते निजगुण परगुणना अजाणछे तेहनें इम पूछणो द्रव्य चारित्र स्वज्ञावछे तथा परस्वज्ञावछे स्व स्वज्ञाव कहोतो अज्ञव्यनें पिण द्रव्य चारित्र हो इछे तेहनें पिण स्व स्वज्ञावनो लाज्ञ कहो परस्वज्ञा व कहोतो मुक्त परस्वज्ञाव विना न होइ इम कहो, जिण मारगरा अजाण चारित्रना गुणनें कांइ सम झे मत पक्षना जूल्या द्वेष ज्ञाव लीया सुद्ध मार ग स्वेतांबरनें, निंदवा ज्ञणी कुबुद्धि लगावेछे॥चारित्र जोग ॥ रुंधण अकंप अवस्था आत्मीक गुणछे, चा रित्रावरणी करमना विक्षिसथी परगट थाइछे॥ ते नि श्चे चारित्र कहिज्येछे ॥ ते काल लबधथी जिम निस रग समक्तछे, तिमहीज चारित्र छे पिण जोलाजीव ॥ मिथ्यातनें काल लबधथी क्षय हुवा निसर्ग समकित कहेछे ॥ पिण चारित्रावरणी करमनें काल लब्धथी क्षयनथी कहता ते जूल्या जमेंछे ॥इती॥अनें दिगां बरी शुद्रनें दिक्षानें मोक्ष न मानें तेह जाति करम नें मुक्ति जाणेंछे ॥ अनें जिन मारगमें जाति करम सें मुक्ति नथी उंच जातादिकसें मोक्ष कहेंछे ते करम थी मोक्ष नथाय॥तेहनें समकित वमीछे ॥ केवल ज्ञा न वडोछे॥ दंसणपुव्विनाणं॥इति द्रव्य संग्रहजो॥इति॥

अनें क्रिया कोस परमुख ग्रंथामें निंद्या करीहै ॥ ढुं ढीया साधांकी मुहके मुहपती राखें ॥ सुद्रके घरका आहार गारिके भाजनके अणगल नीरका ॥ अण सोध्या आहार पानी दीनतासुं मांग ल्यावें ॥ अरु प वनादिक जीवाकी जतना करे॥ मुहपतीमें समुर्छम होय तिणकुं गिणें नही॥ दिगांबरी स्वेतांबरके साधा की इत्यादिक निंद्या घणी करे छे सो उत्तर ॥ जो मु हपती मुह आगे रहेसो मुखकी गरमाईके फरससें समुर्छम नही होय ॥ तेजस अगन अंतरसें मुख मां हि आवे है ॥ तिसकी सहायतासे समुर्छम नही हो य॥मुखपती सूत्रांमें रखणी चलीहे, भगवती उत्राध्ये नादिकमें पडेलहणादि विध सुद्ध करि रखतेंहे॥ सो ई समुर्छम नही होय॥जो कोई कहे समुर्छम होय है, तेह अजाण पणेंसे तथा मूर्खतासे तथा द्रेखसें कहे हे ॥ तिसके कहणेकुं सत्य नही समझनां जिनराजके वचनोमे संक्या नही करणी एहनी परिक्षा प्रत्यक्षहे॥ प्रथमतो वचननो बंध नही रह्यो ते किम जबानसे क हता दीसेछे ॥ ए साधू ढुंढीये तो तीनसे बरसांसे हु ये हे अने सास्त्रमे मुहपती सुद्र घरका आहार इत्या दि निंद्या करेछे पिण मूढमती समझे नही ढुंढीया साध तीनसे बरसांसे कहुं छुं तो अने क्रिया कोस प रमुख सास्त्र कहुंछुं तो॥जिस सास्त्रमें ढुंढीयारी निंद्या छे ते सास्त्र ढुंढीयां हूवा पछे बणायोछे निंदक मनुषो

ने ॥ रागी द्वेषीयानें निंद्या करीछे पिण ओगुणग्रा
ही मुहपती आदिकी निंद्यातो करे पिण तप जपका
गुण देखीने मुह मचकोडेहे॥ ते जीव जोषका सारीछे
जोष लोही पीवे पिण दूध नही पीवे ॥ तिम निंदक
ओगुण देखे पिण गुण न देखे ऐसा व्यामोही मूढ
मती अपणी आत्माने भारी करे छे अने मनमे जा
णे हम ग्यानीछे पिण ए ग्याननो फल लागरहे तब
घणोंही पछतावस्ये पिण अपणा अवगुण न देखे सु
द्रके घरका अणगल पाणी गारिके भाजनका आहार
पाणीकीं निंद्या करे पिण आप सोध राखेतो॥ गाय भै
सका दुध कच्चा मास मांहिंसुं झरया अने खांभकी खा
ची मांहसुं काढीनें मासका पिंडवत पचेंद्री आदि जि
वांका सरीरना पुदगल संजुक्त ओर गुरु नीचजात
बनावे सांभरलुंण असुध पुदगल सहित हींग चर्ममे
बंद होय इत्यादि ओमतातो सुद्रके घरका आहरकी
निंद्या करता तो यहभी गुण नही ॥ पिण जिणराजके
मारगमे दया प्रधान कहीछे ॥ दया राखीने सोध करे
तो उचितछे पिण दया खोयने सोध करे ते घणा सं
सार भमस्ये ढुंढीया साधु दया जल कायके जीवांकी
राखवा निमते सुद्रके घरका पाणी लेवेछे॥धरम पालने
के निमत ते विचारेनही तो जिण धरम कांई विचार
स्ये ॥ इती ॥ ओर तीर्थंकर भगवान १८ दोष
रहितछे १८ दोषांमे फेर पाडयोछे ते मत थापण

वास्ते पिण जो बुद्धिनो विस्तार करीने हृदयमे संभ
झेतो लब्धिसार क्षिपनसारमे दीर्घ उपियोग देता
इम विचारिए क्षुधा तृषा किस्या करमने उदेगइ॥
अने किसा करम खपायाथी लब्धि तीर्थंकरने थई॥
तृषा क्षुध्यानो उदय टल्यो ते विचारज्यो॥ इती॥ त
था दिगांबरी कहेछे स्वेतांबरी अगन पक्क कंदमूल
ना आहार करेछे ते अनक्षछे॥ ते विरुद्ध कहेछे॥ ते
दिगांबराम्नाका ग्रंथ मूलाचारनी॥ आणगार भावना
धिकारे नोमे समुद्दसे गाथा ५७॥ ५८॥फल कंदमूल
बीजं, आणग्गिपक्कंतुआमयंकिंचि॥ णच्चाअणिसणियं,
णविपय पडीछंतीधीरा॥ १॥ जंहवइअणिवीयं, णि
यट्टीमं फामुयंकयंचेव॥णाउणएसणीयं, तंभिखुमुणी
पडिछंती॥ २॥ इति पाठ॥ प्रासुक कंद मूल मुनि
ग्राह्य तथा घर घरकी भिक्षा मुनीने दिगांबरी निषे
ध॥ तेह विरुध कहेछे ते मूलाचार अणगार भावनां
नवमे समुद्दसे कह्याछे॥ अणादमणुणादं भिखं णि
चुच्चमाझ्मिम कुलेसु॥ घरपंतादिहिडंतीय मोणेणमुणी
समादिंति॥ १॥ सीदलमसीदलंवा सुक्कं लुखंसणिद्ध
सुद्धंवा॥ लोणिदम लोणिदवा भुजंती मुणीअणासा
द॥ गाथा ३६ मी ३७ मी॥ तेणेज ठामे गाथा ५०
मी ५१ मी॥ मुहणयणदंतधोयण, मुच्चट्टणपाद धो
यणंचेव॥ संबाहण परिमद्दण सरीर संठावणंसवं॥१॥ धु
वण वमण विरेयण, अंजण अभंगलेवणचेव॥ णंच्च र

विछियकम्मं, सिखेऊं अप्पणोसवं ॥ २ ॥ इति ॥

नवतत्वके नाम जीव तत्व १ अजीव तत्व२पुन तत्व ३पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ संवर तत्व६ निरजरा तत्व ७ बंध तत्व ८ मोक्ष तत्व ९॥अर्थ—जीव चेतन १ अजीव जढ २ पुन सुनकरम ३ पाप असुन करम ४ आश्रव कर्म आगमण ५ संवर करम रोकन ६ निर्जरा पूर्व करम सोसन ७ बंध सुना सुन करम बंधन ८ मोक्ष कर्मासें जुदाहोणा ॥ ९ ॥

पांचमहा विदेह क्षेत्रां माहिं२०जगवान जैवंता विच रेछे तिनोंके नाम॥श्रीसीमंदरस्वामी १ जुगमंदरस्वामी २ बाहुस्वामी ३ सुबाहुस्वामी ४ सुजातस्वामी ५ स्वयंप्रजुस्वामी ६ ऋषजानस्वामी ७ अनंतबीरस्वामी ८ सुरप्रजुस्वामी ९ बिसालस्वामी १० वजधरस्वामी ११ चंद्राननस्वामी १२ चंद्रबाहुस्वामी १३ श्रीजुजंगस्वामी १४ ईश्वरस्वामी १५ नेमीश्वरस्वामी १६ वीरसेनस्वामी १७ महाजद्रस्वामी १८ देवजसस्वामी १९ अजितवीरस्वामी २० ॥ इति ॥

॥ अथ परदेसीराय गुणस्तवन लिख्यते ॥

सुगुरुध्यान मनमें धरीजी, वंदू श्री वृद्धिमान॥ अमलकंपामे आवीयाजी, श्री जिन पुन परिमान॥ खिमावंत श्री जिन धर्म प्रधान॥१॥सुरियाज जुं सुर लोकथीजी, जावसहित हित आंन॥दरसनकर नाटक कीयोजी, जीतकलप परिमान ॥ खिमावंत श्री जिन

धर्म प्रधान॥२॥गोतम पूछें स्वामीनेंजी, कहे श्री भग
वान॥सेतंबकानगरी तणोजी, परदेसी राजान॥खिमा
वंत धन परदेसीराय॥ ३ ॥ सूरीकंता सुर कंतनेजी,
नारीपुत्र सुजांन॥चितनामें भाई तिहांजी, राजाका पर
धान ॥ खि० ॥ ४ ॥ अधरमी मिथ्यामतीजी, श्रद्धा
खोटीजांन॥जीव काया एकी कहेजो, नही परभवको मा
न ॥ खि० ॥ ५ ॥ सावत्थीमें एकदाजी, जितसत्रु नृ
प पास॥ भेट दई तिहां भेटीयाजी, चितकेशी हुलास
॥ खि० ॥६ ॥ बाराव्रत तिन धारकेजी, अर्ज करी पर
धान॥ सेतंबकामें लावीयाजी, परदेसीप्रतें आन॥खि०
॥ ७॥ जोडे अश्वनेअर्थमेंजी, देखोतेहनीचाल॥मंत्रीला
या बागमेंजी, बैठातबनृपाल ॥ खि०॥ ८ ॥ ह्मारावाग
इण रोकीयाजी, कथा कहे विख्यात॥चितप्रतें कहआ
वीयाजी, गुरकहीमननीबात॥खि०॥९॥पापीदादा नरक
सेजी, समझावे मुझ आय॥नारीलंपटबांधीयोजी, जिम न
ही भेजेराय ॥ खि० ॥१०॥नरेश्वर जुदा मान जीव का
या॥ए टेक ॥ दादी जो सुरलोकमेंजी, आई नहीं महारा
य॥ दुरगंध कारणजाणियेजी, नवा स्नेहलगाय॥ न०
॥ ११॥ कुंभीसेंजीव किमगयाजी जैसेंकुंटागार॥मांहि
थकीबाजातणोजी, निकलेसोरतिवार ॥ न० ॥ १२ ॥
कुंभीमें जी आवीयाजी, छिद्रनपडीयो कोय॥लोह तपा
व्यो अगनमेंजी ॥ अगनसमाई जोय ॥ न० ॥ १३ ॥
तरुण चलावे बाणनेंजी, बालजीवसबजाण ॥ तूटी ध

नुप न चलावेजी, बुद्धीबल नही ज्ञान ॥ न० ॥१४॥
तरुण वृद्धजो नारमेंजी, जो बलधारकहोय ॥ वींका
डोरी तूटतांजी.. तिमवृद्ध जीर्णजोय ॥ न० ॥ १५ ॥
कंठनींचि नरमारीयो, वध्यो न जंगो होय ॥वाय नरी
खालीकीयाजी, चामनाथडीजोय ॥ न० ॥ १६ ॥ दो
य खंडकर देखीयाजी, जीव नही मुनिराय ॥ अगनी
अरणी काठमेंजी, खंडनदीसे राय ॥ न० ॥१७॥ जी
व दिखावोकाढनेंजी, वायु न दीसे नूप ॥ गुरू लघू
ए केमबेजी, दीवे कैसो रूप ॥ न० ॥ जु० ॥ १८ ॥
जुदाजीवकायाकहीजी, श्रद्धाशुद्धवखान ॥ पिण जि
स बै जिमरहणदोजी, धर्मकठिन असमान ॥ न० ॥
॥१९ ॥ लोहवाणीनामारखाजी, मतहोवेनूपाल ॥ सु
णी विरत बारेंलीवेजी, जाण्या धर्मविशाल ॥ न० ॥
॥२०॥ राणी सुनटखजानमेंजी, चौथानागजु दांन, बे
लेबेलेंपारणाजी, जावजीवलगजाण ॥ न० ॥ २१ ॥
स्वार्थबिनराणी विषेजी, कहेकंवरसेवात॥ राजहुकमवर
तावीयेजी, करोपितानी घात॥खि०॥ध०॥२२॥मोनक
रीनें उठीयाजी, मानीनही तिणवात॥राणीमनचिंत्याथ
ईजी करुं रायनीघात ॥ खि० ॥२३ ॥ करजोमी म
स्तक नमीजी, मेहर करो महाराय॥ तेरवें वेलें पारणा
जी, मुझघरकीजेआय ॥ खि० ॥ २४ ॥ तालकुट नो
जन विषेंजी, करतांपांम्याजेद॥खिमा जाव मन धारकें
जी, नहीआण्यातिनखेद ॥ खि० ॥ २५ ॥ समतानावें

उठकेंजी, अथिरजान संसार॥ च्यार आहार त्यागेति हांजी, धारेसरणे चार ॥ खि० ॥ २६ ॥राणीद्रसनके मिसेजी, गलेअंगुठादीध॥सुधर्मासुरलोकमेंजी,जाईवासालीध ॥ खि० ॥ २७ ॥ रायप्रसेनीमें कह्याजी, श्री जिन बहु विस्तार॥ महा विदेहमें पामसीजी, मुक्तगापद्सार ॥ खि०॥ २८॥ विक्रम संवत जाणीयेजी, उन्नीसे पंचास ॥ शुक्क पक्ष त्रियोदसीजी, प्रथम आषाढजुमास ॥ खि०॥२९॥ यह गुनपरेदशीतनाजी, बम्सतमेंऋषराज ॥ज्ञावधरीनें बरण्याजी, पुर्णवंछितकाज ॥ खिमावंत धनपरदेसीराय॥ ३० ॥ ॥ इती परदेसीरायगुणस्तवन संपुर्ण ॥

॥ श्लोक ॥

॥ नमोह्नंगायतेगीतं ॥ नमोह्नंजस्मलेपनं ॥
॥ नमोह्नवनवासीच ॥ मोह्नंइंद्रीयनिग्रहं ॥१॥
॥ नमोह्नंभ्रमतेतीर्थं ॥ नमोह्नंनग्नमोनेषु ॥
॥ नमोह्नंकंदनक्षेण ॥ मोह्नंइंद्रीयनिग्रहं ॥ २

॥ छंद इंद्रवज्राव्रतम् कथ्यते ॥

येद्दष्टिदोषात्मतिविभ्रमाद्वा । यदिकिंचदुनं लखितम्ममयात्र ॥ तत्सर्वमार्य्यैपरिशोधनीयं । दोषोनदेयंखलुग्रंथकारम् ॥ १ ॥

इति श्री स्वामिजी ऋषराज ग्रंथ संग्रह करता सत्यार्थ सागरका धर्म्माचरन नाम प्रथमो ज्ञाग

॥ संपूर्णम् ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर ग्रंथस्य द्वितीय भाग प्रारंभः॥

॥ श्रीगुरु भ्योनमः ॥ अथ मंगलाचरणं ॥

॥ श्लोक ॥ अनुष्टुव् व्रतम्॥ प्रणम्यपरमं ज्योतिः । पंचापिपरमेष्टिनः ॥ दिक्षाज्ञानगुरूश्चापि । ममोपकृतिकारकान् ॥ १ ॥

छंद ॥ इंद्रवज्रा व्रतम ॥ श्रीवर्द्धमानस्यजिनेश्वरस्य । जयंतुसद्वाक्यसुधाप्रवाहः ॥ येपांश्रुतिस्पर्शनजप्रसते । भव्याभवेयुर्विमलात्मभासः ॥ २ ॥

छंद ॥वसन्ततिलका व्रतम् ॥ श्रीगौतमोगणधरः प्रकट प्रभावः । सल्लब्धिसिद्धिनिधिरंचितवाव प्रवंधः॥ ॥ विघ्नांधकारहरणेतरणेः प्रकासः । साहाय्यकृद्भवतुमे जिनबीरशिष्य ॥ ३ ॥

॥ अथ ग्रंथकी जमावट दोहे ५४ लिख्यते ॥

॥ सतगुरपय प्रणमीकरी, बंदुंश्रीब्रद्धिमान ॥ सत्यार्थसागरकहुं, विविध प्रश्नकोज्ञान ॥ १ ॥ बीरपछें चौसटबरस, केवलज्ञान न होय ॥ गयापाचमेंकालकी, बरतीआनसुजोय ॥ २ ॥बरसएकसोसत्तरें, पंचमथेवरभिचार॥ स्वामभद्रबाहुहुवा, चौदहपुर्वधार॥३॥ ॥ तिनकेंबारेंसु सही, हुई धरमकीहान ॥ कालपड्यो वारहबरस, जानेंसकलजहांन ॥ ४ ॥ सबदुनियाको सुख गयो, दुखव्याप्योअसमांन ॥ अन्नबिहुंनामानवी, तजेप्रानकुलकांन ॥ ५ ॥ भयंकारसंसारमें, वरत्योहाहाकार ॥ भुखेकलिपतदेखीये, पशुपंखीनरनार

॥ ६ ॥ तजीकंतकोकामनी, तजेकामनीकंत ॥ तजी मातसंतानको, तजीजातसावंत ॥ ७ ॥ ठगफासीगर चोरटा, लूटखोसधनखाय ॥ दुरभिक्षमहादुकालमें, नेमधरमसबजाय ॥ ८॥ उपसरगबनमे अतिहुवा, मनु खानरतिरजंच ॥ हिंसकहनेंसुसाधको, नरदईदयानरंच ॥ ९ ॥ तब श्रावग मिल येकठा, करी अरज अरदास ॥ बस्तीमें बासाबसो, तजो आज बनवास ॥ १० ॥ ॥ साधा समोबिचारीयो, पंचम कालकरूर ॥ तिनदिनसेंबस्तीबिषें, वसे साधसबदूर ॥ ११ ॥ असना दिक काजें मुनी, भमे बहुत बेरान ॥ भिक्षाचर दूख बहु दिये, लाठीलही निदान ॥ १२ ॥ पेटभरें बहु स्वांगधर, फिरजावे निजगेह ॥ ता कारन करबरतीया, सिथल अचारीतेह ॥ १३ ॥ सेंठा जरूकर बारना, आहार करे अणगार ॥ बाहिर उभा आरडें, करें कमीनपूकार ॥ १४ ॥ किनकिनसें कुरनाकरें, नही मुनिवर आचार ॥ भवर कराई भावसें, भोजन भगत अपार ॥ १५ ॥ कानें शब्दसुनां नही, जबलग करा आहार ॥ तब बिचार कर यहकीयो ॥ बाजाको ऊणकार ॥ १६ ॥ निज निज गंदे बिचरतां, करतां भूंमि बिहार ॥ जुदी जुदी सरधानसुं, जुदो जुदो व्यवहार ॥ १७ ॥ किरियाहीन जतीहुवा, आचारज मिलिपंच ॥ तबयह कीधीथापना, प्रतिमादरसणसंच ॥ ॥ १८ ॥ फिरपीछे पुजारची, मिले उपाधी आय ॥

रचना लीधी सुरतनी, समकित भाव दिखाय ॥१९॥ आश्रब परिग्रहद्वारमें, प्रतिमासुर कुलकर्म ॥ भोदुंभूले भर्ममे, जाणंया नही जिन धर्म ॥ २० ॥ तीर्थजात परू पणा, सिवपुर सुगम उपाय ॥ बिकलमती मानें नही, धर्म कर्म किम थाय ॥ २१ ॥ पूरवगया बिछेदसब, के थेवर बुधवंत ॥ बरस अस्सी नवसे गया, पुस्तक लिख्या सिद्धंत ॥ २२ ॥ आगमसब खंडित हुवा, र ह्या सुळपसा मूल, भूलचूक तामे बहुत, संसेमिटे न मूल ॥ २३ ॥ कुछतो अपनी उक्तसु, कुछ केवल बुध धार ॥ जोडमेल आगमकीया, करयो बहुत उपगार ॥ २४ ॥ पिण बिचारकीनोतिनें, स्याद वाद सरधा न ॥ येह जिन बानीमें सही, भेदकीयो परमान ॥ ॥ २५ ॥ गछ चौरासी जूजूवा, हुवा परसपर द्वेष ॥ कहुं कहाल्लग कुमतिको, जोरो भयो विशेष ॥ २६ ॥ कुगुर कुविद्याफोरवे, मंत्र जंत्र कर जेर ॥ करामात सुं बसकीया, राजापरजा घेर ॥ २७ ॥ आचारज कलि कालके, कुमती कुमत विचार ॥ कलपित बाता नवनवी, गूंथे ग्रंथ अपार ॥ २८ ॥ च्यारों विकथा र स कथा, पूजी पांच पुरांण ॥ लोकरीझावे रागसुं, चो पई ढाल वखांण ॥ २९ ॥ कुलगुरु जेम अजीवका, करे दरसनी जैन ॥ आगम तो बाचे नही, वाचे विकलकुवेंन ॥ ३० ॥ दान दिढावें देहरा, प्रतिमा पूजे हमेस ॥ दरसन करिकें जीमीये, यही कुगुर उपदेस

॥ ३१ ॥केईकरावे देहरा, केई बनावे बिंब॥ केई खनावें वावमी, केई लगावें अंब ॥ ३२ ॥ मदिरापानी देवता, देहरासरके द्वार ॥ देखो जैनी जायकें, सीसन मावें प्यार ॥ ३३ ॥ कंद मूल नोजन करें, नही करुना किरपाल ॥ रसित रसोई रोटीयां, यह महिमा कलिकाल ॥ ३४ ॥ करम करनकु सूरमा, रागद्वेषका जोर ॥ राग रुप रमनीरता, कलह कदाग्रह सोर ॥ ३५ ॥ गाफी बहिल घोमा घरें, जोडी पगां मंफार ॥ थया दरसनी करसनी, बनज करें व्योपार ॥ ३६ ॥ बासखेप देवन लग्या, पोशाला चटशाल ॥ वहिरें पूजें नावसुं ॥ नोनेजें नरथाल ॥ ३७ ॥ सागर साखारिखमती, कूडोकुटिलाचाल ॥ महाविरोधी बरतीया, बरते पंचमकाल ॥ ३८ ॥ दोई हजार गयाबरस, इनपरकाल व्यतीत ॥ नस्म ग्रह जब ऊतरयो, तब यह मिटी अनीत ॥ ३९ ॥ आगम किम परगट हूवा, किन बिधवरती नीत ॥ ते नाखुं बिगतायकें, सुनों धरमके मीत ॥ ४० ॥ इन अवसर पोसालीया, गढजालोर मंफार ॥ तारू पत्र जीरन हूवा, कुलगुर करे बिचार ॥ ४१ ॥ लोंको मुहतो तिहांबसै, अक्षर खरा सुबांच ॥ आगम सोप्या लिखनकुं, लिखे अर्थ सुखजाच ॥ ४२ ॥ ज्ञान अपूरव निरखीयो, जबलाग्यो चितनेह ॥ साधु श्रावग समकती, तिनका तो गुन एह ॥ ४३ ॥ ग्रंथ लिखुं बनाघरे, राखुं अपने पा

स ॥ जो एह आगम बिस्तरें, होय जैन प्रकास ॥
॥ ४४ ॥ यह बिचारकर जबतिनें, कुलगुरसें परपंच
बतीसे आगम सहु, गुप्तज्ञान गुणसंच ॥ ४५ ॥ बा
चे मुहतो मनरली, बारूकरे वखान ॥ लोकाटोली नि
रमली, लोक कहें इम बांन ॥ ४६ ॥ लोके लिखा
आगम नवा, घर भेज्या गुजरात ॥ फिर भेजा नागोर
में, बाचें बुध विख्यात ॥ ४७ ॥ सुनें ज्ञान चरचा
चतुर, धरम भरम मनलाय ॥ प्रतिमाको पूजे नही,
लोकानामधराय ॥ ४८ ॥ प्रतिमा आश्रवद्वारमें, लों
का करी उथाप ॥ थापी निर्जर भावना, कर संवरसु
जाप ॥ ४९ ॥ धरम सहित करनी करें, श्रावग संबरद्वा
र ॥ आश्रबतो तजिवो कह्यो, यह तुमकरो बिचार ॥
॥ ५० ॥ भग्यो भरम मिथ्यातको, जग्यो जेनको जो
र ॥ गुजराती गुजरातमे, नागोरी नागोर ॥ ५१ ॥
हीर रूप पंचायनी, चारतियां सुविसेस ॥ जागी जै
न तणी दशा, महिमादेश बिदेश ॥ ५२ ॥ लोका ऊ
ठा उमंगकें, थयो धरम उद्योत ॥ मूल धरम परगट
कीयो, आगम बल जगजोत ॥ ५३ ॥ आश्रवके था
नक सहु, किया निखेध तिवार ॥ संबरमारग मुकत
को, ताको कह्यो आचार ॥ ५४ ॥

वखाण--हिवे श्री भगवती सूत्रमध्ये सतग २० में उदे
शे ८में श्री भगवंत महावीर प्रतें गौतमस्वामीजीनें पु
छ्यो तुम पछें पूर्वांको ज्ञान कितनें कालतांई रहसी ॥

हे गोतम १ हजार वर्सतांई रहसी महावीरजी मोक्ष गयापछें १२ वर्षें गोतम मुक्त गया॥ वीर पछें २० वर्षें सूधर्मजी मुक्तहुये. वीरसें ६४ बरसें जंबुस्वामी मुक्त हुये. वीरसें ९८ वर्षें प्रनवा देवलोक गये बीरसें १७० वर्षें नद्रबाहु हुवा श्रीमहावीरसें २१४ बर्सें अव्यक्तवादी निन्हव हुवो ते सूत्र मानता नही वीरसें २१५ वर्षे थूलन्नद्रजी हुवा. वीरपछें २२० वर्षें सुन्यबादी चौथा निन्हव हुवा. वीरपछें २२८ वर्षें २ क्रियावादी पाचमो निन्हव हुवा ते एकसमें २ क्रिया लगे. वीरपछे ३३५ वर्षें प्रथम कालिकाचार्य हुवो. वीरसे ४५२ वर्षें दुजा कालिकाचार्य हुवा सरस्वती वहिन वालण हुवा. श्रीवीरसें ४७० वर्षें राजा वीर विक्रमादित्य हुवो॥ वीरपछे ४५४ वर्षें चलाचल निन्हव हुवो. वीरपछे ५८४ वर्षें बयरस्वामी हुवा वीरपछे ५८४ वर्षें च्यार साखा हुइ तेहनों बिस्तार कहेछें- १२ वरसनो तथा ७ वरसनो काल पड्यो तिवारे घणा साधू आचार्य हुंता तिण महापुरसाने संथारो करीने आपणा कार्य सार्‍यो मोटा मुनीस्वर थया ते तो दूकालमे डिग्या नही क्रिया थकी चुक्या नही आराधिक हुवा देवलोके गया आगमीये काले मुक्ती जासी केइएक कायर थया परीसा खम्या नही ते मोकला हुवा. केइएक महापुरस परदेसे उतर गया विहार करचा पाछे रह्या ते भ्रष्टथया खुध्याखमाय

नही सुझतो अन्न पाणी मिले नही कदाचित् मिले
तो भिक्षारी आगे अन्न पाणी आवे नही भेष
लिंगधारीथया साधूना गुणरहित थया असुझता
आहार लेणहार थया तिहां साधुने सुझतो आहार
पाणी मिले नही तिवारे सिदाणा साधु वृती भांजी
परीसा २२ खम्या जायनही तिवारे मोकला विशेष
पड्या संजमथी भांगा मंत्र जंत्र उषध भेषज कर
वा लाग्या इतने एक मोटा साहुकारने परवार घणो
बेटा बेटी बंधव जाति न्याति घणी अने धन घणो
पिण अन्न थोडोसो अन्न खावणवाला घणा द्रव्यदेवे
वरावरका तोही अन्न न मिले खातां खातां केहडे
अवसरे थोडोसो अन्न रह्यो तिवारे साहुकार
लाज्यो समरहती दीसे नही हीण दीनथया तिवारे
घरनी स्त्रीये कह्यो थोडसा अन्नसूं काम चलावो वली
स्त्रीबोली शेटजी अन्न खूटो तिवारे साहुकार कहे
खुणेखचूणे होयतो एकठोकरीने ते सोधीने तेराव करा
वो करावीने तेहमे विष घालीने पीलस्यां ऐसो विचार
कीधों तिवारे पछे स्त्री विप वाटछे एतलसमे लिंग
धारी साधु गुरुना मोकला आव्या तिवारे घरनो
धणी सेठबोल्यो थोडीसी रावडी विप बिना होवेतो द्यो.
थोडीसी वासणमे हुंती ते दीधी तिवारे साधु भेप
धारी बोल्या बाई तुमकांई वाटोछो समझो बाईकहे
स्वामी ग्रहीना काम पुरणा जोग्य नही जदसेठने

साधुयें कह्यो आ बाई काई बाटेछे तिवारे सेठकहे ह्मारे धनघणो पिण साधजी अन्न नही ते नणी विष पीसेछे. रावमे घाली पीयने सोइरहस्यां तदसाधुने यहबचन सुणीने दया उपनी सेठने कह्यो हुं गुराकने जावुंछुं एतले रावडीमे विषघालोमती सेठने मानी चेले गुरापासे जाई सर्व वातकही गुरु बोल्या चेला बेठ हुं जाउछुं गुरुआया जोतसने बलेकरी गुरु बोल्या सेठजी बातसाची कहो सेठजी कह्यो मरणो आयो दीसेछे जव गुरुकहें इतना मनुष आवारो मरोछो जो मे सर्वने उवारूं तो कांई देवो सेठ बोल्या जे क हस्यो ते देस्यूं जद गुरे कह्यो तुह्मारे बेटा घणाछे तिणा मांहिथी ४ बेटा हमने द्यो सेठने कह्यो थे कहो सो ठीकछे गुरे कह्यो थे दोहरा सोहरा दिन सात का ढो आजथी दिन ७ पछे धानना जिहाज आवसी देसमे सुकाल सुभिक्षहोसी चिंत्या मतिकरो दुकाल निकाल जासी सुकाल होसी साइजी वचन सुण्यो वचन प्रमाणकीधो सातमे दिन १ जिहाज आया सेठने ४ बेटा दीधा साधाने लोकमे सुख पाम्या ते पुत्रना नाम नगजी १ नगोदरजी २ नंदमती ३ वियज्ञधर ४ इणा नेषलीधो तिवारे शास्त्र नण्या गीतार्थ हुवा पछे साधु आव्या साधा कह्यो थे सुद्ध क्रीया करो पिण मान्या नही तिहांथी मत निकल्यो चारोंनाई गछ काढ्यो ४शाखा हुई चंद्रशाखा१ नागिंद्र

शाखा २ निवतशाखा ३ विद्याधरशाखा ४ इनशाखा ओसे पाहिले १२ वरसी तथा ७ वरसी काल पड्यो तिसके बाद यहशाखा निकली इए च्यारने आपणा आपणा मत जुदा जुदा चलाया जे भगवंतनी प्रतिमा करावी तिणां विचारयो जे आपणे भावे ते आवसी ते माटे घणो लाभ होसी तव श्रावग लिंग धारीयांना उपदेस सुणीने देहरा तथा चैत्याला उपाश्रे ठाम ठाम कराया आप आपणी गछ समुदाय बंधाणी आपआपणा श्रावग कीया तिणें आपणी पूजा करावे विशेष मोकला पड्या पछे शिवभुती आचार्यसे दिगांबर ६०९ वर्ष हूवा. श्रीवीर पछे ८८२ वर्ष चैतवासी हुवा धरमखाते देहरा मंडाणा श्री वीर पछे ९८० वर्ष पुस्तकारूढ लिखण की थई॥ गाथा॥ बल्लही पुरनयरे, देवद्दिप सुहसी साण संघेण॥ पुछे आगम लिहिया, नवसे असीयानु वीराउ॥१॥वल्लभपुर नगरने विषे तेकिम नवसे अस्सी वर्ष हुवा पछे देवद्दिआचार्य एकदा प्रस्तावे सुंठनो गांठियो कान उपर मेलो हुंतो ते विसर गयो काल अतिक्रम गया पछे याद आव्यो तद देवद्दिगणी विचारयो कांईक बुद्धि हीण हुवा ते माटे सूत्र सुखथी विसरसी तिहांथकी तिणे पुस्तक लिख्या आचारांगनो सातमो अध्येन महाप्रज्ञा नामे तेहना उदेशा १६ ते काई कारण जाणी दिवद्दी खिमासमण लिख्यो नही ते विछेद्यो॥ ए

तल्लालगें २७ पाटे सुद्ध मार्ग चाल्यो परंत बीच बी चमें औरऔर मत निकलते गये. तद पीछे दुकाल भारी पड्यो लिंगधारी साधु रह्या सिद्धांतना पाना हुंता ते भंडारमाहि राख्या पोताने छंदे जोड कीधी प्रकर्ण तथा चोपाई, छंद चाल, श्लोक, गाथा, काव्य, संस्कृतादि ग्रंथ तथा स्तोत्र सेत्रुंजो महात्म इम पो तानी अनेक मतनी कल्पना करी हिंस्या धर्म परु प्यो तथा गुरुअंग पूजा पोथीनी पूजा गौतम पड्घा खमासमण बहिरावे गुरुना सामेला करावे गाजा वाजासे नगरमे ले आवे पगपंडावे इत्यादि सूत्र विरु द्ध परुपणा करे तिवारे पछे १०८ वर्षे विद्यामंत्र लब्धि बिछेदगया वीर पछे ११३ वर्षे तिसरा कालिका र्यने पांचमथी चोथ थापी वीर पछे ११४ वर्षे पक्खी फेरी १४ थापी ॥ वीरसे १ हजार ८ वर्षे उप्रांत सर्व पु र्व बिछेद गया पोसाल मंडाणी वीरसे १४६४ वर्षे वडगछ हुवा ॥ ८४ ॥ श्री वीरसे १६२९ वर्षे पुनमीया गछ निकल्यो श्रीवीरसे १६५४ वर्षे आचलीया गछ निकल्यो वीर पछे १६७० वर्षे खरतर गछ निकल्यो. वीर पछे १७२० आगमीयागछ हुवा. वीर पछे १७५५ तप गछ हुवा. पोशाल थापी ॥ वीर पछे २०२३ वर्षे जिन मती लोंका हुवा ते किम हुवा ते कहेछे पुस्तक भं डार मांहिं हुता तद लोंके महुता श्रावग कारकुन दफतरी हुंतो एकदा प्रस्तावे उपाश्रे जतीया पासे

शाखा २ निवतशाखा ३ विद्याधरशाखा ४ इनशाखा
ओसे पाहिले १२ वरसी तथा ७ वरसी काल पड्यो
तिसके बाद यहशाखा निकली इण च्यारने आपणा
आपणा मत जुदा जुदा चलाया जे भगवंतनी प्रति
मा करावी तिणां बिचारयो जे आपणे भावे ते आ
वसी ते माटे घणो लाभ होसी तव श्रावग लिंग
धारीयांना उपदेस सुणीने देहरा तथा चैत्याला उपा
श्रे ठाम ठाम कराया आप आपणी गछ समुदाय बं
धाणी आपआपणा श्रावग कीया तिणें आपणी पू
जा करावे विशेष मोकला पड्या पछे शिवभुती आ
चार्यसे दिगांबर ६०९ वर्षें हूवा. श्रीवीर पछे ८८२ वर्षें
चैतवासी हुवा धरमखाते देहरा मंडाणा श्री वीर प
छे ९८० वर्षें पुस्तकांरूढ लिखण की थई॥ गाथा॥ वल्ल
ही पुरनयरे, देवद्दिप मुहसी साण संघेण॥ पुछे आगम
लिहिया, नवसे असीयानु बीराउ॥१॥वल्लभपुर नगरने
विषे तेकिम नवसे अस्सी वर्ष हुवा पछे देवद्दिआ
चार्य एकदा प्रस्तावे सुंठनो गांठियो कान उपर मे
लो हुंतो ते विसर गयो काल अतिक्रम गया पछे या
द आव्यो तद देवद्दिगाणी विचारयो कांईक बुद्धि
हीण हुवा ते माटे सूत्र मुखथी विसरसी तिहांथकी
तिणे पुस्तक लिख्या आचारांगनो सातमो अध्येन
महाप्रज्ञा नामे तेहना उदेशा १६ ते काई कारण
जाणी दिवद्दी खिमासमण लिख्यो नही ते बिछेद्यो॥ ए

माटे सुसता रहो तिवारे जतीजी बोल्या साहजी धर्म के काम मांहिं हिंस्या गिणवी नही तिवारे संघमन में बिचारयो जे लोंके मुहुते पासे सुण्योछे जे भेषधारी आणाचारी छहकायानी अनुकंपा रहित एहिज दीसेछे ते सेठ बोल्या थांकी इछाहो सो करो म्हेतो अवी चाला नही पछे ते जती पाछा गया. संघनें सिद्धांत सुणयासे वैराग उपनो ४५ जणसुं संजम लीधो संजती थया ते संवत १५३१ ते ॥ साधसरवो १ साधुनाणु २ साधनुणो ३साधजगनो ४ इत्यादी ४५ साधमिलिने दया धरम परुपवा लाग्या तिवारे घणे भवजीवा धरम आदरयो संजम पालता बिचरेछे भेषधारिया नाम दीधो ए लोंका मतीछे तिवारे कितराएक भेषधारी अनेक विध तप करवा लागा तिवारे लोका घणाथा ते इणारो कष्ट देखी सुसता पड्या अने तपा हुता तेहना श्रावग पूजारादि दया धरमना साधाने घणा उपसर्ग दीधा तिण महापुरषे परीसा सह्या तिवारे रुपजीसाह पाटणनो वासी बाणी सुणी दिक्षा लीधी ते रुपऋष थया ॥ लोंकाना पहिला पाट ॥१॥ तिवारे सुरतनो वासी जीवोसाह ते रुपऋख पासे ऋधि छोडी संजम लीधो ते जीवो ऋखीथयो इतरा लगे साध जाण तिवारे पछे थानक आहार पानी वस्त्र पात्रनी मर्याद लोपी दोष सेवण लाग्या. एतले आचार गोचरमे ढीला पड्या संवत १७०९ सुरतनो

वासीबहुरा बीरजी श्रीमाल लोंकामे कोमी धज तेह
नी बेटी फूला बाई तेहने पासें लवजीसाह सिद्धांत
घणा भणया लवजीने वैराग उपनो बहुराबीरजीनेरुपे
दीक्षानी आज्ञा मागी तिवारे ते कहिवा लाग्यो
तुमे लोंकाना गछमे दीक्षा लो तो आज्ञा दुं लवजी
साह ओसर विचारयो हिवडां अवसर एहवोहीज
छे इसो जाणीने लोंका गछमे दीक्षालीधी तिवारे बेर
जंघजी पासे घणा शास्त्र भणी पंडीत हुवा तिवारे
वर्ष २ पछे पोताना गुरु पासे पूछे स्वामी साधुनो
आचार सुध किमपले दसमी कालकको तरे तिवा
रे लवजी कह्यो भगवंरो मारग २१ हजार बरसता
ई चालसी ते माटे लोंका मांहिथी निकलो तो तुम
गुरु हुं शिष्य तिवारे बेरजंघजी बोल्या लोंका मा
हिसुं निकल्यो जाय नहीं तिवारे रुखलवजी गछ बो
सरावी नीसरया तेहने साथे रिखथोभणजी १ रूप
संखियोजी २ ए दो दीक्षा लीधी घणा गाम नगर वि
चरया तिवारे बीतराग धर्मनी परुपणा कीधी तिवारें
लोग घणा समजा तिवारे लोका ढुंढीयो नाम दीधो ति
वारे अमदाबादथी कालपुरनो वासी सोमजीसाह ते मध्ये
घणी सूर्जनी आतापना कीधी घणी ताढखमी तपका
उसगकीना घणा साधसाधवीनो परिवार हुवो. तेहनो
नाम हरि दासजी १ रूपपेमजी २ रुपकानोजी ३ रिप
गिरधरजी४ प्रमुख घणा जाणवा वैरजंघ जतीना ग

छथी नीकल्या अने कुवरजीना गछथी नीकल्या तहेनो नाम ऋखअमीपालजी १ ऋष श्रीपालजी २ ऋखधर्म सीजी ३ ऋषहरजी ४ रिषजीउजी ५ ऋषकरमणाजी ६ रिषगेटाहरजी ७ रिषकेशोजी ८ एतला महापुरुष गछ छोडी दीक्षा लीधी घणा जिन मार्ग दिपायो घणा परिवार थयो पछे टोला हुंता जायछे समर्थजी रिषधर्मदासजी गोधोजी इत्यादि और नागोरके दे समे सूत्र परकट कीये लुका नागोरी पार सिद्ध थया श्रीसदारंगजीरा आदेस लेई श्रीपुज्य मनोहरदास जी क्रिया उद्धार कीधो तपश्चरणकीधो मुनी खेतसी जी साथे तपकीधो श्रीमनोहरदासजी जाति सुरा णा नागोर वासी १ श्रीभागचंदजी जात ओसवाल सुराणा २ श्रीसीतारामजी जाति अग्रवाला नार नोलवासी ३ श्रीस्योरामदासजी जाति श्रीमाल दि लीके वासी ४ श्री हरजीमलजी ५ श्रीपरम पंडित रतनचंदजी ६ श्रीकुंवरसेन जात अग्रवाल अमी नगर वासी ७ तत् सिष्य ऋखराज बरतमान नामछे. अत्र कोई कहे हुं उत्कृष्टोछुं ते अपणे छंदे कहेछे अने भद्रबाहुस्वामी कहेछे रतन झांखा दी ठा ते चारित्र सर्व दोषीछे पिण अलप समणछे घ णा मुढछे.

॥ दोहा ॥ सकल करम अरी जीतके, सिद्ध हुये भगवान ॥ सो बंदु सिर नायके, केवल दरसन ग्यान

॥ १ ॥ आदि पंचनवसादि मिन, पवन आदि खट साज ॥ चंधकुमादिक च्यार मिल, चतुर वीस जिनराज ॥ २ ॥ वीतराग पद पायके, कीया धर्म उपदेश ॥ कुमति निवारन सुख करन, टाले सकल कलेस ॥ ३ ॥ जिन वाणी जयवंत है, कारण जग उद्धार ॥ जो नर श्रद्धे भावसुं, ते उतरे भव पार ॥ ४ ॥

वखाण--- श्री जिन राज देवने मोक्ष मारगका रस्ता दया धर्मादिकका कह्याहे परंत इस पाचमे आरेके परभावसे तत्व ज्ञानका समझना महा कठिनहे लेकिन जो हलकरमी जीवहे तेह धरमकी परिक्षा करेहें अगर जिन पुरषोकी संसारमें करम परकिरत बहुत ज्यादेहे तो उनको वीतराग देवके वचन अछे मालुम नही होते सो क्या करिये संसारमें भ्रमणाके कारणे करी जिन वचनको मिथ्या करतेहे याने झूठे करतेहे आतमके उद्धार करनेका जो रस्ताहे जिसते भूल रहेहै और धरमकी परिक्षाभी नही करतेहें मत कल्पनाके बधारणे वास्ते अनेक कुहेतु लगातेहे संसारके रुलनेका जिनको भय नहीहे और अज्ञानी जीवोको भरमातेहे आपणे मनमे कितनेक जैन मतके धारीयो कहतेहे कि हमारा धर्म सच्चाहे परंतु यों नही समझते कि धर्म किसकुं कहतेहे और क्या महिमा धरमकी है सो रहस सूचांकी नही समझते और हिंरदामे धरमकी दिढावणा

करतेहे परंत दयाका भेद नही जानते और छहकायाकुं हणकर यानें हिंस्या करिके धर्मका लाभ कहतेहे औ र हिंस्याका दोष नही समझते तिनको जैन मती न कहिए ॥ क्योंकि जैन धरमतो जतन करे जीवोंका तिनको जैनी कहतेहे और जैनी नाम धरायेसे जी वकी कुछ गरज नही सरती इस वास्ते जो लोग जैन धरमी नाममे वहोतसे आरंभ हिंस्या छह कायाकी करकें मोक्ष मारगका खाता कहतेहे सो तिनोंके पूछनेके लीये यह प्रश्नोका संग्रह लिखतेहे और जो कितनेक सकस यों कहतेहे कि हमारे सा थ चरचा करो सो तिन लोगोंके वास्ते पूछनेके सू त्रोंके अनुस्वार धरम मारगका भेद कहतेहे और हम कुछ मत पक्षकी वार्ता नही कहते फक्त हिंस्या का मारग दूर करनेको सूत्र पाटके साक्षसे दया ध रमका भेद परगट करतेहे वास्ते जो किसी साधू श्रावकोंके दिलमे संदेह नही पडे जों की दीपककी रोसनीसे मकानके बीच चांदणा होताहे ऐसेही इस प्रश्नोत्तर संग्रहके पढनेसे और धारणेसे मिथ्यात अं धेरको दूर करता यह ग्रंथकी वचानिकाहे ॥ हिवे सिद्धांत सूत्र प्रमाण करी दया धरमपर सिद्धका लक्षण कहतेहे ॥

॥ दोहा ॥ बीतराग उपदेशमे, दया धरम परधान ॥ जो धारे मन सुद्धसुं, ते पावें सिवथान ॥ १ ॥

वखण-- हिवे कितनेक बादी यों कहतेहे की तुम सूत्र ३२ मानतेहो सो सूत्र तो ८४ कहेहें तिनो का इहां जुवाब देनेके वास्ते असली और नकली सूत्रोंका सरधांन लिखतेहे सो लंबी बुद्धिसें समझना चाहिये धर्ममे पहिचान करणी जोगहे लेकिन वाद करना जोग नहीहे सो आगम तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागम्मे अत्थागम्मे तदुनुयागम्मे इति वचनात सूत्र मूल पाठ १ तस्य तेह सूत्रका अर्थ २ याने खुलासा किया वास्ते भव जीवांके समझावनेके तिसको अर्थ कहतेहे उभयागम्मे याने सूत्र पाठ दोनोंका प्रकाशक ३ तेह आगम तीन प्रकारका कह्या श्री जिनराज देवांने तेह मांहि अब पांचमा आरामांहि कितनेही आचार्य ३२ सूत्रकी आम्ना को मानतेहे और कितनेही आचार्य ४५ सूत्र मानतेहे कितनेही आचार्य ७२ सूत्र मानतेहे कितनेही आचार्य ८१ सूत्र मानतेहे कितनेही आचार्य ८४ सूत्र मानतेहे तेहनो निरणय करणो जोग्यहे तेह नंदी सूत्रमे जो सूत्रांके नाम कहेहे ते नाम कहतेहे दसवै कालक १ कप्पिया कप्पियं २ चूलकलप सूत्र ३ महा कलपसूत्र ४ उववाई ५ राय प्रसेनी ६ जीवाभिगम ७ पन्नवणा ८ महा पन्नवणा ९ पमाय पमायं १० नंदी ११ अणुजोगद्वार १२ देविंदथुई १३ तंदुलवयालीया १४ चंदाविजया १५ सुरप

न्नती १६ मंफ्ल प्रवेस १७ पोरसी १८ विज्जाचरण विणिथेय १९ गणिबिज्जा २० झाणबिन्नती २१ मरण बिन्नत्ती २२ आतमबिसोही २३ वैराग सूत्र २४ संलेखणा सूत्र २५ विवहार कल्प २६ चरण बिधी २७ आउरपचखाण २८ महापचखाण २९ येह सूत्र उतकालिक कहातेहे और इनकी आसिझाई टालिके आठ प्रहर पढणे कहेहे ॥ अब ३० सूत्र कालिक तेहना नाम लिख्यतेहे ते उत्राध्येन १ दसा श्रुतस्कंध २ बृहत्कल्प ३ बिविहार ४ नसीत ५ महानसीत ६ ऋषभाषित ७ जंबूदीप पन्नती ८ द्वीवसागर पन्नती ९ खुडियापमाणएबिन्नती १० मह्लिया बिमाण एबिन्नात्ति ११ अंगचूलीया १२ बंगचूलीया १३ बिबाहचूलीया १४ अरुणोववाई १५ वरुणोववाई १६ गुरुलोववाई १७ धरणोववाई १८ वेसमणोववाई १९ बेलंधरोववाई २० देविंदोववाई २१ उठाणसूयं २२ समुठाणसूयं २३ नागपरियावणिया २४ निरावलीया २५ कप्पिया २६ कप्पवडिंसया २७ पुप्फिया २८ पुप्फचूलीया २९ बन्हिदसा ३० यह ३० सूत्रकालिककहातेहे दिन रात्रीका पहिला चउथा पहिर बांचना करणी ॥ एह सरब सूत्र ५९ एक आवस्यक एह ६० और आचारांगादिक १२ अंग ॥ आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३ सामायांग ४ भगवती ५ गिनाता ६ उवासगदसा ७ अंतग

६ ८ अनुत्रोववाई ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक ११ दिष्टिवाद १२ एहं ७२ सूत्र और पांच सूत्रांना नाम विवहारमध्येछे एवं ७७ सूत्र और १० सूत्रों का नाम ठाणांगमध्येछे ते १० दसमांहिं छहलो ७७ मे आयेहैं बाकीचाररह्या तेह ७७ मांहिं मिलावता ८१ थया तेह ८१ सूत्रोका नाम सूत्रामें कह्याहै तेह पर माणछे तिणमांहिथी कितनेक सूत्र विछेदगया याने इसवक्तमें वे सूत्र हैं नही और कितनेक लोग ४५ सूत्र मानतेहे तिणसूत्रामांहिं देविंद थूवो १ तंदुल वयालियो २ गणि विक ३ मरण विभती ४ आ उरपचखाण ५ महापचखाण ६ महानसीत ७ एह ७ सात सूत्र नंदीमें कहेहें तेह सत्यछे लेकिन इन मांहिं इतनी संक्यापडतीहै की तेह मूलसूत्र पाहिले नही मालुम पडते अगर कोईकहे तुमको क्या प हिचानहै जो तुम मुल सूत्र इन ७ सातोंको नही समझते अगर इसतरे जो कोई वादी कहे तो ति सको जुवाव देनेके वास्ते शास्त्रकी रीतिसें लिख्य तेहैं जो महा नसीत नंदीजीमे नाम लिखाहै अगर अ वजो वरतमान कालमें महानसीत जो सूत्रहै तिस के चउथे अध्येनमे ऐसा लिख्याहै तेह पाठ लियते हे ॥ पुठिअंवा पुठिअद्धंवा सिलोयंवा सिलोयअद्धंवा अक्खरपातियावावे तीन पन्नगाणि सिंडियवा ॥ ऐसा कहिके पीछे कह्याहै ॥ कुलीयो दोसोनादायवो ॥इम क

हुयाहै जो इण सूत्रमे हीण अधिक लिख्या होय तो हमको दोस नही यह बचन तीर्थंकर तथा मूल सूत्र करता गणधर तिणका कह्या हुवा नही क्योंकि ग णधरजी ऐसा सद्ध नही कहे जस बिचार कर दे खो यह पाठ किसका कह्या हुयाहै सो ८ आचार्योंका की या हुया महानसीतहै तिनके नाम यहै हरिभद्र १ सिद्धसेन २ दिवाकर ३ बुद्धीवादी ४ यषसेन ५ दे व गुप्ती ६ यशोधर ७ रविगुप्ती ८ इतने आचार्यो के नामसें नवा वणाया दीसेहै इसपर कितनेक मत पक्षी ऐसा कहतेहैं की महानसीथ सूत्र अंग उपां गोंसेंभी पुराणाहै सो अंग उपांगोंसें पुराणायानें पहिला कैसेंहै॥ तिससूत्रके अध्ययन तिसरेका पाठ॥ तत्थबहू एहिंसुयहरेहिं संमिलिउणसंगोवग दुवालसंगाउ सूय समुद्दाउ अन्नमन्न अंगाउ वंग्गसूय स्कंध असयणुह सगाणं सुमुच्चिउणं किंचि किंचि संबज्झमाणं एछिलि हियं तिणिउण सकवकयति॥ अर्थ:--॥ बहुत आचा यौनें मिलकर पूर्वले १२ अंग सूत्ररुप सागरमेसें थोडे थोडे अंग उपांगादि सूत्र नये लिखने लायक पुस्त कोमें लिखेहे एतले अबके समयमें जो श्रुतज्ञान रुप सूत्र मोजूदहे॥ तो इस पाठमें मालुम होता है की अंगादि सूत्र पहिले रचे हुयेहे और महान सीथ सूत्र पीछेका रचा हुआहे जो इस पाठमे ऐसा पाठहे तो पहिले सूत्र अंगादिकहें पीछे महान

सोथेह इस वास्ते निश्चे नही मानते इस सूत्रको ऐ
सेही ओर सूत्रभी घणे नवे वणाये मालुम होतेहे
और कितनेक आचार्य ४५ मानतेहे जिसमे सात
तो पहिले लिखआयेहे ओर ६ सूत्र ओर लिख्यते
हे चउसरण १ भत्तपईन्ना २ चंदाविज्जा ३ संथारप
ईन्ना ४ जीतकल्प ५ पिंडनिरयुक्ति ६ इण छहो सू
त्रोका नामतो सूत्र नंदीमे नहीहे तो यह ग्रंथ कि
सने बणायेहे इसका जवाव देना चाहिये तो यह
सूत्र किसतरे मानें जिनका नामभी कही कह्यानही
सो इनके बनाने वाले आचार्य पांचवे आरेके जाण
पडतेहे क्योंकि पहिले वक्तोंके यह सूत्र होते तो नंदी
आदिक सूत्रोंमे नाम दरज होता इस वास्ते नवे
जोडे हुयेहे अगर जो कितनेक लोग ४५ सूत्र मा
नतेहैं ते मांहिं कितनेक ७२ सूत्र मानते हो तो ३२
सूत्रोंसे बाहिर और ७२ के भितर महानसीत ना
मां सूत्रमे पांचवां अध्येन नवनीत सार नांमे क्यों
नही मानतेहो तिसमांहिं देहरा प्रतिमा धूपदीप क
रवाका उपदेतां जो साधू संसार वढावे और संज
मका भिष्टाचारी कह्याहे इस पाठको क्यों नही मान
ते इसका जवाव कागजपे लिखदेना चाहिये ज्यू हम
लोगोंकी तस्सल्लीहोवे और जीतकल्पका नाम नंदी
सूत्रमें नहीहे यह सूत्रकहांसें आया और किसने व
नायाहे ॥ और वृतिचूर्ण तो अब वरतमान काल

के आरे पांचमे बणाएहे तेह टीकादिकके करणहा र तिनोके नाम टीका वगेरे मांहिं दरज़हे तेह आ चारांग सूयगडांगजीकी टीका सीलांग आचार्यने क रीहे बाकी नव जो अंग सूत्रोंकी टीका ठाणांगादिककी टीका वृति अभैदेव सूरीजीनें बणाईहे नंदीजी अ णुजोगद्वारकी टीका मलियागिरी आचार्यने करीहे और दसमीकालककी टीका हरीभद्र सूरीनें करीहे औरभी घणे आचार्योंनें टीकाचूर्णभास नियुक्ती आ दिक अपणी अपणी बुद्धि प्रमाणे करीहे लेकिन उ नोंनेंभी खुलासा कह्याहे इस पाठका अरथमें इस माफिक कराहे और कोई आचार्योंनें और तरह क राहे कोई इस माफिक करतेहे इस माफिक कराहे निश्चेज्ञानी सकारे सो तहत अपणे करे हुये अर थांकुं निश्चे नही करा ज्ञानी महाराजके वचनोको सत्यकर माने और अपणे छदमस्त पणाका अरथां कुं निश्चे नही कह्या और मूल पाठकुं निश्चे परिमा णकरा इस माफिक जैसा टीकाकारजीने कहा तैसा ही हम लोग कहतेहे जिसवक्त अभैदेवजीनें टीका करी तव तो पूर्वांका ग्यान विछेद गयेकुं ३०० व रस आसरे हो चुकेथे सूत्र भगोतीका मूल पाठहे भगवान मुक्त पधारे पीछे १ हजार वर्ष वीत जावें जब पूर्वांका ज्ञान विछेद जावेगा खुलासा देखलेना अभैदेव सूरीजी १२९९ वर्ष आसरे पीछे हुयेहे

लेकिन उनोंने तो साफ खुलासा सूत्र भगवती ठा णागमे कहदीया निश्चे केवली सकारे सो खरा जो उगा अधिका कह्या होयतो मिछामि दुकडं और अबकितनेक लोग इनके करे हुये अर्थोंकुं निश्चे केव ली सरीखे वचन माने है वो किसके आधारसें निश्च य मानेहें फकत अपने मनकी लहिर करतेहे लेकि न उनकूं कुछ शास्त्रका आधार नहीहे इस वास्ते टीकाकारकी और केवलिजी महाराजकी दोनोकी आ सातना करतेहे और हम लोगोंका और टीकाका रजीका एक सरीखा समाधानहे उनोने मूलसूत्रोंकुं तो निश्चय रक्खाहे और अरथकरा जिस्कुं कह्या में छदमस्तहुं मेरी अलप बुद्धी माफिक अर्थ कराहे ऐसा कह्या लेकिन निश्चे सर्वज्ञ वचन प्रमाण कीये हे इसतरे नवे नवे औरभी शास्त्र वहोतसे बणायेहे इनके उप्रांत अनेक चरित्र ग्रंथ नवे नवे जोड़ कर परसिद्ध करेहे तेह शास्त्रोमें जो उपदेश रुप वार्ता आत्मका कल्याण कारक जो कहीहे उनकुं हम लो ग परिमाण करतेहे लेकिन आरंभ हिंस्यादिककी वा रता परिमाण नही कर सकते जो जिन आज्ञा बा हिर वचनहै और छद्मस्त जीवोको पक्षपात मत का अधिक होताहे तत्वज्ञानके समझने वाले थोडे जीव होतेहे तिसवास्ते जो सूत्रासें मिलते वचन त था उपदेशादि वारता सर्व प्रमाणहे जो सूत्रोंकी अ

पेक्षा आचार्योंने रखीहै वह बहुश्रुतीयोंसे जाण प
डतीहै और जो सूत्रोंमे श्रावग श्राविकाओंके ना
म अथवा जिनभक्तिकारक राजाओंके नाम और
उनके लक्षण धर्म और भक्तिके करणे का जो
अधिकार थाने समास सूत्रोंमे कह्याहै तिनके मुता
बिक लिखतेहै की देखो उनोंने कही मंदिर नही बणा
या और पहाड पर्वतोकी जात्राभी नही करी और फू
लादिकके चढानेकी कही रीत कही नही है सो कि
तनेक बादी यों कहतेहै की जगे जगे पूजाका कर
णा फरमायाहै सो अब हम उनोंके वास्ते पूजनेके
लिये सूत्रोंमें देखकर श्रावग श्राविकाओंके नाम
और उनका धर्म और गुणोका समास लिखतेहैं अ
वलतो आचारांग सूत्रमें सिद्धार्थ राजा १ और
त्रिसलाराणी २ सूयगडांगे लेपनामें ३ ठाणांगमे
सुलसा ४ और भगवतीमे सुदरसनसेठ ५ ऋषभद्र
पुत्र ६ संखजी ७ पोखली ८ उदाईराजा ९ अ
भीचकुंमार १० कारतिकसेठ ११ मंडुक श्रावग १२
सोमिलब्राह्मण १३ बरणनागनतुओ १४ और गि
नाताजी सूत्रमें सेलग राजा १५ पंथकपरमुख ५०
परधान १६ सुदरसणी श्राविका १७ अरणकश्राव
क १८ कुंभराजा १९ प्रभावतीराणी २० जितसत्रुरा
जा २१ सुबुद्धी परधान २२ नंदनमणीयार २३ तेत
लीपुत्र २४ कनकध्वज राजा २५ पुंडरीकराजा २६

उवासगदशा सूत्रमें १० श्रावक कहेहे ते लिख्यते आणंद १ कामदेव २ चूलणी पिया ३ सुरादेव ४ चूलसतक ५ कुंडकोलीया ६ सिकमालपुत्र ७ महा सतक ८ नंदणी पिता ९ सालणी पिता १० ओ र अंतगढ सूत्रमें सुदरण श्रावक १ विपाकमांहिं सु बाहु कुमार २ भद्रनंदी कुमार ३ सुजात कुमार ४ सुवास कुमार ५ जिणदास कुमार ६ वेसमण कुमार ७ महाबल कुमार ८ भद्रनंदी कुमार ९ महाभद्र कुमार १० वरदत्त कुमार ११ ओर उव वाई सूत्रमें अंबड श्रावकजी १ ओर ७०० अंब डजीकाशिष्य कहे रायप्रसेणीमें रायप्रदेसी १ ओर चितसारथी २ जंबूद्वीप पन्नतीमे श्रेअंसश्राविका नि रावलिका सूत्रमें सोमिल ब्राह्मण निखढकुमार १ अनिवेह कुमार २ वेहल कुमार ३ परिकिरती कुमार ४ जुतिकुमार ५ दसरथकुमार ६ द्रढरथ कुमार ७ महाधनुकुमार ८ सतधनुकुमार ९ दिढ रथकुमार १० अथवा सिवा नंदा श्राविका १ भद्र रा २ स्यामा ३ धन्ना ४ बहुला ५ पुंसा ६ अ गीमित्रा ७ असणिका ८ फलगुनी गिनातामें पो टिला १० उत्राध्येनमें समुद्र पालक निरावलकामें सुभद्रा ११ भगवतीमें उतपला १२ जयंती १३ मृगावती १४ आचारांगमें त्रिसला १५ इत्यादि व गेरे घणेही श्रावक श्राविकाओंका अधिकार सानें

बयान बहोतसा कीयाहे ओर राजग्रहीनगरी चंपान
गरी द्वारकानगरी आलंभीयानगरी सावत्थी न
गरी वाणीयगांम हथणापुर तुंगीयानगरी इत्यादि
क नगरीयोंमे भगवंत श्री महावीरजी बिचरयाहैं औ
र गणधर आचार्जोंने नगरी कोट किला खाई दर
वाजा बाग बाडी ओर जलपूरणभद्र इत्यादिकोंका
वर्णनकीयाहै ओर तीर्थंकरोके समोसर्णकाभी अधि
कार बर्णन कीया. परंत जिन मंदिरका बयांन अथवा प
रतिष्टा अथवा पूजा ऐसा बयांन तो किसी नगरमें
नही कीया ओर घणेही राजे भगवान महाराजके द
रसण करणकुं गयेहें लेकिन सचित फूलादिक कही
किसीनें चढाये नही ओर मंदिर बणाया नही अग
र जो कही श्रावकोने मंदिर बणाया होयतो इस प्र
श्नका जबाव देना जोग्यहै ओर राजा भरतजी १
बाहुबल २ श्रीअंसकुमार ३ कृष्ण वासुदेव ४
श्रेणकराजा ५ कोंणकराजा ६ ब्रह्मदत्त चक्रबर्ते ७ इ
त्यादिक घणे राजा धरमके परभाविक हुवा धर्मके
कराणे वाले हुये धरमके साहज देणे वाले हुये या
नें धरमकी दलाली कराणे वाले श्रीकृष्ण महाराज
हुये और कितनेक राजा ओर श्रावकोनें साधुवा
को थानककी आज्ञादई कितनेही राजाओंनें अ
न्नपाणी खादिम सादिम वगैरे १४ प्रकारका दान
दीयाहे ओर पोसह सामायक आदिक बहुत धरम

ध्यान कीयाहे अगर जिहां कही संदेह पमा तिहांही प्रथम धर्म चर्चाके पूछेहें ओर धरम ध्यानकरणेकी पोषद साला राजा ओर श्रावकोकी कहीहे परंत ध न खरचकर देहरा करणा तथा संघका काढणा त था प्रतिमाका कराणा अथवा पूजणा ओर नम स्कारका करणा प्रतिमांकुं ओर परवतांकी जात्रा क रणा इत्यादिकका लाज सूत्रोंमें कही नही ओर इन बातोमे मोक्षका कारणभी नही कही कह्याहे ओर करम निर्जराभी नही कही अगर जो कही अस्स ल सिद्धांत सूत्रमे भगवान वा केवली महाराजोनें फ रमाई होई जात्रा परवतोंकी ओर पुष्पादिकोकी पू जा करिके किसी राजा अथवा श्रावगने करी होतो इस प्रश्नका जुवाव सूत्राके परमाण यानें साखसे दे ना चाहिये अगर कितनेक लोग इस प्रश्नपर ऐसा कहतेहे की तुम जो पूजामे अथवा जात्रा करणेमें हिंस्या बतातेहो तो देखो सूत्रामे पहिले हिंस्याकरी पीछे धर्ममें समजाया सुबुद्धी दीवानजीने अपणे रा जाकुं द्रह बावडीको पांनी समारनेकी कितनी हिं स्या हुई ऐसे कितनेही प्रश्नहे ऐसेंही जो हम पूजा आदिक करतेहैं सो वास्ते धरमके करतेहें सो पाप क्षय होतेहे ऐसा जो कोई वचन इहा कहेतो तिस को जुवाव देनेके प्रश्न लिखतेहे अगर जो देखो सु बुद्धी दीवानजीनें द्रह बावमीका पानी समराया सो

वह श्री महाराजका उपदेशका पाठ आज्ञाका नही
है वह तो उसकी अभिंतर यानें अंदर बुद्धीके परमा
वसें पाणीकों सुद्धकीया परंतु श्री महाराज तीर्थंकर
ऐसें आरंभकी आज्ञा नही देवें और भलाभी नही
जानें देखो परतिद्ध सूत्र प्रश्नव्याकरणमे लिख्या
है की जो प्राणी अर्थ धर्म काम इन तीनोके वास्तें
हिंस्या करें तेह आश्रवका कारण कह्याहे सोई आ
ज्ञा बाहिर जीव जवतांईरहेगा तवतांई आज्ञाका
आराधिक नही होगा आज्ञा आराधे बिगर यानें
आज्ञाधारे बिना मोक्ष पद सिद्ध नही हो सक्ता ऐ
सा शास्त्रोका अभिप्रायहे अगर जो जिन आज्ञाके
बाहिर कारजहै सो उनसे मुक्त पदकी सिद्धी नही
है सो भगवानका मारग तो सर्व जीवांकुं सुखकार
क हैं ॥ इति पूर्व प्रश्नउत्तर ॥ १ ॥ जो कितनेक लो
ग हिंस्या कारिकें धरम करतेहें सो अपछंदें करते
हो की भगवानकी आज्ञा कारिकें करतेहो की अ
पने मन इछा करतेहो सो इस प्रश्नका जवाव दे
ना जोग्यहे अगर जो सावद करतव जितने सूत्र
में लिखेहें इनमांहि भगवानकी आज्ञा सूत्रांमें नही
कहे जो सावद यानें हिंस्याकारी काम जो कीयेहें
जो संसारकी रितिहै और अपनें मन इछाके का
महे जैसें सुबुद्धी परधानजीनें बावडीका पानी सम
राया राजाको समझाया ते अपणी इछाए मिश्र ध

र्म तथा पुंन धर्महै और इह काम मन इच्छाएकरी कीयाहै १ और मल्लीनाथजीने मोहन घर कराया ते अपणी इच्छाए कीयाहै २ और आणंद श्रावग जीने जात जिमाइ पुत्रको सेठ पदवी दई ते मन इच्छा कारजकीया ३ और कौंणकादिक राजाओंने नगर सिणगारकीया ते अपणी सोभ्या कारणे की या ४ धर्मघोष आचार्यने नागश्री ब्राह्मणी निंदी ते अपणी इच्छाए निंद्या करी ५ परदेशी राजाने दानसाला कराई ते अपणी दिलकी मरजादा करी ६ और चित्तस्वारथी घोडांका मिस करया ते मन इच्छा काम कीयाहै ७ और सुरियाभादिक देवता ओने नाटिक कीयाहै ते अपणे मनके मुरादें की याहै ८ कौंणक राजा नित बधाई लेता ते आपणी अखत्यारीका काम कीया ९ कृष्ण महाराजने दिक्षा वास्ते ढंढोरा बजवाया ते मनके अखत्यारे बजवा या १० और दिक्षा महोच्छव करया ते मनकी इच्छा थी करयो ११ और देवता इंद्र जनम दिक्षा केव ल निर्वाण समे महोछवकीधा ते अपणी मरजीके साथ करया अथवा उनका कुल विवहारहै १२ और अनेक देवता और इंद्र नंदीस्वर दीपमें अठाई महो च्छवकरें ते उनका पुराणा मरजादके माफिक कार ज करतेहै १३ और जंघाचारणसाधूने लब्ध फोरी ते अपणी इच्छाए नंदीश्वर द्वीपमे गया तिहां नग

वानकी आज्ञा नहींहे १४ ओर अंबड श्रावगजी सौरुपकरी बेक्के सेती सोघरो पारणा करया ते अ पणे मन इछाए कीया १५ ओर संखश्रावगजीने जिमन नो कोल कीया ते अपणे मनसे कीया १६ ओर महास तग श्रावगने ८ अस्त्रीकुं कठोर जाषा कही ओर पोटि ला देवने दगाबाजीकर तेतली परधान समझाया ते म नके इरादे करी समझाया १७ ओर तीर्थंकरजी ब रसी दान देवें ते अपणी इछाए दीयाहे १८ ओर दे वता प्रतिमा वा दाढा पूजे ते आपणी मन इछाथकी पू जतेहें १९ ओर जो धरमके वास्ते जो हिंस्या करते हैं तेह ते अपणे मत कल्पनाके लीये छहकायाकी हिंस्या करिके धर्मकहें तिहां जगवांनकी आज्ञा नही हे अगर जिन आज्ञाके बाहिर कार्जमें मोक्षका पद जीवांकुं नही प्राप्त होगा अथवा कही जिन आज्ञा बाहिरसे मोक्ष हुई होयतो किसी जीवकी तो लि खना चाहिये इति प्रथम प्रश्नोत्तर ॥ १ ॥ ओर कितनेक मत पक्षी ऐसा प्रश्न करतेहे की कीसी सकसने काली डोरीका सर्प्प बणायकर थापन कर रक्खीहे ओर कोई उस कालीडोरीके सापको तोडे तो पाप लागताहे अथवा घोडा हाथी मिठाई के जो बणतेंहे उनके खानेका तुम दोस समझते हो तो इसीतरेसे जिन प्रतिमा पूजनेसे धरमक्यो नही कहतेहो ऐसा प्रश्नजो कित्तनेहीक लोग करतेहे सो

तिनके जवाव देनेके लीये प्रश्न लिखतेहे की जैसे
कोसी सकसनें कागजके ऊपर गऊकी मूरत निका
ल कर और फिर उसको छेदन भेदन करे तो पा
प वर जरूर लगताहै इह सरधा हमारे तांई है और
खांडके खिलोनेके खानेकाभी पाप लगताहै लेकि
न उन खांडके खिलोनेका आकार हाथी घोडेका
है सो वह असवारीके कामके नहीहे और पापा
एकी गदु बुधकी दातार नहीहै जैसी चाहे पूजा
पत्थरकी गऊकी करो परंत कारज साधक नहीहे
जैसे ब्रह्मा विष्णुजीकी मूरतीके फोरनेका पाप ल
गताहे लेकिन उनके पूजनेसे धर्म नही होता अ
हो सुबिबेकी जनो अंदर दिलके जरा अभीतरे
समझोतो सही पाप राग द्वेषथी लगताहे अगर
धर्म तो राग द्वेषके ऊपसमावाथी होताहे और राग द्वेप
बधारणेसें तो संसारमेंही जीव रहताहै और खय
करणेसें राग द्वेष वीतरागके पदमे प्राप्त होताहे इस
रीतीसे प्रतिमाकी आसातना करणेसे निजदेवनी असा
तना लगतीहे 'देवाणु आसायणाए देवीणु आसायणाए'
इति बचनाथा लेकिन द्रव्य पूजा करनेसे आश्रवका
कारणहे तिन वास्ते पूजा ओर वंदना प्रतिमाको
करणेसे कुछ धर्मकी अधिकता नही होती ओर ज्ञान
गुण अतिसय विगर बंदनीक नही ओर थापनाथी प
रमर्थकी सिद्धी नही सूत्रांमे किसी ठिकाणें गणधर देवाने

साधोंको प्रतिमाके बंदणे ओर पूजणेका लाभ अथवा धर्म अथवा जिन आज्ञाका उसका आराधिक नहीं कह्या अगर इस प्रश्न उपर जुवाव इसीतरेकाहे सोई निंतर बुद्धीसे समझना चाहिये॥इति पूर्व प्रशनोत्तर ॥ २ ॥ अगर कितनेक सकस सूत्र प्रश्नव्याकरणके प्रथम संबरद्वारमे साठ नाम दयाके कहेहे सो जिनोंके मांहि ५७ सतावनमां नाम (पूया) ऐसा शब्द कह्याहै सो पूजा सूत्रमे लिखीहैसो तुम कैसे नही मानतेहो ऐसा कहतेहे जो प्रश्न तिनको जवाव देनेको इहां सूत्र प्रमाणसे लिखतेहे सो तुम लोग द्रब पूजाका नाम इहां कहतेहो सो तुम अणजाणपणेसे बोलतेहो जो प्रश्न ब्याकरणमे ६० नाम दयाका कह्याहे लेकिन पूजाके इह साठ नाम नही कहेहें इहांतो दयाके अधिकारके नामहें जैसें ५७ मा नाम पूया और इन ६० नामोंमे जग्यभी नाम लिख्याहे जो इहां तुम लोग पूयाका अर्थ जो तुमनें मत पक्षसें दरव पूजाका कीयाहें और हम पूछते हें की जग्गका अर्थ क्या करोगे जग्यतो अनमती लोगोने करीहे जिसमे अश्वमेधी अजामेधी जग्यकरीहे जिसमे पचेंद्री जीवांका होम कराहे सो तुम इहां दयाके नाममेभी जग्य और पूजाके ठिकाणें हिंस्याका उपदेसदेतेहो सो बडी भूलहें की जैसे जग्यका अर्थ इहां दयाका शब्दहै की जैसें कोई पुरष भूखेको

तृपतकर आणंद करे फिर वह कितनेक आदमी ऐसा कहदेतेहै कीतने बमा जग्य करा की जो चूके की आत्मा तृपतकरी सोई इण द्रष्टांते जग्गका परमार्थ इहां दयाकाहें इसकारण करिके ज्ञानी देवाने जग्य दयाका नाम कह्याहें कुछ वैसी अनमती लोगोकी जीव हिंस्याकी जग्यका इहां कथन नहींहें इसीतरें इहां पूया नामभी दयाकाही केवलीयोनें कह्याहें सोई दयाके नाम ६० है परंत पूजाके ६० नाम नही कहेहें सो सूधा अर्थ समझना चाहिये॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३ ॥ अगर कितनेक लोग ऐसा कहतेहें की नंदी साधू उतरेहे ओर नंदीमे पडती साधवीको काढतेहें साधू ओर बिषम ठिकानें पडतां साधू वृक्षकी डाल पकडी निकले इत्यादिक कारज साधू करे जिसमे द्रव हिंस्याहोतीहें सो सूत्रामे कहीहे ऐसें हमभी पूजा आदिककाम करनेसें धरम मानतेहें ऐसे वचन जो कहतेहें सो अग्यानताके अथवा मत पक्षके सबबसे कहतेहें क्यों की अब देखोतो सही की जो साधू नंदी उतरे १ और नदीमेसे साधवीको निकाले २ तथा क्रोधादिकके वससें नासती साधवीको पकडना ३ और बिषमस्थानथी बिरखको पकरके उतरना ४ इत्यादिक कारजतो साधू कारण याने कोई वक्तपें करणा कह्याहें लेकिन बिनामतलवतो यह कारज करे नही और

अनुमोदे याने नलाभी नही जाने और इन कामो की अभिलाखाभी नही करे कब उह दिन नला होय जो में नदी उतरूं ऐसी भावनाबी नही करणी अथवा यह कारज इतने लाचार होकर साधूसें होत्ते हें की मेह वरसतेमे वाऊ भूमिका जाना १ और जिहां जाय तिहां नदी लगती होय तो नदीका उतरना २ ओर वह कारणसे चोमासमें बिहार करणा ३ ओर चउमास बीतेपै बरखा होय अथवा रस्ता में कीचड बेंइन्द्री बगेरे जीवांकी पैदा होय तो चौमास पीछे ठहरणा ४ इत्यादिक कारज करणेको साधूजी भला नही समझते क्योंकि यहतो बहोत लाचारी के कामहै सो ऐसे द्रिष्टांत देकर कितने लोग इहां दरब पूजा करणा सही कहतेहें परंतु मंदिर प्रतिमा और जात्रा आदिक करणा जो तुम लोग करतेहो सो तो बहोत आनंद सेती हिंस्या करिके धर्म मानते हो सो तुम नदी आदिकोंका हेतू देतेहो सो तुमारा हेतू यह सही नही होता क्योंकि साधूतो दोष लागनेसें पछतातातहे और अपणी आत्माको निंदताहे की मुझे दोष लग्या सो यह कारज बुरा हुया ओर उहतो नदी आदिक लगनेके दोषांका दंड प्रायछित लेनेका अभिलाखी होताहे ओर गुरू महाराजके साम्हने अलोवणाभी करताहे अगर इस बात में कितनेक लोग ऐसी तकरीर करतेहें की नदी उतरने

का दंड कहां कह्याहे सोई ऐसी तकरीरोंसें परमार्थकी सि द्धी नही परंत हम लोगतो नदीके उतरनेकाजी दो ष सूत्रसें सही करतेहें सो कोईकहे कोंणसे ठिकाणे नदी के दोपका प्रायछितहे सोई परथमतो इछा कारेण की पाटीमें देखो कितने दोषोके प्रायछितोंका मिछा मि दुकडं ॥ कह्याहे की (उसा उतिंग पणग दग्ग मा टी मकडा) इति बचनात जो पाणीकी बूंदके ल गनेका दोस कह्याहे तो नदीके उतरनेका दोष क्यों नही होय इस वास्ते नदीका दंड प्रायछित इछा का रणे की पटीसे सही पडताहे और हम लोग दोष कों दोष समझतेहें सोई तुम लोगतो दरव पूजाका दोष नहीं समझतेहो और साधूकीतरें तुम क्यों न ही पछतातेहो अगर तुमतो आरंभ हिंस्यामें धरम करतेहो सोई तुमतो कारण विसेखमेतो पूजा आदि कको नही समझते ओर इहां लाचारी कामका दि ष्टांत देतेहो सो परमाण नही होता यानें सही न ही होता विचार देखो कारणपडे कारजकी सिद्धी ह मेसेके कारजमें सिद्ध नही होतीहे इति पूर्व प्रश्नो त्तर ॥ ४ ॥ अगर कितनेक सकस ऐसा कहतेहें की तुम लोग जिनराजके बिंबकी आसातनाके करनेमें यानें बे अदबीके करनेमें दोप समझतेहो तो पूजा और नमस्कारके करनेमे धर्म क्यों नही समझतेहो ऐसा जो प्रश्न कोई करेतो तिसको जवाब लिख

तेहहै की जैसे कोई औरत सीलवंती जिसके भरता रका नाम मदनसेन होय ऐसा इसीतरेका नाम किसी और पुरषका होय तो वह औरत उस पुरस का नाम नही लेय परंतु उसके साथ भोग संबंधी क्रीडा उस दूसरे पुरषसे नही करे अगर वह जो नाम अपने पतिके मुताविककाजो नही लेतीहै तो वह अदव और कायदा उस दूसरे पुरषका नही समझतीहै अगर उह जो नामका अदव रखतीहै सो अपणेही पतिके नाम आश्रयको समझतीहै कु ब उसपुरसका अदब इहां उस सीलवतीको नही फरमाया ऐसेंही हम लोग अपणे दिलमें समझते हें की जिनराजके थापनाकी जो प्रतिमाहै सो ति सकी बे अदबी नही करणी क्यों की आपणा देव श्री अरिहंताकी प्रतिमाहै परंत ते प्रतिमाकी वंद ना पूजा और अस्तुती इत्यादिक कारज आरंभा दिककी क्रिया कर द्रव्य पूजादिकरें नही जैसे अस्त्री भरतारके नामके पुरषांका नाम नही लेयतीहै परंत तेह सती उस अन्य यानें दुसरे मनुषसे भो ग करम नही करे इसीतरे हम लोगभी प्रतिमाकी आसातना याने बे अदवी नही करे परंत तारण तिरण प्रतिमाको नही समझतेहें यह परमार्थ सही है ग्यानीदेवोके बचन सत्यहै सोई सूधा सरधांनसे मोक्ष पदकी सिद्धी होतीहै इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥ ५॥

अगर कितनेक बादी जिहा सिद्धायतनना नाव का
अर्थ ऐसा करतेहैं की सिद्ध जे प्रतिमा तिसका आ
यतन ते घर जेहने सिद्धायतन कहिये ऐसा जो
अर्थ करतेहे ते सिद्धांतके मुताविकसें मिलता नही
है अगर कोई कहे किसतरे इहां तुम अरथ सिद्धा
यतनका करतेहो ते कहो सो सिद्धायतनका अर्थ
तो इसतरें सिद्धांतमे कह्याहे की ते सिद्धायतन अ
नादिकालकेहैं की जैसे सिद्धपद अनंत कालतांई
रहे ऐसेंही सिद्धायतन जो सासता कालकेहें तिसवा
स्ते आयतन ते घर तेह इणकारणे सिद्धायतण क
हिए अगर जो प्रतिमा सिद्धना वासा बास्ते सिद्धा
यतन कहीए अगर जो प्रतिमा सिद्धना वासा वा
स्तें सिद्धायतन कहें तो द्रोपदीके अधिकारमें (जि
णघर) याने जिन मंदिर कह्याहे परंत प्रतिमाके घर
वास्ते सिद्धायतन क्यों नही कह्या जरा अंतर वि
चार कर देखो की सूत्र रायप्रसेनीमे सुरीयाभ दे
वने पूजा करी जिहां सिद्धायतन कह्या अगर इहां
प्रतिमाके घर वास्ते सिद्धायतन नही कह्या अगर
असासता मंदिर याने कदीमी नहीहे इस वास्ते मं
दिर अथवा देहरा अथवा जिनघर इत्यादि नाम क
ह्याहे और सिद्धायतन तो अनंत कालकेहे स्वयं सि
द्ध वास्ते सिद्धायतन अणकीधा आयतन नाम ते
घर स्वासता सिद्धायतनको सिद्धायतन कहिये इति पुर्व

प्रश्नोत्तर ॥ ६ ॥ श्री तीर्थंकर महाराजने सूत्रमे ५ देव कहे श्री अरिहंत महाराज सो तो देवाधिदेव १ साधू मुनिराज सो धर्म देव २ चक्रवर्त्त वासुदेवादिक सो नरदेव ३ तथा भवदेव सो वरतमान काल देताके भवमे प्राप्तहै ४ तथा भविकदेव सो कोई मनुष्य तिर्यंचका आयुष्य देव भवका बंध परु चुका ५ ऐसे पांच देव कहेहें लेकिन छठा देव कह्याहे नही ॥ ओर धर्मके तीर्थ ४ कहेहें साध १ साधवी २ श्रावक ३ श्राविका ४ परंतु पाचमा तीर्थ कह्या नही ओर ३ जिन कहेहे केवली मनपर्यव ज्ञानी अधिकार ज्ञानी परंतु चोथा जिन कह्यानही ओरसर्णे ४ कहेहे अरिहंत १ सिद्ध २ धर्म ३ साधु ४ लेकिन भगवानना पाचवा सरणा नही कह्या इस वास्ते जो कोई कहतेहे की चमर इंद्र प्रतिमाका सरण लेई उर्द्ध लोक में जाय ऐसा कहना मिथ्याहे अर्थात झूठाहे क्यों की (अरिहंत चेईयाणी) शब्दका अर्थ इहां छदमस्त तीर्थंकरकाहें ओर महावीर स्वामी जब छदमस्थथें तब उनका सरणा लेकर चमर इंद्र प्रथम स्वर्गमे गया ओर आयाभी उन्हीके सरणे लेकिन प्रतिमाका सर्णा लीया नही इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ७ ॥ और कितनेक वादी ऐसा कहतेहें की संखेसर पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा श्रीचंदाप्रभु आठवां जिनके बारेकीहै ते इहएकांत सूत्रसें अण मिलती बात

कहतेहें ते देखो भगवती सूत्रसतग ८ मे उदेसे ९ मे (सेकेतं समुच्चयबंधेजणं अगरू तलाग नदी द्ह बावी पुरखवणी दिही घाण गुंजालीयाणं सराणं सरपत्तीयाणं विलपत्तीयाणं देव कुल सभापवाथुभरवा ईयाणं परिहाणं पागार अट्टालग चरिय दारगोपुर तो रणाणं पासाय घर सरण लेण अवणाणं सिंघाड गतिक चउक चच्चर चउमुह महापहमाहीणं वुहचि रकलसिलेस समुचएणं बंधे समुजए जहन्नेणं अं तोमुहत्तं उक्कोसेणं संकेजकालं) इति पाठ भगवती सूत्रके पाठमे किरतम बस्तु याने हाथोके करी हुई बस्तुकी उमर संख्याता कालकीहे उपरांत किरतम वस्तुकी थिती नही होसकती अगर अब कितनेक लोग ऐसा कहतेहे की भरतजीके कराये हुये मंदिर प्रतिमा महावीरतांई असंख्यता कालतांई किसतरे रह्याहे और गोतम स्वामीने एह प्रतिमा किहांथी वंदणाकरी यहबात तुह्मारे लोगाकी कही संभवती नहीहै याने सत्य नही मालुम होती ओर श्री सं खेश्वर पार्श्वनाथजी प्रतिमा चंदाप्रभूके बारेकी असं ख्याते कालकी किसतरे थिर रही अगर कोई ऐसा कहे की देव परभावेरहे तो क्या अटकावहे ऐसा जो कोई कहे तो उनकी बमी भूलहे फूठी बातोंका हेतू याने मिसाल देतेहें ते किसतरे अगर देवता कोई वस्तुकी थिती वांधायवा समर्थ नही अगर प्र

थवी यानें पाषाणादिककी थित २२ हजार वर्षकी कहीहे उप्रांत प्रथवी कायकी स्थिति नही अथवा इस बातपे कोई ऐसा कहे की सेत्रुंजा गिरनार आवु अष्टापद इत्यादि परवत एइ प्रथवी परणामेंछे इह लाखां कोड़ां बरसाना किसतरे थिरहें जैसें एह थिरहैं ऐसेंही प्रातिमा मंदिर थिरहोय ऐसा जो कहे तो तेहनी बडी भूलहे क्यों की एह परवततो जमी नमे लगरहेहे लेकिन इनपरवतोमेसें कोई एक टुकडा पत्थरका काटिकें जुदा करे तो तिसकी असंख्याता कालकी स्थिति नहीहे जैसें मनुष्यके शरीरमे लाग्या हुयां हाथपैरोके नख और बाल बढतेहें परंतु काटके नख और बाल जुदा कीधा पछें तेह बधें नही इसीतरे असंख्याता कालकी प्रतिमा देहरा तुम जो कहतेहो सो किसतरांहे सो जुवाब लिखना इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ८ ॥ और कितनेक मत पक्षी जब चरचा करतेहें तब ऐसा कहतेहें की मुहपतीमें डोरा कहां कह्याहे सोई ३२ सूत्राके बाहिर और ७२ सूत्राके अंदर महानसीत नाम जो सूत्र हे जिसको तुम मानतेहो सो उसही सूत्रके सातमें अध्येंनका खुलासा पाठमे कह्याहै की (कनुट्ठियायेवा मुहेण तगेणवा विणा इरियं पडिक्कमे मिछुक्कडं) ऐसा पाठहे सो इहां तुमारे शास्त्रमे मुहपतीमें तग्गेका पाठ याने डोरेका पाठ लिख्याहै सो जिसकी तुम

सही क्यों नही करते इसका जुवाव आगजदर लिखना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ९ ॥ अगर कितनेक मत पक्षी रूढके वस होकर ऐसा कहतेहे की पुस्तक बाचता थूक उडतीहे तिसवास्तें मुहपती मुख आगें देतेहें परंतु कुछ बाऊ कायाके जीवाकी रिक्षा याने दया नही पलती ते येह प्रश्न सूत्रसे बरखिलापहे याने कहतेहें की देखो सूत्र नगवती सतग १६ मे उदेसे २ कह्याहे ते पाठ कहतेहे (गोयमा जाणहण सक्के देविंदे देवराया सुहम कायं अणीजुहित्ताणं नासंनासई ताहिण सक्के देविंदे देवराया सावज्ज नासं नासई जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहमकायं निजुहित्ताणं नासंनासई ताहिण सक्के देविंदे देवराय अणवज्जं नासं नासई) ॥ टीकार्थी ॥ यदासकेंद्रसुक्ष्मकायं वस्त्रं अणिदूहित तिअ पोह्यादत्त वा हस्ताद्या व्रत मुखस्य नाषमाणस्य जीव संरक्षणतो निरवद्या नाख्यान्नवति ॥ अर्थः-- जब सकइंद्र हातवस्त्र तिसकर मुख ढांकी बोलतो सुक्ष्म कायाके जीव रक्षा करे तो निरवद्य नाषा याने निरदोस नाषा बोलतो कहिके अगर उघाडे मुख बोलेतो सुक्ष्म कायके जीवां विराधतो याने हिंस्या करतो बोले तिवारे सावद्य नाषा बोलतो कहिये याने दोषकारी नाषा बोलतो कहिये सुक्ष्म कायाके जीवांकी रक्षा वास्ते मुहपती लगातां हिंस्या नही लगें ऐसा सूत्रांका परमार्थ स

मझना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १० ॥ और कितने
क लोग ऐसें कहतेहैं की सेतुंजा गिरनार आबू अ
ष्टापद परवतकी जात्रा करनेसें धर्म लाभ समझते
है सो किसतरा हम लोग सही समझे की सुत्र भग
वती सतग १८ उदेसे १० में सोमिल ब्राह्मणको
श्री महावीर देवनें तो एह जात्रा कहीहै ते सूत्र भ
गवतीका पाठ (सोमिलाजंमे तव नियम संजम स
ज्झाय झाणावसगमादीएसु जयाणांसेतं जता तप १२
नियम अनेक अभिग्रह संजम १७ सजाय ५ झांण
धरमसुकलध्यान) इतनी करणी करवा कही तेह ब्रह्मा
रें जात्रा कही और भगवती सतग २० में उदेसे ८ मे मे
कह्याहै ते पाठ (तित्थं भंते तित्थं तित्थं करेइ तित्थं गो
यमा अरिहंता वा नियमं तित्थंकरे तित्थंपुण चाउ बणा
इणे समण संघे पनत्ता तंजहा समणा समणीउ सा
वय सावयाउ) तिर्थंकर महाराजोनें तो ४ तीर्थ कह्या
ते साधू १ साधवी २ श्रावग ३ श्राविका ४ लेकि
न पर्वत पहाडोमें फिरनेकी जात्रा नही कही सो
तुम लोग आज्ञा किसकी परिमाणसे जात्रा करणी कहते
हो इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ११ ॥ और कितनेक लो
ग सेत्रुंजा परवतको सासता कहतेहं सो सास्त्राके
मुताविक झुठा बचन उन लोगोंका मालुम होताहै ते
किसतौरसे की देखो भगवती सतग ७ में उदेसे ६ मे
जब छठा आरा लगेगा तव भरतक्षेत्रमे गंगा सिं

धू दो नदी रहिसी और बेताढ पर्वत रहसी बाकी सर्व पर्वत विछेद जासी ते सूत्र भगवतीका पाठ कहतेहैं ॥ (पव्वयगिरी डोंगर थल भठ माईय वेयंढ गिरी वजे बिरावोहेति) इम कह्याहै इण लेखे सेत्रुंजा पर्वत सासतो कहते हो ते एकांत झुठा कहतेहो नहीतो सूत्रकी साक्षसे जवाव देना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोतर ॥ १२ ॥ और कितनेक लोग आरंभमें धरम बतातेहैं और जिहां कयवलिकम्मा सब्द आवे तिहां प्रतिमानी पूजा कहतेहैं ते सूत्रसें बिरुद्ध याने अशुद्ध कहतेहैं और एहायाकयवलिकम्माका अर्थका परिमाण लिखतेहैं की देखो पहिलेंतो गिनाता सूत्रका अध्येन १६ मे कह्याहै ते पाठ (तएणं सा दोवईरायवर कन्ना जेणेव मंजण घरे अणुपविस्सई २ त्ता एहायाकयवलिकम्मा कय कोऊय मंगलं पायछिता शुद्ध पवेसाइं मंगलाइं वत्थायं पवर पहियाइं मंजण घराउ पडी निखम्मई २ त्ता जेणेव जिणघरे तेणेवउवागछई २) ए पाठ मांहि पहिलांएात्तहा पछे कयवलिकम्मां पछे शुद्ध मंगलीक वस्त्र पहिरया तिहां एंह्वाणेंके धर मांहि कहो किसकी प्रतिमापूजी ते कहो १ और भगवती सतग ९ में उदेसे ३३ में देवानंदा ब्राह्मणीनें वलिकरमकीधो तेहने न्हावानें घर मांहिं केहनी प्रतिमा पूजी ते कहो २ और वली एहिज उदेसे जमालीक्षत्रीकुमारे (तएणंसे

जमाली खत्तीय कुमारे जेणे व मंजण घरे तेणे व उवागच्छई २ त्ता ण्हाया कयवालिकम्मा जहाउववाईए परिसा वन्नउ तहाजाणियव जावचंदणो रिवत्तगाय सरीरे सव्वालंकार विभूसीए मंजण घरांउ पडी नि खमई २ त्ता) पिण न्हायो बलिकरम करी व सत्राहिरी मंजण घरथी निकल्यो कह्योते सनान घ र मांहिं किसकी प्रतिमाथी ते कहो ३ और वली भगवती सतग ७ मे उदेसे ९ मे वरणनागनतुये मंजण घर मांहिं न्हाया बालि करम कीधो पछे मंजण घरथी निकल्यो कह्योएणें स्नान घरमे किस प्रतिमाकी पूजा करी ते कहो ४ और कौणक रा जा बीर बंदवाने गया तिहां न्हावानो विस्तार घणो है तो तिहां बलिकम्मा सब्द मूलथकी जेनही हम जाणिये जे बलिकम्मा सब्द न्हावाकोईज बिसेषहै कुरला करवा जलंजली देवी इत्यादिकजाणीये बल पराक्रमका ब्रद्धि करणा ऐसा प्रमाण इस पाठकाहै आंगे केवली बचन परिमाणहे ५ और रायप्रसेणी मे कठियाराबनमे कृष्ट भारा लेवागया तिहां न्हा तां कोणसी प्रतिमा पूजी ६ इसी तरे घणे ठिकणे सूत्रांकी साखहै बलिकम्मा शब्द प्रतिमा पूजाका जो कहतेहो किस सूत्रका परिमाणसे कहतेहो ति सका जुबाव सिखना पुनः ॥ ण्हाया कयव लिकम्मा ॥ शब्दनो अर्थ जिन प्रतिमा पूजनो अ

लिकम्मा ॥ शद्बनो अर्थ जिन प्रातिमा पूजानो अ
र्थ करतेहैं तेहनो उत्तर--टीका कल्पसूत्रम स्नाता
कृतं वलिकर्म कृतानी कौतुक मंगल्यान्येव निर्मलानी
वस्त्राणि परिदधांति ॥ कौतुका मिष तिलकादीनि मंग
लानि कुर्वंती सर्षपदुर्वाक्षितादीनि मस्तके धारयांति
दुःस्वप्नान निवारणार्थम् स्वकीय मंगलानिकुर्वे ॥ तिस्य
र्थ अब देखोकि इहा निजमस्तकमे तिलकादि
करणा और दूव अक्षत मस्तकमे रखना कह्या
परंत कोई प्रातिमाके पूजणेका अधिकार नही कह्या
ओर श्री भद्रबाहू कृत कलप सूत्रमे सिद्धार्थ राजा
(अट्टणसाला) अर्थात व्यायाम शाला मल्लादि क
ला घरमे आकर पुन मंजन घर अर्थात् स्नान घर
मे आया तिहां न्हाणेका बहु विस्तारहै तिहां कय
वलिकम्मा शद्ब नही तो राजा क्या जिन धर्मी न
था जिन प्रातिमा पूजी नही जो प्रातिमा होती तो पू
जता परंत वहांतो जिन प्रतिमा कही नही फिर तु
म जिन प्रातिमाका पूजना कयवलिकम्मा शद्बमे क्यो
कहतेहो कुलदेव तथा गोत्र देवको विना थापना अं
जली रुपजल अर्पण करे तो ए अर्थ संभवेहै परं
तु जिन प्रातिमा पूजना ॥ कयवलिकम्मा ॥ शद्बमे अ
र्थ सिद्ध न होगा प्रतिक्ष खुलासा पाठ कहीनहीहै
और मल्लीजीके न्हाणेमे कयवलिकम्मा शद्ब फक
त वल पराक्रमका वृद्धि करणा तथा गोत्र देवको ज

ल अर्पण करणा सो तो तीर्थंकर करे नही अथवा सिद्धोंको नमस्कार कीया होयतो यह अर्थमे प्रमाण सही होताहै और कोणक राजा भरत चक्रवर्त के अधिकारमें कवयालिकम्मा शब्द है नहीं तो इस प्रमाणसे मालुम होताहै जिहां न्हाणेका खुलासा विस्तार तिहां कयवालिकम्मा शब्द नहीहै और जिहां संकोच पाठकाहै तहा कयवलिकम्मा शब्दहै सोई न्हाणेका विशेषणहै जल अंजली देणी वा तिलकादि मस्तकमे करणा और रायप्रसेनीमे कठियारोने न्हाणेके पाठमें जिन प्रातिमा पूजी कैसे कहोगे वे तो मिथ्यातीहैं द्रोपदीके स्नान घरमें प्रतिमा कहां थी और धन्ना सार्थ वाहीनें वावडीमे स्नान किया तो तिहां जिन प्रतिमा किहांथी और रायप्रसेनीके दूसरे प्रश्नमे ॥ न्हाया कयवलिकम्मा ॥ शब्द कही फिर किसी देवने पूजने जाय ते क्या परंतु इहा इमजाणीये की प्रातिमाकी थापना मंजन घरमे नही जिन प्रतिमा मंजन घरमे होय नही यक्षोके मंदिर पर सिद्ध सूत्रोंमे खुलासा पाठमे चलेहै सो आश्रव अधर्म द्वारमे कहेहैं परंतु १२ व्रतधारी करणीके धणी श्रावकोंके जिन मंदिर असली सूत्र करताने नही कहे और अविरती मनुष्योके करे कारण तृतीयोपे नही मिलते पूर्व ईत प्रश्नोत्तर ॥ १३ ॥

और कितनेक जिन धर्मी ऐसा कहतेहैं की देहरेका

नाम घणे ठिकाणे सिद्धायतन कह्याहे ते सिद्धनो घ
र जाणवा ते यह बात सूत्रसे नही मिलती क्यों
की शब्दका नाम शब्दार्थ कही मिलताहै और क
ही नही मिलता की जैसें किसी पुरषका
नाम अमर परंत कुछ अमरके नामसे अमर न
ही हो सक्ता १ और जैसे माताने अपनें पुत्रका ना
म धनदत्त दीया परंत वहतो कोमीकानी दातार न
ही २ और जैसे किसी स्त्रीका नाम लक्ष्मीहै परंतु
उसको तो मागी हुई छाछनी नही मिलती ३ जैसें
सासूने वहुका नाम कपूरदे नाम दीया परंतु वहतो
खाटी छाछनी नदेय ४ और जैसे किसी पुरषका नाम
मंगलहै लेकिन महाअमंगल कारकहै ५ और जैसे
नाम धर्मचंद परंतु महा अधरमीहै ६ और जैसे नाम
तो सीतलदास परंतु महाअगनकाल सरीखा क्रोधी
हैं ७ और जैसें किसी पुरषका नाम धनपाल लेकिन
उससें आपणा पेटभी नही पले ८ और नामतो कि
सी पुरषका जसकरण परंत वहतो महा अपजस
का करणहैं ८ और जैसे नाम कोडीमल परंत घर
में कोमी की किमत नही १० जेसे सब्द नय याने स
ब्दका अर्थ सही नही होता सब्दके गुणाकर संजुक्त हो
वतो सब्दार्थ सोभतीहैं और जो सब्दगुण निष्पन्न मान
तें होतो भगवतीके ९ मे सतकमे ऋषभदत्त नामें
ब्राम्हण कह्योहैं ते क्या ऋषभदेवजीके वचनसें हु

याहै तो इस शब्द अर्थ संभवता नही जैसें उत्राध्ये
नजीके अठारमे अध्येनमे हिरणांकी सिकार खेलवा
राजा गया असंजत करम करणे वास्ते तिसका नाम
संजती राजा कह्या तिसका तिस ग्रहस्थ पदमे क्या
संजतीपणाथा ते कहो अथवा जैसे जीवाजीगममें
सातमी नरकका पंच महा पुरुष कह्या ते सातमी न
रकीका जाणहार पुरषोको मोटा पूरषकह्या ते महा पुरु
ष पाप करम कर कह्याहै तथा बिजय १ ब्रिजयंत
२ जयंत ३ अप्राजित ४ यह ४ अणुतर बिमाण
कह्या परंत इनही नाम सहित असंख्याते द्वीप समु
द्राके दरवाजोंके यही नाम सूत्रांमे कह्याहै वली (आ
मुद्दोसमुद्दोनो पलंआसाए तिपला संपन्नो) गुण नाम
कह्या तिम सिद्धायतन १ संजती राजा २ ऋषभदत्त
३ ओर महा पुरष ४ इत्यादिक बिवहार बचनहै
शब्द अर्थके ऊपर किसी जगे ऊपमाबाची शब्द
सुधा होताहे ओर कहां उपमाबाचीक शब्द अर्थ सु
द्ध नही होताहें यानें उस नामपर ऊपमाका शब्द
नही मिलता की जैसे किसी पुरषका नाम
रणजीतहै परंत वहतो रणयानें संग्रामका नाम सुणक
करही घरसे बाहिर नही निकलता तो रणजीत नाम
यह कैसें कहावेगा तो इहां उस रणजीत नामको
संग्राममें जीतकरणे की उपमा नही मिलती तो अ
कसे नामका लेना व्योहार बचनहै परंत परमार्थ सु

न्यहै इसीतरे लोकोंमें इकदवाईका नाम मीठातेली या परंतु निजगुण स्वभाव उसका जहरकाहें सो इण द्रिष्टांतोसें सिद्धायतन शब्दका अर्थ सिद्ध घर नहीहै सदा कालके सिद्धायतन सासता याने कदीमीहे इस वास्ते सिद्धायतन जाणवा अथवा अनेक दीपे परवते देवलोके चार चार जिन पडिमांकहीहैं ते चारका नाम ऋषभानना १ वरधमानना २ चंद्रानना ३ वारिखेणा ४ येह क्या तीर्थंकरांका नाम वास्ते तीर्थंकरनी नही क्यों की तीर्थंकर महाराजके नामकी तो आदभीहें और अंतभीहे सोई एह प्रतमातो अनादिकालकीहे सोई तीर्थंकरके नामसे नामकी नही होसकती अनुमान प्रमान तो ऐसाहैं निश्चे तो जो केवली वंदे सो परिमाणहें अगर येही प्रतिमा समद्रिष्टी और मिथ्या द्दष्टी सर्व देवताओके पूजनेकीहे और ऋषभदेव वरद्धमान तीर्थंकर तो इसही चोवीसीमे हुयेहें अगर प्रतिमा ऋषभानना आदी अनंता कालकीहे एह जुगत तुम लोगोकी नही मिलती विचारकर कहना जोग्यहे इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १४ ॥ ओर कितनेक लोग ऐसा कहतेहें की भगवंत श्री महावीरजीनें गोतम स्वामीको कह्याहे जो तुम अष्टापद परवतपर जायकर श्री भरतजीका कराया हुया बिंब यानें प्रतिमाको वंदना करो जिम केवलग्यान उपजे येह बात सूत्रके परिमाणसें

सत्य नहीहें क्योंके बखान यानें बाणीमे तो किसी देवी देवको ऐसा उपदेस नही दीया और किसी सा धू साधवी श्रावक श्राविका इन ४ तीर्थोंको ऐसा उपदे श किसी सूत्रमे नही कह्या तो गौतमजी महाराजको ऐ सा उपदेश किसतौरसे देवें की अब देखना चाहिये की उन प्रतिमाओंसे तो ज्यादे गुणवान श्री महा राज महावीर देव खुद आपही बिराजमानथे और मिथ्यात अंधेरको दुर करतेथे ऐसे भगवानको सा क्षात केवली रुपकर बिराजमानोको छोडकर क्या प्रतिओके दरसणमे अधिक यानें ज्यादे धर्मका ला भ होताहै की प्रत्यक्ष तीर्थंकरोंके दरसणोंमें ज्यादे धर्म लाभ होताहै इस बातका जवाब लिखना जो गहे सो अंतर विचारकर देखो की इसतरे प्रतिमा ओके दरसणसें केवल ज्ञान नही हो सकताहै की अ ब देखो केवल ज्ञान सूत्रमे किसतरेसें उपजनेका कारण कह्याहें सो लिखतेहें की जैसे उत्राध्येन द समे गाथा २८ मे (वुछिंदसिणेह मप्पणो कुमुयसार यंच पाणीयं सेसवसिणेह बज्जए समयं गोयसमा पमा यए) इति बचनात अब देखो श्री महावीरजीनें ऐ सा कह्या की हे गौतम जो तुम्हारा मुझऊपर अ णा सनेहहे तिसको जब तुम छोडोगे तब केवल ग्या न पावोगे केवळ ग्यान उपजबाका कारण सूत्रमें तो इ स तरे कह्याहे और भगवती सूत्रके सतग १४ उदेसे ७

मेंमें (रायगीहे जाव परिसा पडिगया गोयमादि समण भगवं महावीरे भगवंगोयमं एवंबयासी चिरसंसिवो सिमे गोयमा चिरसंथुओसिमे गोयमा चिरपरिचितो सिमे गोयमा चिरजूसितोसिमे गोयमा चिराणुवात सिमे गोयमा अणंत्तरं देवलोगा अणंतर माणसे भवे की पर मरणकायस्स भेदायतो चूता दो वितु ल्ला एगठा अवसे समणाणग्यापन्नविस्सामो) इ सतरे कह्याहे हे गौतम तुह्मारा हमसें घणे भवका सनेहहैं अगर इहांथी आऊखा पूराकर हम तुम दोनो मुक्त पदमे सामिलहोवेंगे तिहां हम तुम दो नो एकसरीखेहोवेंगे लेकिन ऐसा कही सूत्रमे नही कह्या की अष्टापद ऊपर जावो सो सूत्रमे कहीं कह्या नही तुम इह बात सूत्रसे अण मिलती कह तेहो इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १५ ॥ ओर कितनेक रु ढमती याने मतपक्षी ऐसा कहतेहें की गोतम स्वा मी सूर्जकी किरण पकड़के परवत ऊपर चढ्यें लब्ध परसाद करीने यहवा अशुद्ध बचन बोलतेहो ते सि द्धांतसे अण मिलती बातहै तो सूत्रमेतो लब्द २८ कहीहै तेहनां नाम कहतेहै आमोसही १ वप्पो सही २ खेलोसही ३ जलोसही ४ सवोसही ५ सं भिन्नसोतिया ६ अवधज्ञान ७ रिजुमती ८ विपूल मती ९ चारण १० आसीविष ११ केवली १२ ग णधर १३ पूर्वधर १४ अरिहंत १५ चक्रवर्त १६ बलदेव

१७ वासूदेव १८ रवीरासवामहुपासवासपीयासबाऋ मीयासवा १९ कोठबुद्धी २० बीज बुद्धी २१ पदानु सारणी २२ तेजूलेस्या २३ सीतललेस्या २४ आ हारीक २५ बेक्रिय २६ अखीणमहाणसी २७ पु लाक २८ यह अठाईसलब्द तिसमांहिं (सकखाई असंबुड) अणगार फोरवें याने परगट करे तिस का प्रायछित अणलीयें याने बिनालीयें कालकरे तो भगवानकी आज्ञाका बिराधक सूत्रामें कह्याहै भग वतीजीके सतग २० में उदेसे ९ में चारण उदेसे औ र दूसरे घणेही ठिकाणे लबध फोरवे तेहनो यानें तिस का प्रायछित कह्याहै अगर जिसबातमें जीव आ ज्ञाका बिराधक होय ते उपदेस भगवंत किसतरें दे वें जरा अभिंतर बिचार कर देखो क्या सिद्धांतकी री तहै ओर अठाईस लब्द मांहिं सूर्जकी किरण पकड नेकी कोंणसी लब्दहै तिसका जुवाव लिखना चाहिये ओर गौतम स्वामितो भला तुम लोगोंनें लबधही का बलकर चढया कहतेहो अगर ओर साधू गो तम स्वामिके साथ किसतरे चढे उनकुं क्या लबधथी तथा दस हजार साथे ऋषभदेव भरतेश्वर अष्टा पदपें चढया ओर संथाराकीया ते साधू कीसतरे चढया अथवा प्रासादका करण हार कारीगर कीम चढया त था सागर चक्रीके बेटा ६० हजार किसतरे चढया यह जणतीसमी लब्धका कहां बर्णन कह्याहै जिस

का जुवाव लिखना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर संपूर्ण ॥ १६ ॥ और कितनेक सकस ऐसा केहतेहैं की १५०० तापस केवली हूये अगर यह बात सूत्रके साथ नही मिलती परंतु यह बात शास्त्रोक्तहै क्यों की भगवती सतग ५ में उदेसे ४ में कह्याहै की सातवा देव लोकका दोय देवताओंनें श्री महावीरजीको पुछा की भगवान् तुह्मारे साधू कितने मुक्त जायेंगे जिसवक्त श्री भगवंतजीनें कह्या [सत्तस्स अंतेवासी सं घाईयं सिज्झस्सई] याने सातसें सिष्य समीपें रहने वाले मुक्त पदमें विराजमान होवेंगे लेकिन अधिका याने ज्यादे केवली उसवक्त कहे नही और कल्पसूत्रमेंभी ७०० केवली कह्याहै अगर कदाचित कोई ऐसा कहे की यह तो १५०० केवली गौतम स्वामीके सिष्यहै तो क्या आश्चर्यहै परंतु कल्प सूत्रमें तो गौतमजी और सुधर्म्माजी इन दोनोंके पान पानसैंका परिवार कह्याहै सोई छदमस्तोंके बचनापें हम ज्यादे रूढ नही करते इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १७ ॥ और कितने लोक ऐसा कहतेहै की जव नमोथूणं का पाठ पढकर पीछेसे एक गाथा और नवी बणाई हुई कहतेहै ते पाठ सूत्रमें नही मिलता उसमें दूर व निखेपाका सरधान सही करतेहै ते सूत्रसें बर खिलाप कहतेहै जैसें नमोजिणाणं जियभयाणं जे अईया सिद्धा जेनविसंतीणागएकाले संपईएण वट्ट

माणी सवंतिविहेण वंदामि॥ १ ॥इतना पाठ ज्यादे सू त्रसे आए मिलताहे की अवदेखो सूत्रसें सिद्धांतमें जगें जगें नमोथुणं कह्या ते सामायांग नगवतीके माहिं गणधर देवाने कह्या अथवा उवाई रायप्रसेणी मांहिं देवताये कोणक प्रदेसीराजाये अथवा अंबरूजीके ७०० सिष्यानें नमोथुणं कह्या तिहां ठाणं संपत्ताणं तथा ठाणं संपाविर्योकामस्स इतना पाठहै तो तुम लोगोने इतना अधिक पाठ नवा बणाया मालुम होताहे सो सूत्रसे बिरुद्धहै ओर कितनेक ऐसा कहते हे नमोथुणं तो सक्रइंद्रका बणाया हुयाहै ऐसा जो बचन कहैं ते सूत्रसे नही मिलताहे अगर सूत्रतो गणधर देवाका कीये हुयेहै ते साख सिद्धांतकी गाथा॥ सुत्तत्थंगणहररईयं तहेव पत्तेय वुद्धरईयंच सुयकेवलीणारईयं अभिन्नदसपुविणारईयं॥ १ ॥इस वास्ते इंद्रका जोडा किसतरे मानीये तो इहां नमोथुणं ऐसेही सदा काल गणधर देव कहते आयहे ऐसेही कदीमी नमोथुणं होताहै ते जाणवा निश्चकेवली बचन प्रमाणहै इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १८ ॥ अगर कितनेक बादी चरचा करते हुये ऐसा कहतेहें की हम सूत्रके परिमाणसे थापनाकुं बंदना करतेहें ओर सूत्रामें ४ निखेपेकहेहे ते नामनिखेपा १ थापनानिखेपा २ दरव निखेपा ३ नावनिखेपा ४ तिस वास्ते थापनानिखेपा बंदनीकहे यह बात सूत्रके परिमाणमें नही मि

लती ते किसतरे श्री अणुजोगद्वार सूत्रमे ४ निखे
पे कहेहैं तेहतो सहीहें लेकिन बंदना करने जोग तो
एक भाव निखेपाहे ओर बाकी तीननिखेपे बंदणे जोग
नहीहे अगर अब च्यार निखेपोंका अरथ करतेहें ते
किसतरें अव जिन सबदमांहें ४ निखेपे कहतेहैं तो
पहिला निखेपा नाम तीर्थंकरोके नाम सरीखा नाम
तो ऋषभ, पारस, संभूसीमंदर, जुगमंदर, इत्यादि
घणे पुरषोंका नाम धरतेहें परंत तिण मांहिं तिरथं
कर महाराजोके गुणआतिसे नही तो अतिसे गुणांकी
महिमातो महाबिदेह क्षेत्रा मांहे श्रीसीमंधर भगवा
नमे बिराजमानहै लेकिन नामनिखेपा फकत कहणेहीं का
है परंत जिन गुण नाम निखेपमें एकभी नही जैसें मात
पिताओने अपणे पुत्रका नाम रामचंद्र दीया परंत
रामचंद्रसरीखी तिसको उपमा नही लगै तिसमे ना
म निखेपा रामचंद्रके नामसें हुआ तो तिसका पर
मार्थ सुन्यहै तो नाम निखेपा वंदनीक नही ऐसा
विचार सुत्रासें जाणतेहें इति नामनिखेपा कह्या ॥ १ ॥
अगर थापना निखेपा किसकूं कहिये तो थापना का
ष्ट पाषाण अथवा धातूनी मूर्ती अथवा चित्रामका
हाथी घोडा नदी इत्यादिककी थापना करी पूजे अथ
वा नमस्कारकरे तो परमार्थ सुन्यहै जैसे हाथी घोडा
असवारीके काममे नही आवे ओर नदीकी थापनासे
पाणी नही मिलै इसी तरे गुन रहित अगर जिस

मतलबके वास्तें थापनाकरी ते जिसमे मूल एकगु णभी नही ते आपही जन्मसुभावहै तो और पुर षोका क्या कारज सिद्धकरे जैसे किसीने चक्रवर्तकी मूरती बणाकर थापना करी परंत तिस सुरतीके सा मने बत्तीस हजार राजा सेवा करता नही और २५ हजार वानमित्रभी जिसकी सेवा नही करतेहैं तिस वास्ते थापना जिन मोह दिसाके उदेमे हे और वै रागतो सुरतध्यान मतज्ञानसे आताहें और था पनाका परमार्थ सुन्यहे इति दुसरा निखेपाकह्या ॥ २ ॥ अगर दरव निखेपा दरव जिन ते जिन थावणहार जिन तणो नाम गोत्र बांध्यो परंत अवतक जिनथ या नही ते दरब जिन अथवा मृत्यु जिननो सरीर तेह दरव निखेपा काहिये ॥ ३ ॥ भाव निखेपे जिन ते सा क्षात जिन केवलज्ञान सहित बरतमान बिरामानहे ते बंदनीकहे अगर अव कितनेक लोग च्यारो निखेपे मानणे जोग कहतेहें सोई थापना निखेपातो मानते हे लेकिन नाम निखेपा घणेही पुरषोके नाममे नाम निखेपा होताहै जैसे पारस पारसप्रभूके नामका नाम है तिसको तुम क्यों नही बंदतेहो अगर थापनामे क्या अधिकता देखकर बंदतेहो और पूजतेहो और दरव निखेपा ते जिन होणहार अगर तेह जिन थया नही अगर तेह मांहिं जिनगुण परगट हुवा नही तेह किसतरे बंदनीक होवे जैसे तीर्थंकर घर मांहिं

होवे और क्षायक सम्यक्त तीन ग्यान कितनीक अ
तिसें सहितहें तो परंत अबिरतीहे तिस वास्ते सा
धू श्रावक बंदे नही तो अब देखो दरव निखेपो बं
दनीक किसतरे होय अगर इस जवाब ऊपर कोइ
ऐसा प्रश्न करे की भरत चक्रवरतजीने अपणे पुत्र
मरीचजीकुं किसतरे बंदना करी उनमे दरब निखे
पा जाणयातो भरतजीने बंदणा करीहे जो ऐसा प्र
श्न करे तो तिसका जुवाब यहहे की अवलतो यह
वात कथाकारकीहे और दुसरे भरत चक्रवरतजीने
१२ ब्रत श्रावगके अंगीकार नही करे इस वास्ते
बंदणा करीहे तो कुच अश्चर्य नही ओर अविरती
जीव बहोतसे मिथ्यातमे सीस नमातेहे तो इहां व्र
त्ती जनोका प्रश्नहे ओर ब्रतीजनोके प्रश्नसें अव्रती
जिनोके कारजका क्या जवाव देतहो ओर कथा
कारके मांहिं अधिकी ओछी वारताका संदेह होता
हे सो जवाव तो सत्र सिद्धांतसें हम लोग पूछतेहे
की सूत्रकी बात प्रमाणीक करतेहे जैसे अंतगढ
सूत्रके पांचमे वर्गमे नेमनाथ स्वामीने श्रीकृष्ण प्रते
ऐसा कह्या तेह सूत्र अंतगढका पाठ लिख्यतेहें
(एवखलु तुम्मं देवाणुप्पिया तच्चाउ पूढवीउ उज
लियाउ नरगाउ अणंतर उवट्टित्ता यह जंबूदीवे
द्वीवे भारहे वासे पुडेसु जण वएसू सतदुवारे नयरे अम
म्मे नामं अरहा भविस्सई तस्यणं तुम्मं बहुयं भा

साइं केवली परियागं पाउणित्ता सिज्झस्सइ तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहउ अरिठनेमीस्स अं तिए एयमठं सोच्चा निस्सम हठतुठे अफोडई २त्ता तिवइं थेवई २त्ता सिंहनाहिंकरेई २त्ता) इति सू त्रपाठ हे कृष्ण तुम बारवांजिन याने तीर्थंकर पद में विराजमान होकर मोक्ष पद धारण करोगे ऐसा श्रीनेमनाथ महाराजके बचन सुणकर परम हरष याने खुसी होकर नाचे याने कूदे और सिंहनाद कीया परंत उसवक्त कोई गणधर साधू अथवा श्रावक इत्यादिकोने वंदना और अस्तुती नही करी अगर इस जगे जो श्रीकृष्णजीको वंदना कोई कि रताते दरब निखेपा वंदनीक सही कर मानते अगर नहीतो सूत्र(प्रमाणसें दरव निखेपा वंदनी क नहीहे और ठाणांग सूत्रजीके ९ में ठाणें सर्व सन्मिं भगवंत श्रीमहावीरे कह्याहे की जो श्रेणक राजा आंवती चोवीसीमें पहिला जिन महा पदम नांमे मुझसरीखो होसी तो यह बचन सुणकर की सीं साधू श्रावगने उहां दरव जिन जाणकर वंदना नही करी तो तुम लोग दरव तीर्थंकरांको कैसें वं दनीक कहतेहो सो जुवाव देना जुक्तहे अथवा और सामायांग सूत्रमें वरतमान चोवीसीके नाम क ह्याहे तिहां देखोते लोगरुस मांही कह्याहे तिसमां ही वंदे वंदे शब्द आतेहें तेह) पाठ लिख्यतेहें (लो

गस्स उज्जोयगरे धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कि
ती एसं चउवीसंप्पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजीयंच वंदे
संभव मभीनंदनंच सुमियंच पउमप्पहं सुपासं जिणंच
चंद पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहंच पुप्फदंतं सीयल जीयंस
वासपुजंच बिमलमणं तंच जिणं धम्मं संतिच वं
दामी ॥ ३ ॥ कुंथुं अरिहंच मल्लिं वंदे मुनिसुव्वयं नमी जि
णंच वंदामि रिठनेमिं पासंतहवद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवंमए
अभिथुया विहु रयमिला पहीण जर मरणा चउ वि
संप्पे जिनवरा तित्थयरामे पसियंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वं
दिय महिया जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग
बोहिलाभं समाहिव रमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मला
यरा आईचेसु अहियं पयासगरा सागरवरगंभी
रा सिद्धा सिद्धं मम दिसंतु ॥ ७ ॥) अगर अब इस पाठ
में भाव निखेपेकुं वंदे शब्द कह्याहै अगर आव
ती चउवीसीके नामभी सामायांग सूत्रमे कहेहै ले
किन वंदे वंदे शब्द सूत्रमें नही कह्या क्यों कि अ
वतक उन तीर्थंकरोंके जीव अविरतीहै इस वास्ते
दरव निखेपा वंदनीक किसतरें होय अगर और
भगवती सूत्रके सतग ९ उदेसे ३२ में गांगेय ना
में अणगार भगवंत श्रीमहावीरजीकुं दरव निखेपें
देख्या और गांगेय अणगार पहले वक्तकें साधूथे तो ति
नोंने दरव निखेपा जाण वंदणा नही करी अगर
जब भगवती सूत्रमें (अदुरसामंतेचिद्वा) कह्यो इ

ति वचनात अगर जव श्रीमहावीरजीको केवलथया नी जांण प्रश्न पुछकें महावीरकुं वंदना करी जव भा व निखेपा पूरण जांणया तव गांगेय अणगारजीने नमस्कार कीयाहै तो अव देखो द्रव्य निखेपा कि सतरे वंदनीक होय जो द्रव्य निखेपमें सम्यक्त ग्यान २ का गुणहे अगर तेहवी वंदनीक नही तो पाषाण प्रमुखकी थापनामें तो एकभी गुण नही ते किसतरे वंदनीक कहते हो जिसका जुवाव देना चाहिये ओर जैसें पाषाणका हाथी घोडा चढवा के काम नही आवे जिम पत्थरके लाडूसे भूख न ही मिटे ओर पत्थरकी गऊ दुध नही देय ओर जैसें पत्थ रका सेर मारे नही तिम पाषानका देव त्यारे नही यह पर मार्थ बहोत सूक्ष्महे इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १९ ॥ अगर इस जुवावके उपर कितनेक वादी ऐसा कहतेहें की प्र तिमा तेह श्री जिनराजका नमूनाहै तिसको देखकर भगवान याद आतेहें ओर ध्यानका कारण होय ति स वास्तें वंदना पूजना करतेहै अगर यह तो हम लोगभी जांणतेहें की प्रतिमा मांहिं जिन गुण नहीहै सो कुछ हम भगवान जांणकें नही पुजतेहै ऐसा जो चरचा करनेमें तुम लोग कहतेहो तो अव ति सका जुवाव लिखतेहें की अव देखो सूत्र उत्राध्ये नके अठारमें अध्येनमें कह्याहे ते गाथा (करकं डु कलिंगेसु पंचाले सुयदुमुही नमीराया विदेहेसु

गंधारे सुयनिग्गई) इति वचनात अगर करकंडु राजा कलिंग देसका वृद्ध बैलकुं देख प्रतिबुझ्या यानें वैराग आयो १ ओर दुमुही राजा पंचाल देसका इंद्रथंभको देखकर वैराग आया २ ओर नमी राजा विदेह देसके चूडीयाका कणकणाट सुणकर वैराग आया ३ ओर निग्गई राजा गंधार देशका आंबाके ठूंठ वृक्षको देखकर वैराग आया ४ अगर इन च्यारो प्रत्येक बुद्धीयोंकु जातीसमरण पाम्या ओर संजमलेकर मुक्तपदमे बिराजमान हुये लेकिन वृषभ १ थंभवा चूडी ३ आंवा ४ इन च्यारोंके सववसें च्यारों राजोको जातीसमरण उपजनेके तथा संजमलेनेके हितकारण जाणकर किसीनें उन ४ बस्तु व्रषभादिककी पूजा अथवा वंद्या नही तो अब ओर मनुष किसतरे उन ४ च्यारों बस्तु वृषभादिकको किसतरें बंदे अथवा पूजे अथवा गोतम स्वामी महावीर भगवंतजी ऊपर अधिक यानें बहुत ज्यादे परम भक्ति राग सहितथे सो तिनोनें राजग्रहीमें उदकपेढालसे चरचा करी तथा सावत्थी मांहिं केसी कुमारजीके साथ चरचा करी तव तिहां श्री महावीरजीसें जुदा विहार किया लेकिन परम यानें ज्यादे भक्तके बस होकर श्री महावीरजीका नमुना कागज मांहिं चितराम चितरीकर उनोनें अपने पास नही रख्या तो तुम लोग चि

त्राम करांकर अथवा बणे बणाये मूरती किसकी रीतसें रखते हो सो जवाब पूछतेहैं कि महावीरजी के साधोनें चित्रामका नमुना क्यों नही रख्या क्या वे आप जानतो नहीथे तुम लोगोंसें अधिक गुन वानथे सो उनोनें तो चित्राम रख्या नही तुम की सकी सहायतासें रखते हो सो कहो अगर श्री म हावीरजीके श्रावग आणंद कामदेव संख पोखली इत्यादिक भगवानके पीछे कागजके ऊपर नमुना कर दरसण कही करे नही जो कही करे होयतो सूत्रका पाठ दिखलावो जुं हम तुमारी बात सही करी माने अगर परदेसी राजाए कृष्ण महाराज औ र भरतजी ओर कौणक राजा इत्यादिक घणे रा जे भगवानके परम भगत हुये परंत उनोने भक्ती के वस होकर किसीने नमूना भगवानका चित्राम करके दरसन औौर पूजा ओर नमस्कार इतने कार ज करेनही की परतक्ष देखो की कौणक राजा भ गवान महावीरजीकी हमेसें देस मुलकोमे जिहां जिहां बिचरतेथें तिहां तिहांकी बधाई हमेसें नो करोके हाथ मंगाइकर सुनकर भोजनकरताथा ले किन हम तुमकुं पूछतेहें की कौणकजी इतना परी श्रम उद्दम कर बधाई दिन २ प्रते रोज सुनैथा परंत उनोने नमूना चित्रामका क्यों नही बनवाली या जो नमूनेमे अधिक लाभ होता तो वे लोग क्या

नही कर सकतेथे इसका क्या कारणहै सोई जुवाब लिखना अगर भगवंतजीका नमुना भगवंत आप हीहै अगर उवाई सूत्रमें साधूनों नमूनों जवतांई साधू विराजमानहै तवतांई साधूको नमूनो कह्योहै कीं जैसे सूत्रका पाठ अजिनाजिन संकासा जणा इव अवितह बागरे माणा बिहरई कह्यो परंत पत्थर पीतलाना नमूना करणा नही कह्या अगर जैसे सोनाको नमूना यानें बानगी पीतलकी नहीहै अगर सोनाका नमूना सोनाहीहै और जैसे आंबका नमूना आंबहीहै लेकिन आकका नमूना उसकी जगे नही सोभताहै इसीतरे हाथीका नमूना हाथी परंत गर्धभ नही इसतरे घोमाका नमूना घोमा इम इसत्रीका नमुना अस्त्री रतनका नमूना रतन परंत कंचका तुकडा नही इम साधूनो नमूनो साधू अगर घणी वसतू मांहिथी थोडी वस्तु दिखावे तेह नमूना याने बानगी जाणीये परंत अझीवस्तके ठिकाणे गुण रहित वसतु दिखावे तेह तिसका नमूना नही कहिये ओर कोई ऐसा बोलतेहै प्रतिमाकुं देखके प्रतिमाकुं देखकर हमकुं भगवान याद आवे भगवानका ऐसा रूपथा ऐसी योग मुंद्रा ध्यान पद्म आसन ध्यान सरूपमें भगवान निर्वाण पहोंचे देखो प्रतिक्ष इस माफिक कहतेहैं फिर इस योग मुंद्राकुं अस्नान मंजन करातेहै ए तो प्रथम खुला

सो द्रोपदीसेहै अब उनकूं पूठना प्रतिमाको देखके भगवानका सरुप कैसे मालुम हुवा भगवान तो ३४ अतिसे ३५ वाणी कर विराजमानहैं जिसके ना और मंस लोही कैसाहे बरण गंध रस कैसाहै तथा उनके मात पिताका नाम आउखा और माताके गा रभमें कोणसे ठिकाणसे आये उसवक्त कितने ज्ञा नथे और तीर्थंकर गोत कोनसी करणी करिके उपा रज्या फिर इहां कैसा तपकरा गृहस्ता वासमे कि ने बरस रहे बदमस्तपणा और केवल परवज्यां कि तने बरस पाली और प्रथम पारणेका दातार इत्यादि क भगवानका सरूप कहांसें मिला और २४ ती करके नाम तथा नवकार मंत्र नमोथुणं तथा पंच महा त १२ व्रत तथा पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत ४ सिख व्रत पडिकमणा और अतीचार त्रस थावर जी अजीवादिक नवतत्वके भेदानुभेद षटद्रव आठ आ त्मा षटकाया १८ पापके नाम ४९ भांगे एह सर्व प्राप्ति गुरु महाराजसे और सूत्र सिद्धांतसे हुई लेकिन मंदिर प्रतिमासे इस माहिती किंचित मात्र भी प्राप्ति नही हुइहे मंदिर प्रतिमा ए सर्व उदे भा वमेहै और बेरागतो क्षय उपसम भावमें है परं मंदिर प्रतिमाकुं तो देखके जरूर पग धोवणेकी फूल चढानेकी धुप दीप आरंभ करनेकी ढोल मृदंग झांझ मंजीरा नगारा इत्यादि षट कायाकी हु

ट करनेकी मनमे आवेगी ए प्रत्यक्ष देखो हजारो लाखो आदमी षट कायकी लूट कर रहेहैं चवडें मालुम होवेहै ओर कोई उहा जतन सहित नवकार नमोथुणं पढे तो बहुत अछी बातहै हिंस्या छोडके आश्रव अधर्म छोडके तप संजमतो खुशी आवे ज हां करो भगवानकी आज्ञामेंहै लेकिन व्रत पचखा न तो जवहोगा जब सरधान सच्ची होवेगी जिसका देखो प्रतिक्ष तीन मनोर्थ श्रावगके कब में छोडुंगा आरंभ ओर परिग्रह वो दिन मेरा भला होवेगा ओर सूत्र सूयगडांग दूजा श्रुतखंदका पाठ मूल सूत्र गाथा (अविरतिपडुच वाले: व्रिति पडुच पंडि ए व्रिताव्रिती पडुच वाल पंडिए आहिज्जई) दे खो वीतराग देवने श्रावगकुं विरती आसरी पंडित कह्याहै जितना हिंस्या कुठ चोरी आश्रव अधर्मसें निवर्त्या सो तो पंडित पणा कह्याहै ओर अधर्म आश्रव हिंस्यासें नही निव्रित्या उतनाही वालपणा अर्थात अज्ञानपणा कह्याहै इस वास्ते संसारका काम श्रावगसें सर्वथा प्रकारें नही छूट सकाहै कुल दे वी देवता लक्ष्मी पूजन वही सरस्वती पूजनादिक प्र त्यक्ष आश्रवद्वारहै प्रत्यक्ष पाप लगेहै लेकिन संसार का खाता जाणेहैं संसार खातेका मंगलीकहै परं त भगवानकी आज्ञा बाहिरहै इसतरह सब मंदर प्रतिमा पूजन पखालन स्नान मंजन पाणी विन

स्यतियादिक सर्व संसारका खाता मानो और आ
श्रव हिंस्या करिकें बनाहै बंदना नमस्कार करणेके
फल कोई असली सूत्रमें चले नही मूलहीज भ
गवाननें आश्रव द्वारमें कह्याहै फिर आश्रव अधर्म
को सेवेंगातो धर्म कहासे होवेंगा इस वास्ते हाथका
जोरना मस्तक नमाणा दरसण करणा ए सर्व सं
सार मारगकाहै इसमें किंचित मात्र संक्या कं
स्या मतकरो कोई देवताभी डीगावे तोभी मतडि
गो मुक्तीकातो मारग एकांत असली देव असली गु
रु असली धर्म दयामइ जाणो निसंदेहपणें इस स
रधामें अडोल होवेंगे जवही साधूपणा और श्रावग
पणा फरसेंगा व्रत पचखान फरसेंगे सूत्र भगवती
का पाठहै समकित बिना व्रत पचखाण नहीहै उत्रा
ध्येन सूत्रका पाठहै (सरधा परम दुल्लहा) सर
धा साची आणणी बहोत मुशकिलहै बीतराग देव
नें तो मुगती मारगमे साधूके और श्रावगके दोनों
के वास्ते ज्ञान दर्सन चारित्र तप कह्याहै और कु
छ कह्या नही इसके सिवाय और सर्व अधर्म आ
श्रवजाणो फक्त साधू मुनिराज पापकर्मके त्यागी
पुरष उनकुं आहार पानीका देना वस्त्रादिकदेना येश्री
बीतरागनें सूपात्र दान कह्याहै इस वास्ते जो गृह
स्थ घरसें निकला सो तो असंजम मांहिसें निकला
और संजममें गया इस वास्तें मुक्तीका मारगहै ए

प्रत्यक्ष देखो पोसहमे कुछ खाणा पीणा नही महा कठिन जोर लगाना पडेहै इतना जोर लगाकेभी ११ मा व्रत हुवा लेकिन साधूकूं दानदीया सो बारमा व्रत हुवा वो दान संजममें गया इस वास्ते प्रत्यक्ष श्री बीतराग देवनें मुक्तीका मारग कह्या और ग्यारमा व्रत पोसहसेंभी ऊपर बढगया ये प्रत्यक्ष बीतरागके बचनहै जरा इसकुं बिचारोतोसही साधूको दियासो संजममेंगया इस वास्तें सर्व श्रावगके व्रतोंके उपर होगया इसके सिवाय जो कुछ मंदिर प्रतिमा इत्यादिकके आगे चढाना देना लेना ये सर्व असंजममेंसें निकला और असंजममे गया इहा नाना प्रकारका पुण्य पाप अनेक नेय सुभासुभ संसारका खातामानो मुक्तीमारग तपजप संजमका जाणो सर्व बोल उपर लिखे प्रमाणें अडोल पणे धारो॥कवित्त ॥सबज कपडा तना, नकल सूवटाबना, तास मंझार नही चोटघाले॥लिखत चित्रामका देखचीत्ता सही, स्वानबी उठ ना भागचाले॥कतर कागजके फूल बहु रंग रंगे भवर,टुःक सांसकरनाह बैठे॥ असल और नकलकी पशु पहिचानहै, तास अज्ञान नरनाहजाने॥कहतहै संतजन सुनोहो भविक जन, पशुसे निषेद नरदेह माने ॥१॥ देखो प्रत्यक्ष क्याबात है जो कागज उपर अथवा भीत चितरामका किसीनें घोडे हाथी रथ गाय गंगानदी इत्यादिक मंडवा लिया अर्थात् बनवा

लिया लेकिन् किसीनें प्यासलगीतो इस गंगासे पानी नही मिलेगा घोडा सवारी नहीं देगा रण संग्राममें नही चलेगा गऊ दूध नही देवेंगी ए सर्व कहणे मात्र नामस्थापनहै लेकिन् म लब न होगा और कोई कहे हिंस्याका इहां भाक्तिके वास्तें कुछ दोष नही उनकुं अनार्य भाषाके बोलनेवाले अनार्य कहेहैं आचारांगका चौथा समकित नामा अध्ययन दूजा उदेसेमें इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥२०॥और कितनेक लोग ऐसा कहते हैंकी भगवती सूत्रमें आदिमें(नेमोबंभीएलिवए) ऐसा पाठहै तिस वास्तें थापना अक्षर बंदनीकहै ऐसा जो कहते है तिनको जबाब देने वास्तें ते शब्दका अर्थ लिखतेहै कि (नमो बंभीए लिवए) इसका अर्थ तो इस तरेकाहै अठारे लिपी ब्राम्ही ऋषभदेवकी पुत्री तिसको भगवंतनें सिखाईहै ते ऋषभदेव ब्राम्ही लिपीके करताहें तिनको नमस्कार करी है और निश्चेकेवली वदे सो प्रमाणहै सूत्रकरताका मनसाकातो अर्थ सूत्र करताही जाणें परंत मूल अर्थ तो ऐसा है अगर थापना अक्षरोको वांदतेहो तो तिनको हम ऐसा पूछतेहै कि १८ लिपी थापना वांदेतो नाम अक्षर इतना अक्षराको आकार सर्व ही बंदनीक होसी क्योंकि सबही अक्षर भगवानके बताये हुएहै इण लेखेंतो कुरान किताब पुराण वेद काम शास्त्र जोतिष वैद्यक विकथा वारता मंत्र जंत्र

तंत्र कोक सामुद्रीक २९ पाप सूत्र इन सबोके अ
क्षर तुम्हारे कहे सूजब वंदनीक होसी पिण इहातो
ब्राम्ही लिपीनी क्रिया तथा द्वादशांगी वाणी श्री ऋ
षभ देवजीने बतावी तिसवास्तें क्रियाके गुणसे वांद
वा योग्यहै थापना अक्षर वंदनीक होसी तो २९
पापसूत्रांके अक्षर वंदन जोग होसी तो अब तुम
किसतरे वंदते नही तेहने पाप सूत्र किसतरे कहते
हो वंदनीक तो एक नमो बंभीए लिवए नमस्कार
ब्राम्ही लिपीके करणहारको यानें ब्राम्ही लिपीके पै
दा करण वालेकों ओर भाव श्रुत परणत द्वादसांगी
वाणीको नमस्कारहे इति पूर्व प्रश्नउत्तर ॥ २१ ॥
अगर कितनेक मतमक्षी ऐसाजो कहतेहेकि सूत्र
भगवती सतग २० में उदेशे नोमें जंघाचारण वि
द्याचारण साधुयें प्रतिमा वांदीहे ऐसा जो कहतेहें
ते इकंत झूठे बचन कहतेहें ते किस्तरे विद्याचारण
जंघाचारण साधू लब्ध फोरवीनें मानुखोत्र पर्वते नं
दीस्वर द्वीपें रुचक द्वीपमें गयाहें यह वातातो साची
हे परंत श्री ठाणांग सूत्रके चउथे ठाणें मानुखोत्र
परबतपें तो ४ च्यार दिसें च्यार कूंट कह्याहें तेह दे
वताके आवासनाहें परंत प्रतिमाके वास्ते सिद्धायत
न कूंट कह्या नही तो प्रतिमा किहाथी वांदीहे ते पा
ठ लिख्यतेहे (माणुसुत्तरस्सणं पव्वयस्स चउदिसा
चत्तारी कूडा पन्नता तं रयणे १ रयणुचय २ सवरय

णे ३ रयणसंचये ४) यह सूत्र पाठमें च्यार कूंट कह्या बली कोईक ग्रंथें द्वीव सागर पन्नतीमांहे एके कविदिसें तीन तीन कूंट कह्या एवं१२ कूंट बारा देवताना आवास कह्याहें परंत तिहांबी सिद्धायतन कूंट नही कह्या तो तिहां प्रतिमा किहाथी बांदी अगर और सूत्रका पाठ लिख्यतेहै ॥ पूवेणं तिन्निकूडा दाहिणउ तिण तिण आवरेणं उत्तरउ तिणिनवे चउ दिसिमाणुस्स नगस्स॥१॥और रुचक परवतें पिण दिसा कुमारीका ४० कूंट कह्याहें परंत सिद्धायतन कूंट तिहांभी नही कह्या तो प्रतिमा उहां किहांसे बांदी अगर जैसें शास्त्रोमें कह्याहेकि॥ नास्तिभार्या कुतः साला धनंनास्ती कुतः सुखं नास्तीज्ञानंकुतो धर्मः नास्तिग्रामः कुतः स्थितः ॥१॥ इति बचनात् एक नंदीस्वर द्वीपमे सासते सिद्धायतनहें तिहां प्रतिमाहें तो तिहां (चेईयायं बंदए) ऐसा पाठतो मानु षोत्र और नंदीस्वरे और रुचक द्वीपे ए तीन ठिकाणें एकसिरीखा पाठहें अगर जिहां प्रतिमाहैं तिहां और जिहां प्रतिमा नही तिहांभी इतनाही पाठ सूत्रकाहें अगर जिसजगे प्रतिमाहें तिस जगे नमोथुणंका पाठ नही कह्या और जिहां प्रतिमा होवे ते तिहां (बंदई नमंसई) का पाठ होना चाहिये अगर बंदना ते गुण कीर्तनकरणा और नमस्कार ते नमणा ऐसा पाठ तो नही कह्या अगर एक (चेईयायं बंदए) यहसबद गुणोतकिर्तन कराहे

ते किस वास्तेकी एह सर्व साधानी रीतीहै अगर जे
जिहां साधूजी आई समोसरेहैं याने जिहां विश्रा
म लेवैहै तिहां गमणा गमणे पडकमतेहैं तिहां चो
वीस स्तवन कहतेहैं ते मांहिं लोगस्स कहे ते लो
गस्स मांहिं बहु वचनहै ते तिहां उने जंघाचारी सा
धुओने समुच्चय वचने (चेईयायं वंदए) ते तीनोने
जगवंत अरिहंत ज्ञानवंत प्रतें वंदना करीहै इण
आश्री इणे (चेईयायं वंदए) ऐसा कह्याहै और
जो प्रतिमा वास्ते (चेईयायं वंदए) कह्या होवे तो
नंदीस्वर दीपमें तो प्रतिमाहैं तिहां तो यह पाठ मि
लताहै परंतु मानुक्षेत्र और रुचक द्वीप इन जगे
तो प्रतिमा नही तिहां (चेईयायं वंदए) यह पाठ
किसतरह मिलसी इस बातका जुवाव विचार कर दे
ना चाहिये अगर जो इहां प्रतिमाकुं वंदना करणी
कहतेहो ते सूत्रासें विरुद्ध बातहै और विद्याचार्ण
जंघाचार्ण प्रतिमा वंदना वास्ते नही गया अगर टी
का मांहिं गाथा कहीहै ॥ [अईसय चरण समत्था
जंघाविज्जाई चारणामुणउ जंघाईजायं पढमं निसंका
उ रविकरेवि १] अगर जो जात्रा करणे वास्ते गया
होवे तो जंघाचारण रुचक द्वीपसें पाछाआवतां मानु
षोत्र परवतपे जो तुम [सिद्धायतन] कहतेहो तिस
की जात्रा क्यों नही करी तो येह साधू सास
तो भाव देखणे वास्ते गया छती सक्तके धणी वद

मस्तपणे चारित मोहनी करमके उदेथी लब्धि फोरि के गया और पुन एहीज उदेशके पीछे यह पाठहै [जे तस्सठाणस्स अणा लोईय अपडीकंते काले क रेई नत्थी तस्स आराहणा] यह लब्ध फोरी अण आलोयां प्रायछित लीधा बिना कालकरे तो धरम का बिराधकहें अगर जो जात्रा करणे वास्ते गया होयतो मोटा धर्मका लान्न क्यों नही सूत्रमे कह्या प रंतु इहां तो धरमके बिराधक कहे जो जात्रामे नफा होता तो ज्ञानीदेव आज्ञाके बिराधक उन साधूवा को क्यों कहते अगर कोई ऐसा कहे कि इहां प्रति माको तो (चैत्य) कह्याहैं परंत तीर्थंकरोजीको कि स जगे (चैत्य) कह्या अगर ऐसा जो कोई कहे तिनकुं इसतरें जुवावहै सो सूत्र अनुसारे लिखतेहै प्र थम न्नगवती उवाई रायप्रेसेणी इत्यादिक घणे सू त्रांमे बहोते ठिकाणे बंदनाके अधिकारमे तीर्थंकर ओर साधुवोको ग्यानबंत महा उत्तम पुरषो प्रते [चेईयं] कह्याहे ते पाठ (तिखुत्तो आयाहीणं प याहीणं बंदामि नमंस्सामि सक्कारेमि समाणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पऊवा स्वामी) यह पाठ बहोते ठिकाणे कह्याहै ज्ञानवंत वास्ते चैत्य कहिये ओर पुन समवायांग सूत्रमे जिहा २४ जिनांने केवल ज्ञा न ऊपज्या जिसवृक्षनीचें तिस वृक्षको ज्ञान नेश्रा यें चैत्य वृक्ष कह्या तेह पाठ ॥ एए सिणं चउवी

साए तित्थयराणं चउवीसं चेइय रुक्खा पन्नत्ता तजं
हा निग्गोहसाति ब्रिन्नेय साले पीयंगु बतोहे सरीसहे नाग
रुक्खे साले खीलर करुक्खेय ॥ १ ॥ तंदुयं पाडलं जंबू
आसत्थे खलु तहेव दहिवन्ने नंदीरुक्ये तिलिएय
अंबगरुक्खे असोगेय ॥ २ ॥ चंपगवउलेयं तहा वडस
रुख्ये तहेवधवरुख्ये सालेय बद्धमाणस्स चेइयरुक्खा
जिणवराणं ॥ ३ ॥) तिस वास्ते तीर्थंकर और साधु का
[चैत्य] कहिये इस वास्ते जंघाचारण साधोने श्री
जिनराजको जहां कही जो बंदना करतेहैं तिहांका
भाव श्री जिनराज देखतेहैं इति पुर्व प्रश्नोत्तर ॥ २२ ॥
अगर कितनेक लोग उपास दसाग सूत्रमे आणंद श्रा
वकजीकुं प्रतिमा पुजीहै अथवा नमस्कार करी कह
तेहैं तो एकांत सूत्रमे अण मिलती बात कहतेहैं ति
सका जवाब देनेके लिये सूत्रके प्रमाणसे सूधा अर्थ
लिखतेहैं ते किसतरे अब देखना चाहिये उपासग
दसासूत्र अध्येन पहिले श्रीमहावीरआगे आणंद
श्रावगकने कह्या ते पाठ (नोखलुमे भंते कप्पई
अजप्पइउ अणउत्थिणवा अणउत्थिय देवयाणंवा
अणउत्थिय परिगहियाणिवा चेइयाइ वादत्तएवा न
मंसित्तएवा पुव्वि अणालवंते आलवित्तएवा संलवित्तए
वातंसि असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा अजउवा
अणुपदाउत्रा) इति पाठ उपासगदसा सूत्रका अव
देखिये आणंदजीने क्या कह्या की अगर आजपछे

मुझे न कल्पे ॥ अन्य तीरथीने १ अन्य तीरथीना दे
वने २ ओर अन्य तीरथीने ग्रह्या अरिहंतना [चै
त्य] ते साधू अनमती जोगी संन्यासी आदिको
ने अपणे मतमे जिन अरिहंतका (चैत्य) ते साधु
को मिलाय लिया होय अथवा समकत्त सरधासे
भिगाय लीया होय तेहनेजी वंदूनही तेहना बोलाया
पहिले बोलूनही ओर तिनको गुरु समझके आहारा
दिक देवणे वास्ते बीनती करुं नही मिथ्यात कारण
जाणिके यह मूल पाठ अर्थ सूत्रहै ओर इस पूर्व
पाठका अरथ कितनेक लोग ऐसा करतेहैं जो अन
तीरथी यानें अनमतीने ग्रही प्रतिमा याने लेयकर
अपनी कर मानीहै यानें अपणे देवताओकी प्रति
माओमे जिन प्रतिमा स्थापन करी ऐसी जो जि
न प्रतिमा प्रते बंदु नही इम कहतेहैं परंत मतप
क्षी ऐसा नही समझते कि जो अरिहंतकी प्रतिमा
जोग मुंद्रा संजोग रहित बैठे आसनसें होतीहै अग
र अनतीरथीके देवताकी प्रतिमातो संजोगी आयु
ध सहित ओर असत्री सहित वाहण यानें असवारी
सहित होवे तो सिव ओर जिन तीर्थंकरजीकी प्रति
माकुंतो आजदिन मुरख बुद्धिका धणी पुरस पिछा
णताहै तो तिणे ते जिन प्रतिमाको क्या जाणिके आ
दरी यानें ग्रहण करी अगर ब्रम्हा विष्णु महेस हनु
मान कारतिक रुद्राणी अथवा खेत्रपाल इनमेंसें कि

सकी प्रतिमा जाणकर अंगीकारकरी ते कहो अगर
जो तुम प्रतिमाका इहा अरथ करोगे तो प्रतिमा
क्या बोलतीहै ओर प्रतिमाका अर्थमें आहारपानी
का क्या कामहैं अगर प्रतिमातो कुछ आहार पाणी
नहीलेय तो च्यार प्रकारके आहारका क्या कामथा
सूत्रमें कहणेका तो जांणिये इहां आहार पांणी साधू
के कारणें कह्याहैं तो इण ठिकाणे प्रतिमाका अर्थ क
रे तेह सूत्रसें बिरुद्धहैं परंत मतपक्षीयाना मनमाहि
इमजो ज्युं त्युं करीकें अन्य तीरथीका ग्रह्या यानें लि
या॥चैत्य॥ निषेधीके सय तीरथीना॥लिया॥ चैत्य प्रति
मा॥ पूजना ठहरातेहैं तो एह सूत्र न्यायसें ठहरता
नही ओर उनोको हम पूछते हैं कि तुम्हारा बाप चं
डालके घर बैठा कोई कारिज करिके तिस वखत तु
म अपणे बापको बाप करी समझतेहोकि चंडाल क
रि मानतेहो ते कहो अगर जो तुम अपणे बाप
को बापकर मानते होतो अगर अन्य तीरथीके देव
ल मांहि रहिकर तुम्हारी प्रतिमा अवंदनीक किम
हुई ऐसा प्रतक्ष असुद्ध बचन बोलतेहो आणंदजी
के परिमाणसें प्रतिमाका अरथ करतेहो तो एकंत
मिथ्या यानें झूठा बचन कहतेहो अगर आणंद श्रा
वकजीको क्या कारण जोगहैं तिह पाठ लिखीयेहै
सूत्र (कप्पइंसे समणे निग्गंथे फासू ए सणिज्जेणं
असणं पाणं खाइमं साइमं वत्थ पडिग्गहं कंवलं पा

य पूडणेणं पीढ फलग सिज्जा संथारएणं उसही मेसे जेणं पडिलाभेमाणे बिहरित्तए) ए कलप मांहि तो अरिहंत ओर अरिहंतका साधु वांदवा ओर दान देवा एह कलपहें यानें यह बातें करणी जोगहें अगर जो स्वमतीकी यानें अपने मतीकी प्रतिमा वांदवी एह पाठतो सूत्रमें नही कह्या जिसतरें आणंद श्रावकको समकतकी बिधी कहीहै इसीतरें संख पोखली वगैरे सर्व श्रावकोंको यही बिधकहीहै ओर अनंत चोवीसीके श्रावकांकी यही बिध समकितकी रीतहें इम समझकर सूधा अरथ सूत्रका करणा चाहिये ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २३ ॥ ओर कितनेक सकस ऐसा कहतेहें कि अंबड श्रावक सन्यासीनें उववाई सूत्रमें प्रतिमा पूजी कहतेहें ते सूत्रका पाठ लिखतेहें (अंबडस्स नो कप्पइ अण उत्थियावा अण उत्थिय देवयाणिवा अण उत्थिय परिग्गहीयाइं चेइयाइं बांदत्तएवा नमंसित्तएवा जाव पजुवासितएवा णणत्थ अरिहंत्ते वा अरहंत चेईयाणिवा) जैन कलपे तीन बोल ते हतो आणंदकी परेंज कह्या ओर कलपे ते मांहि अरिहंत १ ओर अरिहंतका (चैत्य) ते साधू २॥ अरिहंत तेहतो देव अनें अरिहंत (चैत्य) ते साधू तेह गुरुइन एह देवअर एह गुर दोनोंको अंबडजीने बांदवा कलपेहें अगर कदाचित मिथ्यातीनें लीधी अरिहंत [चैत्य]नामें प्रतिमा ठहरावतेहो जो तुम लोगतो॥ति

सपर हम पूछतेहैं कि जो अरिहंत तेहतो देव अनें अ
रिहंत [चैत्य] ते पुन देव तिवारें गुरु वांदवानो पा
ठ सूत्रकाबतावो अगर तिसरा पाठतो सिद्धांत मां
हिं है नही तिसवास्तें अंबरूजीके साक्सें प्रतिमा पू
जनी कही नही तेह बिचारकर समझना चाहिये ॥
॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥२४॥ अगर बहुतसे लोग ऐसा
कहतेहैंकि शास्त्रमें ७ क्षेत्रमें धन खरचणा कह्या
ते सूत्रके परिमाणमे नही मिलताहै अगर पहिले
श्रावग आणंद कामदेव वगैरे सूत्रामे कह्याहै तिनके
अनेक कोड संख्या धन हुंतो तेहना १२ व्रत ११ प
डिमा ओर संथारा ऐसी करणी सूत्राके पाठमे वर्णन
करीहै परंत तिनकूं संघ काढवा देहरा प्रतिमा करा
वना पूजवातो सूत्रमे कह्या नही तिनको श्रीमहावीर दे
वनेकितना क्षेत्र बताया अथवा गौतमादिक गणधरांनें
आगेधन काढवा खरचवा सात क्षेत्रामें कह्या होवेतो
सूत्रका पाठ बताओ अगर प्रतिमा १ देहरा २ पु
स्तक ३ साध ४ साधवी ५ श्रावग ६ श्राविका ७
एह सात क्षेत्र कहतेहो तेह अजाण लोकाको भ
रमावणे वास्ते कहतेहो सूत्र मांहिं तो कोई साध
साधवीके वास्तें मोल आणकर आहार देवेतो उस सा
धूको अकलपनीक कह्याहै याने लेणे जोग नही क
ह्या आचारांगादि केई सूत्रोमें मनें कीयाहै तो साध
साधवीके वास्ते क्या काममें धन आताहै ते कहो

अगर पुस्तकतो श्रीबीर निर्वाण पछें नोंसें अस्सी वर्षें ९८० बाद लिखाणाहै पहिले तो मुखपाठ सूत्र यादथे तो अगर हम जाणतेहे कि यह ७ क्षेत्र नवे बणाये हुयेहें ओर जो श्रावग पुनवंत होवे ते खरातनो धन खाय नही तिस वास्तें यह ७ क्षेत्र का परिमाण सूत्रसें नही मिलताहै यह बाते नवे प रिकरणोंकीहै कुछ सूत्रमें यह ७ क्षेत्र नही कहे इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २८ ॥ अगर कितनेक आचार्य ऐ सा कहतेहै की द्रोपदीनें जिन प्रतिमा पुजीहै तिस का जबाव ओर सरधांन सूत्र परमाणसें लिखतेहैं अ गर सर्व सूत्र मांहि देखता तो साध १ साधवी २ श्रावक ३ श्राविका ४ किसीनें प्रतिमा पुजी नही कही ॥ दोहा ॥ साध श्रावगाकिण सूत्रमें, प्रतिमा पू जी नांही ॥ नामलेवें ईक द्रोपदा, सो तो ब्रती नाहि ॥१॥ओर राजग्रही चंपा सावत्थी आलंभिया तुंगीया द्वारका बनीता इत्यादिक नगरी बर्णवी तिहाका को ट खाई दरवाजा बाग बाफी घर हाट राजा राणी रु द्धि श्रावककी बरणवी लेकिन किसी नगरीमें देहरा प्रतिमाका बरनण कीया नही एक द्रोपदीनें बिबाह के औसरमें इह लोक संबंधी खेम कुशल मंगलीक तथा बर वास्ते पूजीहै तेह संसारका बिबहार कारज में पूजीहै जैसें देव कुलमर्जादमें ॥ (बिद्याधर अ ने केई देवता, इनका कुल बिबहारजी॥ पूजता तिणमे

धर्म बतावें, दीसे मूढ गिमारजी ॥ समकितपरखो जिन बचनोंसे ॥ १ ॥ लेकिन मोक्षके कारन अथवा करम निरजरा कारणे नही पूजी तेह द्रोपदी प्रथम पूर्वले भवमे धर्मरुची अणगारकुं कडवो तूंबा दीया तो प्रथमतो यह काम अजुक्त कीया १ और सुकमालकाके भवमें भिख्यारीको दूसरा भरतार कीधा यह अजूक्त दुत्तीये बारता २ और पछे संजम लेकर अवनीत गुरणीकी आज्ञा मेटी यह तृतीय अजुक्त बारता ३ और पीछे नगर बाहिर तपस्या करी ए चोथी अजुक्त बारता ४ अगर पछे पंच भरतारनो नियाणो कीयाए अजुक्त पंचमी बारता ५ और पछे संजम बिराधके बेस्या दैवांगणा दूसरे देवलोकमे हुई यह षष्टमी अजुक्त बारता ६ अगर पछे द्रोपदीके भव इहां आकर पांच भारतार ब्याह्या एह सातमी बार्ता अजुक्त हुई ७ अगर ऐसी अजुक्तके करणहारी मिथ्या दृष्टी सहित तिसकी पुजाकी साक्ष अथवा सुरियाभ अविरतीरी दीधी परंत आणंदजी संख पोखली इत्यादिक श्रावकोकी ऊपमा क्यों नही दीधी तो किस वास्ते अगर आणंद परमुख तो प्रतिमा पूजता नही तो गणधर देव खोटी ऊपमा किसतरे देवे अगर द्रोपदी जिसवक्त प्रतिमा पूजी तिसवक्त श्राविका नही १ जो श्राविका होयतो पंच भरतार किसतरे बरे२ अगर जो द्रोपदी बिरत लिवा

तिवारें इम जाणती न हुंती जो हुं पंच भरतार वरस्युं अगर संसारकी रीतसे एक धणी राख्यो होवे तहतो परिमाण नही रह्यो ओर जो वरवाकी वक्त पांच थ्या ह्या तो श्रावक ब्रत लेता दस वीस कितना वर मोकला राख्याथा तो तेह सूत्र पाठ दिखावो अगर इस परिमाणसे श्राविका तो नही कहिये १ अगर द्रोपदी समदृष्टी नही तेकिसतरे दसाश्रुत रुकंध सूत्र दसमें अध्ययनें कह्यो हैं कि जो मनुष्यके भोगोंका नियाणा करे ते धरम कांने सांभलवोभी नही पामे अगर जो उताकिष्टा रसनो बंधहोवे तो ते द्रोपदीको मनुष के भोगोंकी नियाणो उतकिष्टा रसनातो नही तिसवास्ते पछे संजम उदे आव्याहै ते भणी यह परणी नही याने बिवाही नही तब तांई नियाणो हुंतो अगर तिहां लगे समदिष्टी नही अगर जो बस्तु बंछी ते आवीमिले तिस वक्त नियाणो पूरा होय अगर इहां नियाणाका दो भेदहें एकतो द्रव्य प्रत्यय १ ओर दूसरा भव प्रत्यय २ अगर जे भव प्रत्यय तेहतो वासुदेव चक्रवर्तेको होवे जेहने भव पर्यंत बिरत उदय न आवे ते भव प्रत्यय १ अगर दूसरा सर्वको द्रव्य प्रत्यय होवे तेहने वांछवो द्रव्य मिल्यो तिवारें नियाणो पूरो थयो पछे संजमने समकित सरव आवे ते भणी द्रोपदीनें द्रव्य प्रत्यय नियाणों हुंतो ते परणया पीछे बिरत उदय आव्यो परंतु परणती बेला लगे तो नियाणाका

उदे हुंतो (पुवकंड नियाण पडिचोइजमाणी) ऐसा पाठहै तिहांलगे समद्रिष्ट पण नही २ ओर द्रोपदी का मात पिता पिण मिथ्याती संभवेहैं जेणे आहार बह परका कराया (ते विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सूरंच मजंच मुहुंच मंसंच सिधुंच पसणंच सु बहुं पुप्फ वत्थ गंध मलालंकारेच वासुदेव पामुखाणं रायसहस्साणं आवसेसु साहरहतेवि साहरंति) लाखो क्रोडोगमे त्रस जीव हणी जीवनी हिंस्याकरी मंस आहार निपजाव्या ते मंस आहार निपजाव्या वास्ते समद्रिष्टी नही मंस आहार समद्रिष्टीके घरे नीपजे नही ते समे श्रीकृष्ण पिण समद्रिष्टी नही मंस आहार कीधावास्ते अगर श्री नेमीश्वरस्वामी संजम नही लीधो तिसवास्ते जब नेमीश्वर भगवते संजम लीधो तब सासन परवरत्यो तब जादव वंशी घणा जिन मारगी थया अगर जीव हिंस्या नेमीश्वर भगवंतने परणवाके समय घणी होती हुंती ते टालीने संजम लीधो एह समद्रिष्टीका लक्षण जाणवा इण लक्षण द्रोपद राजा समद्रिष्टी नही ३ वली कितनेक वादी ऐसा कहतेहैं कि जे प्रतिमातो तिर्थं करकीहै की सूत्र गिनाताजीके पाठमे कह्याहै की (जेणेव जिण घरे तेणे वउवा गछई त्ता २) की द्रोपदी जिनना घरमा आवी कह्योहै तिस वास्ते तिरथकी प्रतिमाहै येह तो सत्यहै लेकिन नयके प्रमाणसे अ

रथ इहां जिण सद्दका औरभीहै कि जैसे ठाणांग सू
त्रके तीसरे ठाणेमें कह्याहै कि(तउ जिणा पन्नत्ता तं
जहा उही नाण जिणे १ मणपज्जवनाण जिणे २ के
वलनाण जिणे ॥ ३ ॥ और [तउ केवली पन्नता तं
जहा उहीनाण केवली १ मणपज्जवनाण केवली २
केवलनाण केवली २] और (तउ अरिहा पन्नत्ता
तंजहा उहीनाण अरिहा १ मणपज्जवनाण अरिहा २
केवलनाण अरिहा ३) अगर अधिक नाणीनें अरि
हा और जिण कह्याहै केवली मनपरजव ज्ञानी ते
तो साधूहोवें तेतो अणगार घर रहित कह्याहै (अ
णगारे जाए) जगे जगे सूत्रमें कह्याहै अगर जिन
नें घरहोवे तेहवा जिन जाणवा अगर घरतो अवध
ज्ञानी देवता कामदेव परमुखनें होवे तिस वास्तें जि
न सब्दे अवधि ज्ञानी जिननो घर जाणवो अगर घ
र वागबाडी मांहिं तीर्थंकर साधु आवता तथा तव
अनेक लोक वंदवा जाता तिहां इमतो किहाइं कह्यो
नही जे चालो तीर्थंकर साधुने घरे जाईये तेहने घ
र नही इस वास्ते इम नही कह्या परंतु जिहां साधु
बैसे तिस जगेको सूत्रमांहिं [उवस्सयं] कह्योहै
उवस्सय ते उपाश्रय अलप कालके रहिवाका आ
श्रय वास्ते उपाश्रय कहिये पिण घर न कहिये ति
स वास्ते अवध ज्ञानी जिनतो कामदेवादिकनो घर
कहिये जिमज्ञाता मध्ये नागघर कह्यो तिम बलीको

ई कहे तीर्थंकर विना जिन सद्द किसको कहिये तेह उत्तर तीर्थंकरने जिन कहिये १ सामान्य केवलीने जिन कहिये २ अवध ज्ञानीनें जिन कहिये ३ मन परजव ज्ञानीकों जिन कहिये ४ बारमागुणठाणा के धणीको जिन कहिये ५ चउदे पूर्वधरनें जिन कहिये जावत १० पूर्वधरतकको जिन कहिये ७ ग्यारवां गुणठाणाके धणीको जिन कहिये ८ आवती चोबीसीके जिन कहिये ९ जिन नामध्येयनें जिन कहिये १० जिन समुद्रको कहिये ११ कंदर्प्पनें जिन कहिये १२ नारायण कृष्णनें जिन कहिये १३ बहु धनवंतनें जिन कहिये १४ ते कोंण ग्रंथकी साखहै तो हेमाचारज किरत तेह्नी हेमी नाममाला अनेकारथी मांहिं कह्याहै ते॥ श्लोक ॥ (बीतरागो जिनश्चैत्र जिनः सामान्यकेवली ॥ कंदर्प्पे जिन वारातुः जिनो नारायणस्तथा १) अगर अरिहंत सकल करम कपाय २२ परीसे सहें अगर जीततेहें तिसवास्तें जिन कहिये १ अगर सामान्य केवली पणें रागद्वेप मोहघाती करम जीत्या तिसवास्तें जिन कहिये २ और कंदरप्पने सकल संसार जीत्या सरवमें व्याप्या तिस वास्तें जिन कहिये ३ वासुदेव पोताना भुजबलें तीन खंड पृथवी जीत्या तिसवास्तें जिन कहिये ४ पछें जेहवा अवसरें तेहवो जिन सद्दनो अर्थ जाणवो ओर द्रोपदीनें तो परणवाना अवसर मांहिं पूजीहै

नियाणाना तिव्र उदेमें नला नरतारनी बांग विषि यारथी थकीइं पूजीहै तिसवक्त चारित मोहनीनों उदयहै तेणें बीतरागी निरागी ऊपर नक्तिराग नही अगर समकितनें अनावें तो नमोथुणं किमकहे अवधिज्ञानी माहिंतो नमोथुणंनां गुणनही ऐसा जो कोई कहे तो तेहना उतर अगर जे नमोथुणंका गुणतो अरिहंत सिद्धमांहि है एहतो सत्यहै परंतु अरिहंतने अजाणलोगें अरिहंत जाणीनें बांद्या पूज्या और नमोथुणं कह्या ते सूत्र मांहि विज्ञान देखिये अगर नगवती सतक ८ में उद्देते पांचवें गोसालाजीका श्रावग श्रीबीर बखाणया तिहां कह्या है (इच्चेते दुवालस्स आजीविय उवासग्गा अरिहंत देवतागा अम्मा पिउसुसगा) अरिहंतना नक्ति कह्या आणं दवत् तेहनेंमतें गोशालाजी अरिहंतहैं एह श्रावक गोशालाजीको नमोथुणं कहतेहैं तेहने आचार्य अरिहंत जाणिके नमोथुणं कहेथे १ बली नगवती सतग १५ में सावत्थी नगरीमें (हालाहलां) कुंनारीनो हाथें गोसालाजी बिचरतेहें तेसावथी नगरीयें (अजिणा जिण पलाठी अकेवली केवली पलाठी असवनुं सवनु पलाठी अजिणे जिण सद्दप्पगा समाणे विहरई) कह्यो अगर अ जिनथको जिन अरिहंत केवली सर्वज्ञ कहिरावते बिचरतेथे २ अगर तेहना श्रावग जिन अरिहंत केवली सर्वज्ञ जाणीनें न

मोथुणं कहेथे १ वली एहिज १५में सतकें गोशाला जीनों अयपुल श्रावग रात्रें चिंतवतेथे [एवंखलुमम धम्मायरीय धम्मोवयस्स ए गोशालाजी मंखलीपुत्ते उपन्न नाण दंसणधरे जाव सव्वदरसी इहे सावत्थीए नयरीए हालाहाला ए कुंभकारिये कुंभकारावणंसी आजीविय संघ संपरिबुडे आजीविय समएणं अप्पा णं भावेमाणें बिहरई) तेहने हुं कालह सूरज ऊग तां जाईनें वांदसु यह इम अरिहंत जाणकर नमोथु णं कहतेथे कि नहीं २ और उपासगदशा सूत्र ७मे अध्येयन सिकडाल कुंभारते रात्रे समदृष्टि देवता क हिगयो जो कालिह आवस्ये ते कोण (एही तेणं दे वाणुप्पिया कल्लं इह महा माहणे उप्पन्न नाण दंस ण धरे तीय पडु पन्न मणागय जाणए अरिहा जिण केवली सवन्नु सव्वदरसी तिलोग विहिय महिय पुईयंस देव मणुया सुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे पूयणिज्ज वंदणि ज्जे सक्कारणिज्जे समाणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्म संपयाउ तत्तेणं तुम्मं वंदिज्जा हि जाव पज्जुवासेजाहि पाडिहारेणं पीढ फलग सि ज्जा संथारएणं उवनिमंते जाहि] तिवारे सिकडाले इम जाणयो जे माहिरा धरमाआचार्य गोसा लाजी मंखली पुत्र (उपन्ननाणदंसणधरे जाव तच्च कम्म संपया संप्पउते से कल्लं इहां हव्वमागच्छिस्स ई तएणंतं अहं वंदामी जाव उवनिमंतिजाहि) इण

लेखे सिकडालपुत्र गोशालाजीने अरिहंत जाणकर नमोथुणं कहतेथ कि नही ए ४ साख अजिनने जिन जाणीनें नमोथुणं सूत्रमें कहीहै अगर अजिन और जिननें नमोथुणं कहिवातो एक सरखीहै और नमोथुणं तो देवता और इंद्रादिकके नवमें अनंती बार कह आयेहै परंतु कुछ मोक्ष खाता नहीहै एह संसारका मंगलीक व्योहारहै और इसमें समकती और मिथ्यातका कारण नेद कुछ जुदा नहीहै अनव्य. और नव्य और सम्यक्ती और मिथ्याती सवही पढतेहैं यह परिमाण सास्त्रोक्तसें मालुम होताहै परंतु सम्यक्तीजीव जिननें नमोथुणं कहतेहैं तिनको सुध श्रद्धाका लान्न होताहै तिम द्रोपदीयें पिण मिथ्यात मोहनीके उदेमें अजिन अवधिज्ञानी देवतानी प्रतिमाको नमोथुणं कह्याहै अथवा जो जिनकीही प्रतिमा होय और नमोथुणं कह्याहै तो क्या अचरजहै अगर जीव इहलोक रीतसे अथवा मंगलीके कारणें पूज्याहै परंत आज्ञा माहिला कारज नहीहै वली एहीज द्रोपदी परणया पछें समकितनें संजम पांमी तिवारें प्रातिमा पूजी किहांइं कही नही अगर धातकी खंडमें देवता साहरीनें द्रोपदीको लेगयो पदमोत्तर राजाने घरें रही तिहां तप कीधा कह्या पण प्रातिमा पूजी कही नही और फिर श्रीकृष्ण पांफवजी धात्री खंडसे द्रोपदा आणकर पांचोपांफवांको देसोटा दी

रण पाचमे संवर द्वारमे (पेचान्नाविये आगमे सिन्न द्ध) ऐसा पाठहै तिम भगवंत पासे जावो वंदणाक्र रो और जो जन परिमाणे भूमिकायें पूजो पाणीये करी छिडको पुष्याकी वरषा करो [दिवमुरवरान्नि गमण जोगं करेह] जे देवताने आविवायोग्य सुचि सुगंध सीतल भूमिका करो परंत इम नही कह्यो जो भगवंतने रहिवा बैसवा जोग भूमिका करो ते किसवास्ते जे भगवंत तो फूल पाणी सचित पाणी व स्तुना भोगीनही तिसवास्ते देवता आने भगवंतके वास्ते नही कह्या पुन सूत्रमें इम कह्याहै (जलय थ लय) ते ऊपन्या फूलते कमलादिक थलजते जाई चंपादिक फूल वरसावो अगर इस पाठके ऊपर कि तनेक बादी ऐसा कहतेहै कि सचित पाणी और स चित फूलांकी वरषा मानतेहै और सामायांग सूत्रके विषे ३४ अतिसय मांहिं ऐसा पाठहै [जलय थल यनी सुर पभूएणं] तिहां पिण सचित पाणी फूल मानतेहैं ऐसी सरधा धारणे वालोंको इहा जवाब लि खतेहैं देखो जिसवक्त सुरियाभके सेवग देवनें पाणी की वरषा करी तिहां ऐसा पाठहै कि (अन्नवद्दलं विउव्वइ २ त्ता) और जिहां फूलांकी वरषा करी तहां (पुष्फ वद्दलं विउव्वई विउव्वइत्ता) ऐसा कह्याहै अ गर जिम जनम महोछव करतां जगे जगेसे द्वीप स मुद्रकी माटी पाणी और फूल आण्या कह्याहै इम

यानें इसतरें इहा कहीसे पाणी अगर फूल आण्या यानें ल्याये इसतरें कही नही कह्या और ३४ अतिसयहै तेतो मुनपांना कीधा नही होताहै यहतो श्री भगवंतना पुण्य प्रभावसें प्रगट होतेहै अगर कितनी देवताओंकी करी अतिसे होतीहै तेह ३४ अतिसय ॥ यत ॥ तेषांच देहोद्भुतरूपगंधो, निरामयः स्वेदमलो झितश्चः ॥श्वासोऽब्जगंधो रुधिरामीखं तु, गोक्षीरधारा धवलं ह्यविस्त्रं॥१॥आहार निहार विधिस्त्वदृश्यः, श्चत्वारएते तसयाः सहोत्थाः ॥क्षेत्रेस्थितिर्योजन मात्रकेपि नृदेव, तिर्यग्जन कोटिकोटेः॥२ ॥ वाणी नृतिर्यग् सुरलोकभाषाः, संवादिनि योजनगामनीच॥भामंडलं चारुचमौलिपृष्टे, विडं बिताः ऽहर्पतिं मंडलश्रीः॥३॥साग्रेचगव्युतिशतद्वये रुजाः, वैरेतयोमार्जि तिवृष्ट्य ऽवृष्टयः ॥ दुर्भिक्षमन्यस्वचक्रतो भयं, स्यानैत एकादश कर्मघातजाः ॥४॥स्वधर्मचक्रं चमरीः सपाद, पीठं मृगेंद्रा सनमुज्वलंच॥छत्रत्रयं रत्नमयो ध्वजोः ङ्रिः, न्यासेच चामि कर पंकजानिः॥५॥ वप्रत्रयं चारु चतुमुखांगताः, श्चैत्यद्रुमोऽधोवदनाश्च कंटका॥द्रुमानतिर्दुंदभिनाद उच्चकैः, वातोनुकूलः शकुनाप्रदक्षिणाः॥६॥ गंधांबुवर्षं बहुवर्णपुष्प, वृष्टि कचश्मश्रुनखा प्रवृद्धिः॥चतुर्विधामर्त्यनिकायकोटि र्जघन्यजावादपि पार्श्वदेशे॥७ ॥ऋतुनामिंद्रियार्थानां, मनकुलत्वमित्यमीः ॥ एकोन विंशतिर्दैव्या, श्चतुस्त्रिंशच्चमीलिता

॥८॥ इन अतिसयांमेसे ४ जनमसे होतीहैं ११ अतिसय केवलज्ञान होतेही होयहै १९ अतिसय देवकृत होतीहै सोई ९ प्रकारके पुन्नमें कह्याहै कि अन्न पुन्ने १ पाणपुन्ने २ लैणपुन्ने ३ सैणपुन्ने ४ वत्थपुन्ने ५ मन पुन्ने ६ बचनपुन्ने ७ कायपुन्ने ८ नमस्कारपुन्ने ९ इह नव प्रकारकापुन्न ठाणांग सूत्रके नवमें ठाणेमे कह्या है। कि अन्न ४ प्रकारे आहार सबही जीवोको देता हुयां जीव पुन परकिरती पैदाक करताहै अगर साधू अथवा संजती असंजतीका भेद वीतराग देव नें नही कीया ओर कोई जीव दानका लणे वाला भला या बुरा जो होयतो दान देणे वालेकुं उसका दोष नहीं वहतो अनुकंपा ओर साताके देणका अभिलाखाहै इस वास्तें ४ प्रकारके दानसें पुन्न बंधेहै १ पाण पुन्ने काहिता पाणीका दान सर्वही जीवांकुं देता जीव पुन्न बांधेहै २ लयण कहतां स्थानक जगें देता पुन्न ३ सयण सिज्या तखत पाटीयादि ४ वत्थ याने बसत्र दान ५ मन० दानशीलादिकम रखनेसे पुन होय ६ बचन० सुद्ध साताकरीसें पुन ७ कायासें दयापाले ओर देव गुरु भक्ति विनयसें पुन ८ नमस्कार करता पुन होयहै ९ एहनव बिधिसे पुन बंधे ४२ बिधिसे भोगवे जिस्मे तीर्थंकर नाम करम निरवद्य पुन्यसें बंधेहै तिस वास्ते ३४ अतिसय ३५ वाणी १००८ लक्षण वज्जरिषभ नाराच

संघेण समचौरंससंठाण इत्यादि गुण लक्षण तीर्थंक र मांहि होतेहै सोई देवकृत फूल अचित पुन प्रकृ तिसे देव बारिस करेहै ओर सचित याने हरे फू ल समोसर्णमे होयतो सेठ साहूकार राजा आदि पा च अभिगम साचवता याने करता कह्याहै तिसमें सचित वस्तु बाहिर छोडणी कहीहै अचित लेई जाय रा कह्यो ते किम मिले ओर जो सचित फूल होय तो साध साधवीयांकु संघट्ठा होय तिसते जीव हिंस्या होय तिस वास्ते अचित फूल जाणीये ओर कौणक ने नगर सिंगारमे पाणी फूलाका आरंभ कीया ति समे भगवंतकी आज्ञा नही हुई ओर कोंकणने नगर में छिडकाव कराया लेकिन समोसर्णमें नही कराया ओर पाणीकी बारसभी अचित बेक्रीय जाणवी साख उत्राध्येन १२ मे हरकेसीमुनीकें दान देनेमे पंचदिव्य बारिस देवने करी तिहां कहींसे पा णी ल्याया नही ततकाल बेक्रिय कीया ओर भगवा नके पंच कल्यानक चवन १ जनम २ दिक्षा ३ केवल ४ निरवाण ५ चवन जनम दिक्षा इन ३ मांहि भ गवान अबिरतीथे तेह कल्याणका मांहि फूल पाणी का समारंभ कीधा कह्याहै जब केवल महोछव कि या तब तिसबक्त भगवंत महाव्रती संजमीहें तिस वास्ते सचितका सपर्श संघट्टा नही कराया तिसज गे सचित फूल पाणीनो संघट्टा देवोने भी नही करा

या ओर कोंकण परमुख बंदनें वास्ते गये तिस ब
क नगर सिणगारा फूल पाणी बिखरथा परंत नग
वंत वास्ते फूल माला लेई नही गया नगवंतको म
ग्रोद नूमिका मांहि गया तिहाथकी पाच अनिग
म धारण कीये इम साधुवाने बांदवा गये तिस व
क सचित बस्तु दुर गेडी ऐसा सूत्रका लेखहै ति
स वास्ते पाणी फूल सचित्त नही बली इतना आरंन
कीधो कोणक परमुख आपणी सोन्या वास्ते परंत
तिस मांहिथी नगवंतके काममें क्या आया तेह वि
चारकर कहो ओर [जल थलय] जो सद्दहे ते ऊपमा
बाचिक जाणीये कि पुसप बेक्रीकेकैसेहैं कि जैसे जलथ
लनके ताजे फूल सोनानीय होवें इसीतरेकें वे बेक्रियफू
ल समजना जिम उत्राध्येयन २३ में [पासंडाको
ऊगमिया] ते नगइव मगातथा दसमी कालिकासू
त्र नवमें अध्ययन ३२ में (जाणंते विगलेंदिया) मू
रख अवनीतको मृग ओर बोकडे कि ऊपमा दई ति
म इहा पिण फूल (जलइव थलइव) ऐसाऊपमा
वाचिक जाणिये परंत सुचित नही २ बली सुरियान
देव आपणा नाटिक करणे आया तिहां नगवानको
बंदणा करी तिसवक्त नगवंतने ऐसा कह्या तेह पाठ
श्रीरायप्रसेणी सूत्रे (पोराणमेयं देवा १ जियमेयंदे
वा २ कियमेयंदेवा ३ करणिज्जमेयंदेवा ४ आचिन्न
मेयंदेवा ५ अनणुन्नायमेयं देवा ६) यह गह बोल

भगवंतनें कह्या ते वंदना करिवा आश्रीहै परंत ना
टिक करवानी आज्ञा नही कही ते किसवास्तें कि सू
रियाभदेव जिन आगे कह्या कि हे महाराज गोतमा
दि श्रमणाने दिखावा भणी ३२ बिध नाटिक करूं
तव भगवंतें (एयमठं नोअढाई नोपरिजाणई तुसिणी
ये संचिट्ठई) कह्यो तिहां अण बोले रहे परंत आ
ज्ञा न दीधी नाटक करणी सावद्यहै तिसवास्ते तुम
कहतेहो जे प्रतिमा आगलें नाटिक करता रावणें ती
र्थंकर गोत्र बांध्यो इम होवेतो २० स्थानक तीर्थंकर
गोत्र बांधवाना ग्याता सूत्र आठमे अध्ययनमे कह्या
तिस मांहि नाटिकका बोल किम न कह्यो तथा कृष्ण
कोंणक आणंद संख पोखली इत्यादि श्रावके साक्षा
त भगवंत आगें किसीने नाटिक कीया ऐसा कही
किसी सूत्रमें नही कह्या तो इह छह बोल वंदणा
आश्री कह्याहै ओर सुरियाभ देव महाबीरसे पूछा
की (अहणं भंते सुरियाभे देवे किं भवसिद्धिये स
मदिठिए मिछदिठिये परिएसारीए अणेत संसारीए
सुलभ बोहिए दुलभ बोहिए आराहए बिराहए चरि
म्मे अचरिम्मे] तिवारे भगवंतनें ते छह बोल सारा भ
विसिद्धि आदि कह्या इण लेखतो सूरियाभ बिमानमे
ये बारे जातके सुरियाभ देव ऊपना जाणिये बली
भगवती सतग १२ में उदेसे ७ में गलीके बाड़ेका दृ
ष्टांत कह्या सो बकरीयांको वाडो तिसमांहि (अयास

हस्सं परवेवेज्जे)एक हजार बकरी भरी वह मासलगे वा
डामे राखी ते बकरीयाना उच्चार पास बणखेल जलमो
सींग मुख हाथ पग तेणे ते वाडो अणफरस्यो नही रह्यो
पण कोई आकास परदेस मात्र भूमिका अणफरसी रही
होय पिण (एयंसी महालयंसी लोगंसी लोगस्स सा
सयंभावं संसारस्स अणादिभावंजी वस्सयं णिच्चभा
वं कम्म बहुलं जम्मण मरण बहुलंच पडुचनथी केई
परमाणुप्पयगालमे ते बियएसे जथणं अयंजीवेणजा
ए वाणमएबाए) जीवें सर्व लोक फरस्यो ऊपज्यो
मूयो परदेस मात्र भूमिका बिनफरस्या नरह्यो ८४
लाख नरका वासा सातक्रोड़ ७२ लाख भवनपतीका
भवन पाचथावर तीन विकलेंद्री तिरजंच मनुपना अ
संष्याता आवास ८४ लाख ९७ हजार २३ विमा
णीकना विमाण ते मांहि पांच अनुत्र विमाण बरजी
ने सर्व ठामे अनंती २ वार उपज आया इस लेखे
सुरियाभ विमाने सुरियाभ पणें पिण अनंती बार ऊ
पज्याहै तव सूरियाभनें पूछ्यो जे हूं भव्य हूं के अभ
व्य हुं इत्यादि १२ बोल पूछ्या ओर विजय पोलीया
सरीखा असंख्याता दीप समुद्रना असंख्याता विज
य पोलिया पणें उपज आया (असई अदुवा अणं
त खुत्तो) कह्यो तिवारें अनंतभवें अनंतवार प्रतिमा
पूज आया पिण एह जीव समद्रिष्टी नही हुवा पुन
रपी कितनेक बादी ऐसा कहतेहैं जे सुरियाभदेव न

वो उपज्यो जब सामानिक देवताइं कह्यो तुम सिद्धा
यतन मांहिं १०८ जिन प्रतिमा और सुधरमी स
भामाहिं जिन दाढा यह दोनों पूज्यो एह पाहिला
करवा जोग्य कारज तुम्हारे वास्तेहै अगर पूजणे
जोग्यहैं और तुम्हकुं पछे [हियाए सुहाए खमाए
निसेसाए अणुगामियताए भविस्सई) इम कह्या
तो तुमे प्रतिमा पूजो येहवी बात बतावी ऐसा जो
कहतेहैं तिसका उत्तर और सुरियाभादि ३२ लाख
बिमानहैं ते सर्व बिमानाकी एक रीतहै बिमान बि
मान प्रते पाच पाच सभा और एक एक सिद्धाय
तन एवं ६ छह छह बस्तु बिमाणोमे सर्व ठिकाणे
कहींहैं जिसवक्त देवता पैदा होताहै तिसवक्त एक
एक बार राज्य अभिषेक करता पूजतेहैं ते समद्रिष्टी
मिथ्याद्रिष्टी भव्य अभव्य सर्व पूजतेहैं उपजती बेलां
सर्व देवता सर्वना सामानिक देवता इमही कहतेहैं जो
प्रतिमाने और दाढा ए दोनोकी पूजा करो ॥ इहा
इम नही कि जे सम द्रिष्टी होवे तेहिज पूजे औ
र मिथ्याती न पूजे एतो जीत बिबहार कुल रीतसे
सबही पूजतेहैं जिम मनुष लोकमांहिं समद्रिष्टीहै ते
तो तीर्थंकर साधूनें पूजे याने बंदना करे और मि
थ्याती होवेतो पोर मसीत मीरा तथा ब्रह्मा बिष्णु
महेस माता बीर हनुमान कामदेवने पूजे जो अ
भथीरती होवेते जिन मतने माने नही ए मनुष

हस्सं परवेवेज्ज)एक हजार बकरी नरी छह मासलगे वा
डामे राखी ते बकरीयाना उचार पास वणखेल जलमो
सींग मुख हाथ पग तेणे ते बाड़ो अणफरस्यो नही रह्या
पण कोई आकास परदेस मात्र भूमिका अणफरसी रही
होय पिण (एयंसी महालयंसी लोगंसी लोगस्स सा
सयंभावं संसारस्स अणादिभावंजी वस्सयं णिच्चभा
वं कम्म बहुलं जम्मण मरण बहुलंच पडुचनथी केई
परमाणुप्यगालमे ते बियएसे जथणं अयंजीवेणजा
ए वाणमएबाए) जीवें सर्व लोक फरस्यो ऊपज्यो
मूयो परदेस मात्र भूमिका बिनफरस्या नरह्यो ८४
लाख नरका वासा सातक्रोड़ ७२ लाख भवनपतीका
भवन पाचथावर तीन विकलेंद्री तिरजंच मनुषना अ
संख्याता आवास ८४ लाख ९७ हजार २३ विमा
णीकना विमाण ते मांहि पांच अनुत्र विमाण वरजी
ने सर्व ठामे अनंती २ वार उपज आया इस लेखे
सुरियाभ विमाने सुरियाभ पणें पिण अनंती बार ऊ
पज्याहै तब सूरियाभनें पूछ्यो जे हूं भव्य हूं के अभ
व्य हुं इत्यादि १२ बोल पूछा ओर विजय पोलीया
सरीखा असंख्याता दीप समुद्रना असंख्याता विज
य पोलिया पणें उपज आया (असई अदुवा अणं
त खुत्तो) कह्यो तिवारें अनंतभवें अनंतबार प्रतिमा
पूज आया पिण एह जीव समद्रिष्टी नही हुवा पुन
रपी कितनेक बादी ऐसा कहतेहें जे सुरियाभदेव न

प्रतिमा नही परंत समकिती देवकुं समकितका ला भहै जो पहिले मनुष भवसे समकितपाईहै तिसकुं जिनभक्ती लाभ सहीहै ६ वली यह प्रतिमा तीर्थं करकी निश्चे किसतरे जाणिये ते सूत्र साखसे प्रति माका निरणय लिखितेहै प्रथम सूरियाभदेव विवसा य सभामें आया तिहां ' धम्मिएसत्थेवाएति ' ऐ सा पाठहै धरम शास्त्र रतनमईहै तिनका वहोत व र्णन कीयाहै तेह धरम शास्त्र बांचा ते धरम सास्त्र त्रिण कुलधरमकाहै परंत आचारांगादि द्वादशांगी मानगी नही जो धर्म सास्त्र आचारांगादि होवेतो सि तन ती अभव्य होय ते किसतरे बांचे ओर मिथ्या कहीहैं २९ पाप सूत्र जुदा नही कह्या सरब येही सा एक बचे अब आजदिन कितनेक आचार्य ऐसा मिथ्याहैं कि श्रावक आचारांगादि सूत्र पढेंतो दोष ल सर्व दे इसतरे कहतेहैं तो इहां द्वादशांगी किहांथी मिथ्याती किम बाचे ओर किम मानें पूजे तिस वास्ते यह सास्त्र कुलधरमी ये ओर प्रतिमा सास्त्र यह दोनों ए पडे यह पुस्तक बांचकर (धम्मियं वि ।० ।) ऐसा पाठ कह्याहै ते धरम वि ०. शान कूंणे सिद्धायतनहै १०८ हा आव्यो ते प्रतिमानो सरीर सू हें जीवा भीगम मांहि (रिठामई

लोकरीते जैन और सिवना देवल पण जुदा
है अगर तिम देव लोक मांहि नाना
मत मतना देवल जुदा जुदा नही कह्या
ते सम द्रिष्टी मिथ्याद्रिष्टीने पूजवानो सि
एक एकही कह्याहै तेह जो धरम निर्जरा
जाणीने समद्रिष्टी पुजे तो मिथ्याती
किसको पूजे तिनका देहरा जुदा बतावो सूत्र मांहि
मद्रिष्टी मिथ्याद्रिष्टीना बिवहार तो जुदाहै
र लोकीकरीते एकहै जिम मनुष्य मांहिहै
धरमनी रीते भव्य अभव्य सब पुजतेहै इहां
धरम निरजरा नही धरम पक्ष खाते होवें
थ्याती देव न पूजे अगर मिथ्यातका देवल
मिथ्यातना देहरा जुदा नही तिसवास्ते यह
रणी लोकीकरीतहै अगर नवग्रीवेग ताई
समकितीसें मिथ्याती देवता असंख्यात गुणा
है गोशालामती देवतानें कुंडकोलीया देवसे च
गंगदत्तदेवताने मिथ्याती देवसे चर्चा करी
अर्णक श्रावकको मिथ्याती देवाने
ऐसें देव तिरथंकरजीकी प्रतिमा होवेतो
पूजे अने अनमतीका देहरा तो सूत्र मांहि
रिकरणामें किहाई कह्या नही तो मिथ्याती
एसे देवकुं पूजतेहै ते कहो इण लेखें सर्व दे
ही प्रतिमा पूजतेहै तिस वास्ते समकित खाते

साची कोणसी ए प्रतिमा नाग भूतना ठाकुरकीहै अथवा जिनकीहै एह परिवार विशेष ॥ ३ ॥ वली यह प्रतिमाने [लोमहत्थेणं पमज्जई] सूरियाभनें मोर पीछकी पूंजनीसे पूंजी जिम गिनाता सूत्र २ अध्ये न धनस्त्रार्थवाहीकी स्त्रीये नाग प्रतिमाने मोर पीछनीसे पूंजी तिणरीते इणे पिण पूंजी और ठाणांग सूत्रे पाचमे ठाणे कह्यो (जे कप्पई निगंथाणवा निगं थीणवा पंचरयहरणाइं धारित्तयेवा परिगाहित्तएवा तं जहा उन्नाए १ ऊंटिए २ साणए ३ पच्चा पिच्चए ४ मुजापिच्चए ५) मुंज भींडीलगे रजोहरण अपवादे राखवा कह्या परंत सुकमाल वास्ते मोर पीछ राखवो न कह्यो अगर अन्य तीरथीथकी मिलैतो भेख थाय तिस वास्ते तो जैनका साधु मोर पीछी नही राखे तो जिन प्रतिमा तीर्थंकरकी होवेतो मोर पीछीसे कि सतरे पूंजी एहमोर पीछी विशेष ॥४॥ वली सूरियाभने पूंजी तिसवक्त प्रथमतो प्रतिमा न्हवरावी पछे [अ हियाइं देव दुस सजूयलाइ नियंसेइ २ त्ता] इमकह्यो जो जिन प्रतिमा प्रतिचीगट उंचरानी चावें अणहणा णो देव दुसजे बसतरनो जोडो जुगल एतले धोती जोडो नियंसेई कहितां पहिराव्या इमकह्या अगर तीर्थंकरतो अचेलहैं वस्त्र पहिरे नही तो एह प्र तिमा कोणसे जिनकी चाहिये गहिणा और वस्त्रतो एकरीतेहैं अगर आजदिन कितने लोग वस्त्र ग

मंसू) कह्याहै जे रिष्ट रतनमई दाढी मूंछहै यह भग
वंतके सरीरथी अवयव जुदो पड्यो यह फेर आज
दिन कितने लोग प्रतिमा पूजतेहैं तेहनें पिण दाढी
नही करता ते दाढी कोंणसे जिनके हुंती तेहनी प्र
तिमा एह दाढी विशेष॥१॥पछें (कणयमयाचुच्चुया)क
ह्या तेह सोना मयस्तनचुंची युगलहें और उवाई मांहिं
भगवंतनो सरीर बरणव्यो तिहां अस्तन नही कह्या
तीर्थंकर चक्रवर्त बलदेव वासुदेव तथा उत्तम पुरष
सामंत तथा अश्व हाथी देवरूपी कहेहै इतनोके अ
स्तन नही तो तीर्थंकरजीकी प्रतिमाके स्तन किम
होय यह स्तन सहित प्रतिमा कोणसे जिनकीहै ए
स्तन विशेष ॥२॥ वलि ए प्रतिमाके पासे दोदो चां
वर धरती प्रतिमा एकेक छत्र धरती प्रतिमा और
मुख आगे दोदो भूत पडिमा और दोदो नाग पडि
मा हाथजोडी बिनयकरती खडीहै यह नागभूत जक्ष
किसके परिवारमेहै तेकहो और तीर्थंकर पासे तो
गणधर साधु होवे तेहतो जगे जगे सूत्रमे कह्याहें॥ ईसी
परिसाए जई परीसाए॥ तेतो गणधर साधूनी प्रतिमा
पासे होय तेतो किसीको संक्या उपजे तो गणधर
साधूनी प्रतिमा ते पासे नही बली आजदिन जो लोग
जिन प्रतमाकी थापना करतेहैं तिण पासे काउस
गीया साधूकी प्रतिमा करतेहैं परंत एहिज नाग
भूत जक्षनी प्रतिमा नही करता तो प्रतिमा मांहिं

अगर यह जिन प्रतिमा परिग्रह मांहि कही एह प
रिग्रह बिसेष॥६॥ओर धूप उखेव्यो अनें साक्षातपा
से न उखेव्यो एह धूप विसेष॥७॥जिन प्रतिमा जिन
सारखी स्त्री द्रोपदीनें संघटाकरा ८ दाढी १ स्तन २
मोर पिछी ३ नागभूतजक्ष परिवार ४ वस्त्र ५ परि
ग्रह ६ धूप ७ एह सात बोलथया यह ७ बोल सुरि
याभना तीर्थंकरजीकी प्रतिमा साथे विप्रीत याने इन
जुक्त नही कीया तिस वास्तें एह प्रतिमा कामदेवा
दी भोगीदेवनी संभवेहै लक्षण देखतातो समद्रिष्टी
मिथ्यातीनें सर्वको पूजनीक वास्तें लौकीक कुलदेव
की प्रतिमाहैं ओर निश्चे केवली बचन परमाणहै अ
ब इन सातों प्रश्नोंके ऊपर कितनेक बादी ऐसा क
हतेहैं कि जो प्रतिमा तीर्थंकरकी नहीहै तो कामदे
वनी प्रतिमा लौकीक देवकीहै तो सुरियाभदेवनें न
मोथुणं किसतरे कही ऐसाजो प्रश्न करतेहै तिनको
जबाब देनेका सरधांन लिखतेहैं अगर सुरियाभका
नमोथुणं धरम निर्जरामें नही ते किसतरें नमोथुणं
तीन प्रकारकाहै ते लौकीकरीतें १ कुपराबाचनीक री
तें २ ओर लोकोतररीते ३ अगर लौकीक ते नमोथु
णंका कहणहार बालअज्ञानीनें जिस आगें कहे तिस
मेनमोथुणका गुणनही लौकीक स्वारथ वास्तें कहें जिम
द्रोपदीका नमोथुणं तथा जिम पोकरणा भोजक ओ
सवाला आगे चउबीस तीर्थंकरांका नाम कहतेहैं ए

हिणा पहिरावते नही भगवंतको अचेल जाणीने वस्त्र किम पहिरावे ओर कोई कहे ए वस्त्रतों पहिराव्या नही मुखआगे चढाया है ऐसा बचन असुद्धहे जो मुखआगे चढाया ते तो(वन्नारहणं चुन्नारहणं वत्थारहणं आभरणारहणं) तेह मांहिं आव्या अगर नियंसेई तेह तो पहिरायेका नामहै ए वसत्रका बिशेष॥५॥वली श्री प्रश्न ब्याकरण पाचमे आश्रव द्वारमें देवताना परिग्रह मांहिं चैत्य देव कुल कह्याहै तेह पाट लिखिते है (एवचेव ते चउविहासपरिसा विदेवा ममायंति भवण बाहण जाण बिमाण सयणा सणिय नाना बिहवत्थभूसणाणिय पवर पहरणाणिय णाणामणि पंचवण दिव्वंच भायणबिहं णाणाबिहा काम रूव बेऊबिय अत्थर गण संघाए दीवस मुद्दो दिसाउ चेईय पाणीय बणसंडाणिय बणसंड एवं एगाम नगराणीय आरामुज्जाणं काणणाणिय कुवसर तालाग वावी दिहीय देव कुलसभा पवा वसही माईयाइं बहुयाइं कित्तणाणियः परिगिरहतापरिग्रहं बिउलं दिव्वसार देवा विसयं दगानतिता नतु ठिउवलंजति) एह पाठमांहि देवतानें जेजे वस्तु परिग्रह खातेमेहें जेहनें परिग्रह जाणेंहै ते वस्तु सर्व कही तिस मांहि देहरा प्रतिमा पण परिग्रह खातेमें गिणातो परिग्रह पूजें धरम निर्जरा किमहोवे जो धरमखातें तिरथंकर १ केवली २ गणधर ३ साधूहैं तो तेह परिग्रह मांहिं गिण्यानही

थुणं नही कह्या तो इम जाणिये जे धरम निर्जरानों कारण जाननदेवनें नही जीत बिवहारको काम जाणि ये ९ वली प्रतिमानें नमोथुणं कह्यो ते सुरियाभनें इहलोक खातेमेंहे पिण परलोकखातें नही तिसकी साख भगवती सतग २ उदेसे १ खंधकनें अधिका रमें खंधक संन्यासी श्री महावीरनें कह्याहे ए द्रिष्टां त मोटोहै तेह पाठ सुत्रसें देखलेना जिम कोई गा थापती पोतानों घर बलतो देखीने सारभंडद्रव्य का ढे ते इम जाणजो एसमे (निगारिए समाणें पुविंप ग हियाए सुहाए खमाए निसेसाए अणुगामियताए भविस्सई) ए धन काढ्यो थको मुझने पहिलाने पछे हितकाजे जावत अणुग्रामिथास्ये एणेद्रिष्टांते खंध क कहेहै लोक मांहिं आलीत पलीत जरा मरणेणं जरामरणे करी लोक बलेहै ते मांहिथी सारभंडनोपरे हुं म्हारी आतमानें काढवे ए आतमा काढ्याथी मुझनें (पेच्चा इियाए सुहाए खमाए निसेसाए अणुगामिय त्ताए भविस्सई) पेच्चा कहतां परलोकें हितनो कारण थकी थास्यै यहवा सद्दनो फेरहै तिमसुरियाभें भगवं तनें नमोथुणं कह्यो तिहां (पेचा हियाए सुहाए जा व भविस्सई) खंधक संजम लीधानीपरें इम कह्या अने प्रतिमादि पूजवा चाल्यो तिहां (पुविं पग हि याए सुहाए जावत भविस्सई) कह्यो धन काढवाना अलावानी परे ए अधिकार देखता प्रतिमानी पूजा

रंतु अपणे आपमें सरदहै नही तिम यह लौकीक १
और कोपरा बचननीक ते गोशालाजीका श्रावग
गोशालाजीको तीर्थंकर जाणीनें नमोथुणं कह्यो एको
परा बचनकीरीत २ लोकोत्तर तेह साधू श्रावक श्री
वीतराग देवको गुण सहितनें कहे ते लोकोत्तर यह ध
रमलाभ खातेमेंहै ३ जिम सुरियाभनें नमोथुणं कह्यो
तिम बिजय पोलीयें पिण कह्यो अगर भव्य अभ
व्य सर्वकहें तो धर्मखातें किमहोवे एतो देवतानो
जीत बिवहार यानें कुल बिवहार मांहिंहे धरमखाते
होवेतो श्रावक तथा राजाइं कोईयें क्यां पूजा कीधी
नही तथा देवताइं पिण प्रतिमा आगें नमोथुणं क
ह्यो तो साक्षात भगवंतपासें आव्यो तो भगवंतकुं
नमोथुणं किम न कह्यो देवलोकमांहिं सुरियाभनें म
हावीरजीको नमोथुणं कह्या परंत समोसर्ण मांहिं
नही कह्या इम इंद्रसक्रइंद्र ईसानेंद्र सुरियाभे ददरदे
व ते भगवंतने नमोथुणं किसीनें किम न कह्या अ
गर क्या प्रतिमासें श्री भगवंत उतरते तो नहीथे
जो भगवंतको छोडकर प्रतिमाको नमोथुणं कह्या तो
जीत आचार यानें कुलरीत जाणिये अथवा भगवंत
नें गरभमें देखकर सक्रइंद्र नमोथुणं कह्यो तथा मृतक
सरीर तीर्थंकरको तिस आगे नमोथुणं कह्यो जंबुदीव
पन्नतीमें रिखभ देवको निरवाणसमयमें परंत भगवं
त विद्यमानकुं देवताओंनें समोसर्णमें आवी नमो

ता पुदगल परिमाणकी होतीहै अगर जो सूरि याभादिक देवाने पूजेहै ते तिर्थकरनी दाढा नही संभवती अगर सासता पुदगलांनो परिणामे तेहनी दाढाहै जिम जमाली मेघकुमरनी माताइं पुत्राने दिक्षा अवसरना केसलीधा तिणें कह्यो एसमें [अपछिमे दरसणे भविस्सई] मोहनी करमने उदेलीधा कह्या तिम दाढा पिण जाणवी एहनी पूजा करम निर्जरा पणे नही जो धर्म निरजरा खाते होवेतो अभव्य मिथ्याती किम पूजे नमोथुणं किम कहे अनेकाई मनुष लोकनी रीते समद्रिष्टी मिथ्याती देव तो जुदाहै पिण जिन मारगीनें मिथ्यात मारगीना देवता मांहिं पुस्तक जुदा नही जे जिन मारगीनें तो आचारांगादिकहै ओर अनमतीनें कुराण पुराणहैं ते तो देव लोकमे नही ॥ १ ॥ प्रतिमा पिण जिन मतनी जिन मतीने अने अनमतीनें ब्रह्मा विष्णु महेसनीहै तिम पिण नही ॥ २ ॥ दाढा पण जिनमतने जिननी अनमतीने अनमतना देवनी दाढा जुदीहै तें पिण नही ॥ ३ ॥ जे ते सरव भव्य अभव्य समद्रिष्टी मिथ्याती देवताने एहिज धम्मीयसत्थे ते कुलधरमना पुस्तक १ एहिजे जिन पडिमा २ एहजो एहज जिन दाढा ३ एतीन वस्तु जात विवहार पूजवांको एकहै अने जो मिथ्याती समकतीना ए ३ बोल जुदा होवे तो सूत्र मांहिं दिखावो ए तीन

नमोथुणं अने दाढानी पूजा इस लोकखाते थयो इ स पाठमे (पेचा) सद्द नही[पुव्विंपछा)शद्द कह्याहै ते विचारकर समाझना १० और कितनेक वादी ऐसा कहतेहैं कि जे सुरियाभने और विजय पोली ये जिननी दाढा पूजीहै और दाढाके ठिकाणे सूधरमीस भा मांहिं भोग भोगवता नही इम सूत्रमे कह्याहैं ते ह उत्तर यह दाढांका पूजना समकित खातें नही धम्मीयसत्थे १ जिन पडिमा २ जिणदाढा ३ यह तीनो एक खातेमेहै दाढाने पण प्रतिमानी परे भव्य अभव्य समद्रिष्टी मिथ्या द्रिष्टी सर्व पूजेहैं स र्वेना बिमाणांमांहिं दाढाहै अने तीर्थंकर मुक्तिगया तेहने दाढा तो सरवने च्यार २ हुंती तेहना लेण हार पिण च्यारहे सुधरम इंद्र १ ईसाण इंद्र २ च मरइंद्र ३ बलइंद्र ४ ए च्यार लेतेहै तेहने (दा मझा) याने डाबा मांहिं घालकर पूजतेहैं जो ए दाढा धरम खाते जाणीनें लेयतो अचुत १२ में दे व लोकका इंद्रादि दाढा क्युं नहीं लेता परंत जेह नें जीत कुल्ल विवाहारहै तेलेतेहैं और यह च्यार दाढा उदारिक सरीरनो परिमाणहै ते तो संख्या ता काल रही विनस जाय अगर यह दाढा तो अ संख्याता विमाने होवे नही और असंख्याता का लतांई किम रहें और सुरियाभ विजयपोलिया आदि देवताओंकें ठिकाणें जिण दाढा ते तो सास

लपनीय करण चरंत सम्यक्तमावत द्रोपदी आगमें श्रीयते (लोमहस्थं परी मुसई) लोमहस्ते न प्रमार्जयतिलर्थः ततप्रमार्जनेन जिन सपसौ जात् जिनस्यस्त्री जनस्यपसंते आसातनास्यात् आसातना सम्यक्तानाव अतः एव द्रोपदीनें सम्यक्त धारणी संज्ञाव्यते पुन उंघनिर्युक्तिवृत्तौ न टीकायां गंधहस्त्याचार्येणोक्तं द्रोपदा नृप पुत्रिका निदान कृतिनिर्नर्तार पंचस्य साहिता जात निदाननो जितस्था जातेक पुत्रः पुनः पश्चात साधू सकासादवता सम्यक्त मार्गो धरते न्मिथ्यात्व महाने वशात् प्रातिमा पुज्या च पुष्पादिनि जिन प्रतिमा अनधाने तस्य प्रगट निवे म्निकस्यां जनंत त्यु जान कुसस्ति पुस्तकचरे हस्यत् इति पाठांतरे मिथ्यात्वा धज नाहंत जनविधिधे तु जांकथं प्राप्पते मुग्धात्वेति जिनंद्रा पदा मिदंकुर्या जिनासातः ना एवृति) माहिं कह्यो एहग्रंथमें ऐसा कह्यो है कि अन्नब्य संगम देवतानी यह प्रातिमा पूजेहें १२ इम सुरियान देवताके बारा प्रश्नों सहित एक प्रश्न हुया इती पुर्वप्रश्नोत्तर॥२७॥अगर इहां कितनेक बादी परमारथके भेद समझे विना कहतेहें कि तुम्हारे साधुवांको श्रावक साह्मनेंलेणें जातेहें और बिहार करते साधुवांने पहुंचावण जातेहें तो उसमें हिंस्यालगतीहै तो उसका दोस क्यों नहीं समजतेहो जो ऐसा प्रश्न करतेहैं तिनको जबाब लिखतेहें अगर सा

वस्तु अनंते जीवे अनंती बार पूजी पिणगरजसरी नहीवली गिनांता सूत्र मांहिं १६ में अध्येने श्री कृष्णनें पिण सुधरमी सभा कहीहै तो क्या ते सुधरमी सभा मांहिं जिन दाढा तो नहीं तिहांस्यूं श्री कृष्ण भोग भोगवेहै जिहां सभा हुवे तिहां तो भोग कोई न भोगवे ते इमही सभा सुधर्मी जाणज्यो वली कितनेक वादी ऐसा कहतेहैं कदाचित जे यह जिन महिमाने जिन दाढाने मिथ्याती तथा अभव्यनही पूजे ऐसा जो कहे तो तिसकी साख तुमारे ग्रंथामें एक ओघ निर्युक्तिमें लिखीहै (हवंमि जिणहरा इति बारव्या नचानिर्युक्तेषु द्रव्यलिंगी परिग्रहीतानि चेत्यानि सम्यग दृष्टीने सभावितानि इतिकस्मात् जस्यांत द्रव्य लिंगी मिथ्याद्रिष्टी वोतापद्यवंतहि दिगंबइ संबधी ति चेत्यानिग्रंद्ये तत्य त्य तहिस्यगं बहु मानात प्रभूज्यांते पूर्वापरं विरुद्धं नस्यात् नतु सूर्याभाद्यादेवा स्वर्गलोकेषु सास्वतानि चेत्यानि प्रति पूजयंते तत्कलप खितिवसानुरोधात अतएव बिरुद्धे न संभवति यद्येवंतर्हिद्रोय थया सम्यग् धारणा यातिं चेत्यानि नमस्त कृत्वानि किं द्रव्य लिंगि परिग्राहितानि न भवंति त्याह द्रोपदान सम्यगत्क धारणीस्यात् कथं उघनिर्युक्ता इत्या इत्युक्तं [इत्थी जण संघट्टंति तिविहेण वज्जएसाहु]इति बचनात स्त्री जिन संसर्य सिनी विधि तिबिधेन साधुना वरजनीय साधोश्र्चे भक

लपनीय करण चरते सम्यक्तनावत द्रोपदी आगमें श्रोयते (लोमहत्थं परी मुसई) लोमहस्तेन परामि श्रत परमाजयतित्यर्थं ततप्रमार्जनेन जिन सपसौ जात् जिनस्यस्त्री जनस्यपर्सते आसातनास्यात् आ सातना सम्यक्तान्नाव अतः एव द्रोपदीनें सम्यक्त धा रणी संज्ञाव्यते पुन उघनिर्युक्तिवृतंन टीकायां गंधह स्त्याचार्येणोक्तं द्रोपदा नृप पुत्रिका निदान् कृतिन्नि र्नतार पंचस्य साभिता जात निदानतो जितस्था जा तेक पुत्रः पुनः पश्चात साधू सकासादवता सम्यक्त मार्गौ धरते न्मिथ्यात्व महान वशात् प्रातिमां पुज्या च पुष्पादिभि जिन प्रातिमां अनधान तस्य प्रगट नि वे म्निकस्यां जनंत स्यु जान कुसास्ति पुस्तकवरे दृस्य त् इति पाठांतरे मिथ्यात्वां धज नार्हत जनविर्भिधे तु नाकथं प्राप्पते मुग्धात्वेति जिनंद्रां पदां मिदंकु र्यां जिनासांतः ना एवृति) माहिं कह्यो एहग्रंथमें ऐ सा कह्यो है कि अनव्य संगम देवताजी यह प्रातिमा पूजेहें १२ इम सुरियान्न देवताके बारा प्रश्नों सहित एक प्रश्न हुया इती पुर्वप्रश्नोत्तर॥२७॥ अगर इहां कित नेक बादी परमारथके भेद समझे विना कहतेहें कि तु म्हारे साधुवांको श्रावक साह्मनेंलेणें जातेहें और बि हार करते साधुवांनें पहुंचावण जातेहें तो उसमें हिं स्यालगतीहै तो उसका दोस क्यों नही समजतेहो जो ऐसा प्रश्न करतेहैं तिनको जवाब लिखतेहें अगर सा

धूतो तत्व ग्यानके समझने वालेहें सो ग्रहस्तके
श्रावणे जाणेकी आज्ञा नही देवें परंत ग्रहस्ती अथ
वा श्रावगका खुला छंदाहै अपणे कल्याण वास्तें व्या
ख्यान उपदेसके लाभ वास्तें अथवा संदेह दूरहोणे
वास्तें भक्ति विनयके कारणें लावणा ओर पहोंचाव
णा साधूको करतेहें सो समकिती जीव धरमको धर्म
समझताहै जिसकारजमें भगवानकी आज्ञा होए तिस
धर्ममें बिराधक नही होय तेह कारज साधक भावमें
कोई असाधक कामहोय तिसमें अधिक यानें जादे
दोस नही कह्या ओर मिश्रधर्मकी जहा बातहें तिहां
भी निषेध थानें मनें नही करी एकांत पक्षमें न कहे
उहा मौनरखीहै जैसें कोई दांनसाला संसारी जी
वोंके वास्ते देणेकी आज्ञामागें साधूसें तो साधूमनां न
करे अर्थात मौन करे सो ईसवास्तें धरम कारजकी सा
धनाकि भाव चढते हुये होय ओर उहा उस जगें कुछ सू
क्ष्म याने थोडा दोषभी लगताहै तो वह जो मोटा
धर्मकी साधना करी तिसके सहायतासें वह पहिले
जो हिंस्याकी क्रिया थोडीसी लगीथी तेह धर्म भा
व वैराग्य नेम व्रतादिकसें निर्जर होतीहै याने दूर
होतीहै कि जैसे श्रावक समायक करणे साधुवांके
पास आया तो वह उसको चलनेकी क्रिया याने
दोस लग्या परंत फिर उसने गुरांकी भक्ति कर
वंदना ओर समायक वा संवर कीया तो उसको प

हलीक्रिया जो चलनेकी आईथी सोई दय करी याने दुर करी क्योंके तीर्थंकरजीकी तारीफ गुणो का ध्यान कीया तिसके परसादकर पापतो दूर की या ओर आगे सुन्न करणी याने धर्म लाभकी ख रची पल्ले बंधी जैसे किसी पुरषने द्रव्य कमाय पूर्व करजतो उतार दिया आगेके खरचका काम चला या इसीतरे धर्मका कारजकी भावना कर पूर्व करम खय करा ओर आगेका करम हटाया अगर बिना उपियोगे समायक पुन्य हेतहै अगर उपियोग समकित सुध सहित करम निर्जरा हेतहै ओर जैसे श्री गोतम स्वामीने पूछा करी महाबीर स्वामीसे कि हे महाराज जो श्रावग साधू साधवीको असूझता अथवा अप्रासुक याने अन्न पाणीमे सचितका दोष लगाय कर देनेवाले श्रावकको क्या गुण होवे या क्या फल मिले तिसका फल किरपाकर बताईये तव श्री महाबीर स्वामी कहे हे गोतम अलप या नें थोडासा पाप लग्या ओर बहोतसा धर्म हुवा या ने बहोतसे पाप करम उस अप्रासुक याने असूझ ते देणेवाले श्रावकको खय हुये ओर थोडा करम लग्या ओर बहोतसे करमकी निर्जरा करी याने ब होतसे पाप करम दूरकीये ऐसा कथन भगवती सू त्र सतग आठमा छठा उदेसामे कह्याहै यतः (स मणोवासगस्सणं भंते तहारुवं समणंवा महाणंवा अ

फासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभेमाणे किंकज्जइ गोयमा बहुतरियासे नि ज्जरा कज्जई अप्पतराएसे पाव कम्मे कज्जति) ॥ अर्थः- साधूको अफासु अणेषणीक आहार बेहरावता अलप पाप और बहोत निर्जरा होय परंत यह पाठ श्रावक हेतुहै कि जो श्रावक काल का समे जाणकर दानसाला दिवावे सो येह पुन हेत कारज श्रावकोंके जोगहै और साधूको दांन नि रजरा करमाकी और मोक्ष दायकहै सो यह सूत्रां की रचना समझणे जोगहै इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २८ ॥ और कितनेक बादी ऐसा कहतेहैं कि सू त्र दसमीकालके अध्येन ८ मे (चित्तभित्तंननिज्झा ए) इतिबचनात जो चित्रामकी स्त्री आदि मूरत्ती देखनेंसे कामदेवकी भावना आतीहै तो इसी रेसें जिन मूरतीके देखणेसें बैराग आताहै ऐसा जो प्रश्न करतेहैं तिनको इहा जुबाब देनेकी रीती लिखते अब इह जो बचन तुम कहतेहो सो लोक रीती कर कहै तेहो सोई सूत्रांकी रहेसतो यहहै कि मोहनी करमके उदयसें राग पैदा होताहै ते रागका तो करमहै और बैरागतो मोहनी करमके खय उपसमसें होताहै और प्र श्न व्याकरणके पांचमे संबर द्वारमे कह्याहै कि चयैत्य दे व कुल प्रातिमा मंदिर देखणा मने कीयाहै क्यों कि आरंभकारी बस्तु देखकर साधू संराहना न करे

इस वास्ते देखकर अनुमोदे नही ते पाठ लिख्यते (वितीयंचर कुयं दियेणं पासिय रुवाणि मणाणा य दंत कम्मेय पंचहि वणेहिं अणेग संठाण संठीया ए गम ण नहग्गाइं सचित्ता चित्तमी सगाइ कठेपोवे चित कम्मे लेखकम्मे सेलेयं दंतकम्मेय पंचहि वणेहि अ णेग संठाण संठीया ए गंठिम वेढिम पूरिय संघाइ मु णि मल्लियं बहु विहाणीय अहिय नयण मणसुहकराइं वणसंड पव्वए गामागर णगराणिये षुणिडिय पुरुखर णी बाविदीहिय गुंजालिय सर सरपत्तीयं सागर वि लयंतियं खाइय नदी सर तलाग वाप्पिणी फलप्पल ऊपय परिमंडिया निणरामे अणेग संठाण गण मेहुण विरइ एमं मव विहाहं भवण तोरण चेईय देवकुल स भा पवा वसह मुकय २ सयणासणंसी परह सगड जाण जुगासंदण नर नारी गणिय सोमा पडिरूव द रसणिज्जे लंकिय विभूसीय पुवकड तवप्पभाव सोमह ग संपउते नमाड न हग जल्ल मुल्ल मुठिय वेलंवग कहकपव कलासग आइखगलंख मंख तुण इल्ल तुं व वीणीवत्तालाय रयगरणाणीय बहु सुकरणा अन्नेसु य एवमाइय सुयरुवे सुमणाणन्न ए सूनतेसु समणेन सज्जीय वन्नं नरजियवं नागोजियं वण विधिणी घायमाव जीयवं नलुग्नियवं नतुसियवं नहासियवं नसइचमइंच तथा कुज्जा) इह पाठ माहिं इम कह्या ते इतने पदार थ देखणे नही पहिले देखेहोयतो याद करे नही ति

स मांहिं चैत्य देवकुल एकठा कह्या तो प्रतिमाका
दरसण और वंदनाका अधिकार कहीं किसी सूत्रमें
कह्या होयतो बतलाईये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २९ ॥
और केईक ऐसा कहतेहें कि मंदिर प्रतिमाके कराणे
सें देवलोक पामें और तीर्थंकर गोत्र बांधे यह बात
तुमारे मतके थापने वालोका कहिणहै कि देखो प्र
श्न व्याकरणके पहिले आश्रव द्वारमे देवकुलसभा
चैत्य पृथवी आदि खोदने और देहरा आदि कराणा
ए सरब आश्रवद्वारमे कह्याहै उहां नवरका पाट न
ही कि मिथ्यात देवल आश्रवमेंहै और जैन मिंदर
नही ऐसा नही लिखा तो आश्रव गेडणा जोगहै दे
व पूजा कुलमर्यादमेहै मोक्षमार्गतो ज्ञानदर्सन चारि
त्र तपमेहै उत्राध्येयनके २८ मे अध्येयनमें कह्याहै
॥ दोहा ॥ सीलत्तीरथ संजम जात्रा, सुत्तलेस्या जल
न्हाय॥दयाजग्य पूजा कही, जिनवर सूत्रांमांहि॥ १ ॥
इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३० ॥ केईएक बादी ऐसा क
हतेहें कि प्रश्न व्याकरणमें (चेईयठे निजरठे) तो
प्रतिमाकी वियावच करणी कहीहै तिसका उत्तर अब
देखीये ठाणांग और भगवती उववाई विवहार इन
सूत्रामे तो दस प्रकारकी वैयावच्च कहीहै तेहनांम
(आयरिय १ उवझाय २ थेरवे ३ तवस्सी ४ गिला
ण ५ सेहवे ६ साहमीए ७ कुल ८ गण ९ संघ१०)
इहां प्रातिमाकी वेयावच्च नही कही और प्रश्न व्या

करणके तीसरे संबर द्वारमे १४ बोल करी कह्याहै ते नाम [अचंतबाल १ दुब्बल २ गिलाण ३ बिढु ४ खवगे ५ पवते ६ आयरिय ७ उवझाय ८ सेहे ९ साहम्मिए १० तवसी ११ कुल १२ गण १३ संघ १४ चेइयट्ठे १ निजरठी २] अब सूत्रमेतो ऐसा कह्याहैकि बाल दुरबलादिक चउदह बोल कह्या तिनके वास्ते आहार पानी साधू आणकरदेवे तो यह दस प्रकार अथवा १४ प्रकारकी वेयावच्च क्या वास्तें करे कि चेईयठे ते ग्यानके अर्थे १ तथा निर्जरा के अर्थे निज्जरठे २ ओर जो तुम प्रतिमाके अर्थ क होगे तो प्रतिमाके क्या मतलबमे आहार पानी आवे जरा अंतर विचार कर अर्थ करो बुद्धिवंतहो कर क्यों भूलतेहो अगर पूर्व १४ बोल प्रथम विभक्तीके हैं तिमे (चेइय) ऐसा पाठ जो कह्या होता तो कदाचित संक्या करते तो संभवतीथी, लेकिन इहां तो (चेइयठे) चउथी विभक्तीका अर्थ बोलताहै ते [चेइयठे] ते ग्यानके वास्ते ओर दूसरा पाठ (निजरठे) तो निरजराहेते वेयाबच्च करणी ऐसा सूधा अर्थको मत पक्षके वास्ते क्यों बदलके फेर करते हो सोई सूधा अर्थ धारण करो ज्यूं जीवकी गरज सरे॥ दोहा ॥ चेइय शब्द अनेकहै, जिहां लगावे खोर॥ जो लीनरभरमायर्न, कहे ओरसे ओर ॥१॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३१ ॥ ओर केई एक वादी हिंस्याकारी

उपदेस और आज्ञा देनेमें कोई दोस नही समझते तिनको विवहार सूत्रकी चूलिकामें भद्रबाहु स्वामी १४ पूर्वधारी चउथे सुपनेमें चंद्रगुप्त राजासें उन हिंस्याके उपदेस देने वालोको कुगुरु कहेहै तेह सूत्र (चउथे सुमिणे अट्टट्टहासं कोउहलेहिं नचाणच्चंति) तस्सफलं तेणं कुमयजणा परंपरागमेणं बाहिया सद्ध चारिय संयमे वसंजमिया आगासपडिया इव निद्दंद्दसन्नासिणो बंझपुत्ताइवं दव्वलिंगधारणो जत्थ तत्थे वसुत अत्थमवगाहित्ता तवतेणिया वयतेणिया सुत्ततेणिया अत्थतेणिया नूयाइवणच्चिस्साति कुगुरु कुदेव मनीस्साति ४) अर्थ चउथे सुपने अतिरुद्र हासिको तुहल करता भूत नाचता देख्या तिसकाफल च द्रबाहुस्वामी चंद्रगुप्तराजासे कह्या तेहकुमति जण परंपरागम सूत्रमाहे जे साधूका आचार कह्याहै तिण आचारसें बाहिर वेताली अध्येन मांहिं पिण कह्याहै सुद्धआचारें चालें ते भगवंतना क्रमायत जाणवा बीजा नही ते भणी पोताना बांदाना चालणहार आपणें छंदें संजमी नाम धरावें पिण विरुद्ध आचारीने जिनकी आज्ञा नही फेरकहेहैं जिम आकासथी भ जाणो गोलो पडे तिम दया रहित सूत्र विरुद्ध वाणी भाखसी कहसी पहिली हिंस्या करसां तो धरम होसी बांझडीनें पुत्र होवेतो हिंस्यामें धर्म होवे ते कहसी द्रव्य लिंगी भेखना धरणहार यती जिहां तिहां कुम

अर्थ जणीनें तपना चोरहोसी मांहिं खासी अने बा हिर तप कहसी बचनना चोर होसी बचन कहीने फिरजासी सूत्रना चोर होसी विरुद्द पाठ कहसी अ र्थना चोर होसी सावद्य परूपणाना अर्थ करसी भू तनी परें नाचसी निगुणा देव आगें कुगुरु साधुना २७ गुण तिनमें नहीं देवते १२ गुण आरिहंतना ति सकुं मानस्ये नहीं कुगुरु कुदेवनें मानस्ये ४ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३२ ॥ केई एक बादी इस पाचमें आरेमें ऐसा कहतेहैं कि चौथे आरेमें जितने जिन मंदिरथे तितने इस पांचमें आरेमे नहीं और चौथे आरेमे स ब श्रावक जिन मंदिरमे प्रतिमा पूजतेथे औरसाधूजी दरसण करतेथे उत्तर तो अब देखीये सूत्रआचारां गादिमे साधूवांकी वृतीका वर्णनहैं परंत प्रतिमाका दर्सण करणा नहीं कह्या प्रश्न व्याकरणमे आरंभादि वस्तुको देखकर सराहना करणी मनेहै सो पहिले प्र श्नोमे लिख आयेहै और श्रावक आश्री जिन मंदि रमे प्रतिमाकी पूजा धर्म निर्जरा खाते होतीतो श्रीभ द्रबाहुस्वामी क्यों अविधि पंथ अर्थात् खोटापंथ चलेगा इस पांचमे आरेमे ऐसा कह्या तो जो पहि ले चोथे आरेसे यह सनातन धर्म प्रतिमा पूजनेका होततो भद्रबाहुस्वामी ऐसा न कहते और कितनेक कहतेहैं कि तुम सूत्र ३२ मानतेहो और क्यो नहीं मानते. सोई सूत्र ३२ तो मानतेहीहै परंतु औरभी

शास्त्र ग्रंथ मानतेहैं जो उनमे ३२ सूत्रांसे मिलता कथन वा उपदेसरूप कथनहै सो सब मानीयेहै परं तु नंदी सूत्रमे जो सूत्र ७२ नामहें सो उनमेंसें बिछेद बहोत सूत्र होगये भद्रबाहु स्वामीका कथनहै कि कालिक परमुख सूत्र बिछेद जायेंगे तिस वास्ते नवे नवे ग्रंथादि शास्त्रोकी रीतपर चलेंगे बिवहार सूत्रकी चूलिका जिसमें भद्रबाहुस्वामीके बचनहै तेह सूत्र यहै(सूत्रम् पंचमे सुविणे दुवाल फणो संजुतो कण्ह अहिदिठो तस्सफलं तेण दुवालस बास परिमाणो दु कालो भविस्सई तत्थ कालिय सुय पमुहासूय वोछि ज्जिस्संति चेइय ठप्पावेइ दवआहारिणो मुणिभविस्स ई लोभेणमाला रोवण देउल उवहाण उजमण जिण बिंब पइठावण बिहीउ माइएहिं बहवे तव पभावा प थाइस्संति अबिहि पंथें पडिस्संति तत्थ जेकेई साहु साहुणी सावय सावियाउ बिहि मग्गे वइस्संति ते सिं बहुणं हीलणाणं निंदणाणं खिसणा भविस्संति)अर्थः–पांचमें सुपनें१२ सर्प दीठो भद्रबाहुस्वामी तिसका बरस परिमाणेंहे चंद्रगुप्त दुकाल क सूत्र परमुख सूत्र विछेद जासी साधूनें मिलणो दुलभ तेमणी मू- दुरलभ होसी दरव लिंगी अर्थात् की प्रतिमानी थापना करावस्यै .

र ग्रहण संचणहार यहवा जतीहोस्यै लोभी लंपटी
थका माला पहिरवारूप तपधर्म कहस्यै देहरानी त
प पंचमी परमुखना उजूवणा करावस्ये प्रभावना क
रावस्यै जिन बिंबनी पगतिष्टा विध आदिदेईनें घणी
उपना प्रभाव पुत्र धनादि लाभरूप कहिस्यै दयादि
एक सुद्ध धर्म बिध पंथ छांडीने प्राणातिपाति हिंस्या
पार्मीनें हिंस्या धर्मरूप उलटे पंथ पडसी तिहा जे के
ई साध साधवी पांच महा बिरत धारी श्रावक बिरत
धारी तथा श्राविका बिध मारग प्रतिमा पूजादि नि
षेधरूप दयाधर्म कहसी तेहनी घणी हीलणा करस्यै
जात्यादिकना दोष काढवाथी दुगंछा करसी मने क
री निंदसी ॥ आपस मांहिं निंदा करसी लोक समक्ष
बार बार निंदणा पामसी ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥२३॥
केई एक साधु द्रव्य पूजा आप कहकर प्रतिमाकी
करातेहै तेह सावद्य कारजहै महा अजोगहै महा न
सीतना पांचमा नवणीयासार अध्ययन मांहे कह्याहै
ते कहेछे भगवंतें गौतमनें इहा थकी अनंते कालें पू
छे धरमसिरी नामें चोवीसमा तीर्थंकर मोख पहोता
पछे हुंडानामें अवसर्प्पणी काल अनंते कालें आई
तिहां सात अछेरा हुवा तिवारे असंजती पूजानें वि
षें घणा लोक तत्पर हुवा मिथ्यात मांहे करी
घणा लोक मूंझ्या अनें घणा लिंगधा लिंगडी पा
पमती माठा लक्षणनाधणी प्रतिमा देवलनी थापना

शास्त्र ग्रंथ मानतेहै जो उनमे ३२ सूत्रांसे मिलता कथन वा उपदेसरूप कथनहै सो सब मानीयेहै परं त नंदी सूत्रमे जो सूत्र ७२ नामहें सो उनमेंसें बिछे द बहोत सूत्र होगये भद्रबाहु स्वामीका कथनहै कि कालिक परमुख सूत्र बिछेद जायेंगे तिस वास्तें नवे नवे ग्रंथादि शास्त्रोंकी रीतपर चलेंगे बिवहार सूत्रकी चूलिका जिसमें भद्रबाहुस्वामीके बचनहै तेह सूत्र यहै(सूत्रम् पंचमे सुविणे दुवाल फणो संजुतो कण्ह अहिदिठो तस्सफलं तेण दुवालस बासे परिमाणो दु कालो भविस्सई तत्थ कालिय सुय पमुहासूय वोछि ज्जिस्संति चेइय ठप्पावेइ दवआहारिणो मुणिभविस्स ई लोभेणमाला रोवण देउल उवहाण उजमण जिण बिंब पइठावण बिहोउ माइएहिं बहवे तव पभावा प थाइस्संति अबिहि पंथे पाडिस्संति तत्थ जेकेई साहु साहुणी सावय साविया उ बिहि मग्गे बूइस्संति तेसिं बहुणं हीलणाणं निंदणाणं खिंसणाणं गरिहणाणं ल भिस्संति)अर्थः-पांचमें सुपनें १२ फणों सहितकालो सर्प दीठो भद्रबाहुस्वामी तिसका फल कहेछे बारे बरस परिमाणेंहे चंद्रगुप्त दुकाल होसी तिहा कालि क सूत्र परमुख सूत्र बिछेद जासी तेहनें तिहां अन्न साधूनें मिलणो दुर्लभ तेभणी नूखां सूत्र चितारणो दुरलभ होसी दरव लिंगी अर्थात् भावगुण बिना घ णी प्रतिमानी थापना करावस्ये द्रव्य धनना लेणहा

थासी इम जाणी द्रढ रहणो बली प्रश्न व्याकरण पहिले आश्रव द्वारमे कह्याछे प्रतिमा देहरा कारण पृथवीकाय हणें तिणनें मंद बुद्धिया कह्या और बी जा आश्रव मांहिं हिंस्यामें धरम परूपे तिणनें झूठ बोलणहार कह्या अने पांचमा परिग्रह खातें देवता नें देहरा प्रतिमा कही बली पांचमें संवर द्वारमें क ह्योहै प्रतिमा देहरा साधूनें नजरे आयो तो रीझणो नही बली सेंत्रुंजादि पर्वत शास्त्रमें कह्या पिण तीर्थ किहांई नही कह्यो तीर्थ हरकेसीजी ब्राह्मणानें सील रूप बताया सुखदेव सन्यासीनें सोमल ब्राह्मणनें सं जमरूपणी जात्रा कही और न कही और फेर कहे छे चेईय शब्दना अर्थ छे ते अनेकार्थी बचन छे ति हां विरुद्ध अर्थ करी कहे छे पिण हलुकरमी जीव हो वे तो ते तत्व साचा गुणारा धणी देवगुरु धर्म सेवे पिण पाप करमीनो भ्रिगायो डिगे नही ते जीव सुखी थासी ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३४ ॥ कितनेक बादी स्याद्वाद बाणीको समझते नही ते स्याद्वाद बाणी कैसीहै उत्तर जैन शास्त्र तो स्याद्वाद रूप लक्षणसेंही जानाजाताहै जिसमें स्याद्वादरूप कथन नही सोई मिथ्या[illegible]त्रहै जिसका परिमाण अनुयोगद्वार नंदी उ [illegible] भगवती सूगडांगादि सूत्रोंमें जगे जगे [illegible]नहै जैसें भगवती सूत्रे (लोयेसासे [illegible] दब्बठया सासया पज्जवठया अ

कराई परूपीनें जे कोई साध साधवी द्रव्य पूजना क
रणहार तथा परूपणहार तेहने स्युंकहिये जिन कहे
छे हे गौतम तेहने अजितेंद्री कहिये १ असंजती २
देव भोजग ३ देवना पूजारा ४ उनमारग पड्या ५
आचारथी पड्या ६ कुसीलीया ७ पोताना गंदाना
चालणहार ८ इम आठ नाम कही बोलाविये हिवे
तिणसमें नाम मात्र आचार्य उपाध्यायबसे तिहां
कमल प्रभा आचार्य दया धर्म परूपता आया तिवा
रेंद्रव्य लिंगीयें कह्यो प्रतिमा परूपो अनें चोमासो
इहां करो तिवारें आचार्य कहे अहो जितना जिन
ना देहरा ते सावद्य आरंभना ठाम ते हुं बचन मा
त्र पिण परूपुं नही इम कह्यो इतरे घणा पापमती
इकमती तालदेई गोपवे तेह आचार्यनो नाम साव
द्य आचार्यनो नामदेई प्रसिद्ध कीधो तोहि पिण द्वे
ष नाण्यों अने सावद्य परूपणा नकीधी इम करतां
तीर्थंकर दलमेल्या एकावतारी पणो खाट्यो तिमहिव
णारा साधांने सिखावण पिण जाणवी पाखंडी मिली
या पिण प्रतिमादि सावद्य धरमनी परूपणाटाली द
या धर्मनी परूपणा करसी इम ते फल खाटसी याने
पामसी अने बीजे फेरे सावद्य मिश्रबांणी बोल्या अ
पजससुं डरता थका इतरे सुभ दल उडाई अनंत
संसारी हुवो तिम अबारू पिण पाखंडी मिलियां सं
क्तो पिण सावद्य बांणी बोलस्यै ते अनंत संसारी

सामान्य पणें कहिये १ विशेष संग्रह जो परिजातिका द्रव्यकुं छोड करि स्वजाति स्वद्रव्यको संग्रह करिये सो विशेष संग्रह कहिये जैसे सर्व जीव परस्पर विरोध रहितछे सत्ताग्रहे ते संग्रहे ते संग्रह जेकारणे एकनाम लीधां सर्व गुण पर्याय परिवार सहित आवे ते संग्रह नय कहिये जे वस्तुनो सामान्यपणें नाम लेतां जीव अजीवनों भेद न पाडयो जिम ए वन वणस्पतीनो छे ऐसा कहणो विशेष संग्रह जे विशेष पणें दीठी तेहनो नाम लेइ कहिवो जिम ए आंबानो वनछे ते माहिं अनेरा पिण वृक्षछे ते संग्रहनय २ हिवे व्यवहारनय कहेछे सामान्य व्यवहार १ विशेष व्यवहार २ सामान्य व्यवहार बाह्य गुण देखीनें वस्तुनो परकास करिवो (ते जीवमजीवद्वं) जीवअजीवद्रव्यहे द्रव्यपणो सामान्य गुणहे सो सर्व द्रव्यमें हें सो सामन्य व्यवहार १ अनें विशेष व्यवहार ते जीव द्रव्यहे सोचेतन गुणहें जिसमें सिद्ध संसारी सर्व द्रव्य एकहै ते विशेष व्यवहार २ इति व्यवहार नय कह्या ३ हिवे ऋजुसूत्रनय कहेछे ऋजुकहिये सरल सूत्र कहिये शब्दनो अर्थ ते ऋजुसूत्रनय कहिए हिवे ऋजूसूत्रनयरो विचार कहेछे अतीत काल अनागत कालरी अपेक्षा न करे वर्तमान काले जे वस्तु जेहवे गुण परिणामे बरते ते वस्तु तेहवे गुणपरिणामे माने ए नय परिणाम ग्राही हिवे जे जविग्रह

सासया) तथा अणुयोगद्वारे (सेकिंतं णए सत्तमूल नया पन्नताणेगमे संगहे ववहारे उदयु सुए सद्दे सम्म न्निरूढे एवंनूए) अर्थ–नैगम नय १ नदीनी धारा प्रवाह सरिखो गमते नैगम एक अंसमात्र ज वस्तु नो गुण प्रगट होइ तेहते संपूर्ण पणें वस्तुनें कहे ते नैगम नय कहिजे ते नैगमनयका ३ नेद नूत नैग म १ नविष्यत नैगम २ बर्तमान नैगम ३ जो अ तितकालके विषें जो पदार्थ हूवा अरु वांही बर्तमा न किसी न्याइं कहणो सो नूत नैगम कहिये जैसें सि द्धांनणी नमोथुणं पढता आदिगिराणं आदि करता ऐसो कहणो तथा जैसें कोई दिवालीके दिन कहे आ ज श्रीबीर वृद्धमान स्वामी मोक्ष गया ऐसा कहणा १ जो नविस्यत नैगम आगमी कालके जो पदार्थ होणहारहें ते बरतमान कहणो जैसें उत्राध्ययन १९ मे गृहबासि बसता (जुवरायादमीसरे) ऐसो कह्यो ते नविष्यत नैगम नय कहिये २ बरतमान नैगम क हिजे जे वस्तुकरणी मांडी किंचित् नीपजी तिसकुं सं पूर्ण पणे कहणी जैसें लीपतो देखी पूछ्यो स्यूं करेछे तद कह्यो रसोई करुंछूं ऐसो कहणो ३ इति नैगम नय १ संग्रह नयका दोय नेदहें सामान्य संग्रह १ वि शेष संग्रह २ सामान्य संगृह किसकुं कहिए अजीव द्रव्य मांहोमांहिं अविरोधी अचेतन गुण अपेक्षाइं सामान्य गुण सर्व द्रव्यमेंहे अजीव द्रव्यमें ऐसो कहणो ते संग्रह

र्थंकरमे संभवेछे तीर्थंकरनो शब्दतो तीर्थंकरे ते पिण नाम थापना द्रव्य निक्षेपामें अर्थ सिद्धथाइ जिम तीर्थंकरनो नामलेई व्याख्यान करवो ते नाम निक्षे पो १ अनें तेहिज तीर्थंकरनो थापनारूप बखाण करिवो संठाण परमुखनो जिम लोकनो स्वरूप व खाण करता लोक नामी अलेखीनें लोकनो स्वरूप दिखायवो तिम अरिहंतना आकार अपने सरीरका रूप भगवानके ध्यानकी तरहे थापना करीनें तीर्थंक रनो बखाण करवो २ तेहिज तीर्थंकरना शरीर अव गाहणा आउखा अतिसय करीने वखाण करवो द्र व्य निक्षेपो ३ भाव निक्षेपाते ग्यान दर्सणादिकरी तीर्थंकरनो वखाण करवो ४ परं एह नामादि सर्व तीर्थंकरनांमें संभवेछे इमहीज अरिहंत करमरूप स त्रु हणयाते अरिहंत तेहनो बखाण नामादि ४ निक्षे पा दिकथी करवो पिण अरिहंत शब्दार्थ होय जिणमें संभवेछे शब्दार्थ सुद्धथाइ ते शब्द नय पाचमो कहिये ५ हिवे समभिरूढ नय कहेछे समभिरूढ नयनें मतें ज शब्द एकमें घणी वस्तु होइ ते न माने ने कहिण वा लानो जे शब्दनो अर्थ अने अभिप्राय होइ ते वस्तु शेष अवस्तु जिम केणेकह्यो अहो साधू अश्व दोडेछे एहने ग्रहो इहा शब्दनो अर्थतो अश्व घोडा अने मन बेहु अर्थ होय पिण बोलणहारनो अभिप्राय ए हवो मनकुं अश्व कह्यो ते भणी मन अश्व ते वस्तु

स्ती छे पिण अंतरंग परिणाम साधुसमानछे तो ते
जीव साधू कहिजे अनें जे जीव साधूने भेषेंछे पिण
मन परिणाम असुभ छे तो ते जीव अबिरत रूपीज
छे तेऋजूसूत्रना २ भेदछे एक सूक्ष्मऋजूसूत्र १ बी
जो थूल ऋजुसूत्र २ तिहां सुक्ष्म ऋजुसूत्र जे कहवो
जे सदा सर्वदावस्तुमें एक वर्तमान समय बर्तैछे एत
ले जीव गए कालें अज्ञांनी हुंतो अनें आगले कालें
कोईक अज्ञांनी पिण थासी अनें बरतमान काले ग्या
नीछे तेहने कहणो ए सूक्ष्म ऋजूसूत्रछे १ अनें बाद
र मोटका बाह्य परिणाम ग्रहे जिम वर्तमानकालें ध
र्म आराधे तेहने धरमी कहिणो पछे धर्म कारज क
र्या पछे अधर्म करस्यै ते आगामियेकालें ते भणी न
माने एतले ऋजूसूत्र कह्यो ४ हिवे शब्दनय कहियेछे
जे वस्तुगुणवंत अथवा निर्गुण तेहनो नाम कहि बो
लाव्यो ते भाष्या वर्णणाथी शब्द कह्यो ते शब्द व्याक
रणसें प्रकृति प्रत्यय द्वारें करी शब्द सिद्ध होय सो
शब्द नय कहिये तिहां शब्दनो जे अर्थ ते मांहि होइते
वस्तुनें मानें ते शब्दनय कहिये जैसे अरिहंत कहि
बोलाव्यो ते शब्दनो अर्थ कह्यो अरि कहिए करम
रूप शत्रु हंतः हणया ते अरिहंत कहिए अनें ना
मादि अरिहंत होइ ते मांहिं शब्दार्थ न होए तेहनें
अरिहंत न मानें ते शब्दनय इम तीर्थ ४ करे सो ती
र्थंकर इम शब्द सिद्ध होय ते शब्द ए ४ निक्षेपा ती

जाण पणो तेहनें जाण पणानि वस्तु मानें १ ते एवं भूतनय कहीजे ७ हिवे नयसात पूर्वोक्त प्रकारें कहि छे ते दोय भेदें कहीये द्रव्यार्थिक १ पर्यायार्थिक २ ते नैगमनय१ संग्रह २ व्यवहार ३ एतीन द्रव्यार्थिकनय अनें ४ ऋजूसूत्र १ शब्द २समभिरुढ ३ एवं भूत ४ एह ४ पर्यायार्थिक नय द्रव्यार्थिकनयते व्यवहारनय ॥ परियायार्थिक नय ते निश्चे नय ते ३ व्यवहारनय ४ निश्चेनय ते मांहि व्यवहार नय नाम १ थापना २ द्रव्य ३ निक्षेपामे भावना कारण भूत मानें निश्चे नय ४ भावनेहीज वस्तु माने कारजने वस्तुमाने इहा २ मतमें सात नयछे निश्चे १ व्यवहार दोइनी खपराखवी एकसूं कार्य सिद्ध न थाय इहा विलोवणाका दृष्टांत जिम बिलोवणाना नेतमो डोर दोइछे सम दोनो हाथसे दोइ डोर ग्रहे ते मांहिं १ डोर खेंचे १ ढीलीमूके तो कार्य सिद्ध थाय अनें २ दोनों ढीली मुके तथा दोनो खेंचे तथा दोनो हाथथी छोमे तो कार्य सिद्ध थाय नही तथा डोरने खेंचे अने दुजी हाथथी छोडे तो कार्य सिद्ध थाइ नही इण दृष्टांते करी दोय नय मांहि केणे ठामे निश्चे नयनी मुख्यता कीजे अने व्यवहारनी गोणता कीजै केणे ठामे व्यवहार नयनी मुख्यता कीजे अने निश्चे नयनी गोणताकीजे तो सम्यक्त प्रकास थाइ अने एक नय माने बीजी न मानें तथा २ खेंचे एकण साथे त

घोडो अश्वते अवस्तु १ तथा धर्म शब्द कह्यो ते माहि धर्मास्ति १ श्रुतधर्म्म २ चारित्र धर्म बिबे ह्मो अने समभिरूढ नयने मते बोलणहारना शब्द अने अभिप्राय जे धर्मनो होइ तेहने धर्म कहे बीजा नें न मानें जिम सूत्रे कह्यो (जाजा बच्चई रयणी) पिण कहणहारनो अभिप्राय दिनना पिण ते माटे दिनराति दोनुंही ग्रहवा इत्यादि कहणहारना मनजे वस्तुनें सन्मुखछे ते वस्तुनें वस्तु कहे अने शब्दनो अर्थ पिण भिन्न थाय शब्दनो आधार पणे ठहरे मननो अभिप्राय आधेयपणें ठहरे आधार बिना आधेय वस्तुनो नामलेता बचन बिपरिणाम न होय इहा शब्द नय वालो कहेछे थाराकहण म्हारा कहण मांहिं अंत रछे रूपछे समभिरुढ नय वालो कहेछे शब्दनो अर्थ तो दूजी बस्तुमें मिलै तुरंग उतावलो चाले ते घोडो अनें मन पिण ते माटें आधार बस्तुनो अभिप्राय सन्मुखपणें होई ते समभिरुढ नय ६ हिवे एवं भूत नयनी युक्ति कहेछे अणुयोगद्वारे ॥ बजणअछ तदु भयं एवंभूत ॥ विसेसइ शब्द निर्युक्ति सहित अर्थ शब्द अनुसारे परिणामजे वर्तमान काले एवंभूतन यमानें वस्तुना मूल निजस्वभाव आत्मभावे तद्रूप वरते ते एवं भूतनय मानें जिम दृष्टांत धर्मास्तिकाय प्रमुखना द्रव्यगुण परियाय ते ग्याननां गोचरमे आवे अनें ग्यानछे ते जीवना गुणछे तेमाटें सर्व बस्तुनो

शास्त्रोमें उत्सर्गापवाद दोनोही साधारण विधिवाद कथन करेहें सो साधारण विधिबाद उसको कहतेहै जिस संजमकी रक्षा निमित्त उत्सर्ग मारगको अंगी कार कियाथा उसी संजमकी रक्षा निमित्त अपवाद मारग अंगीकार कीया इसको साधारण विधिबाद कहतेहै जैसें तप करनाभी संजमके लीयेहै ओर आ हार करनाभी संजमके लीयेहै ओर जैसे वस्त्रादिकका त्यागनाभी संजमके लीयेहै ओर वस्त्रादिकका रखनाभी संजमके लीयेहैं ओर केइ दमत इंद्रीमुनी एक क्षेत्र मे सो बरस बैठा रहेतो दोस नही यहभी संजमके लीयेहै ओर देसानुदेस बिहार करनाभी संजमके ली येहैं ॥ क्रोधका त्यागनाभी संजमके लीयेहैं ओर कि सीचेलेको सिक्षा देनेको क्रोध करना पडे यहभी सं जमके लीयेहैं ओर प्रथम जो महाव्रतमें किसी जीव को नहणुंगा मनबचनकाया करकें यह व्रतभी संज मके लीयेहै ओर जो देशानुदेस बिहार करना पडि लेहणा करणी नदी उत्तरनी बहती साधीवीको पकडनी वर्षामें दिशामात्रा जाना बेल वृक्षके सहारेसे गिरा हुया साधु खाडमेसे बाहिर निकलना इत्यादि बातो सें प्रत्यक्ष छकायकी हिंस्या होतीहै यह अपवाद है सोभी संजमके लीयेहै झूठका न बोलनाभी संजम के लीयेहैं ओर मृग पृछादि कारने झूठ बोलनाभी संजमके लीयेहैं ओर चोरीका त्यागनी संजमके ली

था दोनो ढीलीछोडे तो सम्यक्त रूप मोक्ष कारज सि
द्ध न थाइ ते माटे शुद्ध सम्यक्तवंतने सर्व नय परि
माणकीजे ओर श्री पूज्य मनोहरजीके गछमे श्रीरतन
चंदजी निज कृत्य ग्रंथ तत्वानुबोधमे कहते है
॥ दोहा ॥ बेहुं सम्याकितदुलहे, समझे नव तत्वज्ञा
न॥नय निखेप परमाणसुं, स्यादवाद परिमाण॥१॥ओर
॥दोहा॥जिन बाणी जिन स्वादनी, मतकरजो कोई हा
स्य॥स्याद्वादनय सुद्ध करो, यह मेरी अरदास ॥ २॥
इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३५॥ दया ओर हिंस्याके कित
ने कितने भेद उत्तर दयाकेतीन भेद ओर हिंस्या
के ३ भेद प्रथम हेतु दया सो जैन ग्रंथानुसार सब
धर्म क्रिया यतनसे करणी १ दूसरी स्वरूप दया जो
प्रत्यक्ष जीवको देखकर न मारणा २ तीसरी अनु
बंधदया सो देखनमे चाहे हिंस्या हो परंतु फल द
याका जिस करणीसे हो येही अनुबंध दयाहे ३ हेतु
हिंस्याजो अयतनसे काम करणा बिन उपियोग १
स्वरूप हिंस्या सुभासुभ हरेक कारय करता हिंस्या
थाय वा प्रत्यक्ष जीवको मारदेणा ते स्वरूप हिंस्या
२ अनुबंध हिंस्या निन्हव परमुखकी क्रियादेखनेमें
दयारूपहै परंतु परभवमे फल संसार रुलने रूपहै
तिसको अनुबंध हिंस्याकहतेहै ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर
॥ ३६ ॥ उत्सर्ग अपवाद मार्ग आज्ञाका मूलहै इन
का भेद बहोत साधुसाधवी नही समझते उत्तर जैन

श्राविका जिन बचन अन्यथाकर स्वकलपनाके म
तको चलावेंगे वे जमालीवत् संसार भ्रमण करेंगे
ओर जो लोग अपने मत करिके मुक्तिके होणेका ला
भ बताते है परंत इतना नही जानते जबतक परस्व
रूप तथा ममत कषायादिहैं तबतक मुक्ति नही चे
तन निज स्वभावमें रमण करेंगा सोही मुक्तिहै कुवि
षण ममत क्रोधादिक त्यागना पांचइंद्री जीतना मन
बस करना आतमवत् सर्व जीवकों जानना हिंस्याका
त्यागना सम प्रणामीहोना इत्यादि अनेक कार्यहै ति
नके करणेसें मुक्ति प्राप्ति होतीहै परंत हिंस्यादि अ
ठारा पापोसें मुक्ति नही सम्यक्त सुध श्रद्धाव्रतादिय
है धर्म लक्षण करम निर्जरा ओर मुक्ति होनेकेहें ओ
र जबयह चेतन राग द्वेषादि दोषोंको दूरकर ज्ञान द
र्सण चारित्र तप एह ४ कार्ण मोक्ष मारगके धारण
करे ज्ञानसे ५ ज्ञानादी धर्म जाणे दर्सणसें सुदेव सु
गुर सुधर्म भले प्रकारसें श्रद्धा सुद्धकरे चारित्रसें आ
व्रते कर्म रोके व्रत तथा महा व्रतां करी तप १२ प्र
कारका साधनकरी पूर्व करम निर्जरे ॥ तब केवल
ज्ञान केवल दर्सन सहित मुक्ति पदमें प्राप्तिहोय अ
र्थात् मोक्ष पदहोय ॥ इतिज्ञेयम् ॥ इति शिक्षा प्र
श्नोत्तर ॥ ३९ ॥ अब कितनेक साधू ग्यारे अंगादि
सूत्रांको चतुर्थ आरेके कहतेहें ते प्रमाण निश्चे नहीं
क्योंकि नंदी सूत्रकी गाथा (जेसिइमो अनुजगो प

येहै ओर संजम पालता अनंत जीवमारे जातेहैं वो जीव अदित्तहैं सोभी संजमके लीयेहै ओर परिग्रह तन्द मात्र लोम मात्रभी नही रखूंगा यह पांचमें महा ब्रतमे परतिज्ञा करीथी सोभी संजमके लीयेहैं ओर वस्त्र पात्र पोथी आदिजो परगट रखताहै यहभी संजमके लीयेहै ऐसे बहुत वार्ताहै सो निर्मल बुद्धी शास्त्रानु सार होनेसे समझी जातीहै ओर इसी तरहके कथनको जैन मतमे स्याद्वाद उत्सर्गापवाद रूप बिधिवाद कथन कराहै ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर॥३७॥ ओर कलप सूत्रके मूल पाठमें खुलासा पाठ राजा सिद्धार्थके न्हाणका ओर त्रिसलाराणीके महिलादिकका ओर जनम महोछवका बहुत विशेस वर्णनहै परंत जिन प्रतिमाके पूजाका बरणन नही कह्या ते किस तरें ॥ इति प्रश्नोत्तर ॥ ३८ ॥ ओर इस पाचवें आरेके साधू जैसी करणी परूपेहै तैसी करणी साधन नही होती कषायादि प्रकृति बलवानहै सर्वज्ञ बिना मनका भ्रम दूर होता नही तिस वास्तें आज्ञाके आराधिक जीव थोडेहै बहोतसे जैनमती अपनी रुचिके परिमाण धर्म तथा शास्त्रार्थ वा नवे नवे ग्रंथ बनातेहै ओर श्रीजिन आज्ञामें चलना बहोत कठिनहै ओर जो माया करिके जिन आज्ञाके परिमाण चलना कहतेहै वे लोग बहोल संसारी होगे ओर राग द्वेषके वस होकर दगाबाजीसे जो साध साधवी श्रावक

का थोडासा अंस मात्र उनके अनुसरे आचार्य कृत हे परंत ओर हरेक शास्त्रोसें पूराणे सूत्रहें ओर अव्व ल दरजेमेंहे ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४० ॥ कित्तिय वंदिय महिया शद्व विषे सचित फूल द्रव्य पूजाकी अनुमोदना साधुकरे ऐसा कहे तेहनो उत्तर कित्तिये कहतां कित्तितछे वंदिये कहता वांदवायोगछे महियाक हतां इंद्रादि देवोके पूजनीकछे जनम समयादिमें तथा दीक्षा केवल ज्ञानमेंतो सचितके संघट्टेके त्यागीहें त्रि विधि २ तीनकर्ण तीनयोगसें तथा फूलवारिस समो सर्णमें होयहै सोई अचित फूलांकी वारिस पहिले प्र श्नोमें लिख आयेहें तो इहा ध्यांनमें उनकी भाव पू जा तथा उत्कृष्टा पुन प्रकृतिकी अनुमोदना यानें स राहना करनी कहीहे इतिज्ञेयम् ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४१ ॥ कितनेक साधसाधवी ऐसा कहतेहें कि सा ध साधवी रात्रीको वाहिर न निकले परंतु वृहत्कल्प सूत्र आज्ञा सिझायवा थंडिल अर्थात् दिशा फिरने को देताहे ते पाठ (नोकप्पई निग्गंथस्स ए गाणी यस्स राउवा वियालेवा बहिया बिहार भूमिंवा निख मित्तए पविसित्तएवा ४९) अर्थ एकला साधूनें न कलपे सिझायवा वाऊभूमी जाना ॥ पुनः पाठ (कप्प ईसे अप्पावियस्स अप्पतातियस्सवा राउवा वियाले वा बहिया वियार भूमिंवा निख मित्तएवा पविसित्तए वा ५०) अर्थः—दो तीन साधू रात्रको उपाश्रयथी वा

यरइय जोवि अर्हनरहंमि बहुनय रनिगायजसे ते बं देस्कं दिलायरिय ३६) अर्थः—उसस्कंदिलाचार्यको वंदूंहूं जे श्रीजिनराजके अनुयोग सूत्रार्थ आधे भर्तक्षेत्रमें प्रवृर्त हो रहाहै ओर आगे प्रवर्तेगा ऐसा कह्याहै सो स्कंधला आचार्य कृत मालुम होतेहैं परंत पहिले ११ अंगोके मूजवतो अबके ११ अंग बहोत कमहै जिसका परिमाण समवायांग तथा नंदीसूत्रके मूल पाठमें द्वादशांगका परिमाण कीयाहै प्रथम अंग १८००० पद प्रमाण कह्या ओर दूसरे अंगके ३६००० पद कहे इसीतरे आगें दुगुणे पदहै ओर एकपद संख्याते अक्षरोकाहै जिसमें प्रथम ५४ अंक लिखेजावें बादउस्के १४० बिंदीयादी जावे उसको उत्कृष्ट संख्यात गणित प्रहेलिका नामसें अनुयोगद्वार सूत्रमें लिखाहै अब आचारांग सूत्रके १८००० पदथे जिस्में २५०० श्लोक प्रमाणहै ॥ ओर सुयगडांगके २१०० श्लोक परमाणहे ठाणागके ३७७० श्लोक प्रमाणहै समवयांगका ग्रंथ प्रमाण १६६७ भगवतीका ग्रंथ १५७७२ प्रमाण ग्याता ग्रंथ प्रमाण ५५०० उपाशकदशा ग्रंथ प्रमाण ८१२ अंतगढ ग्रंथ प्रमाण ९०० अनुत्रोव वाई ग्रंथ १९२ प्रश्न व्याकरण ग्रंथ १२५० विपाक सूत्र ग्रंथ १२१६ सर्व जोरू शलोक ३५६७९ संख्याहै इस वास्ते मालुमहोताहैं कि पहले प्रमाणे सूत्र नहीहे अब उन

एह सूर्य ऊग्या ए प्रत्यक्ष प्रमाण १ तिहां केवली
ही द्रव प्रत्यक्ष जाणे हाथ्लोपर आमलवत् ते कार
ण केवल प्रतक्ष ज्ञान छे सर्व छहद्रवना दरव खेत्र का
लभाव प्रगट जांनें देखे ते परतख प्रमाण १ हिवे
परोक्ष प्रमाण कहेछे परोक्ष प्रमाणना ३ भेद अनु
मान १ आगम २ उपमा ३ हिवे ३ ना अर्थ कहेछे
अनुमान प्रमाणथी बस्तु उलखे जिम बादलमां सूर्य
उग्या अनुमानसें जाणे तथा अंकूरा देखीजाणे इण
ठामे मेह वरर्स्याहे तथा धूवांदेखी आगजाणे इत्यादि
अनुमान प्रमाण १ आगम प्रमाण कहता शास्त्रना
बचनथी जे जाणें जिम स्वर्गनरकादिक थया निगोदा
दिना जीव अनंता सूक्षम स्थावरना भेद जाणे ते आ
गम प्रमाण २ उपमा प्रमाण कहता दिष्टांत देखावी
ने वस्तु उलखावे ते उपमा प्रमाण जिन पल्योपम
सागरोपम इत्यादि उपम प्रमाण ३ तथा परतक्ष
प्रमाणना २ भेद एकतो इंद्री प्रतक्ष प्रमाण १ नो
इंद्री प्रमाण २ इंद्री परमाणके ५ भेद श्रुत इंद्री १
चखुइंद्री २ घ्राण इंद्री ३ रस इंद्री ४ फरस इंद्री ५
नो इंद्री परमाणका २ भेद एकदेसथकी बीजो सर
वथकी देसपरमाणना २ भेद एकतो देसथकी अवधि
ज्ञान २ देसथकी मन परजव ज्ञान॥सर्वथकी परमाण
ना २ भेद एकतो केवल ज्ञान १ दूजोकेवल दरसन
२ ॥ १ ॥ दूजो ब्रनमान प्रमाणका ५ भेद माताको

पुत्र स्त्रीको भरतार बालपणो परदेसे गयो घणा का
लमें भनी २ पाछो आयो जिसकुं पांच बोलकरी ओळ
खीये तिल १ मसे २ बातें ३ बरण ४ संठाण ५ इ
णां करी ओलखीये ॥ २ ॥ तीजो आगम प्रमाण तेह
ना ३ भेद पूरव भाषा १ सह्श्र भाषा २ दिठी सा
धरमी भाषा ३ पूरव भाषाका ५ भेद कार्ण १ कार्य
२ गुणा ३ अबीव ४ आसरतन ५ कारणका २ भे
द खिजुरको कारण बीजणो बीजणांका कारण खिजूर
नही १ ताणाको कारण कपडो अनें कपडाको कार
ण ताणो नहीं २ माटीको कारण घडो अनें घडोका
कार्ण माटी नही ॥ १ ॥ कार्जका ४ भेद हाथीनें तो
गुलगुलाट करिजाणिये १ घोडानेंतो हेंकारसुं जाणिये
२ रथने तो घणघणाटसूं जाणिये ३ मोरनें तो कूका
ट शब्दसुं जाणिये ४ ॥ २ ॥ गुणका ५ भेद सोनामें
तो कसोटीनो गुण १ फुलमें तो सुगंधको गुण २ मधु
में स्वादको गुण ३ लूणमें रसको गुण ४ कपरामें फ
रसको गुण ५ ॥ ३ ॥ अबींवका कीया १७ भेद म
हीषनेतो सींग करकें जाणिये १ घोडानें खुर करकें
जाणिये २ हाथीने तो दांत करिकें जाणीये ३ मोरनेंतो
पांख करिके जाणीये ४ कुरकटनें तो सिखा करिकें
जांणीये ५ गजाईने तो बहुपगां करिके जाणीये ६
सूवरने तो दाढा करिके जाणीये ७ मनुषने तो दोय
पगां करिके जाणीये ८ तिर्यचने तो चउपगां करिके

जाणीये ९ वाघने तो नख करिके जाणीये १० सुन्न टने तो शस्त्र करिके जाणीये ११ महिलाने तो वींदी या करिके जाणीये १२ पंमितने तो काव्य करिके जाणीये १३ वृषन्नने तो स्कंध करिके जाणीये १४ केसरी सिंहने तो केस करिके जाणीये १५ चमरी गायने तो चवर करिके जाणीये १६ सीऊीया धानने तो सीत करिके जाणीये १७ ॥ ४ ॥ आसरतनका ५ नेद धूवांको आश्रतन अगनी १ बुगलाको आश्रतन पांणी २ आकासको आसरतनमेह ३ कुलको आसरतन पुत्र ४ आचारको आश्रतन सींलवंती वाई नायां इति पूरव नापा संपूर्ण ॥ अथ सहश्च नाषा कहेबे–एक मारवामीके धोरीकुं देखोके सर्वधोरीकुं देखो एक समदृष्टीकुंदेखो सर्व समदृष्टीकुं देखो स्याथकी जाणीये पोतानी मतबुद्धि कल्पना करिके जाणीये जिसका कीया नेद २ एक तो लौकीक आगम प्रमाण बीजो लोकोत्तर आगम प्रमाण ॥ लौकीक आगम किणने कहिजे गीता नागवत कुरान पुरान ज्योतिष शास्त्र बेदिक मिमांसा उपेय अनें १८ पुरानको जाणपणो जिननें लौकीक आगम प्रमाण कहिजे १ लोकोत्तरं आगम प्रमाण किणने कहिजे श्रीअरिहंतें सिद्ध नगवंत विमल निरमला केवल ज्ञान केवलदरसन करी लोक अलोकका नाव जाणे देखे ११ अंग १२ उपंग १४ पूर्वनों जाणकार होवे निरवद्य

वचन प्रकासे इतरांको जाणकार होवे जिसकुं लोको त्तर आगम प्रमाण कहिये ॥ इति सहश्र भाषा संपूर्ण ॥ दीठी साधरमी भाषाका २ भेद एक शुभजाणें बीजो असुभजाणें शुभजाणेतो तीन कालकी वात जाणें गयेकालकी किमजाणें जिम कोई पुरष परदेस में जावतो थको कादा सहित धरती देखी वागवाडी हरीया देख्या कूवा निवाण भरया देख्या जदजाणयों गयेकालें इहां वर्षा घणीहुइ दीसेछे बरतमान काल की वात जाणे तो कोई जाणे जिम कोई साधमहा पु रष परदेसथी विहार करता २ आया खुध्या बेदना लागी गोचरी वास्तें ऊठ्या पिण गाम छोटा श्रावका का घरथोडा परंत जिहां देखे तिहां उलटभाव देख्या अर्थात् चढते भावदेख्या बहादातारना भावदेख्या जदि जाणया वर्तमान काले इणगामको सुभ होतो दीसेछे आवते कालकी जाणे तो कांइ जाणे पर्वत पहडा सुहासणालागे घणा अगर बगड वायरा वाजे नही घणातारातुटे नही घणामोर कुकाट करे नही घणी बीजली चमके नही घणी धरती धूजे नही गाम बाहिर जाके देखेतो मननें गमतो २ लागे जदि जाणिवोके आवते काले कांले कांई सुभचैन होता दीसेछे असुभ जाणे तो कांई २ जाणे तीन कालकी वातजाणें इण दृष्टांते जिम तीन कालकी वात सुभजाणी जिम तीन कालकी वाता उलटी ऐसे समझणी ४ ओ

पम प्रमाण कहेछे अछती रकमनें छती उपमा १ छ ती रकमने छती उपमा २ छती रकमने अछती उप मा ४ ॥ १ ॥ अछती रकमनें छती उपमा किणनें क हीजे द्वारका कैसी जाणे देवलोक सरीखी १ भऊखी र कैसोजाणे समुद्र २ आगीयो कैसोजाणे सूर्ज जि सो ३ कमोद कैसी जाणें चंद्रमा सरीखी ४॥१॥हिवे छती रकमनें छती उपमा कहेछे एक सिद्ध भगवानमें पांवे जिसोइगुण जिसोई अरथ जिसोई परमार्थ एक सिद्ध भगवानमे पावे २ हिवे छती रकमनें छती उपमा किणनें कहिजे॥दुहा॥पातझरंता इम कहे, सुण तरवर व नराय॥अबके बिछरू कबमिले, दूर पडेंगेजाय ॥१॥तर वर इम उत्तर दीयो, सुणो पत्र इक वात॥इणघर आ ही रीतहे, इक आवत इक जात॥२॥पत्र झरंतादेखके, हसांज्ञि कुंपालिया॥हमबीती तुमबीतसे, धीरे रहे बापडी यां॥३॥कब तरवर छठवोलीयां, कनकूंपल दीयोजवाब॥ बीर बखाणी उपमा, समझे लोग सिताब॥४॥अछती रक मने अछती उपमा किसलागी घोडाके सींग कैसाके गधाजेसा गधाके सींग जैसा जैसा दोनोकुं सींग न हीं या अछतीरकमने अछती उपमा कही ४ इतीज्ञेय म् ॥ अब प्रश्नोत्तर संग्रह ग्रंथ करता लिखेहै कि जो पूर्व प्रश्ना अनुसारसें जो मेंनें ज्ञानावरणी करमके उ दय सूत्रसें विरुद्ध वारता लिखदी होय सूत्र मूल त था अर्थ तथा जिनाज्ञा बाहिर अयुक्त सूत्र कह्या हो

य ते च्यार तीर्थोंकी साखसें मुझकुं वारंवार तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ दोहा ॥ अधिका ओछाजो लिख्या, तुछबुद्धी अनुसार ॥ ते सब माफ करो तुमें, लीजो चतुर सुधार ॥ १ ॥ भाषा देहली देसकी, सज्जन जिन हितकाज ॥ च्यारो तीरथ साखसें, एम कहे ऋखराज॥ २ ॥ ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४४ ॥ इहांजो पहलें प्रश्न पीछे उत्तर कह्या तिस वास्तें इति पूर्व प्रश्नोत्तर पूरण होनेमे लिख्येहै ॥ १ ॥

॥ श्रीगौतमायनमः ॥ अथ भीषममती तथा तिनकुं तेरापंथीभी कहतेहें ते संवत १८१८ में रघुनाथजी २२ टोले मांहिके साधूजी महाराजहुये तिनका चेला भीषमनामकर तिसनें तेरापंथ अर्थात् १३ साधुवांको लेकर जुदा हुवा ओर एकांत दांन दयाका उथापक हुवा तिनके प्रश्नोका जुबाब अर्थात् उत्तर पूर्व सूत्रांके प्रमाणसें साधुवोंने उतर लिखेहै तथा दीयेहै तिनके अनुसार तेरा पंथीयोसें चर्चा वास्तें श्रद्धा सुद्ध होनेके ते इहां प्रश्न उत्तर लिख्यते ॥

॥ श्रीॐनमः सिद्धं ॥ केइ एक क्रिया वादीकहेछे जे सम्यक्त विना पिण निरवद्य क्रियाकरे ते धर्म छे तेहनो उत्तर आचारांग प्रथम श्रुतखंधे अध्येन ४ उद्देसे ४ (गाढिएबाले अवोछिन्न वंधणे अणभिकंत संजोए नमंसि अविजाणउ आणाए लंभो नत्थी)

ए पाठमे कह्योछे जे बोलमिथ्याती आत्महित मोक्ष नो उपाय अजाण तेहने तीर्थंकरनी आज्ञानो लाभ नही वली उतराध्येन अधने २८गाथा २८मी (णत्थी चरित्तं समत्त विहुणं दंसणे उन्नइएवं समत्तचरित्ताइं जुगवंपुव्वंच सम्मत्तं १ नादं सणिस्सनाणं नाणे णवि णा न होंति चरणगुणा अगुणस्स नत्थी मोखो न त्थी अमोखस्स निव्वाणं २) इहां गाथामा कह्यो जे समकित बिनाज्ञान नथी ग्यानबिना चारित्रना गुण नही चारित्रना गुण बिनामोक्ष नही मोक्षबिना सि द्धना सुख नही वली उतराध्येयन अधने २८गाथा२ (नाणंच दंसणं चेव चरितंच तवोतहा ए समग्गोती पन्नत्तो जिणेहिंबरदं सिहिं १) इहां ज्ञान दरसन चा रित्र तप ए ४ अनुक्रमें कह्याछें पिण आधापाछा हो यनही जिहां मिथ्यात तिहां श्रुत धर्म चारित्रादिक लवलेस मात्र नही प्रथम तो बीरजिनेंद्रनी आज्ञा मांहि एकांति मुक्ति हेतुछे एकांत बिरतछे मुक्तिनो कारणछे तेमा बीजो पक्ष कांई नथी अनें प्रभूनी आ ज्ञा बाहिर सुभकरणी कांई एकछे तिसमें पुण्य फल उपारजै ऐसा सूत्रमां घणे ठामें कह्योहै ४५ तिसमां ए अज्ञानी कितनेक कहेछे आज्ञा बाहिर पापछे तेह उत्तर हिवे जोवो सूत्रमां गोसालाजी जमाली अन्य तीरथी उववाई सूत्रमां अनेक भेदना कह्या माता पि ताना वचनना पालक मात पिताका सुबनीत इत्यादि

क बली हस्ती तापस दिसाचर्य गोव्रर्ज वाला मृग लुब्धक ए सर्व अज्ञानी अज्ञान कष्टना करण वाला व लि भगवतीमें सिवराजरिखी तांबली पूर्ण अकाम खु ध्या तृषा सी ठांडना खमणवाला इत्यादिक देवलो कें जायछे ते जीव जिन आज्ञामें नही जिन आज्ञानु लाज आराधिक पणुं नही परलोगस्स अणाराहगा क ह्या उववाईमें तथा सूयगडांग १ अध्येन ८ में गाथा (जेयाबुद्धा महाभागा बीरासमत्त दंसीणो असुद्धं ते सिपरिक्कंतं सफलं हवई सवसो १) इहा कह्यो जे मि थ्यात्वी क्रियाकरे ते सर्व करम करने सफल होवे जो धर्म होयतो अशुद्धप्राक्रमकां कहे बली मिथ्यात्वीनी क्रियाने समदृष्टी बखाणें नही उत्राध्येन २८ में (पर मत्थ संथवोवा सुदिठ परमत्थसेवणावावि वावन्नकुदं सणबज्जणाए एसमत्त सद्दहणा १) तो देखो अनें इ हां धर्मनी सेवाबरजिक अधरमनी सेवा बरजी तथा मिथ्यातीइं नव कोटि सहित पचखाणलीधो ते क्रिया वादीनें पूछीयें स्यूं ज्ञान गुणनीपनो दरसन गुणनीप नो ते तो नथी अनें ज्ञानबिना दरसन बिना चारित्र नों गुण नथी तो धर्म किसो थयो वलि भगवती श तक ७ जीव अजीवना जाणपणा बिना पचखाण दु पचखाण कह्या पिण सुपच्चखाणतो कह्या नही वलि सुयगडांग अध्ययन दूसरे गाथा (जइविणगिणे किसेचरे जयं त्रियंतं जियमास वंतसो ॥ जइ हिंमा

याहिंमीहे आगंताग द्वायऽ ांनभो) समकित रूप लाभ न कह्यो बालमरणना करणवाला पंचाअग्नना साधनवाला जल स्नानना करण वाला एह सर्व मि थ्यात दृष्टी कह्या अनें देवलोक जाता कह्या परलो गस्स अणराहगा कह्या अज्ञा रूपलाभ न कह्यो४६ तब निन्हवमती अर्थात् तेरा पंथी कहे छे जेए अन्य तीरथी पुण्य फल पामेंछे ते करणीतो अज्ञा मांहि लीछे तेहनुं उत्तर हस्थी तापस हाथीना मांसनों आ हार करेछे मृगतापस मृगनुं आहार करेछे बालमरण वाला बालमरण करेछे मात पितानी सेवाना करण वाला सेवा करेछे ए करणी जिन आज्ञा मांहिं नहीं वली अविवेकी कहेछे करणीनुं करणवाला आज्ञा बाहिरछे अनें करणी आज्ञामांहिलीछे तेहनें इम क हिये अहो तत्वना अबेताउ गुणनें गुणी युदा नहीं अनुयोगद्वारमें कह्या दंडेणं दंडी छत्तेणं छत्ती पंडेण पंमी गुणीनें गुणी युदा नहीं चंद्रमानें किरण सूर्जनें आताप दानीनेंदान ज्ञानीनें ज्ञान समकितनें समकि ती चारित्रनें चारित्रियो ध्यानीनें ध्यांनी चोरनें चोरी पापीनें पापी पुण्यनें पुण्यवंत तिम मिथ्यात्वनें मि थ्यात्वी जुदानहीं करता अनें करसमां भेद गवेष्यो पिण तुमें सिद्धांते मूल नयना प्रवाहनें विषे समझता नहीं जे वस्तु आश्रया माटे जे नाम कह्यो ते नाम थकी ते पुरुष जुदो न कहिये जिम मिथ्यात्विनें मि

थ्यात्विनी करणी जुदी नही तुम अविवेक पणें जुदी क्यों कहोगे समकितनी करणी समकित खातेंछे मि थ्यातनी करणी मिथ्यात खातमेंहे ए करणी मिथ्या त संबंधीछे तिसमें जितना मन बचन काकानों जो ग शुभ परवरते तेतलो पुण्यनो कारणछे जेतलो जोग दया दांन सत्य सील कुलाचार संतोष प्रमुख मा बरते ते करणी थकी पुण्य उपजे उववाई सूत्रम थ्ये जेतला अन्य दरसनी तापसनिन्हव प्रमुख कह्या ते सर्व देवलोक गामी कह्या ते जोगनी करणी थकी परंत इम न कह्या जे यह पुरसतो अज्ञा बाहिरछे अ ने एहनी करणी आज्ञा माहिलीछे १ बली मिथ्यात्वि प्रते इम कहिवो जे जो एहनी मिथ्यातनी करणी आ ज्ञा माहिलो अंस मानोहो तो एहनो ग्यान ७२ क ला जावत ४ बेद पर्यंत अनेरा पिण घणा लौकीक सास्त्र ए ग्यान सूत्रना अंस गण्या जोईये वली एह नी मिथ्यात दृष्टीछे ते पिण समदृष्टीनो अंस गिण्यो जोई ए एहनु बालवीर्यछे ते पिण अनंतो आत्मीक पंडित बीर्यनुं अंसगिण्यो जोईये ए लेखेतो मिथ्यात मारग ते पिण मुक्त मारग पोहचवानो देसथकी मा रग गिण्यो जोईये अहो दिढ कदा ग्रहियो एह बात किम मिले जे मिथ्यातमां शुद्धपणोछे ते अज्ञा मांहि लोछे ४३ वली कहे जे मिथ्यातसे जीव समकितमे आवे तिवारे मिथ्यातीनो मिथ्यात मिटेछे पण कांइ

साची बात होवे तथा तपसंजमतो तेहिजछे ते उत्तर
हे निरविवेकीयो अजे जीव मिथ्यात मूकी समकित
मा आव्यो तिवारे समकितनो आरोप थयो समकि
तना गुण तथा ग्यान(सादिय सपजवसिय) कह्यो
ने (सादिय अपज्जवसिव) कह्यो तिणे मुलगा आ
त्मना गुणहता ते गिण्या पन्नवणा पद १८ मे तथा
वले नगवती आदिघणे सूत्रें मिथ्यात्वीनें (एगंत
बाले एगंत पंडिए पन्हिय पावकम्मे) कह्या ते कि
म जे शुद्धतानो अंस होवेतो (एगंत अपंडिए) न
कहें चोथे ठाणें जघन थकी ज्ञांन दरसन गुण परग
ट्या॥ ते माटे वीतरागें आज्ञाना आराधिक कह्या उ
तराध्येंन २८ में [रागदोसो मोहो अणाणं जस्स
अवगयं होइ आणाएरोयंतो सखलु आणारुई नाम
१] इहांतो इम कह्यो जेहनें आज्ञानी रुचि होइ ते
हनें अज्ञान दूरो हुवो एणें लेखे समकतीनें आज्ञानी
रुचि होइ मिथ्यातीनें न होइ वली आचारांगें १ प
हिले आध्ययन ५ उदेसें ६ [आणाणाएगे सो वठाणा
आणाए एगे निरुवठाणा एवं ते माहोउ] इहां क
ह्यो जे आज्ञा ते समकित ते बिना उद्यम ते क्रिया
अनें आज्ञामें आलसमत तथा ज्यो इसे काहिवे मि
थ्यात्वीना शुभ जोगनी क्रीयानी अनुमोदना पिण
करवी नही तो बखाणवी किहांथकी ४८ केई एक वि
कल चेतनावंत तलावनो दृष्टांत देवेछे जिम एक त

लावनों पाणी वाणीयाने घरे आण्यों तेतो शुद्ध अनें चंडालनें घरे आण्यो ते अशुद्धछे पिण पाणी तो उत्तम छे पीधा तृषा जायके नहीं जिम अज्ञानीनी करणी जिन मतरूप तलाव माहलीछे पुण्य सुख सीतल न्हाठ्या येनें दुःख रूप तृषा भांगे तेहनो उत्तर हे अज्ञानो इहांतो तीन ठाम बतायाछे नीचठाम तलाव १ मध्यम तलाव २ उत्तम तलाव ३ जिम पहिला तलावमें भीष्टारूप अशुद्ध पाणी पीवा जोग्य नहीं पीवेतो निंद्या पामे तथा मर्ण पांमे तिम अनार्ज पुरुषांनी करणी धर्म अर्थे जीवघातकरें ते करणीसुं नरक पहुंचे १ मध्यम तलाव समान ३६३ पाखंडयांग धरम तथा पूर्वं कह्या ते तापस वली अकाम निरजराना करणवाला देवगामी ते सर्व दूजा तलाव समान २ उत्तम तलाव समान सम दृष्टीनी करणी निरवद्य ए करणी आज्ञा माहिलीछे ३ ॥४९॥ तथा वली तुम कहोछो जे मिथ्या दृष्टीनें अकाम निरजरा सकामनिर्ज्जरा दोनो होयछे अने २ निरजरा आज्ञा मांहिंछे वली अकाम निर्जरासूं संसार परत करे तेहनो उत्तर मिथ्या दृष्टीनें सकाम निर्ज्जरा तो होय नहीं अकाम निर्जरा होयछे अनें समदिष्टीनें सकाम अकाम वेउं होयछे ते किम भगोती सतग १ उदेसे, (अकामत एहा अकाम खुहा) अकाम कहतां निर्जरानो अण अभि[illegible] [illegible] निर्जरा

छे नवे नही अकामहीजछे अनें समदृष्टी मन साहि त निर्जरा करे तो सकाम बिनामन करेतो अकाम तो अकाम तो अकाम निर्जरातो आज्ञा बाहिरछे अ नें संसारतो प्रत करे निरवद्य करणी करे तेहना प्र भावथी पिण अज्ञानो लाभ तो नथी बले भगवती शतग ८ उदेसे ८ चार पुरष कह्या पाहिलो पुरष सीलवंत पिण ग्यानवंत नही तेहने देसथकी आरा धिक कह्यो ते करणीको आराधिक कह्योछे पिण इम तो न कह्यो (मग्गं आणाए देसाराहए) ते भणी उववाई सूत्रमा (परलोगस्स आराहगा) कह्याछे ते भणी आराधिक तो घणी जातिना कह्याछे कुलाचा रना आराधिक इहलोक ते स्वजनादिकना आराधि क आराधेते आराधिक जाणवा पिण आज्ञाना आ राधिकतो समदृष्टीहीज कह्याछे ॥ तथा मिथ्यात्वी जु दा अनें मिथ्यात्वीनी करणी जुदीछे तो स्युं करता अ नें करणीमा भेदछे जे द्रव्यछे ते आप आपणा गुणनें पर्यवमां अभिव्यापकछे पोताना गुणमा अंतर भव छे ते मा॰ मिथ्यातीनें मिथ्यातीनी करणी ए दोनो आज्ञा बाहिरछे ए अज्ञा बाहिरली करणीमें एकंत पा प कहेछे पुण्यनो लेस नही मांने तेहने कांइ धर्म बा ध दीसतो नही ५० तथा तेरापंथी निन्हव कहेछे जे उत्तराध्येंन ७ में गाथा २० मी (पवेमाया हिंसिखा हिं जेनरा गिहिसुवयाः उविंतिमाणुं संजोणिकम्मस

चाहु पाणीणो १) इहां सुव्रत शब्दे कह्यांथी आज्ञा में जाणवो ते उत्तर इहांतो मिथ्यात्वीछे पिण सुव्रत नें अनुकंपानो धरणहारछे तेभणी मरीनें मनुषमां ऊपजे जो सुशब्द कह्यांथी आज्ञामें थापस्यो तो सूरू धा भलो रूपछे बले जयंतीनें अधिकारे [सुततंसा हू] इत्यादि बले अधर्मीनीनिंद सर्व अज्ञामे कहणो पडसे १ तथा इम केई एक मूढमती कहेछे ५१ सा धू अने श्रावग ए दो रतनारी मालाछे साधु तो मो टी माला अनें श्रावग छोटीमाला तेहनु उत्तर भग वती सतग २० (जन्न समणं भगवं माहावीरे ए गंमहं दामदुग्गं सवरयणामय जावपडिवुद्धा तेणं स समणे ३ दुविहं धम्मं पणवेइतं आगार धम्मे१ अणगार धम्मे) इहां तो छोटी मोटी कही नहीं अने भगवंत तो एक माला दीठी पिण दुलकी दी ठी पिण दोयमाला देखी होय तो दामा एहवो बहु बचन शब्द जोईये परंत दाम ए एक बचनछे तिस वास्ते अने छोटी मोटी कहे तेहने रतनस्यू समकि त कि व्रत सूत्रमे किमछे ते देखाभो श्रीज्ञाता सूत्र १ मेघ कुमारने श्रीवीर कह्यो [अपडीलद्ध सम्मत्त रयण लम्भेणं] इहांतो समकित रत्न कह्यो परंव्रत तो रत्न कह्यो नही हिवे बरतमान कालमे ४ तीर्थ इम कहता दीसेछे जे एहवा समकित रूप रतनके विषे जे अतीचार लाग्यो होवे ते आलोउं परंत ब

त रतन तो कहता नही बले(सम्मत्त नावे पढमे नो अपढमे) अने क्रियातो अपढ माहीजछे ते जीव अ नंतीवार कीधी ते माटें रत्न नही अनें समकित र तन छे ते बेहूनें एक सरीखीजछे ते माटें साधु सरा वग रतनारी माला कही परंत नान्ही मोटी कही न ही तथा क्रियातो आंधलीछे अनें ग्यांन पागुलोछे ते गाथा अनुयोग द्वारमें कहीछे (सजोगसिद्ध ए फलं बयंती नहुएगचक्केण रहो पयाइं अंधोय पंगू य बयणं समच्चा तंसं पउत्तं नगरं पविठा १) तथा दसमी कालक अध्येंन ४ गाथा (पढमं नाणंत उ दया एवंचिठई सव संजए अन्नाणीकिं काही किंवा नाहिसे पावगं १ सोच्चा जाणई कल्लाणं सोच्चाजाणई पावगं उभयंपिजाणई सोच्चा जंसे यंतं समायरे २ जो जीवे बिनयाणई अजीवे बिनयाणई जीवा जीव अयाणं तो किंवानांदिसे पावगं ३ जो जीवे बिनया णई अजीवे विवियाणई जीवाजीव अयाणंतो सो हु ना हिय संजमं ४) तो देखो इहां समकित सहित्त क्रियावंत तेहनें संजम कह्यो पिण मिथ्याती अभव्य समकित रहित क्रियावंतनें पिण तथा रूप असंजती कह्यो ते जाणज्यो साध श्रावग रतन सरीखाजछे ना न्ही मोटीमाला सूत्रमें कही होयतो काढी देखावो ५२ कितने निन्हव तेरापंथी जिन मतना अजाण पणाथी कहेछे पुण्य पाप दोनो मूंडाछे छोडवा जोग्य

छे मोक्षना घातिकछे धन्ना अणगारनें पुण्य बंध्या तिवारें अणुत्तर बिमाणमें गया पिण मुक्ति नगया ते हना उत्तर ग्याता सूत्र मध्यें अध्येन ८ में अर्णक श्रावकनें समद्रमें जातानें मिथ्याती देवताने कह्यो जे तुं केहवाछे [धम्मकामीया पुण्यकामीया सग्गकामीया मोखकामीया ए ४ कंखीया ए ४ पिवासीया] ए १२ बोल कह्याछे तत्र वादी कहेछे एतो मिथ्याती देवताना वचनछे तिणनें कहिये एहवा हता तारे कह्योके झूठा कह्या वले (पुन्नकंखीया पुन्नपिवासीया पुण्य कामीया) ए बोल मिथ्यातीयें कह्या तिम (धम्म कामीया धम्म पिवासीया धम्मकंखीया) ए पिण मिथ्यातीहज कह्याछे जो ए साचा कह्यातो सर्व साचा कह्याछे इम कामदेवने पिण देवता १२ बोल कह्याछे महासतग रेवती पिण १२ बोल कह्याछे गर्भाधिकारे नगवतीमें गर्भता जीवने प्रनूपोते १२ बोल बखाणाछे उत्तराध्येन १२ में चित मुनीने संनूतने कह्या [यह जीवीयेराय असा सयंमी धाणियंतु पुन्नाइं अकुवमाणो से सोयमचु मोहो बणीउ धम्मं अकाउण परंमिलो ए १] इहां धर्मनें पुण्य एक जेहवा सरणागत बखाण्यो पुन धर्मनो कारण वले उतराध्येन १८ में (एयं पुणंपयं सोच्चा अत्थ धम्मोवसोहियं नरहो विन्नारहं वासं चिच्चाका माइं पवइय १) इहां चारित्रने पुण्य एक कही बोलाव्या वले अंतग

इमां कृष्ण कह्यो धन्न पुन्न कृतार्थ आली कुंमर प्रमु
ख जेणे चारित्रलीधो अने हुं [अधन्न अपुन्न] जे
चारित्र मुजने नही आव्यो एतले अहो अज्ञानीयो
चारित्र पिण पुण्यवंत पुरुषने आवतो कह्यो वली
प्रश्न व्याकरणमें प्रथम संवर द्वारमे कह्यो (सवग
ती पखंदेकाहिंति अणंत ए ऋक्क ए पुत्मा जे एणसु
णंति धम्मं सोऊणयापमायंति) इहां तो इम कह्यो ४
गतिमा कुणफिरे (अकृत पुनीया) जीव होय पु
ण्य रहित होवे ते रुले अभागीया ते पापीया जीव
अने सभागीयाजीव महा भाग्यवंतने पुण्यवंत जी
व वले सूयगडांग २ अध्येन २ समण माहणं हिंस्या
इं धर्म कहे ते ४ गतिमां (कलकलि भागीणो) ते
अभागीया थास्ये अने श्रमण माहण धर्म सुद्ध क
हे ते [कलकली भागीणो इम भविस्सई] अभागी
या नही थाय वली उत्राध्येन ३६ मे (तत्थ सिद्धा
महाभागा) एतले सव करम सिद्ध खपाव्याछे तो
पिण महा भागवंत कह्या वली उत्राध्येय २३ मे के
शीस्वामी गौतमने कहेछे (पुछामिते महाभागा) हूं
पूछूं हे महाभाग्यवंत तथा केसी कहे गौतम प्रते
तुं संसार समुद्र किम तिरेछे तिवारे गोतम कहे (स
रीरमा हूनावीति जीवो वुच्चई नाविउ संसारो अन्न
वोवुत्तो जेतरंतिमहेसिणो ३) सरीररूप नावाथी
संसाररूप समुद्र तिरुंछूं ए सरीर रूप नावा मुक्त

साधक जीवने आदरवा जोग्यके छांडवा जोग ए सरीर पचेंद्री जाति त्रस १० को मनुषनीगाति मनुषनी आण पूर्वी मनुषनो आउखो साता वेदनी ऊंचगोत्र इत्यादिक प्रकृति बिना मुक्ति न मिले अटकाई रही ते मिली एतलें मुक्त गामीनें एह प्रकृति साधकछे कि बाधक छे तथा उतराध्येन २१ में (दुविहं खवे ऊण पुन्न पावं निरंगणे सव्वउ विप्पमुक्के तरितु समुदंच महाभ वोहं समुद्द पाली अपुणागइं गये तिवेमि १) इण गाथा ऊपरें पुण्य पाप छोडवा कहेछे ते उत्तर हे अ ज्ञानीउ छांडवा जोग्य नही कह्या छांडवा जोग्य क ह्या होवे तो तिवारें हेलनीक नींदनीक होवे तेतो नही इहां तो सिद्ध दशापांमी तिवारें पुण्य पाप छां मी मुक्त गया तिम तप चारित्र पिण छूटा तो कांइ साधिक आवस्थामें तप संजम छांडवा जोग्य नही तिम पुण्य पिण छांडवा जोग्य नही साधु दिस्यालेवे तिवारें कारण थकी अने बंध थकी पाप मूंकेछे पिण पुन्न छोडतो नही पाप प्रकृतितो कारण सेवीनें प्राय चित लेवेछे तिम पुण्य प्रकृतिनो कारण सेवीने प्राय चित नही पुदगल तो बेउंछे पिण साधिक बाधिकमें फेरछे तथा सूत्रमें ठांम ठाम अशुभ पुदगल उच्चार पासवण प्रमुखनी असिज्झाई कहीछे पिण छाणा पा णी फूल फलनी असिज्झाई कहीनही एतला फेर पुद गल दसा मांहिं पिणछे वले ग्यानदरसन चारित्रना

गुणतो सरीखाछे मुक्तगामी पिण बेहूं छे तो पिण पु
ण्याईनें घटित बधितपणे गौतमस्वामीनें गणधर प
द आव्यो पिण हरकेसीनें न आवे इहां क्षयोपसम
भावतो सरीखोछे पिण उदय भावमां पुण्यनो फेरछे
तिसव स्तें न आवे वले आचार्यनी ८ संपदासें [रू
प संपदा] पुण्य थकी मिले तो आर्यपणो पुण्यें पां
मीये एतले ए पुण्य प्रकृति मुक्ति नजीक करे कि
वेगली करे वली गणधरनी तीर्थंकर चक्रवर्त बलदेव
वासुदेव जंघाचारण पुलाकलद्धि एह अस्नीमें न पासें
यह संवर संजममें फेरके पुण्यसें फेर एतलें पुण्यते
जीवनें साधकछे कि बाधकछे वले पृथवी अप्प वन
सपती ए ३ उतम जाति थावरछे तो एह नीकल्या
मुक्ति जाता कह्या यहमां पुण्यवंत देवता पिण उप
जता कह्या अनें तेऊ वाऊमें देवता न ऊपजे अपु
न्नीया माटे इम तेउ वाऊ ३ बिकलेंद्रीना आव्या मु
क्ति न जाय वले कामदेव कुंडकोलीयानें वीरस्वामी
(धन्नेसिणं)कही बोलाव्यो एतले जेतलो पुण्य उग
तेतला मुक्त मारगसूं बेगलोइ जाणवो इम कह्यो जे
उदय भावमें क्षयोपसम भावमे मुक्त मारगने साधिक
बाधिक दोनोछे ते किम उदय भावमां विषय कषा
यादिक बाधिकछे अनें प्रभूना दरसन तथा प्रभूना
आहार बिहार ए करणी साधिक पणेछे क्षयोपसम
भावमां३ अज्ञान २९ पाप सूत्र तथा अदरसनी गो

सालाजी जमाली प्रमुख कृत्य शास्त्र एहनो नणवो ए मुक्ति मार्गनें बाधिकछे अनें द्वादशांगीनो न णवो चारित्रनों पालवो ए साधिक दशाछे ते माटें जे णें कारणें मुक्ति नजीक थावे ते त आदरवा जोग्यछे तथा उत्राध्येन ७ मे लोकोत्तर पक्षे उपमा ३ दीधी बणीयानी तिहां कह्यो (माणसंतं नवे मूलं लानोदे व गइनवे मूलछएण जीवाणं नरगति रिखतणु धुवं १) इहां देवगति उदय नावमे गिणयो पिण बीत रागे लानना पक्षमा गिणयो ए उदय नाव पिण खे त्र शुद्ध कहियो उर्द्धगति आश्रीने तथा हरकेशी मु नीने ब्राह्मणें कह्यो (अच्चे मुत्ते महानागा नते किंचि अविसो नुंजाहि सालिमं कूरं नाणं बंजण संजूयं १) हे मुनी ताहिरो सरीर सर्व अर्चनीकछे पिण लगार अणअर्चनीकछे नही इहां उदय नाव आश्रीत सरी र बंदनीक कह्यो ए साधिकके बाधिक नंदी अणुजो गद्वारमध्ये नावथकी लोकोत्तर श्रुत अधिकारे कह्यो प्रनू केहवाछे (तिलोग बहिय निरखिखीय) एतले प्रनू साहमो सुर नर जावेछे तेहने आनंदरस प्रवा ह हिवडासुं चालेछे ए सरीर निरखणा उदय नाव वर्तनाछे वले नगवंत २ साधूने बरजा कोई बोलजो मती पिण गोशालाजी आया जद २ साधु धर्मा चा र्यना नक्त नावना प्रेरयाछता बोल्या हिवे इण साधु यें आज्ञा विराधी तेहनो दोष लाग्योके नक्त रागे बो

ल्या तेहथी गुण थयो ए बोल्या ते करणी उदय भा
वनी बयण साधकके बाधिक वले दयानो नाम पूठो
कह्यो ते पुण्योपचयनो हेतु कही इत्यादिक सूत्रानु
सारे विवेक लोचन जोज्यो ते पुण्यछे ते सुभ पुद्ग
लनो संचयछे विवहारमे ए साधक छे ५३ वले अ
ज्ञानी कहेछे जे उत्राध्येन १० मे(एवंभव संसारे सं
सरई सुह्रासुभेहिंकम्मेहिं)शुभा शुभ करमथी जीव
रुल्यो ते मांटे पुण्य पापथी बेउंथी रुलता कह्या पु
नः मुक्तनो साधक नथी तेहनो उत्तर हे मृषा वादी
मृषा क्यो कहोछो इहां तो प्रभू खरो कह्यो जे जीव
संसारमें रुलेछे ते शुभ कर्म अशुभ करमथी रुलेछे
शुभ अशुभ जोडेछे ते माटें असुभने संजोगे सुभथी
पिण रुलेछे ते माटे सुभासूभभेला कह्या पिण सुभ
थकी धर्म नजीकछे अने अशुभथकी बेगलोछे बले
अशुभ करमनी उत्कृष्टी थित बांधे तो जीव धर्ममू
लथी न पामें अने उत्कृष्टी थित सुभनी बांधे तो
धर्म सुखे पामे ५४ वलीकेतला अज्ञानी अज्ञान
ने बले सूत्रना खोटा अर्थ परूपेछे ते कहे सम्यक्त मो
मोहनी १ मिश्रमोहिनी २ मीथ्यात मोहनी ३ एहना
अर्थ इम करेछे जे समकित ऊपर हेत प्यार एक ला
स राखें ते समकित मोहनी संबंधीया होवे तो ऊप
रले गुणठाणें किम होवे तथा अभव्य जीवने ए ३
मोहनी प्रकृतिनी सत्ताछे अने समकित ऊपरे बांछ

ल्य भाव राखवाने समकिती ऊपरे हेतराग
लगा होवे नही यहनो सुध अर्थ तो इम कह्यो
मिथ्या मोहनीने उदय खयोपसम समकित
३ मिश्र मोहनीने उदय उपसम समकित
किम उपसम समकितमां मिश्र पणुंछे
वी प्रकृति भोगवीने उपसांत भावे
यमां रहि ते माटे मिश्रकाहिये २
उदये संपूर्ण सम्यक्ति खायक
एहनो अर्थ ए छे पिण ए दुष्ट परण।
करवा खोटा अर्थ कहेछे ५५ हिवे
रापंथी इम कहेछे भगवंतनें गोशाला
पाप हुयो भगवंत चूकी गया कृष्ण ९
म आया सरागदसा मोहनीने उदय गो।
चायो इम कहेछे तेहनो उत्तर हे अज्ञानी
प किम लाग्यो तिवारें दुष्टमती कहे यह
स्त पणामा कीधो पिण केवल उपना पछे
छदमस्त पणामें भगवंतनें ६ लेस्या अनें ८ क
ता जव गोशालाजी उगारयो तिवारें कहीये हे
प्रभू छमासी आदि बे तप कीधा अनार्ज देसें
र कीधा तिवारें पिण ६ लेस्या ८ कर्म हुंता हे
इहां लेस्या करमनो स्युं कारणछे जे करणी कीधी ते
हनो पह्लल्यो ५६ तिवारे कहें दोय साधूनें बलता
क्यां न उगारया जो उगारयानो लाभ हुंतातो तेह

रमुख ए प्रकृति तो आठवां गुणस्थान लगेछे अने
समकित मोहनी तो हेठले गुणठाणें खपावीछे जो ए
ाण (परियावीए बहु सुइकय) ए पाठछे ४ गो
ालानें उगारयो ५ ए ५ बोल साधूनें बरज्याछे अ
े पोतें कीधाछे केवल उपन्यापछे १० कालीकुमार
प्रमुखना मरण बताव्यो ६ नेमनाथस्वामीयें द्वारका
नो दाह १२ वरसमां बतायो ७ गोशालानो ७ दि
नातरे मरण बतायो ८ महासतक रेवतीनो मरण
बतायो तिवारे गोतमने मूकी प्रायछित देवाडयो अ
नें पोते सुखें बतायो ८ गोशालाने हेलवा निंदवा
नी आज्ञादीधी जे एहवे गोशालाने बोलवानी सक्ति
नथी तुम हेलो निंदो निष्टष्ट वागणें करेह ए आज्ञा
दीधी ९ तथा पूर्वधर साधू धर्मघोष नागश्रीने हे
ली नींदी १० बले तीर्थंकरनें उच्चारादिक लेप लाग
तो नही अनें सूंचपिण लेतांनही अने सामान्य सा
धु सुंचबिना रहे तो असुचिलागे ते भणी बरज्यो११
ए ग्यारे बोल भगवंते आगम बिहारी पोतें सेव्या
छे सामन्य साधूने सेवानी ना कही तो अहो अज्ञानी
यों तुम सर्व बोलमा तो भूला नही कहता १ अने
एक गोशाला उगारयो ते माटेज दोष लागतो गि
णयो तेहनो स्युं कारण पिण इम जाणो जे तुम प्रत्य
क्ष गोशालानें केडायत दीसोछो सो प्रभूनी लघूता
करोछो बले अज्ञानी कहे भगवंतने गोशाला उगा

यके उपसम १ महावीर प्रभू ऊपरें सींहा मुनीनो ती
व्रसनेह ते मोहनीनो उदयके उपसम २ सुनक्षत्र स
र्वानु भूती धर्माचार्यना भक्ति भावना प्रेरया थका
बोल्याते मोहनीनो उदयके उपसम ३ सिष्यने गुरु उ
पर भक्तिराग तपस्या करता बरजे ते मोहनीनो उद
यके उपसम ४ साधुने तथा प्रभूनें बिरहकरी भवि
क जननें चिंत्या उपजे ते मोहनीनो उदयके उपसम
५ साधू जननें छते जोगें असनादिक नापासक्यो
तथा धर्म कथा सांभली नसक्यो तो पश्चाताप करे
ते मोहनी उदयके उपसम ६ प्रभूना निरवांणसमें घ
णा जीवानें चिंत्या उपनी अने प्रभू पधारयां घणा
भविक जन अतिसें उछाह भाव ऊपन्यो ए मोहनी
नो उदयके उपसम ७ घणे ठांमे प्रभूजीना तथा सा
धूजीना नाम सांभलीने तथा दरसन देखीने तथा
असनादिक आपीने आणंद पांम्या अने बिरह वि
जोगे दुखे चिंत्यातुर थया ते केहा मोहनीनो उदय
एतो लक्षण समदृष्टीनाछे जिवारे समकित उतकृष्टा
रसना आवे तिवारे यहवा उल्हास भाव ऊपजे जेए
लक्षण समद्रिष्टीनां घातिक होवे तो समकितना अ
तीचारमां कयांन घाल्या चोथे गुणठाणे कोई उत्तम
जीवने क्षायक समकित आव्यो तेहने एह पूर्वें कह्या
ते गुण होवेके नही अनुकंपा भाव उछाहभाव शोक
भाव ए तो ऊपरले गुणठाणे पिण होयछे शोकहास्य

परमुख ए प्रकृति तो आठवां गुणस्थान लगेछे अने समकित मोहनी तो हेठले गुणठ णें खपावीछे जो ए गुण (परियावीए बहु सुइकय) ए पाठछे ४ गो शालानें उगारयो ५ ए ५ बोल साधूनें बरज्याछे अ ने पोतें कीधाछे केवल उपन्याप छे १० कालीकुमार प्रमुखना मरण बताव्यो ६ नेमनाथस्वामीयें द्वारका नो दाह १२ वरसमां बतायो ७ गोशालानो ७ दि नातरे मरण बतायो ८ महासतक रेवतीनो मरण बतायो तिवारे गोतमने मूकी प्रायछित देवाडयो अ नें पोते सुखें बतायो ८ गोशालाने हेलवा निंदवा नी आज्ञादीधी जे एहवे गोशालाने बोलवानी सक्ति नथी तुम हेलो निंदो निपृष्ट वागर्ण करेह ए आज्ञा दीधी ९ तथा पूर्वधर साधू धर्मघोष नागश्रीने हे ली नींदी १० बले तीर्थंकरनें उच्चारादिक लेप लाग तो नही अनें सूंचपिण लेतांनही अने सामान्य सा धु सुंचबिना रहे तो असुचिलागे ते भणी बरज्यो११ ए ग्यारे बोल भगवंते आगम बिहारी पोतें सेव्या छे सामन्य साधूने सेवानी ना कही तो अहो अज्ञानी यों तुम सर्व बोलमा तो भूला नही कहता १ अने एक गोशाला उगारयो ते माटेज दोष लागतो गि णयो तेहनो स्युं कारण पिण इम जाणो जे तुम प्रत्य क्ष गोशालाने केडायत दीसोछो सो प्रभूनी लघूता करोछो बले अज्ञानी कहे भगवंतने गोशाला उगा

यके उपसम १ महावीर प्रभू ऊपरें सींहा मुनीनो ती
ब्रसनेह ते मोहनीनो उदयके उपसम २ सुनक्षत्र स
र्वानु भूती धर्मा चार्यना भक्ति भावना प्रेरया थका
बोल्याते मोहनीनो उदयके उपसम ३ सिष्यने गुरु उ
पर भक्तिराग तपस्या करता बरजे ते मोहनीनो उद
यके उपसम ४ साधुने तथा प्रभूनें बिरहकरी भवि
क जननें चिंत्या उपजे ते मोहनीनो उदयके उपसम
५ साधू जननें छते जोगें असनादिक नापीसक्यो
तथा धर्म कथा सांभली नसक्यो तो पश्चाताप करे
ते मोहनी उदयके उपसम ६ प्रभूना निरवांणसमें घ
णा जीवानें चिंत्या उपनी अने प्रभू पधारयां घणा
भविक जन अतिसें उछाह भाव ऊपन्यो ए मोहनी
नो उदयके उपसम ७ घणे ठामे प्रभूजीना तथा सा
धूजीना नाम सांभलीने तथा दरसन देखीने तथा
असनादिक आपीने आणंद पांम्या अने बिरह बि
जोगे दुखे चिंत्यातुर थया ते केहा मोहनीनो उदय
एतो लक्षण समदृष्टीनाछे जिवारे समकित उतकृष्टा
रसना आवे तिवारे यहया उल्हास भाव ऊपजे जेए
लक्षण समद्रिष्टीनां घातिक होवे तो समकितना अ
तीचारमां क्यांन घाल्या चोथे गुणठाणे कोई उत्तम
जीवने क्षायक समकित आव्यो तेहने एह पूर्वे कह्या
ते गुण होवेके नहीं अनुकंपा भाव उछाहभाव शोक
भाव ए तो ऊपरले गुणठाणे पिण होयछे शोकहास्य

परमुख ए प्रकृति तो आठवां गुणस्थान लगेछे अने समकित मोहनी तो छठले गुणठाणें खपावीछे जो ए गुण (परियावीए बहु सुइकय) ए पाठछे ४ गो शालानें उगारयो ५ ए ५ बोल साधूनें बरज्याछे अ ने पोतें कीधाछे केवल उपन्यापछे १० कालीकुमार प्रमुखना मरण बताव्यो ६ नेमनाथस्वामीयें द्वारका नो दाह १२ वरसमां बतायो ७ गोशालानो ७ दि नातरे मरण बतायो ८ महासतक रेवतीनो मरण बतायो तिवारे गोतमने मूकी प्रायछित देवाडयो अ नें पोते सुखें बतायो ८ गोशालाने हेलवा निंदवा नी आज्ञादीधी जे एहवे गोशालाने बोलवानी सक्ति नथी तुम हेलो निंदो निष्ठष्ट वागर्णं करेह ए आज्ञा दीधी ९ तथा पूर्वधर साधू धर्मघोष नागश्रीने हे ली नींदी १० वले तीर्थंकरनें उच्चारादिक लेप लाग तो नही अनें सूंचपिण लेतांनही अने सामान्य सा धु सुंचबिना रहे तो असुचिलागे ते भणी बरज्यो११ ए ग्यारे बोल भगवंते आगम बिहारी पोतें सेव्या छे सामन्य साधूने सेवानी ना कही तो अहो अज्ञानी यों तुम सर्व बोलमा तो भूला नही कहता १ अने एक गोशाला उगारयो ते माटेज दोष लागतो गि णयो तेहनो स्युं कारण पिण इम जाणो जे तुम प्रत्य क्ष गोशालाने केडायत दीसोछो सो प्रभूनी लघूता करोछो वले अज्ञानी कहे भगवंतने गोशाला उगा

स्थानो लाभ जाणोगे तो तुम ए काम क्यौ नही क करो तेहनो उत्तर साधूतो एक गोशालो उगारयो ते एहीज काम न करे कही १२ बोल न करे तिलनो गेरू १ तिलनी सींगली २ मुंवानी खबर ३ द्वारका नो दाह ४ इत्यादिक पिण साधू नही करता तो ते कीधा तो प्रभूने भूला कहस्यो ५८ तथा केतला ए क मूढ कहेछे जे भगवंत लब्ध फोडी अने सीतल ले स्याना पुदगल बाहिरथी लीधा ते बिना आज्ञालीधा छे ते भगवंतने चोरी लागी तेहनो उत्तर अहो शु द्धोपयोगी इम चोरी गणस्यो तो तुमारे लेखे सा ध पणोहीज न पले ते किम जे पन्नवणा पद ११ में जे भाष्या बोले ते अनंता पुदगल लेईने भाष्या बोले (पुठाउगाढा) इत्यादि १७ बोलछे बले सास उसास ३ जोगीनी प्रवर्तन ए सर्व बाहिरला पुदग लीया सुं होयछे ते किणरी आज्ञा स्युं पुदगल लेवेछे बले वादी कहे अमेतो जाणीनें पुदगल नथी लेता ते उत्तर तुमें भाषादि जाणीने बोलोछो के अजाणी के बोलोछो इत्यादि ५८ तथा केतालाएक दुष्ट कहे सीतल लेस्या अने ते जूलेस्याना जीव मूवा एह पा प थयो ते उत्तर हे अज्ञानीयो एह कुमति तुम कि हांथी लायाछो सूत्रमांतो लेस्या लवधना अचित पु दगल कह्याछे भगवती सतग ७ उदेसे १० में (अ त्थिणंभंते अचित विपोग्गलाउ भासंति उज्जोवंति

तिवंति भन्नासंति हंताअत्थि) पिण एहने जीवत्व होवे तो विहार क्या न करायो कांई विहार करवामां तो दोष न लागतोछो तोपिण एहनें आऊखामे अवसर बलिष्ठ तिवारें भगवंत स्युं करे तो पिण भगवंतती बिहार राखवा माटे बरज्या तो हतो पिण इहां आऊखो पूरो थावानें समयथो ते कुणसाधे अनें पोतें ३४ अतिसय सहितछे २५ जोजन परमाणें ७ अतिसय ईत सयचक्र परचक्र अतिवृष्ट अनावृष्ट दुर्भिक्ष मारि न होवे तो अतिसय किहां गया इहां तो भावी पदार्थ बलिष्ठ ठहरयो ६० बले केताइक अज्ञानी इम कहे गौतमस्वामी आणंदने घरे भासामें चूक्या तिम भगवंत पिण छदमस्त पणामां चूक्या तेहनों उत्तर हे अज्ञानीओ गौतमस्वामीनें तो प्रभूइं कह्यो जे तुमे भूलाछो आणंदसाचोछे तुम जईनें खमावो पिण भगवंततो केवल उपना पछे कह्यो गौतम स्वामीनें में अनूकंपानिमतें गोशालाजी बंचायो पिण इमतो न कह्यो जे हूं चूक्यो जे चूक्या हुंतातो भगवंत स्युं आपणो दोष ढाक्यो पिण तुमे वीरप्रभू भूला स्यांने बलेजाणया तिवारे अज्ञानी कहस्ये छदमस्त पणानों कामछे तेहनो उत्तर भगवंतनी करणी छदमस्त पणानी अने केवल पणानी एक सरीखीछे एक सरीखा काम करेछे ते जोवो गोशालाजीने तिलनो छोड बताडयो अने बीजा साधु बतावेतो तेह

नें प्रायछित देवे जे निमत प्रकासवो नही आरंभ कारणी भासा न बोलवी ते भणी १ चलती वेला तिलनी सिंगलीमां ७ तिल बताव्या ते २ तेजू ले स्या उपजवानी गोशालानें बले करणी बतावी ३ कु पात्रनें विद्या न देवी अने गोशालाने (सेहावीएकयरे णंभंते अचित्ताविप्पोगलाउ भासंती ४ कालोदाई कु धस्स अणगारस्स तेउलेसानिसठा समाणी दूरग ता दूरंणिपत्ते) इत्यादिक आगलपाठ घणाछे ६१ ब लेमूर्ख कहेछे भगवंते गोशालो बंचायो तिहां अशु भ जोगनो व्योपार प्रब्रत्यो ते माटें दोष लाग्यो तेह नो उत्तर पूर्वला १० बोल कह्या तेमा शुभ जोगकि अशुभ जोगछे जोयकम्मा शुभ जोगछे तो दसोबोलमां शुभ जोग जाणवा ६२ वलि कहसी भगवंत गोशा लानो लाभ जाणतातो बीजाने एरीतें जीव उगार वानो उपदेस क्यां न दीधो ते उत्तर हे मूढो प्रभू पोतें तो अनार्ज देसमां विहार किधो छदमस्त पणामांथी अ नें केवल उपन्या पछे अनार्ज देसमें विहार न कीधो अने बीजा साधूने अनार्ज देसमां जावणो वरज्यो ब्रहतकल्प उदेसे १ नें अंतैतो स्यु प्रभू पूर्वे खोटो करयो ६३ वले केतला एक कहे लवध फोरव्यां प्रा यछित लीधा वीनां कालकरे तो विराधिक थावे ते मा टे भगवंते लवध फोडी तेमां दोष जाण्यो ते उत्तर सर्व लवधना फोडनहारने प्रायछित नही कह्यो सि

तलल्लेस्या जीवदया माटे फोडव्यानो प्रायश्चित सूत्रमां काढी देखाडो तो अमे पिण जोइये जो सर्व लवधनो प्रायश्चित होवे तो २८ लवधमां तीर्थंकरनी केवलीनी गणधरनी पुलाकनी लब्ध तथा उववाईमां (तेणंकालेणं २ समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतेवासी बहवेथेरा भगवंतो जाइ संपन्ना जाव विजापहाणा मंतपहाणा बली आगे वखाणया कूतिया वणभूया प्रवादीप्पमद्दणा दुवालस्स अंगिणो समत्त गणि पडिगस्स सवखर सन्निवाईणो सव भासाणुगामिणो अजिणा जिण संकासाए पाठमां प्रबादीप्पमद्दणा) ते वादी लबधिना धणी विद्यामंत्र भणयामां ए थेरा भगवंत प्रधान कह्या ए आच्यार कोई अज्ञानी कहि स्ये. जे धरमा एहवा हता विद्या मंत्र लबधिनाजाण ते बातकूठी इहां तो थिवराना गुण विद्यमान अवस्थामांछे ते बखाण्याछे संसारमां तो भोगनाशास्त्र कोकशास्त्र सामुद्रिक प्रमुख धनुर बेदादि अनेक भणया होस्यै पिण इहां वखाणया नही इहां तो जे करणी बखाणवा जोगहती ते बखाणी (जातिः कुल बलरूव विणय नाण दंसण चरित लज्या लाघव भयंसी तवंसी वच्चंसी जसंसी जाव वयप्पहाणा गुणः चरणः करणः णिग्गहः जिजयः अजवः मद्दवः लाघवेः खंतीः मुतीः बिद्याः मंतेः बेयः बंभः नयःणियमः सच्च सोय चारुवण लज्या) इत्यादि घणा गुणछे ए

परवरतमानमांहे एहमां संसारनो गुण एको नही ते माटे सर्व लबधनो प्रायछित नही इंद्री विषय सुख परमाद कषाय द्वेस इत्यादिक कारणे करे तो दोष लागे अने निविकार जावे दोष किहांई सूत्रमां कह्यो होवे तो देखाडो ६४ तथा केललाइक कहे जो गोशा लाने उगारयो तो होय तो साधूने बाल्या बीरस्वा मी उपरे तेजुलेस्या मेली मिथ्यातवधारयो ते स्युं गुण थयो ते उत्तर अरे मूर्खो ते बातनो प्रभुने स्या नो दोषपण वले अनन्त जीव साधपणो लेइ कोईनें मारी जायतो तेहनुं पाप गुरादिकनें नही जो महा बीर स्वामीनें दोष लागो जाणतो इण लेखे तो ऋ षभदेव स्वामीने तो घणो पाप लाग्यो होसी जे मा टे ४ हजार जणा साथे दिक्षा लीधी पछेसगलाई भा गा अने मिथ्यात बधारयो ते माटे पिण प्रभूने पा प नथी तथा गोशालाजीने तो छदमसत पणामां दि क्षालीधी पिण केवल ऊपना पछे जमालीनें क्यूं मुं डयो वले नंदनमणियारने श्रावक क्यां कीधो पा र्श्वनाथस्वामीयें सोमिल ब्राह्मणने श्रावक क्यां की धो सुकुमालका आरज्याने क्यां दिक्षा दीधी २०६ जणीनें क्यां दिस्या दीधी मेघकुमारने क्यां दिक्षादी धी इमतो घणो अटकास्ये ६५ तथा वली कहे गो शालो असंजमी अब्रती मिथ्यातियने भगवंत उ गारयो ए अनुमाने करी आलोयणनुं ठाम जाणीये

छे जिम रहनेमी राजमतीने विषयभोगनी आमं त्रणा करी पिण प्रायछित्त कह्यो नथी पिण जोवो ए प्रायछित ठामछे जिम भगवंते जाणवो ते उ त्तर एतो रहनेमीनो एकांत असंजमनो ठाम दी सेछे प्रायछितना १० भेदछे तेमां इंदियावसेकाउ अप्पाणं उवसंहरे ए पाठ कह्यो अने भगवंतने तो पाप नथी लागो ते साख आचारांग १ अध्येनमे (णच्चाणसे महावीरे णोविय पावगं सयंम कासि अन्नेहिंवाण कारिज्या करतंपिनाणु जाणी त्था ८ अ कसाते विगयगेहीया सद्दरूवे सुअमुछियझासि छउम त्थेविपरकममाणे नोप्पमायसयंपिकुवित्था ९ व ले आहाकम्मं न सेवे सवसो कम्मुणा अदरुखु जंकि चि पावगंभगवंतअकुवियं वियडं भुंजेथा १८) इ ण गात्थामें भगवंत छदमसत पणामां रह्याथकां किं चित पाप करम जाणीने न सेव्यो कह्यो तो तुम स्या नें कहोछो वले गोशालानो जीव दढपईनो थासी के वल पामस्ये जद सर्व साधुने कहस्ये में गया काल मां समण घाती थयो प्रभूने अविणय कीधो तो घ णा दुःख पाम्या तिम तुमें करस्यो मां इम कहसी पि ण भगवंत केवली हुयाछे ए कार्य निखेध्यो नही तथा नसीत सूत्रमां व्यवहार सूत्रमां व्रहत्कलप प्रमुखमां घणा कामना प्रायछित कह्याछे पिण अनुकंपानो प्रा यछित कह्यो नही वले भगवंतने १० सुपना आया

सोतो निद्रामां अजाणें आव्या पिण लबधतो उदीरीने गोशालाने बचायोछे तुमे १० सुपना अने लबध जोडे लगावो ते खोटुंछे बले तुमे नगवंतमां ६ लेस्या कहोछो ते स्यांनणी ६६ तिवारे बादीकहे नगवंतमां कषाय कुसील नियंठोछे अने कषाय कुसीलमां ६ लेस्याकहीछे ते नणी कहांछा ते उत्तर अरमूढो ६ लेस्यातो समुचय कषाय कुसीलमे कहीछे पिण एक० जीव आश्रीतो नियमा नथी अने जो कहसो तो कषाय कुसीलमां तो वेद ३ कलप ५ चारित्र ४ लिंग ३ सरीर ५ बंध ७ नो तथा ८ नो समुदघात ६ प्रमुख कह्याछे तो नगवंतमे सघला बोल कहणा पडस्ये ते तो नथी नगवंतमें छदमस्त पणामे १ सुक्ल लेस्या संनवीयेछे तुमे ६ लेस्या कहोछो ते खोटोछे बले तुम कहोछो नगवंतने गोशालो बचावता पाप लाग्यो तो कहो पाप मूलगुणमें लागोके उत्र गुणमें लाग्यो अने कहसोतो किम मिलस्ये कसाय कुसील नियंठो तो अप्रात सेवीछे ते मूल गुण उत्रगुणमें दोष लगावतो नथी तो तुमे कूडो बोलीने पाप नगवंतनें कहोछो ६७ बले बादीकहेछे जो नगवंत गोशालो बचावता नही तो एक अछेरो घटतो इम कहेछे तेहनुं उत्तर हे अविवेकीयो द्रोपदीनें पदमोत्तर मंगावी ते अछेरोके कृष्ण अमरकंका गया ते अछेरो मल्लीनाथ पूर्वे माया केलवी ते अछेरो के मली

नाथ स्त्री हुया ते अछेरो इम नगवंत गोशालो बं चायो ते अछेरोके नगवंतना मुख आगे २ साधूनें बाल्या अने नगवंत ऊपरे तेजूलस्या मेली ते अछे रो इम नगवंत तो अनुकंपा निमत्ते दया परिणामें वर्तिने गोशालो बंचायोछे बले बले तुम तो इम क होछो (श्रीनेम जिणेसर जाणता, होसी गजमुकमाल री घातरे ॥ तोही अणुकंपा आणी नही, छै साधन मेल्यासाथरे ॥ जीवामोह अनुकंपा न आणीये १) इ ण गाथा देखतां तो तुमारी सरधा अनार्य दीसेछे ते नणी तुमारी सरधारे लेखे तो साध साधवीरो माहो मांहि यतन करवो नही पिण जोवो ठाणांग ५ में ठां णे ५ कारणे करी साधू साधवीनें ग्रहतो थको नग वंतनी आज्ञा उलंघे नही पशूपंखी साधवीने हणतो होवे तो ते पासेथी पकड़िनें छोडावे १ विषम ठाम पडती होयतो पकडी राखे २ कादवमा खुचतां तथा लपसता थकां राखे ३ नावामें चढतां उतरता संबा हीराखें ४ सनीपात तथा झोलो तथा देव धिष्टत सरी र तेणे उन्मादपांमी मूरछापामी तथा आहारादि पचख्या संथारो करयो पछे सरीरकी लामणापामे प डती होयतो ग्रही राखे ५ तो देखो इहां साधवीनें पकडीने छुडावतो साधूनें छुडावानो स्युं दोष बले ५ में ठाणें साधू साधवीए कारण पडया एक थानकमें रहेतो आज्ञा उलंघे नही दीर्घ अटवीमां चाल्या ति

हां कार्य विसेसे भेला रहे १ साधु साधवी बसतीमां आव्या तिणमां एक थालक पांम्यां अने एके न पां म्यो ते भेला रहे २ नाग कुमारादिकनें स्थानकेरही साधवी तेहनी रक्षा निमित्तें भेलारहे ३ चोर वसत्रा दिक चोरवा वांछे आरजाना तेहना प्रजतन काजे भेलारहे ४ जुवान पुरुष साधवीनी वांछा करतो जा णी साधवीना सिलादिक ब्रत राखवा निमिते भेला रहे ५ तो जोवो साधु साधवी आपसमें इसा इसा जावता करता कह्याछे तो भगवंत गजसुकमाल ऊ परें जावतो किसो नही करे पिण गजसुकमालनें तो मोक्षनो उपाय बतायोछे ६८तथा केईएक इम कहे छे जे साध साधवीनें काढे ते संभोग एकछे तिणासु काढेछे ते उत्तर नेमनाथजीरे गजसुकमाल संभोगीछे के असंभोगीछे ते कहो बले तुम कहोगे (श्री बीरजिणं द बाईसमा, जिन कलपी मोटा अणगाररे ॥ ज्याने दे वता मनुष तिर्जंच, ए उपसर्ग उपन्या अपाररे॥१॥मो० अनार्ज लोक पिण वीरनें, दुःख दीधा अनेक परका ररे॥ अनार्य भोमीके मनुष्यनें, श्वानादिक दीधालाररे मो० ॥२॥देवता मनमें जाणीयो, यारे उदे आयादीसे करमरे॥अणुकंपा आणीवीचे पड्या, श्री जिन भाष्या नही धर्मरे मो०॥ ३ ॥)चोसठ इंद्र मिलि आवीया, दिख्यारे दिन भेला होयरे॥जद कष्ट पड्यो भगवंतने, जद आफो न आयो कोयरे ॥४॥मो०) ए ४गाथा तु

मारी देखतां तुमे दयाहीणदीसोछो अने ऐसी २खोटी खोटी जोझांकरकर लोकांनां हिया दयारहित करोछो पिण इण लेखेतो तुम बिहार करता मोटी अटवीमें पड्या मारग भूला छता घणा दुःख संकट पावोछो तिहां कोईक पुरुष तुमनें मारगमें घाले तो तुमारे लेखे उणनें पाप लागे १ वले तुम विहार करतां कोईक ग्रहस्थे कह्यो अमुकडे गेले सिंहनो डरछे तथा चोरांनो डरछे तथा मारग विषमछे तथा कांटा घणाछे सो तुमे उण मारग जावोमती इम बरज्योतो तुमारे लेखे उण तुमारे ऊपरे मोह अनुकंपा कीधी तिणसूं पाप लाग्यो तो थें भगवंतनें बुडावेतो पाप लागे इम सरधोछो ते भणी तुमें अनार्यछो भगवंत तो पोतें काया बोसरावीछे अने करम बंध्याछे ते निरजरेछे (नथी अवे देइंता मोखो) इति बचनात् तुमे गोशालानें बचायानों भगवंतने पाप कहोछो ते घणुं अजुक्त बोलोछो ६९ तथा केईक अज्ञानी इम कहेछे जिन बचनोकी अपेक्षाके अजाणहै ते कहेछे जो एकही छोटा दोष लगावेतो साधु न कहीजे असाधु कहिजे भेषधारी कहिजे ऐसा कहितें घणा जणानों साधुसुं आसता उतारेछे तेहना उत्तर भगवती सतग २५ उदेसे ६।७ में छउं नियंठाने अधिकारे पुलाक १ पडिसेवणा कुसील २ ए २ मूल गुणको प्रतिसेवीहोय अनें उत्तर गुणको प्रतिसेवी होय मूल

गुणते ५ महा व्रतमें दोष लागे ते, उत्तर गुण जे १० विध पचखाणमां दोष लागे (अणागयं मइकंतं) इत्यादि वुकस मूलगुणको प्रतिसेवी नथी उत्तर गुणको प्रतिसेवी होय अने ऊपरला ३ नीयंठातो अप्रतिसेवी होय प्रथम ३ नियंठानें आराधिक बिराधिक दोनोंही कह्या बले पुलाकने तो सना बउत्ता कह्यो अनें प्रतिसेवी कह्यो ते तुमे जाणता नथी तथा तुमें कहोछो जे पासत्था भेलु आहार करे तो ४ मासी प्रायछित आवे एहना परमारथ नय अभिप्राय जाणता नथी अनें निरावलका ५ मध्ये सुभद्रा आर्ध्या अनेक बालक रमांडया अन्नादि खवाया पिण गुरणीनें उदीरीनें काढी नथी पोतें सयमेव नीकलीछे बले ज्ञाता १६ सुकुमालिका अनेक वार२ सरीर धोयो पिण गुरणी काढा नही प्रायछित वेइ कह्योछे पोतेंहीज न्यारी हुईछे बली दुसमीकालक अध्येन ६ (दस अठय ठाणाइं जायं बालो बरज्झइ तत्थ अनयरे ठाणे निग्गंथाताउनस्सई १) इहां इम कह्यो जे थानक सेव्यो तेथी भ्रष्ट हुवो पिण इम न कह्यो जे साधपणाथी भ्रष्ट हुओ जिम एक मनुष्यनो एक देस छेदाणो ते देसथी भ्रष्ट कहिये पिण सर्वथी भ्रष्ट न कहिये इहां देसथी भ्रष्ट होय तेहने पहिला ७ प्रायछित कह्यो अनें सर्वेथी भ्रष्ट होय तेहनें ३ प्रायछित ऊपरला कह्याछे (ताउ) सबदनो निर

णय करजो दसवी कालक अध्येन दूसरे गाथा ४ (इच्चेयिताउ विणय जरागं) बले घणा ठामें (ताउ) देवलोगाउ [आउखयणं] इत्यादि [ताउ] शब्द तेहथकी भ्रष्ट जाणवो तथा श्री जिन मारगमा व्यव हार प्रधान कह्यो ते सूत्र साखें कहेछे नरथें दिक्षा लीधां पछे भेष पालट्यो तो कांइ केवलज्ञान उपजा पछे मोक्ष तो न अटकती पिण बिबहार राखवा मां टे ग्रहस्तनो भेष उतारयो १ युगलीयां भाई बहन भोगकरे ते मरीनें देवलोक जायछे ते काम आज कोई करेतो महा अनार्य कहवाय व्यवहार मारग लोप्या माटें जीवहिंस्याती सरीखीछे पिण लोक वि रुद्ध माटे ए कामतो महा दूषण कह्यो २ प्रभूजाण ताहजे २ साधूनें मारस्यो तो पिण व्यवहार राखवा मांटे बरज्योछे ३ श्रावग आरंभ परिग्रहमा बेठोछे पि ण चोराई वस्तु न लेवी कही बिरुध माटें लोक लज नीक मांटें ४ बीर जाणता तो हता माहिरा रोगनी स्थिति पाकीछे पिण बिबहार राखवा तथा उषधना उपगार सारु जे २ उषध कीधो ५ साधू बरसातमें थानक गवेखे पिण एकली स्त्रीना घरमां ऊभो न र हे ६ मारगमें चालता हरीकाय ऊपर पगलागे पिण लोक व्यवहारें स्त्रीनो संघटो न करे ७ राजा परमुख मरणनी आसिझाई कही ते पिण लोक विरुद्ध माटे८ केवली तो रात्रेदिन सरीखो देखेंछे पिण लोक व्यव

हार माटे रात्रे न चाले ९ मास अनें चोमास उप्रंत साधू एक ग्रामें रहे नहीं स्नेह बंधनना भयथी पिण रहनेमी राजमतीनें देखी क्षणमात्रमें डिग्या पिण सा धू जघनतो ७० दिनको चोमासो करेहीज १० सत्तु कारमा सो जणानो आहार नीपनो ते माथी १ सेर आहार न ल्येवें अनें घरमां १० जणा निमितें आ हार थयो तेमांथी सेर आहार लेवें सत्तुकारनो आ हार लेनां लोकहेलें अने जिन मारगनी लघुतालागे ते माटें न लेवे ११ केवलीनें आहार सूझतानी वुद्धे असूझतो आणीदेतो नहीकरे अणें छदमसत सूझता नी बुद्धे असूझतो खावे पीवे १२ हिवे पहिलो आरो जस्ये बीजो आरो बेसस्ये तद सरब हुंडक मिली री त बंधसे सूत्र पाठे जे आज पछे मंसनु आहार करे तेहनी छाया पिण बूरजवी एहवी आर्यरीत व्यवहार बंधास्ये पछे प्रभूनों जन्मथास्ये १३ बले व्यवहारे अशुध्रछे तिहां सुधी उत्तम पुरुषनो जन्म पिण न थाय १४ बरसातमें गुरुने बाधा ऊपनी एक सिष्य हूं तो न प्रठू हिंस्यालागे अने बीजो सिष्य परठवे ए ए मां व्यवहार सुधकुण अने अराधिक कुंण १५ मल्लीना थ स्वामी अवेदी हुंता पिण रात्रे आरज्यामें रहित्ता १६ साधु चारित्रथी जोग भागो छे काहले विहाणो गृहस्त थास्ये एहवोछे पिण ते भेलो आहार करेछे अनें ग्रहस्तछे पिण भाव चारित्र आयोछे तो पिण

भेलो आहार करे नही भेषन पहिरयो ते माटें १७ सुकमालका साधवी सरीर पाउसियाथई पिण गुर णी उदीरीने न्यारी न करी व्यबहारमां हती ते माटे पोतानें मेलें जुदी थईछे १८ इत्यादिक व्यबहारमां बोल घणांछे ते सूत्रथी जाणवा प्रश्न ७० हिवे कोई एक मूढमती इम कहेछे जे परने हणवा नही हणावे नही हणता अणुमोदे नही ते दयाछे पिण मारता पासेथी छुडावे तो पापलागे उणरो जीतव बांछयो उ णरी सरागता आई अनें छउं कायरो शस्त्र तीखो करयो अनें भगवंततो रागद्वेष करमारा बीज कह्या छे ते भणी मारताने बंचावे अने बंचावीनें धरम जा णें तां तेहने १८ पापलागे एहवी परूपणा करीने लो कानाहीया दया रहित करेछे तेहनी साख प्रथमतो साधू ऊपरे नसीतनी देवेछे ॥ उदेसे १२ मे (जेभि क्खु कोलुण वम्भियाए अनयरे तस्स प्पाणजाय) इ त्यादि (जाव बंधइ बंधंतंवा साइजइ ॥ जे भिक्खुर मुयइमुवंतंवा साइजइ) जोवो (कोलुण) कहतां अनुकंपा निमिते त्रस जीवने बांधे तथा खोलता प्रा यछित्त आवे इम कहेछे ॥ ते उत्तर ॥ इहां कोलुण स छदते आजीविका निमिते जाणवो पिण इहां अणुकं पानो अर्थ नही जाणवा ते साख दुःख बिपाक सूत्र मध्ये पाहिला अध्येने गोतम स्वामी गोचरी गया अ ने भिख्यारीने दीठो ते भिख्यारी (कुलण विडियाए)

भिक्षा मागेछे ते आजीविकाने अर्थे मागेछे पिण अणुकंपा निमते स्युं भिक्षा मागसी ७१ बले तुम क ह्योछो जे जिणरिखीये अणुकंपा करी रेणा देवीके सा हमो जोयो तो अनुंकंपाया खोटीछे तेहनो उत्तर पा ठमेतो अनुकंपानो नामनथी ज्ञाता अध्येन ९ जि णरिखीयाने रेणा देवी (कलुण) वचन कह्याछे ते बिसयना दयामणा वचन सुणीने रेणा देवीना अनु कुल उपसर्ग थकी जिणरखीयानो (समुप्पन्न कलु णभावे) इहां [कलुण] सब्दे विषय विकार मोह भाव ऊपनो ॥ वली तेहनुं रहस्य इणपाठ आगे से लग जक्ष पूठथी नाख्या पछे तिवारे रेणादेवी आय ने निसंसाकहता निरुष्टस ते दया रहित इण पदमें तो दयारूप अनुकंपा जाणवी अनेंन (कलुणा) ते करुणा मोहरहित जाणवी ए बे पद जुदा कह्या पिण इहां (कलुण) शब्दे तो घणी ठामेछे उत्राध्येन ३२ गाथा १०३ में [कारुणदीने हीरमे वइस] इहां [कारुण] शब्द ते विषई जीव दयामणा दीसे इ हा [कारुण] नों अर्थ दयामणानोछे तथा सुयग डांग १ अध्येन उदेसे २ गाथा १७ मी [जइकालु णियाकासिया जइरोयं तिय पुत कारणा दवियं भि क्खुसमुठियं नोल भंतिणसंतावित्तय १] इहा पिण (कलुण) शब्द मोहनो कह्योछे वले एहज सूत्रें अ ध्येन ४ उदेसे १ गाथा ७ मी पद २ (कलुणा वि

णिय मुवग सित्ताणं) इहां पिण स्त्री मुः साधु समी
पे आवीने कः करुणा विलाप बिनय बचनें करी ती
जा पदमें कह्यो ते स्नेह बचन बोले इहां पिण (क
लुण) शब्दे मोहज जाणवो तथा एहिज सूत्रे अ
ध्येन ५ में उदेसे १ गाथा ७ मी [तेडज्जमाणाकलु
णंथणंती] इहां (कलुण) शब्द रुदन आक्रंदनोछे
तथा इणीज उदेसे गाथा १२ मी (सयायकम्मं पु
ण घम्मठाणं) इहां (कलुण) शब्द दयामणा ताप
स्थानकनोछे बले इहां हीज गाथा २५ मी पद २
[अट्टस्सरेते कलुणं रसंते) इहां (कलुण] सब्द क
रुणा प्रलाप करवानोछे तथा इणें अध्येंने उदेसे २
गाथा ४ पद ३ (तेडज्जमाणा कलुणंथणंति) इहां क
लुण शब्द करुणा स्वररुदननोछें तथा इणेज उदेसें
गाथा ८ पद २ (जंसोयतताकलुणं थणंति) इहां
कलुण शब्द दीन स्वरनोछे बले गाथा १० पद ३
(ते सुलविद्धा कलुणंथणंति) इहां पिण कलुण श
ब्द शोजनोछे बले गाथा १२ मी पद २ [बुइतिते
कलुणं रसंतं] इहां कलुण शब्द पुकारनोछे इत्यादि
(कलुण) शब्द मोहरुदननो दीसेछे बले प्रश्न व्या
करणमें प्रथम संबर द्वारमध्ये पहिला महा ब्रतनी ४
थी भावना मध्ये साधू गोचरी करतो थको [अदि
णे अकलुणो] अः कहता दीन पणा रहित अः द
यामणारहित गबेखणाकरे इत्यादि (कलुण) दया

दयामणानो दीसेछे ते माटें नसीत सूत्रमा कोलूण शब्द कह्यो छे ते आजीविकानिमिते तथा मोहनें निमत्तेज जाणवो अने त्रस शब्दमा ग्वादिक चोपदादिक जाणवा तेहनें मोहनिमतें ग्रहस्तादिक ऊपर मोह ते राखे ए खुलाथका घासादि जाडकरस्ये तथा चोपदादिक ऊपरे मोह ए बांध्या नूस्यामरेछे छोडां घासादिकचरस्ये इम जाणी बुटा बांधे बांध्यो छोमे तो साधूने प्रायछित आवे पिण इहांतो निर्युक्तीमा बले टब्बामालिस्योजछे जे अगनादि पलेवडो लागा मूकेतो दोष नथी पिण पाठमेंतो अगननो नामज नथी तो तुमे लायमासुं काढता दोष कहोछो ते सूत्र देखाडो बले जिणरखीयानी अनुकंपा कहोछो तें घणुं खोटोछे बले अणुजोगद्वारमां कलुणरस कह्योछे ते जिणरखीयाने उपनोछे ७२ बले दया उथापक कहेछे उपासकदसामां चूलणीपियाभद्रा मातानें बंचाई अनें सकडालते अगिमित्ता भारजाने बचाई तेहने पापलाग्यो तेहनुंव्रत भागो याखाख देखाईने लोगांनें भर्म पाडेछे तेहनुं उत्तर उपासग दसा सूत्रें अध्येन ३ चूलणी पियानें आधी रात्रसमे देवता कह्यो कतो तुं धरम छोडदे नहीतर थारी मातानें थारां मूंढा आगे ल्याई मारस्युं जद चुलणी पिया जाण्यो ए कोई अनार्य दीसेछे तो हूं पकडलुं जद ऊठीने चुलणी पिया देवताने पकडवा लाग्यो

जद देवता तो परोगयो अनें थांनो आपरे हाथे आ यो जद थांनानें पकडीनें मोटे २ शब्दे करीने को लाहल शब्दकी जद नद्रामाताने आवीनें कह्यो अ नें सिकमालने आगीमित्ता आय कह्यो (नगवए न गपोसह नगानियमे) कह्यो ते स्यां नणी कह्यो इ हांतो पोसहसालामां पढमा आदरीनें पोसामे बैठाछे सावजना पचखाए कीधाछे अनें रात्रे मोटे शब्दकरी बोलवो नही अने बोल्याछे बले पोसामे (मम्मंमाया इ मम्मं नारिया) इम जाणवो नही ते साख नगव ती सतक ८ में उदेसे ५ में श्रावक सामाइक कीधा तिहां (तस्सणं एवं नवईनोमेवमाया नोमेपिया नो मेनाया णोमे नगनी णोमेनज्जा णोमेपुत्ता णोमेंधुया णोमे सुणहा पेज्ज बंधणे पुणसे अवोछिणे नवई) इ म कह्यां माटें सामाइकमे इमें न जाणवो तो पोसा मा पढमामां किम जाणवो अने यांतो जाएयो (मम्मं माया) सिकडाल जाएयो [ममंनारिया] ते माटें प्राय छित आठ्यो लीधो पिण दयाना परिणाम आणीछुडा वेतो पोसह न नांगे७३ बले बादीकहे अर्णक श्रावकने समुद्रमा जातां देवता डिगावा आठ्यो तिण कह्यो हे अर्णककैतो तुं धरम मूकदे नहीतर थारी जिहाज समुद्रमें डबोयसूं जद अर्णक श्रावक धरम मूक्यो नही जो जीव बचाया धरम होयतो अर्णक धर्म क्यूं छोडयो नही ते उत्तर अरे मूढ तुमारी घटमां ऐसी २

कुबुद्धी किहांथी उपजेछे ॥ आपणो धरम छोडीने प
रकाने किम बचावसी अने इण लेखेतो थां उजाडमें
कोई अनार्य पुरुस मिल्या तिणा तुमनें कह्योके तो
तुम थारो भेष मूंकियो नहीतर थाने सगलानें मार
स्यूं तो कहो थें धरम मूंकिसो के नही १ तथा कोई
क गृहस्त घृतनो नेमलीधो पिण नीलोत्तरीनो नेम
नही लीधो जद साधूजन उपदेस दीधो तिवारे गृह
स्थ बोल्यो माहिरे तो घी छूटोछे पिण हरीसुं काम
चलेछे अने अबे घृतनो नेम भांजसुं अने हरीनोने
म लेस्यूं तो कहो ए काम होयके नही २ तथा अवि
ग्रहो मूकीने बियावच पिण करे नही ३ तथा बे सा
धू हता तिणां काउसग कीधा प्रमाण सहित एतलें
गुरु आया जद ध्यान मूकी अधूरोने सेवा सांचवे
नही ४ तथा कोई स्त्री साधुनें कहिसी हे साधू तुं मु
झनें भोगवो नही तो हूं मरिस्यूं तो कहो आपणो ध
र्म किम मूकसे ५ तथा कोई मांसा आहारी धरमी
पुरसने कहिसे जो तुं मांस खावे तो मूंकुं नहीतर मा
रस्यूं तो कहो आपणो धरम किम मूंकस्ये ६ तथा
कोई बाणीयाने राजा कहिस्ये जे तुं अनन्त खावे तो
राजदेउं तो कहो अनन्त किम खावस्ये ७ तथा सा
धूने कोई गृहस्थ आधी रात्रने कहिस्ये थें वखांण
सोठे २ शब्द करीने सुणाओतो थारो श्रावक होस्युं
॥ तो कहो साधूनें आधीरात्रिये वखाण किम सुणाव

स्ये ८ तथा साधूनें कोई गृहस्त कहिस्ये थें मुझनें आहार देओतो हूं थारे समीपे साधुपणो लेस्युं तो कहो साधू गृहस्थनें आहार किम देस्ये ९ इत्यादिक युक्तिघणीछे तिम अर्णक श्रावक आपरो धरम मेलीने पैलाने किम बचावसी १० तथा देवता पिण इम न कह्यो जे तुं धरम नही छोडसी तो पिण जहाजरा सर्व मनुष्याने रुबोयसुं ज्यारो पाप तोनें लागसी अनें देवतातो इम कह्योछे तुं मरिस्ये तो धर्म छोडदे इति रहस्य तुमे अर्णक श्रावकनी युक्त कहो ते घणी अयुक्ति कहोछो प्रश्न ७४ तथा केतलायेक दुष्टी कहेछे जो अनुकंपा करयां धर्म होयतो नमीराज रिखीनें इंद्र कह्यो थारी नगरी धन इस्त्री पुत्र घोडा हाथी लोक बलेछे ते साहमो जोवो तिवारे नमीराजा साहमा जोयो नही जो अनुकंपामा लाभ जाणता तो साहमुं क्यों नही जोयो ते उत्तर इहां इंद्रेतो परिक्षा कीधीछे मोहनी करम उपसम्या नही उपसम्या माटे इहां अनुकंपानो नामज नहीछे हे स्वामी तुमारो अंतेवर बलेछे साहमोजोवो इम मोहनी उपजावीछे तिवारे स्वामी बोल्या मेंतो मुंक्याछे पिण इंद्र इम नथी कह्यो जो थारी आख्यामे इमृतछे साहमो जोवो तो बलतारहे अने जो इम कह्या हुंतातो नमीराज कहता अहो ब्राह्मण मुझने या अनुकंपा करवी कलपे नही तथा कलपे युंही नही कह्यो जो थें ए प्रश्न अनुकंपा

मां ठरावसो तो आगले प्रश्नमे महलनो कोटनो चो रनो वैरीनो भंडारनो एमां केही अनुकंपा घालस्यो ए तो सर्व प्रश्न परिख्यानाछे नहीतर इंद्रतो समदृष्टीछे इम किम कहिस्ये तुं साधपणो मूकीने प छे लीजे गढकोट महिल कराविनें चोराने बस करी नें बैरयाने बस करीनें यज्ञ करीने कोठार भंडार व धारीने तुं जाजे हे क्षत्री राज बले थें यो भेष मूकी नें तापस पणो आदरो इसा बचन साधूने सम द्रिष्टी किम कहिस्ये जो जाणज्यो एतो परिक्षाहीज कीधीछे जोईये नमीरायरिखीने समकित मोहनी चा रित्र मोहनीनें बिषय कषाय उपसम्याछे के नथी उ पसम्या तुमे नमीरायनो नाम लेईने पोतानी आत्मा भ्रबोवोछो अने बीजाने पिण भ्रबोवोछो तो तुमे दया उथापक दीसोछो प्रश्न ७५ केई एक दया उथापक इम कहेछे जे साधूनें इम न कहिवो जीवांने मती मा रो तेहनी साख देवेछे सुयगडांग अध्येन२१ में (अ सेसंअखयंचावि सवे दुक्के तिवापुणो वझेपाणा न व झंति इति वायं न निसरे१) तेहनुं उत्तर अरे दिवस ना भूलाउ इहांतो एकांत पक्षें ना कहीछे एकांत लो क शाश्वतोछे एकांत अशाश्वतोछे इम न कहिवो ए लोक सर्व सुखीछे ए लोक सर्व दुःखीछे इम न कहि वो ए चोरछे परदारकछे ए नाहरछे एहनें मारो तथा मतिमारो इम पिण न कहिवो जो मारो कहेतो तेहना

प्रांण जायछे अनें मतमारो इम पिण कहेतो प्रत्यक्ष लोक विरुद्धछे ए चोर मुंक्युं थयो वले चोर परमुख अकारजकरे तिवारे लोक इम कहे जेहवे ए चोर चोरी करेछे ते साधूनों उपगारछे इम चोरजारनुं पक्षी ठहिरयांवे ते माटे साधूजी मारो मतिमारो काई न कहिवो पिण स्वभावे सहि जे कोई आवीने पूछे स्वामी चोर मारयानो स्यूं फलछे तिवारे साधू हिंस्या ना फल कहिदेखाडे चोर छोड़वानो फल पूछेतो तेहवा फल कहि देखाडे वले तुमारे मते चोर मारे अने उगारे एवे काम बरोबर छतो साधूनें कोई आवीनें कहे स्वामी मुझनें चोर मारवानो पचखाण करावो तो साधू सुखें करावे हिवे कोई आवीनें कहे सामी मुझनें चोर मारतां उगारवानो पचखाण करावो तो साधू न करावे जो बेहुंबाते बरोबर सैण अवगुणछतो बेहुंना पचखाण क्यां नही करावे अने तुमें एक पक्ष खाचसो अनें निरत नही करस्यो तो सुयगडांग २१ में अध्येंन [आहाकडानि भुजंति अण मणस्स कम्मुणा उवलित्तेति जाणेज्जा अणुवलित्ते तिवापुणो १ एतेहिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो न वज्जति ततेहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारंतु जाण ए २) तो जोवो इण गाथामे कह्यो जे साधु आधा करमी आहार खावेते करमासुं लिपावे अथवा आधा करमी आहार खायासुं करमांथी न लिपावे इम बे भाषा बोलवी बरजीछे के

नही पिण यां गाथामें तो २ आपा दोनोइ नही बोल
वी कही ते रहेस्यछे साधू सुझतानी बुद्धें असूझतो
खायो सूझतानी बुद्धें करी असूझतो खायो तो कर्मो
सु नही लिपावे तथा कारणविसेषे आधा करमी आ
हार खायां निज आत्मा निंदतां करमांसूं न लिपावे
इम अरथ करवो तिम (बझेपाणा न बझंति) एह
नो अर्थ पिण इम करवो जे चोरादिकने पकड्यां ले
जायछे तेहने बीचमे पडी इम न कहवो जे तूं चोर
ने छोड इम कहेतो साधूनी संक्या ऊपजे ते भणी न
कहिवो तथा ठाकुर चाकरने मारेछे बाप पुत्रने मारे
छे भरतार स्त्रीने मारेछे राजा प्रमुख नाहरकी सिकार
खेलता जायछे इत्यादिकने बीचमे पडी इम न कह
वो जे एहने मतिमारो इति रहस्य [बधे पाणा]
ते प्राणीनो बध करो इमतो कोइने न कहिवो अने
(न बधति) अने [माहणो] ए २ स्युं फेरनथी
सूयगडांग अध्येन १७ साधूनें १२ नाम कह्या ते
मां [महाण तिवा] इसो नाम कह्योछे ते स्या भ
णी (महाणो) मतहणो किणही जीवने (नवधति)
वधमा हणवामां स्यूं फेरछे कले ए गाथानो अर्थ एम
आसेछे ए लोक सर्व शाश्वतोछे ए लोक सर्व अशाश्व
तोछे ए लोक सर्व सुखीछे ए लोक सर्व दुःखीछे ए
लोक सर्व प्राणीनो वध करेछे ए लोक सर्व प्राणीनो
वध नही करेछे इसावचन साधूने बोलवा नही ए

कांत बचन कहेतो प्रत्यपक्षी टलजाय जो सर्व लो
क प्राणीनो बध करेछे इम कहेतो संयतीको बिछेद
होय अने सर्व लोक प्रांणीको बध नही करेछे इम
कहेतो असंजतीको बिछेद हो जाय ते भणी एकांत
बचन बोलवा नही प्रश्न ७६ तथा केई एक दयाही
ण कहेछे समुद्रपालजी महिलामें बेठाथकां चोरने
मारवा लेजाता देखी वैराग भाव ऊपन्यो तिणे कह्यो
(अहो असुहाणं कम्माणं) इत्यादि कही मातापै
अज्ञा मांगवागया पिण चोरनेंतो नही छुडायो जो ध
रम हावेतो किम नही छुडायो तेहनो उत्तर उत्तराध्ये
न १९ में मृगा पुत्र महिला बैठोथको साधूने देखी
जाती समरण ज्ञान पाम्यो जद बैराग भाव ऊपन्यो
मातापै गयो पिण साधूनें बंदना करवा नही गयो
तो थारे लेखें साधूने बंदणा करता पाप लागतो दी
सेछे पिण इम जाणजो मृगा पुत्र अने समुद्रपाल ए
बेऊं बैराग पाम्या संजमरी आज्ञालेता विलंब नही
करे ते भणी समुद्रपाल चोरने नही मुकाव्यो पिण
चोरने नही मारेतो बमो लाभ जाणेछे तथा बाल १
श्रावक बोल्यो हो साधूजी आप कहोतो पोसो करूं
आप कहो तो दिख्यालेऊं जद साधूजी दिख्या देवे
पिण जेज निमित्तें पोसो नही करावे तो जोज पो
सामें पापतो नहीछे संजमरी जेज नही करावे तिम
दृष्टांत समुद्रपाल ऊपरे जाणज्यो ७७ तथा केतला

इक इम कहेछे तुमें अणुकंपाकीधा धर्म होयतो नेम नाथ स्वामीनी अतिसयथी सो सो कोसमें देवतारो उपद्रव्य न होतो जदे देवता द्वारामतीनें प्रजाली ज द नेमनाथजी द्वारका बचावाने आया क्यूं नही तो जाणजो अनुंकंपा कीधां धरम नही इम कहेछे तेहनो उत्तर अहो माठी मतिना धरणहार एहवीर अयुक्ति करीने लोकाने दयाहीण किम करोछो भगवंततो के वल ज्ञानमे जठेनें गुण देख्यो होसी तिण देसमे वि हार करयो होसी तिहांनी क्षेत्र फरसणाछे ते टाली किम टले बली निश्चै नयमे होणहार किम टले केव ल ग्यानी ज्ञानमे दीठाछे ते भाव होयछे भगवति सतक १ उदेसे १ (जंजहा भगवया दिठं तंततहा परिणमिस्सति) इति बचनात् जो थे अणहोति यु क्त मेलोछो तो ए लेखे रहनेमी राजमतीनो संयोग गुफामे मिलवो अने रहनेमिनो डिगवो नेमनाथ के वली जाणता छां राजमती आया पहिली साधांमें सा मामेली जितायां नही तो तुमारे लेखें वानें फिगता राखवामें धर्म नथी पिण तुमनें मोहीनीनें उदे सम क काई नथी तो जाणजो द्वारका नगरिनो दाहदेतां बरजेतो घणो धर्मछे पिण भगवंत तो जिण देसमा जाता गुणदीठो तिण देसमें बिहार कीधोछे प्रश्न७८ तथा केतालाइक दुष्ट कहछे जीवनें उगारयानो ला भ होय तो चेभाकोणकनी लडाई थई तिणमें १ को

छ ८० लाख मनुष्य मूवाछे वले अनेक जीवमूवाछे जो भगवंत चेडावौणकने वरजता हुंता तो इतरा जीव वचता पिण वरजां धरम नथी ते उत्तर अरे अनुकंपाना द्वेषीयो भगवती सतग ९ उदेसे ३२ ज माली आवीने भगवंतने कह्यो जे हुं केवली थयो तु म पासेंथी विहार कीओहतो अने केवली थको इहां हुं आव्योछु इहां भगवंतने जमालीनें षिष्ट क्यां न कीधो अने गोशालो आव्यो तिवारे भला भला उ त्तर प्रश्न कहीने षिष्ट कीधो तो स्युं इहां लाभ न होयतो तथा दसाश्रुत खंधमां पोताना साधू साध वीए नियाणा करया हता तेहनें प्रायछित देई शुद्ध करया वले महासतकनें प्रायछित गोतमने मेली दि वराव्यो इम शुद्ध करया अने अंतगढमां नेमनाथ स्वामीयें ऐमंता अणगारने निमत परूपता शुद्ध क्यां न करयो तथा निरावलिका ५ मां सोमल ब्रा म्हणने श्रावगने भिष्ट हुंतो देख आप आया क्यों नही वले ग्याता १३ मे नंदण मणीयार श्रावक पं णाथी भ्रष्ट हुता भगवंत समझावणे आया क्यूं नहीं वले कुंडरीकने शुद्ध करवामां सामान्य केवली आया क्युं नही भला एमां तो तुमारे लेखे कोईनें असंजम जीतव्य नही वधतो हतो कोईने अवगुण पिण न ही हुंतो साहमो गुण हतो आराधिकहो तो ए काम क्यां न कीधो पिण मूढ मती इम नही विचारे भावी

पदार्थनें कोण मेट सके तथा जगवंततो चंपा नगरी
आवता गुणदीठो १ राणी काली सुकाली आदिदे
दिक्षा लीधी ते जणी जगवंत चंपा नगरी पधारया
छे तथा उववाई सूत्रमां कोणक आदि देईनें सर्व पर्ख
दामां जगवंत उपदेस दीधोतो वहीज छते कायनें हिं
स्या करतां घणादुख पावेछे इत्यादिक घणो उपदेस
देई राख्योछे पिण कोणक क्रोधनें वसे संग्राम कीधो
छे तो जगवंत स्यूं करे पिण उण संग्रामनें छोमैतो ज
गवंत लाज घणो जाणेछे प्रश्न ७१ तथा केई एक
अज्ञानी इम कहेछे जे श्रेणक राजा राजग्रही
मां अमार पडहो बजायो जीवाहिंस्या टलाई तेमां ए
कंत पापछे एतो राजानी नीतिछे पिण धर्म नथी ते
उत्तर अरे बाल अज्ञानी राजनीत होयतो राजनीत
ना पालणहारा जेतला राजाछे तेतला सर्वनें राजनी
त एहवी जोईये राजनीत तो सूयगडांग १८ में अ
ध्येन अधर्म पक्ष वखाणो तिहां वर्णव्योछे तथा उववा
ई सूत्रे कोंणकराजानी राजनीत बखाणी जंबुद्वीप प
न्नतीये जरतेश्वरनी राजनीते बखाणी (तथणं चं
पाए नयरीए कुणिय नामं राया परिवसई महया हि
मवंत महंत मलय मंदर महिंदसारे अच्चंत विसुद्ध
दीहराय कुलवंसे सुप्प सुते निरंतर राय लक्खण वि
रायथं गमंगे बहुजण बहुमाण पुज्जिय सवगुण समी
द्ध खत्तते पपमुईए मुद्धाहि सिते माउ पियुसुजाय द

या पत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुसिंदे जिणवयपिया जणवयपाले जणवय पूरोहिहसेउकरे केउकेरेणपवरे पुरिसबरे पुरिससिंहे पुरिस बग्घो पुरिसासीविस पुरिसबरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थीए अट्ट दित्ते वित्ते विछिन्ने विपुल भवण सयणासण जाण वाहणाइएणं बहुधन बहुजाय रूवरय आओग पओग संप्यउत्ते विछिडिंय पउरभत्ते पाणे बाहू दासीदास गोमहिसगवेलगप्प भुय पडिपुण जंत कोठागारा वागारे बलवं दुबल पच्छामित्ते उहय कंटयं नहय कंटयं मलियकंटयं उधिय कंटयं अकंटयं उय सतु मिलियसतु उठियसतु निजियसतु पपगईय सतु ववगए दुभिक्ख मारीय भय विप्पमुकं खेमं सुभिक्खं पसंताडि बर रजप साहेमाणे विहराति) ए राजनीतना लक्षण कह्या तथा सूयगडांग १८ में घणो विस्तारछे पिण अमार पम्हो बजाव्यो ए कही राजनीति कही नथी राजनीत राज जमावे वैरिमारे संग्रामजयपावे एछे तथा ठाणांगे ३ ठाणे (तिविहा भता जोणी पंनता तंजहा सामदाम दंड भेद) बले रायप्रसेनीमां चित्त सारथीना गुण बखाण्या राजना कामचलावे तेहवा हता तेमांपिण अमार पडह बजाव्या नहीं कह्यो बले ज्ञातामां अभय कुमारना गुण वरणव्या तिहां पिण अमार पडहो फेरयो कह्यो नथी ८० बले वादी कहसी जो जिन मार्गमा पम्हो

फेरवानों जीव उगारवानो आचार होवेतो बीजा रा
जा क्युं नही फेरयो ते उतर दसाश्रुतखंधमां १ नि
हाणाना नांव कह्या १० में उदेसामां तिहां कह्या रा
जाश्रेणक गावमा नगरमां ढंढेरो फेरयो जे जे स्थान
क घरहाट बखार पर्वस्थानक धातुना ठाम सोनी
नी लुहारनी साला इत्यादिक सूत्रमां ठामना नाम
घणाछे ते थानकनी आज्ञा देरावी जे नाई जेहनें जा
यगा होवेते वीर प्रभूने साधूनें रहिवा आपजो हिवे
अन्य तीर्थी गृहस्तनो गवेष्यो स्थानक साधुनल्यै तो
इहां श्रेणक राजाई थानक आश्री ढंढेरो फेरयो ए का
म कोई बीजे राजाइ कीधो नथी पिण ए काम जिन
मार्गीनाके साधूना द्वेषी मिथ्यातीना बले अंबड श्रा
वक अनेक दोष टालेछे बीजा श्रावक नथी टालतो
तो स्युं अंबड श्रावक ए काम रूडो करयो बले कृ
ष्ण दिक्ष्यानी दलालीकरी बिजाराजा कोई नथी की
धी ते माटे कृष्ण दलाली करी ते रूडीके भुंडी इ
त्यादि जोवो तमे स्यानें कहोछो जे धर्म हीयतो बी
जाराजा अमार पडहोवनायो क्युं नही हिवे श्रेणकनें
स्युं फलथयो ते कहो ढंढेरोफेरयो अनें साधूने थान
कनी आज्ञा देवरावी एहना फल भलाके भुंडा ए क
रणीशुभके अशुभ ए करणी बोधमती हुंता ते दिव
सनीके जिन मारग पाम्या ते पछली ते कहो ॥उपास
कदसामां ८ में अध्येने (तत्तेणं रायगीहे नयरे अम

या कयाइं अमार घुठेया विहोत्था) इति बचनात् इहां राजा समदृष्टी माटें अमारि पडहो बजायोछे अ मारिसब्द (मह्वाणो २) सब्दमें मिलेछे अनें पड हो वजायोछे ते राजानो छांदोछे जिम सुरियाभ देव ता भगवंतनो दरसण करवा भणी चिंताव्यो जद घंटा बजाडी तिणसुं सर्व देवताने ठीकपडी तिम श्रेण कपडहवजायो जद राजग्रहीमा ठीकपडी अमारि श ब्द ते दयानोछे ६० नाम मध्ये प्रश्न व्याकरणें प्रथ म संबर द्वारमध्ये ॥ अनें तुम इम कहोछो जे राजा श्रेणकनें कोई कारण पड्योछे उछव महोछव आदेदे ई तिणसुं पडहो बजायोछे ते उत्तर अरे अज्ञानीयो मुखहीसुं उछव कारण कहोछो पिण सूत्रमे होय तो दे खाडो तथा तुमे जोभीछे॥गाथा॥श्रेणक पडहो वजावी यो, इतरीछेहो सूत्रमें वात ॥ कोई श्रेणकनें धरम कहे तिणनें लागे हो चोडें झूठ मिथ्यात ॥१॥इणमां तुम कह्यो श्रेणकनें धर्म कहे तिणनें झूठलागे अनें मि थ्यात पिण लागे तो जोवो ज्युंतो तुमारी बात तुम नेंहीज आवेछे माहरी मा अनें बांझ तिम तुमें पिण अमारि इसा नामनें पाप कहोछो तिण लेखे झूठ मि थ्यात दोनोहीज लागेछे प्रश्न व्याकरणमा प्रथम आ श्रव द्वारना ३० नाम कह्याछे तेमां (अमारि) ना मतो नहीछे अनें दयाना ६० नाम मध्यें (अमाघा) तो इसो नाम दयानोछे तो श्रेणक योहीज शब्द

फेरवानों जीव उगारवानो आचार होवेतो बीजा रा
जा क्युं नही फेरयो ते उत्तर दसाश्रुतखंधमां ९ नि
हाणाना भाव कह्या १० में उदेसामां तिहां कह्यो रा
जाश्रेणक गावमा नगरमां ढंढेरो फेरयो जे जे स्थान
क घरहाट बखार पर्वस्थानक धातुना ठाम सोनी
नी लुहारनी साला इत्यादिक सूत्रमां ठामना नाम
घणाछे ते थानकनी आज्ञा देरावी जे भाई जेहनें जा
यगा होवेते वीर प्रभूने साधूनें रहिवा आपजो हिवे
अन्य तीर्थी गृहस्तनो गवेष्यो स्थानक साधुनल्यै तो
इहां श्रेणक राजाई थानक आश्री ढंढेरो फेरयो ए का
म कोई बीजे राजाइ कीधो नथी पिण ए काम जिन
मार्गीनाके साधूना द्वेषी मिथ्यातीना बले अंबड श्रा
वक अनेक दोष टालेछे बीजा श्रावक नथी टालतो
तो स्युं अंबड श्रावक ए काम रूडो करयो बले कृ
ष्ण दिख्यानी दलालीकरी बिजाराजा कोई नथी की
धी ते माटे कृष्ण दलाली करी ते रूडीके भुंडी इ
त्यादि जोवो तमे स्यानें कहोछो जे धर्म हीयतो बी
जाराजा अमार पडहोवजायो क्युं नही हिवे श्रेणकनें
स्युं फलथयो ते कहो ढंढेरोफेरयो अनें साधूने थान
कनी आज्ञा देवरावी एहना फल भलाके भुंडा ए क
रणीशुभके अशुभ ए करणी बोधमती हुंता ते दिव
सनीके जिन मारग पाम्या ते पछली ते कहो ॥उपास
कदसामां ८ में अध्येने (ततेणं रायगीहे नयरे अम

या कयाइं अमार घुठेया विहोत्था) इति बचनात्
इहां राजा समद्दष्टी माटें अमारि पम्हो बजायोछे अ
मारिसब्द (मह्वाणो २) सब्दमें मिलेछे अनें पड
हो वजायोछे ते राजानो छंदोछे जिम सुरियाभ देव
ता भगवंतनो दरसण करवा भणी चिंताव्यो जद
घंटा बजाडी तिणसुं सर्व देवताने ठीकपम्हे तिम श्रेण
कपम्हवजायो जद राजग्रहीमा ठीकपडी अमारि श
ब्द ते दयानोछे ६० नाम मध्ये प्रश्न व्याकरणें प्रथ
म संबर द्वारमध्ये ॥ अनें तुम इम कहोछो जे राजा
श्रेणकनें कोई कारण पम्योछे उछव महोछव आदेदे
ई तिणसुं पडहो बजायोछे ते उत्तर अरे अज्ञानीयो
मुखहीसुं उछव कारण कहोछो पिण सूत्रमे होय तो दे
खाडो तथा तुमे जोमीछे॥गाथा॥श्रेणक पम्हो बजावी
यो, इतरीछेहो सूत्रमें वात ॥ कोई श्रेणकनें धरम कहे
तिणनें लागे हो चोडें झूठ मिथ्यात ॥१॥इणमां तुम
कह्यो श्रेणकनें धर्म कहे तिणनें झूठलागे अनें मि
थ्यात पिण लागे तो जोवो ज्युंतो तुमारी बात तुम
नेंहीज आवेछे माहरी मा अनें बांझ तिम तुमें पिण
अमारि इसा नामनें पाप कहोछो तिण लेखे झूठ मि
थ्यात दोनोहीज लागेछे प्रश्न व्याकरणमा प्रथम आ
श्रव द्वारना ३० नाम कह्याछे तेमां (अमारि) ना
मतो नहीछे अनेंदयाना ६० नाम मध्यें (अमाघा)
तो इसो नाम दयानोछे तो श्रेणक योहीज शब्द

करायोछे तथा तुमे श्रेणकनें तो कारण बतायो तो इ
ण लेखे आगे राजा श्रावक हुंता ज्यारां राजमें कसा
ई बाडा निसंक हुंतो थारे लेखे बले मारवाडना अधिप
ति बिजयसिंघजी राजा तिणें मारवाडमां घणी हिं
स्याटलाई तो बिजय सिंघजीरे स्युं कारणछे ते बि
चारी जोवो तथाबले उत्तराध्येन १३ में चित्तमुनी ब्र
ह्मदत्त चक्रीने कह्यो (जईतंसिजोगे चईउअसत्तो
अजाय कम्मायं करे हिएयं धम्मेहिं ठिसवपयाणु
कंपी तोहोहिसिदे बोइयो वियोवी ३२] हे राजा तुं
भोग छेडवा असमर्थछे तो आर्य करम करो हे रा
जन्-ग्रहस्तना धरमनें विषे रह्यो थको सर्व जी
वनी अनुकंपा कर दया पाल इम कह्यो तो जोवोनें
चक्रवर्तने श्रावक पणोतो आवे नही तो यानें आर्य
कर्म करवो कह्यो ते मांसादि परहरवो कह्यो तथा इ
सा बचन मुनीना सुणने कसाई खानो उठावतो ल
ज थावेके नही ते कहो पिण तुमेतो केहवाछे [ध
म्मपन्नवणाजासातं तुसंकंतिमुढगा] दया धरमनी
परूपणा करता संकोछे अने दया उथापकतानहीं
संकोछे पिण जे कोई सम्यग दृष्टीहिंसा करता बरजे
तेहनें घणो लाजछे ते साख सूयगडांग १ अध्येन ९
(जंछिन्नं नवतवं एसा अणानियंठिया) इति वचना
त ८२ केतलाएक दुष्ट कहेछे जे श्रावक जीवहणवाथी
निवर्त्योछे पिण श्रावकनें जीव उगारवो किहां कह्यो

छे ते उत्तर चित्तसारथी केसी कुमार प्रते कह्यो [ए वं भंते खलु अम्हं पएसिराया अधम्मिए जावसय स्स वियणं जण वयस्सनो सम्मंकरं भरं पवत्तेई तं जइणं देवाणुपिया पदेसिस्सरन्नो धम्मं माई खे ज्जा बहु गुणत्तरं खलुहोज्जा पदेसिस्सरन्नो तेसिणं बहूणा दुप्पय चउप्पय मिग्ग पसुपंखी सिरिसिवाणं घायताए बहत्ताए तंजईणं देवाणुप्पिया पदेसिस्स रनो धम्मं माईखेज्जा बहु गुणतरं खलहोज्जा तेसिंव हुणं समण माहणाणं भिक्खुआणं तंजईणं देवाणुप्पि या पदेसिस्सरनो धम्मं माईखेज्जा बहुगुणत्तरं हो ज्जा सयस्स विजणवयस्स) पछे केसी स्वामी धरम पांमवाना न पामवाना ४।४ ठाम कह्या इहां चितस्वा रथीए कह्यो हे स्वामी प्रदेसीनें धर्ममा समझोवोतो घणो गुणनीपजे दोपद चोपद जीवानें मारतो रहस्यै इहां समणनें माहणनें दुःख देतो रहस्ये पोताना दे सनें दंडकर जादा नही लेइ एहवो करो ए परजीव नें उगारवानों उपाय कस्यो ते किम कस्यो ते दोप द चोपद जीवाने वली हिंस्याकरे इमतो न जाणो पि ण इम जाणजो ए दुष्ट सद्द हणा चितसारथीनी नथी तिवारे ८३ वली कोई अग्यानी कहे जे एतो परजीवना गुण माटें नथी कह्यो चितसारथी इतो परदेसीना गुण खातिर कह्योछे ते उत्तर हे अज्ञानी यों जो प्रदेसीना गुणनी खातर कह्यो होवेतो (अ

करायोछे तथा तुमे श्रेणकनें तो कारण बतायो तो इ
ण लेखे आगे राजा श्रावक हुंता ज्यारां राजमें कसा
ई वाडा निसंक हुंतो थारे लेखें बले मारवाडना अधिप
ति विजयसिंघजी राजा तिणें मारवाडमां घणो हिं
स्याटलाई तो बिजय सिंघजीरे स्युं कारणछे ते बि
चारी जोवो तथाबले उत्तराध्येन १३ में चित्तमुनी ब्र
ह्मदत्त चक्रीने कह्यो (जई तंसिभोगे चईउअसत्तो
अजाय कम्मायं करे ह्विएयं धम्मेहिं ठिसवपयाणु
कंपी तोहोहिसिदे बोइयो वियोवी ३२] हे राजा तुं
भोग छेडवा असमर्थछे तो आर्य करम करो हे रा
जन्–ग्रहस्तना धरमनें विषे रह्यो थको सर्व जी
वनी अनुकंपा कर दया पाल इम कह्यो तो जोवोनें
चक्रवर्तनें श्रावक पणोतो आवे नही तो यानें आर्य
कर्म करवो कह्यो ते मांसादि परहरवो कह्यो तथा इ
सा बचन मुनीना सुणने कसाई खानो उठावतो ला
भ थावेके नहीं ते कहो पिण तुमेतो केहवाछो [ध
म्मपन्नवणाजासातं तुसंकंतिमुढगा] दया धरमनी
परूपणा करता संकोछो अने दया उथापकतानहीं
संकोछो पिण जे कोई सम्यग दृष्टीहिंसा करता बरजे
तेहनें घणो लाभछे ते साख सूयगडांग १ अध्येन ९
(जंछिन्नं नवतवं एसा अणानियंठिया) इति बचना
त् ८२ केतलाएक दुष्ट कहेछे जे श्रावक जीवहणवाथी
निवर्त्योछे पिण श्रावकनें जीव उगारवो किहां कह्यो

धम्मे धुवे णीतिए सासए समिच्चलोगं खेयन्ने पवे दिंति) इहां इम कह्यो सर्व प्राणीनें हणवा नही दुख देवा नही मारिवा नही भगवंत इम कह्योछे यही उपदेस साधुनोंछे ते माटे चितसारथी केसी अणगारनें कह्यो परदेसीनें समझावोतो घणा गुण नीपजस्यै ८४ बले बादी कहस्ये जीवाने स्युं गुण नीपजे गुणतो प्रदेसीनें होसी नहीमारे ते माटें ते उत्तर अहो दया उथापक थारे लेखें केसी कुमार उपदेस नही देता अनें चितसारथी परदेसीनें नही ल्यावतो तो केसी कुमारनें अने चितने स्युं दोष लागतो पिण जांणज्यो चितना परणाम एहवाछां एहजीवां दोपगा चोपगादी समण माहणादि अनें देसमां कोई ने दुःख नही होयतो बारु अनें परदेसी समझे तो बारु बले प्रश्न व्याकरणमां प्रथम संबर द्वारमध्ये पाठछे [इमंच सव जगजीवरक्खण दयाठयाए पावएणं भगतासुकहितां] इहां कह्यो ८४ लाख जीवा जोनिं तेहना राखवानें विषय कारण एहवी दया तेहने अर्थे भगवंत प्रवचन भला कह्योछे बले विचारी जोवो ८५ बले बादी कहेसी ए पाठतो पांचोई संबर द्वारमध्येछे तो स्यूं ग्रहस्तने परिग्रहनी रिख्या निमते सूत्र कह्याछे पिण कोई जीव नीवर्ते ते भणी कह्याछे इम कहेछे ते उत्तर अरे अविवेकीयो तुमें ऊपर निरत करोगे के नही इहांतो पाठमें फेर

धाम्मिए अधम्माणुए अधम्मथित्ते अधम्मखाति अ
धम्मजीवे अधम्मपलोइणे अधम्मपलज्जणे अधम्म
सीले समुदायारे अधमेणे चेव बित्तिकप्पमाणे बिहर
ती हणछिंद भिंदग तिग लोहिय पाणी चंडे रुद्दे खु
द्दे साहासिए उकंचण बंचण माया नियडे कूडूकव
मे साई संप्पयोग बहूलो दूसीले दुबए दुपडि आ
णंदे आसाहुं सबातो पाणांति बायते अप्पडी बिरए
जाव सबातो परिग्गहातो अप्पडि बिरए साबातो को
हतो जाव्रमिछा दंसण सल्लातो अप्पडि बिरय सबतो
न्हाणु मदण वण गंध विलेवण सद्दफारिसरस रूव
गंध मल्लालंकारातो अप्पडि बिरय सबतो सगरु रह
जाणयुग गिलिथिलीसिया सदमाणिया सयणासयण
जाणबाहण भोग भोयण पविरिथर बिहातो अप्पडि बि
रय) इत्यादि अनार्य कर्म करछे ते स्वामी तुमे सम
झावो जिम ये १८ पाप न सेवे एहवी आत्मानो क
ल्याण थाय एहवो करो इम कह्यो जोईये पिण इहां
तो ३ पाठ कह्या ते ३ उपगारना कह्याछे ते माटे सा
धूयें पिण परजीव उगारे तेहवो उपदेस देवेछे ते सा
ख सुयगडांग अध्येन १७ में (सेवेमिजा अतिता
जेय पडुप्पना जेयआगमिस्सा अरिहंता भगवंता
सबेते एवं माइखाति एवं भासंति एवं पन्नवेंति एवं
परुवेंति सबेपाणाजाव सबे समाण हंत्तवाण अशावेय
वा णपरिघेतवा णपरितावेयवा न उदवेयवा एवं स

धम्मिए अधम्माणुए अधम्मथित्ते अधम्मखाति अ धम्मजीवे अधम्मपलोइणे अधम्मपलज्जणे अधम्म सीले समुदायारे अधमेणे चेव वित्तिकप्पमाणे विहर ती हणछिंद भिंदग तिग लोहिय पाणी चंडे रुद्दे खु द्दे साहासिए उकंचण वंचण माया नियडे कूडूकव म्मे साई संपयोग बहूलो दूसीले दुवए दुपडि आ णंदे आसाहुं सवातो पाणांति वायते अप्पडी विरए जाव सवातो परिग्गहातो अप्पडि विरए सावातो को हतो जावमिच्छा दंसण सल्लातो अप्पडि विरय सवतो न्हाणु मद्दण वण गंध विलेवण सद्दफारिसरस रूव गंध मल्लालंकारातो अप्पडि विरय सवतो सगड रह जाणयुग गिलिथिलीसिया सदमाणिया सयणासयण जाणवाहण भोग भोयण पवितिथर विहातो अप्पडि वि रय) इत्यादि अनार्य कर्म करछे ते स्वामी तुमे सम झावो जिम ये १८ पाप न सेवे एहवी आत्मानो क ल्याण थाय एहवो करो इम कह्यो जोईये पिण इहां तो ३ पाठ कह्या ते ३ उपगारना कह्याछे ते माटे सा धूयें पिण परजीव उगारे ते‑वो उपदेस देवछे ते सा त्रो इसीयां सुयगडांग अध्येन १७ में (सेवेमिजा आतिता गाथा ३५ मी पदे २ आगामिस्सा अरिहंता भगवंता हां कुंथुवादिक प्राणीनी दे आगामिस्सा भासंति एवं पन्नवेंति एवं डे वले ठाणांगे ६ ठांणे पिणे भासंति एवं पन्नवेंति एवं ६ कायनी रिक्षा करछे तो साधूमाण हंतव्वाण अजावेय देसछे माहणो २ किणही जीवने न उदवेयव्वा एवं स माहणो २ जीवने

धम्मे धुवे णीतिए सासए समिच्चलोगं खेयन्ने पवे
दिंति) इहां इम कह्यो सर्व प्राणीनें हणवा नही दु
ख देवा नही मारिवा नही भगवंत इम कह्योछे एही
उपदेस साधुनोंछे ते माटे चितसारथी केसी अणगा
रनें कह्यो परदेसीनें समझावोतो घणा गुण नीपज
स्यै ८४ बले बादी कहस्ये जीवाने स्युं गुण नीपजे
गुणतो प्रदेसीनें होसी नहीमारे ते माटे ते उत्तर अ
हो दया उथापक थारे लेखें केसी कुमार उपदेस न
ही देता अनें चितसारथी परदेसीनें नही ल्यावतो
तो केसी कुमारनें अने चितने स्युं दोष लागतो पि
ण जांणज्यो चितना परणाम एहवाछे एहजीवां दो
पगा चोपगादी समण माहणादि अनें देसमां कोई
ने दुःख नही होयतो बारु अनें परदेसी समझे तो
बारु बले प्रश्न व्याकरणमां प्रथम संबर द्वारमध्ये पा
ठछे [इमंच सव जगजीवरक्खण दयाठ्याए सिवा
एणं भगतासुकहितां] इहां कह्यो करता तथा उपाश्र
जोनिं तेहना राखवानें विषे बेगला परिठवे (नोणसं
हने अर्थे भगवंत प्रवचने जतनासुं मुंके ते माटे समा
री जोवो ८५ बले बा बले मूढ कहस्ये इरियावहि पडि
वर द्वारमध्येछे तो ठाणोठाण संकामियां) नो बोल आ
निमते सूत्र कह्यां पिण जीवनी अनुकंपा करता ठाण उ
सूत्र कह्याछे इम पिण भेलो आछ्यो एमा लाभस्यानो ते
सूत्र ऊपर निरत

धम्मिए अधम्माणुए अधम्मथित्ते अधम्मखाति अ धम्मजीवे अधम्मपलोइणे अधम्मपलज्जणे अधम्म सीले समुदायारे अधमेणे चेव बित्तिकप्पमाणे बिहर ती हणछिंद भिंदग तिग लोहिय पाणी चंडे रुद्दे खु द्दे साहासिए उकंचण बंचण माया नियडे कूडूकव डे साई संप्पयोग बहूलो दूसीले दुबए दुपडि आ णंदे आसाहुं सव्वातो पाणांति वायते अप्पडी बिरए जाव सव्वातो परिग्गहातो अप्पडि बिरए साव्वातो को हतो जाव मिच्छा दंसण सल्लातो अप्पडि बिरय सव्वतो न्हाणु मदण वण गंध बिलेवण सद्दफारिसरस रूव गंध मल्लालंकारातो अप्पडि बिरय सव्वतो सगड रह जाणयुग गिल्लिथिल्लीसिया सदमाणिया सयणासयण जाणबाहण जोग जोयण पविल्थिर बिहातो अप्पडि बि रय) इत्यादि अनार्य कर्म करेछे ते स्वामी तुमे सम जावो जिम ये १८ पाप न सेवे एहवी आत्मानो क ल्याण थाय एहवो करो इम कह्यो जोईये पिण इहां त कह्या ते ३ उपगारना कह्याछे ते माटे सा ६ ह्यो डेरावा आरे तेन्वो उपदेस देवेछे ते सा २ गाथा ३५ मी पदे छे (सेवेमिजा अतिता हां कुंथुवादिक प्राणीनी देपरिहंता भगवंता डे बले ठाणांगे ६ ठांणे पिणं पन्नवेंति एवं ६ कायनी रिक्षा करेछे तो साधु अशावेंय देसछे माहणो २ किणही जीवनें एवं स वोहिज उपदेसछे माहणो २ जीवने नी यहवी सहहणाछे जे प्रदेसी राजा

णी कहिये वेयावच सो कहिये जे गृहस्तनें असनादि
क देवे तथा हाथ पगादि सरीर मसले मोहममता क
रीने उषध भेखज बतावे ते वियाव्रचछे पिण बेइंद्री
यादि जीवनें तावडाथी उठावतां छांहडी मूकतां वेया
वचकरी न कहिये अनुकंपा करी कहिये ८९ तथा
वले वादी कहिस्ये उपरो काम कर्यो ते माटें विया
वचलागी ते उत्तर उपासगदसा अध्येन १ में गौतम
स्वामी आणंदनें देखवा आया (जेणेव आणंदे स
मणोवासए जेणेव पोसह सालाइ तेणेव उवागछई
२ त्ता तत्तेणंसे आणंदे समणो वासए भगवंगोयमं य
जमाणं पासई हठजाव हियये भगवंगोयमं वंदाति ए
वं वयासी एवं खलुभंते अहं इम्मेणं उरालेणं धम्मे
णा संतिले जाय नासंचायमी देवाणुप्पियस्स अंति
यं पाउ भविताणं तिखुत्तो मुद्धाणेणं पाय अभि वंदि
त्तए तुभेणंभंते इछा कारेणं अभिण उयणं इउचेव
एह आणंदे तिखुत्तो मुद्धणेणं पाय सुबंदामी नमंसा
मी तत्तेणं भगवं गोयमं जेणेव आणंदे समणो वास
तेणेव उवागछति) इत्यादि पाठ इण पाठमें आ
दनो काम कह्यो तो तुमारे लेखें गौतमस्वामीनें
[illegible]णंदनी वेयाव्रच लागी ९० तथा तुमें कहिस्यो
[illegible]तो आणंदनें लाभ दीठो तिणथी पासेगया पिण
[illegible]नें उठावतां स्युं गुणथाय ते उत्तर तथा उत्तरा
[illegible] २९ में (वंदणयाएणं भंते जीवे किंजणई गो

उत्तर एतो [अन्निहया वत्तीया लेसायाथा माडी जाव जीवीयाउ विवरोविया] सुधी हिंस्याना बो लछे चढती २ हिंस्याछे पंथें परमादने बसे कोई जी व बिराध्यो होवे तो आलोउंडू (जेमेंजीव विराहि या) यहवो पाठछे पिण जेमे जीवा उगारीया इ म नथी कह्यो ए १० बोलतो हिंस्यामाछे अने प्रा णीने अनुकंपा एतो प्रत्यक्षये दयाछे ८७ तथा तमे कहस्यो जे ठाणा उठाण करता दुख ऊपजे अने न ही उठावे तो किस्यो दोष लागे ते उत्तर दृष्टांत सा धू सुखें बेठाथका कोई श्रावके आवी कह्यो हे स्वामी तुमने फलाणे गामें गुरुतेडाव्याछे इम कह्या थकां साधू तावडामा विहार करे जद कहण वालानें गुण थयो के अवगुण थयो ते कहो १ तथा चोमासामां सामाचार गुरुआदिकना सुणेतो विहार करी जायतो कहण वालाने गुणथयो के अवगुण थयो ते कहो २ तथा साधूनें सरीरें दुख जाणी श्रावकें ओषध आ प्यो तेणें करी घणो दु[illegible] उपनो रोगथयो अतिसा रादिक भोगव्यो हिवे ए [illegible] दातारनें आसाता वेदनी बंधाये ते कहो ते माटें असाता थायके साता [illegible] असंजतीनें तावस ३ ॥ ८८ ॥ तथा तुमे कहोछो जे [illegible] वियावच स थी उठाय गाडडी मूंकेतो असंजतीनी [illegible] कहो दया गी अने असंजमजीतव वांछ्यो ते [illegible] अणुकंपा आ उथापक ए वेयावच कीधी [illegible]

णी कहिये बेयावच सो कहिये जे गृहस्तनें असनादि
क देवे तथा हाथ पगादि सरीर मसले मोहममता क
रीने उषध भेखज बतावे ते बियावचछे पिण बेइंद्री
यादि जीवनें तावडाथी उठावतां छांहडी मूंकतां बेया
बचकरी न कहिये अनुकंपा करी कहिये ८९ तथा
वले वादी कहिस्ये उपारो काम कर्यो ते माटें बिया
बचलागी ते उत्तर उपासगदसा अध्येन १ में गौतम
स्वामी आणंदनें देखवा आया (जेणेव आणंदे स
मणोवासए जेणेव पोसह सालाइ तेणेव उवागछई
२ त्ता तत्तेणंसे आणंदे समणो बासए भगवंगोयमं य
जमाणं पासई हठजाव हियये भगवंगोयमं बंदाति ए
वं बयासी एवं खलुभंते अहं इम्मेणं उरालेणं धम्मे
णा संतिते जाय नोसंचायमी देवाणुप्पियस्स अंति
यं पाउ भवित्ताणं तिखुत्तो मुद्धाणेणं पाय अभि बंदि
त्तए तुभेणंभंते इछा कारेणं अभिण उयणं इउचेव
एह आणंदे तिखुत्तो मुद्धणेणं पाय सुबंदामी नमंसा
मी तत्तेणं भगवं गोयमं जेणेव आणंदे समणो बास
ए तेणेव उवागछति) इत्यादि पाठ इण पाठमें आ
णंदनो काम कह्यो तो तुमारे लेखें गौतमस्वामीनें
आणंदनी बेयाबच लागी ९० तथा तुमें कहिस्यो
इहांतो आणंदनें लाभ दीठो तिणथी पासेगया पिण
जीवनें उठावतां स्युं गुणथाय ते उत्तर तथा उत्तरा
ध्येन २९ में (बंदणयाएणं भंते जीवे किंजणई गो

यमा नियागोयं कम्मं खवेई उच्चागोयं कम्मं निबंध
ई) ए लाभतो आणंदने थाय अनें उत्तराध्येन २१
में समुद्रपालजी केहवाछे [सव्वेहिं भूयांहिं दयाणुकं
पी] अस्यार्थः-सर्व जीवनें विषे दः दयाइकरी अः अ
नुकंपा परजीवने दुःख देखीनें कंपइ परजीवनाहित
नु करणहारछेतो जोवोजे साधुनी थानकमां तथा एकं
त ठाम बेठाथकां त्रसजीवने तावमांथी मरतो जाणी
छांहडी मूंकेतो अनुकंपामा भिलस्य ते बिचारी जोवो
९१ तथा केईएक कुबुद्धि हीयामां मोहला उपजावी
नें खोटी खोटी युक्तिकरीनें दया उथापकछे ते कहेछे
जो तुम जीव उवारवामें धरम कहोतो श्रावक थारे
पासे बेठो थको भवलखाय हेठो पडियो तेहनी ना
ड तूटेछे तो तुम बैठा करो क्युं नही तथा सेवा बिया
बचकरो क्यों नही १ इमहीज बाईने बैठी करि बि
याबच करो क्यों नही २ बलीकिसी पुरसरो पेट दूखे
छे जीव जायछे तुमे हाथ फेरो क्यूं नही ३ बले को
ई ग्रहस्त मार्ग भूल अटवीमा पडोछे तेहने मारग ब
तावो क्यूं नही ४ बले रोडी परमुखमा घणी लटा
कीडा किलबिलेछे तावडामा मरेछे थे पात्रा भरीने
उठाय छाहडी मूंको क्युं नही ५ बले साधू बेठाछे ति
हां तालाव नाडामे पांणीमे नील फूल जोकां माछ
ल्यां परमुखसुं भरयोछे इतरामे गायां भेस्यां पांणी
पीवाने आवेछे तो ताको क्यों नही ६ बले सुसली

थां घानरो ढिगलो पड्योछे तेहने कुतरा खावेछे तुमे बरजो क्यों नही ७ बले बनसपती गाजर मूली आदिदेई घणापड्याछे तेहने बकरा खावेछे थे बरजो क्यों नही ८ मीनकी परमुख उंदरो पकडयोछे तुमे गेडावो क्यों नही ९ बले जीव छुडायामें धरम होयतो आखोदिन योही कांमकरो क्यों नही १० इत्यादिक अनेक पाखंडी युक्ति कहिकहिनें लोकानें भरम मा पाडेछे दयाहीण करेछे पिण सुध साधूनें पूछेतो सूत्रसाहमुंदिष्ठी करेतो ठीक पडे पिण आपणा मूढाकी युक्ति लगाई माननें बसे पहुंताछे तेहनें दया धरम किमरुचे ते साख सूयगडांग प्रथम स्कंधे अध्येन१३ में गाथा ३ (जेयावि पुठापलियं चयंति आयाण मठंखलु वंचयंति आसाहुणो तेईहसाहुमाणी मायाणिएसिं ते अणं घातं) इहां इम कह्यो जे परमार्थना अजाणनें पूछ्यो तुम किणपासे भण्या जद आपणा आचार्यनें गोपवीने माया कपटाइं करी कहे अमे स्वयमेव भण्या इसो कहे ग्यान न पामे असाधू थका साधू कहावेछे ते रुलसी संसारमे अणे घात पामसी ता एहनें समझाविजे अहो मंद बुद्धी तुमे १० प्रश्न आदिदेई कह्या ते उत्तर इहांतो साधूनो कलप होसी तिम करसी ए केने दुःख नही ऊपजे इसो काम साधूजी करे थे धर्मनो नाम कहोछो ते सुणो साधूने पहोर रात्र तांई उतावलो शब्द क

यमा नियागोयं कम्मं खवेई उच्चागोयं कम्मं निबंध ई) ए लाजतो आणंदने थाय अनें उत्तराध्येन २१ में समुद्रपालजी केहवाछे [सव्वेहिं भूयांहिं दयाणुकं पी] अस्यार्थः—सर्व जीवनें विषे दः दयाइकरी अः अ नुकंपा परजीवने दुःख देखीनें कंपइ परजीवनाहित नु करणहारछेतो जोवोजे साधुजी थानकमां तथा एकं त ठाम बेठाथकां त्रसजीवने तावमांथी मरतो जाणी छांहडी मूंकेतो अनुकंपामा भिलस्ये ते बिचारी जोवो ९१ तथा केईएक कुबुद्धि हीयामां मोहला उपजावी नें खोटी खोटी युक्तिकरीनें दया उथापकछे ते कहेछे जो तुम जीव उवारवामें धरम कहोतो श्रावक थारे पासे बेठो थको भवलखाय हेठो पडियो तेहनी ना ड तूटेछे तो तुम बैठा करो क्युं नही तथा सेवा बिया बचकरो क्यों नही १ इमहीज बाईने बैठी करि बि याबच करो क्यों नही २ बलीकिसी पुरसरो पेट दूखे छे जीव जायछे तुमे हाथ फेरो क्यूं नही ३ बले को ई ग्रहस्त मार्ग भूल अटवीमा पडोछे तेहने मारग ब तावो क्यूं नही ४ बले रोडी परसुखमा घणी लटा कीडा किलबिलेछे तावडामा मरेछे थे पात्रा भरीने उठाय छाहडी मूंको क्युं नही ५ बले साधू बेठाछे ति हां तालाव नाडासे पांणीमे नील फूल जोकां माछ ल्यां परसुखसुं मरयोछे इतरामे गायां भेस्यां पांणी पीवाने आवेछे तो ताको क्यों नही ६ बले सुसली

थां धानरो ढिगलो पड्योछे तेहने कुतरा खावेछे तुमे बरजो क्यों नही ७ बले बनसपती गाजर मूली आदिदेई घणापड्याछे तेहने बकरा खावेछे थे बरजो क्यों नही ८ मीनकी परमुख उंदरो पकडयोछे तुमे छोडावो क्यों नही ९ बले जीव छठायामें धरम होयतो आखोदिन योही कांमकरो क्यों नही १० इत्यादिक अनेक पाखंडी युक्ति कहिकहिनें लोकानें भरममा पाडेछे दयाहीण करेछे पिण सुध साधूनें पूछेतो सूत्रसाहमुंदिष्टी करेतो ठीक पडे पिण आपणा मूढाकी युक्ति लगाई माननें बसे पहुंताछे तेहनें दया धरम किमरुचे ते साख सूयगडांग प्रथम स्कंधे अध्येन१३ में गाथा ३ (जेयावि पुठापलियं चयंति आयाणमठंखलु बंचयंति आसाहुणो तेईहसाहुमाणी मायाणिएसिं ते अणं घातं) इहां इम कह्यो जे परमार्थना अजाणनें पूछ्यो तुम किणपासे भण्या जद आपणा आचार्यनें गोपवीने माया कपटाइं करी कहे अमे स्वयमेव भण्या इसो कहे ग्यान न पामे असाधू थका साधू कहावेछे ते रुलसी संसारमे अणे घात पामसी तो एहनें समझाविजे अहो मंद बुद्धी तुमे १० प्रश्न आदिदेई कह्यो ते उत्तर इहांतो साधूनो कलप होसी तिम करसी ए केने दुःख नही ऊपजे इसो काम साधूजी करे थे धर्मनो नाम कहोछो ते सुणो साधूने पहोर रात्र तांई छतावलो शब्द क

रीनें सिझाय करे थारे लेखें जो धर्म होयतो आ
खीरात सिझाय किम नही करे १ साधूने परमाण स
हित जयणासुं पडिलेहण करे थारे लेखे जो धर्म हो
यतो आखोही दिन पडिलेहण किम नही करे २ सा
धू मर्जादासे आहार करे थारे लेखे जो धर्म होयतो
घणोही २ खावो किम नही करे ३ साधूनें बिहार
परिमाण सहित करवो थारे लेखे जो धर्म होयतो ए
कठिकाणे कदेइ रहिवो नही ४ साधूनें ध्यांन करवो
थारे लेखे जो धरम होयतो ध्यानहीमें क्युं नही रहें
५ साधू वखाण उपगार निमतें करे थारे लेखे जो
धर्म होयतो घर घरमें जाय वखाण करे क्यों नही
६ इत्यादिक अनेक हेतूछे तो थारी जुगतके लेखें ए
युगति किम मिलस्ये तो जाणजो साधूनो कलप
होसी जिम करसी धरमनी करणी अनें भली जाण
वी साधु केईएक काम करे तो नही पिण करतो हो
यतो भलो जाने जाणेछे दयामाटे हिवे कोई अनुकं
पा करुणा कीधा पाप कहे तेहने पूछीये ए पाप कि
म थयो १२ तिवारे ते कहे साधू आज्ञा नथी देतां
तेमाटे तेहनो उत्तर साधूनी आज्ञातो साधूना क
ल पमा होवे कोई वरसातमे साधू दिसा जावा भणी
गुरुनी आज्ञामांगेतो गुरु आज्ञादेवे तो इहां निरव
द्यनी आज्ञाछे के छदमस्तनाकारणनी आज्ञाछे तो
आज्ञामे तुमे समझता नथी आज्ञा २ भेदछे आदे

स अनें उपदेस तिहां आदेसछे ते कार्यछे उपदेसते कारणछे पिण कहो कोई दुष्ट ग्राम नगरादि बालेछे अने कोई बरजेछे ए बेनें स्युं फलहोय ते कहो ॥ १ ॥ कोई सतीनासील खंडेछे अनें कोई खंडताने बरजेछे ए बेहुंने स्युं फल होय ते कहो ॥ २ ॥ कोई अज्ञानी बनडुंगर बालेछे अने तिणने कोई बरजेछे ए बेहुने स्युंफल होयते कहो ॥ ३ ॥ कोई पाणीमे माठा नाखेछे अने बीजो बरजेछे ए बेनें स्यूं फल होय ते कहो ॥ ४ ॥ कोई अनार्य कुतुहल निमते रूंख बाडेछे अने बीजो तेहने बरजेछे ए बेने स्युं फलहोय ते कहो ॥ ५ ॥ कोई गाडी ऊंट महिष परमुख कीमी नगरा ऊपर चलावेछे अने बीजो तेहने बरजेछे ऐ बेने स्युं फलहोय ते कहो ॥ ६ ॥ कोइ ठगपापी किणने फासी देवेछे अने बीजो तेहने बरजेछे इन दोनाने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ ७ ॥ कोई खडगसु किणरो गलो काटेछे अने दुजो तेहने बरजेछे इन दोनोकू स्युं फलहोयते कहो ॥ ८ ॥ कोई पापी बाल हित्या करेछे अने तेहने बीजो बरजेछे उन दोनाने स्यूं फलथयो ते कहो ॥ ९ ॥ कोई आठम चौदस पक्खीनें दिवसे नीलोतरी रांधण निमिते लायाछे अने बीजो तेहने बरजेछे ते दोनाने स्यूं फलहुयो ते कहो ॥ १० ॥ कोई हिंसकनें मृगनो टोलो बतायो अने बीजो ते हिंसकने मारता बरजेछे तो

शीनें सिझाय करे थारे लेखें जो धर्म होयतो आ
खीरात सिझाय किम नही करे १ साधूनें परमाण स
हित जयणासुं पडिलेहण करे थारे लेखे जो धर्म हो
यतो आखोही दिन पडिलेहण किम नही करे २ सा
धू मर्जादासे आहार करे थारे लेखे जो धर्म होयतो
घणोही २ खावो किम नही करे ३ साधूनें विहार
परिमाण सहित करवो थारे लेखे जो धर्म होयतो ए
कठिकाणे कदेइ रहिवो नही ४ साधूनें ध्यांन करवो
थारे लेखे जो धरम होयतो ध्यानहीमें क्युं नही रहें
५ साधू वखाण उपगार निमतें करे थारे लेखे जो
धर्म होयतो घर घरमें जाय वखाण करे क्यों नही
६ इत्यादिक अनेक हेतूछे तो थारी जुगतके लेखें ए
युगति किम मिलस्ये तो जाणजो साधूनो कल्प
होसी जिम करसी धरमनी करणी अनें भली जाण
वी साधु केईएक काम करे तो नही पिण करतो हो
यतो भलो जाने जाणेछे दयामाटे हिवे कोई अनुकं
पा करुणा कीधां पाप कहे तेहने पूछीये ए पाप कि
म थयो १२ तिवारे ते कहे साधू आज्ञा नथी देतां
तेमाटे तेहनो उत्तर साधूनी आज्ञातो साधूना क
ल पमा होवे कोई बरसातमे साधू दिसा जावा भणी
गुरुनी आज्ञामांगेतो गुरु आज्ञादेवे तो इहां निरव
द्यनी आज्ञाछे के छदमस्तनाकारणनी आज्ञाछे तो
आज्ञामे तुमे समझता नथी आज्ञा २ भेदछे आदे

डेछे ते बेहुंने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २३ ॥ कोई अनार्य साधूने श्वान लगावेछे अनें बीजो तेहने ब रजेछे ए दोनोने स्यूंफलहोय ते कहो ॥ २४ ॥ कोई बचनादिकना परीसा देवेछे अने कोईक परीसा देता नें बरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २५ ॥ कोईक तो साधूने अटवीमे घालेछे अने बीजो तेह नें बरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २६ ॥ कोई भूलांने मारगबतावेछे अने कोई मारग भूलावे छे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २७ ॥ अनें बिमल बाहन राजासु मंगल साधुनें परीसादेसी अ नें बीजो तेहने बरजेछे तो तेहने स्यूं फलहोसी ते क हो ॥ २८ ॥ कोई अग्यानी जीव सहित इंधन बा लेछे अनें कोई तेहने बरजेछे ए बेहुनें स्यूंफल होय ते कहो ॥ २९ ॥ कोईक राजा परजाने दुख देवेछे अ नें प्रधान तेहने बरजेछे ए दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ३० ॥ कोईक तो बैरीने मारवा सारु जहर देवेछे अने कोई तेहने दया आंणीने बरजेछे ए बेहु नें स्यूंफल होय ते कहो ॥ ३१ ॥ कोईक जहर खाइ नें मरेछे अने बीजो तेहने बरजेछे ते बेहुने स्यूंफल होय ते कहो ॥३२॥ इमहीज फासीखाई ३३ पाणीमें पडी ३४ शस्त्र प्रहारी ३५ डुंगरथीपडी ३६ अग नमे पडी ३७ जीभकाटी इत्यादि अकाल मरणें मरे छे अने कोई दया आणी बरजेछे ए बेहुंने स्युंफल

बेहुने स्यूं फल थयो ते कहो ॥ ११ ॥ कोई माकण ना माचा तावडे मुंकेछे अने बीजो बरजेछे ते बेहुंने स्यूं फलथयो ते कहो ॥ १२ ॥ कोईक तो कोमी नग रमें अगन घालेछे अनें बीजो बरजेछे ते बेहुंने स्युं फलहोय ते कहो ॥ १३ ॥ कोई अनंत कायनो आ रंभ करावेछे ओर कोईक टलावेछे ए दोनोनें स्यूं फ लहोय ते कहो ॥ १४ ॥ एक जणोतो सूलीयो धांन दलेछे बीजो तेहने बरजेछे तो दोनोने स्यूं फलहोय ॥ १५ ॥ कोईकतो दया निमिते गृहस्तने धर्म उप गर्ण पूंजणी मालादी देवेछे अने कोई देनां बरजेछे ते दोनाने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ १६ ॥ कोईक अ नार्य ज्ञानना पाना बालेछे बीजो तेहनें बरजेछे ते बे हुंने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ १७ ॥ कोईतो नितप्र ते परस्त्री तथा बेस्या गमन करेछे बीजो तेहने बरजे छे ते बेहुंनें स्युं फलहोय ते कहो ॥ १८ ॥ कोई सि रदार सिकार खेले अनें बीजो तेहने बरजेछे ते बेहु ने स्यूंफल होय ते कहो ॥ १९ ॥ कोईकतो चोरी क रेछे अनें बीजो तेहने बरजेछे ते बेहुंने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ २० ॥ कोईक साधूनी आसातना करेछे अने कोई बरजेछे ते बेहुंने स्यूं फलहोय ते कहो ॥ ॥ २१ ॥ कोई अनार्य साधूनें मारेछे अने बीजो ब रजेछे ते दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ २२ ॥ को ईक अनार्य साधूनें रुंखसें बांधेछे अनें कोईक गे

डेछे ते बेहुंने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २३ ॥ कोई अनार्य साधूने श्वान लगावेछे अनें बीजो तेहने ब रजेछे ए दोनोने स्यूंफलहोय ते कहो ॥ २४ ॥ कोई बचनादिकना परीसा देवेछे अने कोईक परीसा देता नें बरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २५ ॥ कोईक तो साधूने अटवीमे घालेछे अने बीजो तेह नें बरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २६ ॥ कोई भूलांने मारगबतावेछे अने कोई मारग भूलावे छे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ २७ ॥ अनें बिमल बाहन राजासु मंगल साधुनें परीसादेसी अ नें बीजो तेहने बरजेछे तो तेहने स्यूं फलहोसी ते क हो ॥ २८ ॥ कोई अग्यानी जीव सहित इंधन बा लेछे अनें कोई तेहने बरजेछे ए बेहुंनें स्यूंफल होय ते कहो ॥ २९ ॥ कोईक राजा परजाने दुख देवेछे अ नें प्रधान तेहने बरजेछे ए दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ३० ॥ कोईक तो बैरीने मारवा सारु जहर देवेछे अने कोई तेहने दया आंणीने बरजेछे ए बेहुं नें स्यूंफल होय ते कहो ॥ ३१ ॥ कोईक जहर खाइ नें मरेछे अने बीजो तेहने बरजेछे ते बेहुने स्यूंफल होय ते कहो ॥३२॥ इमहीज फासीखाई ३३ पाणीमें पडी ३४ शस्त्र प्रहारी ३५ डुंगरथीपडी ३६ अग नमे पडी ३७ जीभकाटी इत्यादि अकाल मरणें मरे छे अने कोई दया आणी बरजेछे ए बेहुंने स्युंफल

होय ते कहो ॥ ३८ ॥ कोई कुव्यसनी मांस मदिरा घणो खावेछे अने बीजो वरजेछे ते दोनोकुं स्यूंफलहोय ॥ ३९ ॥ कोईक आरंभी आरंभ घणो करे अने कोईक तेहने वरजेछे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ४० ॥ कोईक कसाई बकरा परमुख घणा मारेछे अने कोई दया आणी तेहने वरजेछे ए दोनोने स्यूंफल होय ॥ ४१ ॥ कोईक अचखु कीडी नगरा ऊपरे पगदेवेछे अने कोईक तेहने वरजेछे ते दोनोने क्या फल ॥ ४२ ॥ कोईक तो घरमें कलहराड परमुख घणी करेछे अने बीजो तेहने वरजेछे ते दोनोने स्यूंफल ॥ ४३ ॥ कोईक माहोमाही कटेछे अने दया आणी छुडावेछे ते बेहुंने स्यूंफल होय ॥ ४४ ॥कोईकना गायाना वाडामे अगनलागी कोईक दया आणी वाडो खोलेछे तेहने स्यूंफल होय॥४५॥कोईक डुंगरथी मनुष हेठो पडेछे अने कोईक पडताने दया आणी झेलेछे तेहने स्यूंफल ॥ ४६ ॥ कोईक श्वानपरमुख रस्तेमें सूतोछे इतरामे गाडो आयो जद कोईके करुणा करी श्वान उठाई दीयो तेहने स्यूंफल ॥ ४७ ॥ कोइ मंजारी परमुख उंदरो पकडेछे कोईक दया आणी छोडावे ते दोनोने स्यूंफल होए तथा वचनसु छुटावेतो तेहने स्यूं फल लागे ते कहो ॥ ४८ ॥ कोईक गरीवने मारेछे कोईक मारताने वरजेछे ए वेहुंने स्यूंफल होए ॥ ४९ ॥ कोईक झाला वरगी सेल पर

मुख घडेछे ओर कोई दया आणी तेहने बरजेछे य हदोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५० ॥ कोईक तो राड परमुख घणी करेछे ओर कोईक तेहने बरजेछे ए २ स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५१ ॥ कोईक तो घर में अणछांणो पाणी पीवेछे ओर कोईकहे हे नाई अणछांणो पाणी मत पीवे ए दोनोने शुफल होय ते कहो ॥ ५२ ॥ कोईक साधूना दरसन करता बरजेछे अने कोईक दरशण करावबानणी बीजाने तेडी ले जायछे ए दोनोने स्यूंफल होयते कहो ॥ ५३ ॥ कोईक तो उघाडे मुख बोलेछे अने कोई बरजेछे ए दोनोनें स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५४ ॥ कोईक तो आगधूवाडे करी त्रस जीव मारेछे ओर कोई तेहने बरजेछे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५५ ॥ कोईक तो नीलो बांभ बांधीने मारेछे अने कोई तेहने बरजेछे इनदोनोको स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५६ ॥ कोईक बागरी मछी पकडवा बेठोछे इतरामे कोईक बरजेछे ते दोनोनें स्यूंफल होय ते कहो ॥ ५७॥ कोई हिरणारे वास्ते तीर मारेछे ओर कोई तेहने बरजेछे ते दोनोको क्या फलहोय ते कहो ॥ ५८ ॥ कोईक अनार्य कर्म करेछे अने कोईक तेहने बरजेछे ए दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ५९ ॥ कोईक पूरस उपवासकर मांगतो होय ओर कोईक तेहने बरजतो होय ते दोनोने स्यूंफल होय ॥ ६० ॥ कोईक तो होली

परमुख लगावेछे ओर कोईक वरजेछे ते दोनोने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ६१ ॥ कोईक श्रावकने काचा पाणीनो नेमछे अब मारगमें प्यास लागी जद काचो पाणीतो मने थयो इतरामे अचित पाणी कोईक पावे काचो पाणी टलायो एहने क्या फल लाग्यो ते कहो ॥ ६२ ॥ कोईक श्रावक गामथी आठ्यो आरंभ करवानो मनथयो इतरामें दूजो श्रावग अचित आहार खवाय आरंभ टलायो एहने स्यूंफल लाग्यो ते कहो ॥ ६३ ॥ कोईकना उन्हां पाणीमे माखी पडीहोय कोईक करुणा करी बतावे तेहने स्यूंफल होय ते कहो ॥ ६४ ॥ कोईकनी तेलनी मुण फूटी धणी दीठी नही अने आगे रूई अगन पडीछे तिणमे तेल जावेतो अगन घणी वधे आगे घणाजीवानो घमसाण होय इतरामे किणी अनुकंपाकरी फूटी मुंणने बताई अब कहो अनुकंपामें स्यूं थयो ते कहो ॥ ६५॥ इत्यादिक अनेक प्रश्न दया उथापकाने पूछीया प्रश्न॥९३॥जद दया उथापक खिझ हुयां थकां इम कहे यां सर्व बोलामे घणो पाप करे तेहने घणो पाप मारता वरजे तेहने थोडो पाप कोईकनो कायायोग सावज अनें मनयोग निरवद्य कोई एक असंजम जीतव्य बांछे ते माटे हाय लगावे तेहने घणो पाप अने वरजे तेहने थोडोपाप पिण पुण्य नही इम कहेछे तेहना उत्तर अरे अग्यानीयों तुमतो दयाही

एछो तिणसुं तुमने संवली बुद्धिआवे नथी पिण जो
वो जगवती सतग १२ उदेस १ जयंती पूछयो (सु
त्ततंजंत्ते साहु जगरीयंतं साहु जयंति अत्थे गइया
णं जीवाणं सुततं साहू अत्थे गईयाणं जगरीयंतं
साहु सेकेणठेणंजयंति जे इम्मे जीवा अहम्मिया
अहमाणुया अहंमिठा अहम खाई अहम्म पलोई
अहमपलजणा अहम्म समुदायारा अहम्मेणं चेवबि
ति कप्पे माणा बिहरंति ए एणं जीवा सुतासमाणा
नो बहुणं पाण जुयजीव सत्ताणं दुखणयाए सोयण
याए जाव परियावणयाए एवट्टंति) इत्यादि पाठछे
इमहीज दुबलानो आलसीनो पाठछे तो इहां अध
मी जीव अवलीया सुता आलसी रूडा कह्याछे ते
सापेक्ष बचनछे जे अधरमी जीवतो सरवथा भूंडाछे
पिण जागतानी अपेक्षायें सूताभला कह्या जागता
थका घणाजीवाने [अमम्मियाहिं संजोयणेहिं संजो
यतारो जवति] इत्यादि अधर्मकारी संजोगना प्रे
र्णाइं करी प्रेरइ घणा जीवाने मारस्ये ते जणी सूता
थकां थोमा पाप करेछे ते माटे सूता जला कह्या बी
जुं सूताथकां स्यूं जलो काम करेछे तिम घणो घणो
आरंज टालेतो तेहनें बीतरागे गुणना पक्षमा गवे
स्यो जिम किणिनें तृषालागी काचो पांणी पीवा मा
ड्यो हतो पिण अरिहंतनें बचनें करी दया आणी
पीछो मूंक्यो तृषानही खमाई जद उंन्हो पांणी पीधो

हिवे उंनो पांणी पीधो तेहमां स्यूं गुणछे पिण उष्णो
दकना योगथी सीलो पांणी टाल्यो ए पाप टलावा
नो कारणतो उंनो पाणी थयो १ वली विद्या भणवा
नो कारण ते गुरुछे तेहनो गुणलेणो के नहीं २ जि
म आपरे घणो पाप टलेतो वारू ॥ ९४ ॥ वली वा
दी कहसी इमतो हम कहाछांइज पिण पलारा अ
र्थात् दूसरारो पाप टलावामें स्यो गुण ते कहो ते उ
त्तर जिम कोईकनें राजा दंडे तिणें सो रूपीयामागे
सो रूपीयानो खत लिखावी लीधोछे तिवारें घरना
धणी जाणीजे सो रूपीया म्हारागया एहवें कोई प्र
धांन बीचमें पडी ५० रूपीयातो मुकाया अनें ५०
देवराया अब कहो प्रधांन ऊपर भूंडो जानें जे ए
णें पापी म्हारा ५० रूपीया खोवराया इम जाणेके
इम जाणे शाबास भाई तुमे माहिरा ५० रूपीया
छूटको कराव्यो तुमें माहिरे घणो गुण कह्यो इम
जाणीने गुणलेय के अवगुण लेय इण द्रिष्टांते कोइ
अज्ञानी केउं अर्थात् पूर बालतो इतो तेहनें उढणो
देई अगनीनो आरंभ छुटायो ए देणहारो मुहतानी
परे अवगुणनो करणहार कहिए कि गुणनो करण
हार कहिए अरे अज्ञानीओ वस्तु वस्तु थकी मापी
जोउ ९५ वली तुमें कह्यो जे जीव हणसी तेहनें पा
प लागसी पिण असंजमीने छुटावेतो स्यूं गुण उप
जे ॥ ते उत्तरः भगवती सतग ७ में उदेसे ६ गो

तम स्वामी पूछ्यो हे भगवान जीव कर्कस वेदना क
र्म किम करे (गोयमा पाणाइवाएणं जाव मिथ्या दंस
ण सल्लेणं) ए १८ पाप सेवतो कर्कस वेदनी उपार्जें
इम २४ दंडके उपारजे १ हे भगवान जीव अ क
र्कस वेदना किम उपार्जें (गोयमा पाणाई वाय वेर
मणेणं जाव परिग्गह वेरमणेणं कोह विवेगेणं जाव
मिच्छा दंसणसल्ल विवेगेणं) ए १८ पाप थानकनो
पचखाण करतो थको जीव अकर्कस वेदना उपार्जें ए
क मनुष विना ओर दंडकमें न उपार्जें संजमना अ
भावमाटे २हिवे हे भगवान साता वेदनी कर्म किम उपा
रजे (गोयमा पाणाणु कंपयाए भूयाणुकंप्पयाए जीवा
णुकंपयाए सत्ताणुकंप्पयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं
अदुक्खणयाए असोयणाए अजुरणयाए अतिप्पणया
ए अप्पिट्टणयाए अपरिता वणियाए)इम साता वेदनी
उपार्जें२४दंडका साता वेदनी करम उपार्जें ३हे भग
वान जीव असाता वेदनी कर्म किम उपार्जें (गोय
मा परदुखावणयाए) इत्यादि अ साता वेदनी उपा
र्जें २४ दंडका असाता वेदनी उपारजे ४ हिवे इहां
तो प्राणीनी अनुकंपा करतो थको साता वेदनी बां
धतो कह्योछे इहां मारतानें बंचावे तो अनुकंपामें नि
लसी तिवारे वादी इम कहे अनुकंपा तो नही मारे
ते कहिये ते उत्तर अरे अविवेकीयो नही मारे ते
तो पाठ कह्योहीजछे (अदुक्खणया) इत्यादि १६

वलीवादी कहस्ये नारकीयादि देवता ५ थावर ३ वि कलेंद्री ए केहने छोडावेछे ॥ ते उत्तर ॥ अहो मंदबुद्धि कठेहीतो छोडावा आश्री कठेही प्रणामाआश्री जाणि वो कठेही सत्ता आश्री जाणवो इम थे एकेंद्रीनो नामलेइ दया उथापक छो तो कहो एकेंद्रीमा क्रोध कांई करेछे इम मान माया लोभ कांई करेछे इम ४ संज्ञा कांई करेछे तो जाणजो सत्ता आश्रीछे तथा ठाणांग उववाई परमुखमें नारकादिक गतमें जावणरा चार चार बोल कह्याछे (महा आरंभीयाए १ महा परिगाहियाए २ पचिंद्रीए बहेणं ३ कुणिसमहारेणं ४) ए बोल सेवेतो नरकमें जाय १ (माइल्लयाए १ नियडिल्लयाए २ अलिय वयणेणं ३ उक्कंचणया वंचणयाए ४) ए ४ बोलां करी तिर्यंचमा जाय २ [नगति भद्दियाए १ पगइ विणिया ए २ साणुकोसियाए ३ अमछरियाए ४) ए ४ बोलाकरी मनुषमें जाय ३ (सराग संजमेणं १ संजमा संजमेणं २ अकाम निज्जराए ३ बालतवो कम्मेणं ४) ए ४ बोलां करी देवमां जाय॥एवं सर्व १६ अब कह्याछे तो अव कोई दया आणी छुडावेछे थे केहा बोलमें घालस्यो ते कहो वले सूत्र उववाईमें पूछ्यो (जीवेणंभंते असंजय अविरते जाव एगंते सुत्ते उसण तस्स पाणघाती कालेमासे कालंकिच्चा णेरईएसु उववज्जंति हंता) इत्यादि कह्योछे पिण जीव बचायामें पाप होयतो

सूत्र काढी देखाडो प्रश्न १७ वली वादी कहेछे ते तुम जीव बचायामें धर्म जाणो तो कोई कसाई पर मुखनें आहार कपडा दे दे जीव बचावो क्यो नही पिण जीव बचावामें धर्म नही तो थे आहार पानी नही द्योछो ते उत्तर अहो मूढ मती थे सर्वथा भूला छो साधुनो आहार पानी देवानो कलप ग्रहस्तनें नही तथा तुम्हारी कहण ऊपर दृष्टांत कोईक ग्रहस्त कहे मोने आहार पाणी खवरावो तो संजम लेऊं जद थारे लेखें साध पणो देवामें धर्म होयतो देवो क्यों नही १ तथा किणही ग्रहस्त घरमा आहार पाणीनें साधू आया जद ग्रहस्त कह्यो अठेबेसो मोनें बखाण सुणाउ अब तिहां साधूजी बेसे नही जद थारे लेखे बखाण सुणावामा धर्म होयतो बेसे क्यों नही २ तथा किणी ग्रहस्ते कह्यो मोने कपडो देवो तो संजम लेऊं जद थारे लेखे साध पणो देवामें धर्म होयतो देवो क्यु नही ३ इत्यादि अनेक युक्त छे जो जाणजो साध संजमरो काम भलो जाणेछे पिण आहारादि ग्रहस्तनें देवे नही तिम कसाईने समझाइ जीव बचावे पिण आहारादि देवानो कलपनथी ॥ १८ ॥ वली दया उथापक कहेछे अयोग दृष्टांत देवेंछे जो जीव बचायामें धर्म होयतो उजाड में नाहरनें मारी नाखेंतो घणाजीव बचें इम मंजारी सिकरा परमुखनें मारेतो घणाजीव बचजाय जीव ब

चायानें धर्म जाणेंतो मारे क्यों नही इत्यादि खोटा दृष्टांत देवेछे ते उत्तर अहो मुगध थे केहवा कहोछो [विसोहियंते अणुका हयंति जे आय भावेण वियागरेजा अठाणिए होई बहुगुणाणं जेनाण संकाय मुसं वदेजा ३) इहां इम कह्यो निरमल शुद्ध मार्गनें ते मिथ्याती विपरीत पणें आघोपाछो कहे जे कोई पोतानें अभिप्राये जिम तिम परूपें ते अज्ञानी घणाने अस्थानक भाजन होय जे अज्ञानी संकाइं मृषा परूपे इम कह्यो ते तुम्हारी सर्द्धा दीसेछे जिम किणही अजान नरनें कह्यो जो साधूनें असनादि ४ आहार देवामें धर्म होयतो सचित अचित तथा फासु अप्रासुक घणो घणो देवो क्यों नही जद साधुयें समझाव्या हे भाई जिस वस्तके साधु त्यागीहै ते देणी तिसमें धर्म नही ओर अप्रासुक दीधां मिश्रफल होयहै एकंत धर्म तो जो साधुनें कलपे तिस माहिं होयछे जिम जीव बचावामें धर्मछे पिण नाहर मंजारी सिकरा सर्पने मारीनें बचावामें धर्म न होय नही जो अनुकंपा परिणाम होसीतो जीवनें किम मारसी डाहाहोय ते बिचारी जो ज्यो ॥ ९९ ॥ वली दुष्ट खोटा दृष्टांत देवेछे दोय गणका कसाईना वाडामें २ हजार पचेंद्री मारता दीठा जद एक गणकातो आपरो सर्व गेहणो देइ हजार पंचेंद्री छोडाया अनें बीजी चोथो आश्रव सेवीनें हजार पंचें

द्री छोडाया अब धर्म कहो केहनें हुवो इसो द्दिष्टांत देई दया उथापेछे–ते उत्तर इण लेखें २ जणी थारे दर्सण करवा भणी आवता बीचमें चोरां पकडी जद एक जणीतो सर्व गेहणो देई छूटी थारे दर्सण भणी १ बीजी थारे दर्सन भणी चोथो आश्रव सेवाय छूटी थारो दर्सण कीयो २ अब कहो थारा दरसन करयामें धर्म होयतो दोन्यानें होसी अने थारा दरसन करयामें पाप होयतो दोन्यानें होसी जद वादी कहे म्हारा दर्सनमांतो धर्मछे पिण ए काम कीयो ते अधर्मछे ते उत्तर अहो अधरमीयो इमतो हम कहांछां जीव बचावामे धर्मछे पिण ए काम कीयो तिणमा गेहणो देई जीव छुटाया तेहना परिणाम अनुकंपानाछे ते किन गेहणो अजीवछे ते माटे अने बीजीनें हिंस्यानो काम घणोछे ते तो काम करवोज नही अनें जे स्त्री मैथुन सेवास्ये तेहने घटमा अनुकंपा किम रहसी ग्याहाहोय ते बिचारी जो ज्यो ॥ प्रश्नोत्तर ॥ १०० ॥ केतलाएक इम कहेछे साधु तथा श्रावक नव जोगें करी जीवहणे नही इणवे नही हणतानें भलो जाणे नही यहवो अभय दानतो कह्यो अने मारता बचावेतो अनुकंपा थई ए बेमां लाभतो घणो अभय दाननोछे ते तो नहीहणा माटें थयो अनुकंपामें केहो अभयदानछे ते उत्तर भगवती सतक ५ में तथा ठाणांगें ३ प्रकारे अल्प आऊखो

बांधै ते जीवहणता १ झूठ बोलता २ अफासु अणे सणीक आहार अर्थात् अफासु यानें जिम भोजन पाणमें ससस्त्र नही फरस्यो स्थावर जीव सहित जै से पाणी कच्चाहै नतो उसमें अग्नीसस्त्र प्राप्त हूवा न राखादि धोवनसें प्रासुक हुवा तथा सागभाजी आदी नूनादिसें प्रासुक होजाताहै सो जिस्में फर सा नही ते अप्रासुक तथा बीजादि वस्तुका दूसरा फर्स बिना प्रासुकनही ऐसा अफासु आहार आपे तो ३ तथा ३ प्रकारे सुभ दीर्घ आऊखो बांधे जीवनही हणेतो १ झूठ नही बोलेतो २ साधूने प्रासूक आहारदि आपेतो ३ इहां पूर्वअलप आऊखा बांधे ते आयुष्य पिण शुभ बांधे अर्थात् सुखदायक अशुभ नही बांधे कारणकया भगवती सूत्रके आठमें सत कके छठे उद्देसेमें कह्योछे ते पाठ (समणो बासग स्सणं भंते तहारुवं समणं वा माहणं वाअफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं जावपडिलाभे माणे किं कज्जई गोयमा बहुतरियासे निज्जराकज्जइ अप्पत्तरा एसे पाव कम्मे कज्जति) ॥ अर्थ ॥ साधूनें अफासु अणेपणीक आहार देतां अलप अर्थात् थोडासा पाप अनें वहोत निर्जरा होय तो देखियेकि बहु नि र्जरा वालो जीव एवो अशुभ अर्थात दुखदायक आऊखा बांधे नही और भगवती सूत्रमें रेवती श्रा विकाने महावीरनो लोहीठाण मेटवा वास्तें बीजोरा

पाक बनाव्यो ओर घोडां वास्ते कोला पाक कराया पिण भगवंत केवलनाणना धणी सिंहा अणगारप्र तें जणाव्यो तो कोलापाक लीधो पिण रेवती भाव सें तो करे माणे करेकी अपेक्षा दान दे चु कीथी तो पिण अलप आऊखो बांध्यो नही परत तीर्थंकर गोत्र बांध्योछे ॥ इहां वादी कहेछे ए ठामे जीवहणेतो अलप आउखो बांधे १ नही हणेतो दी र्घ आऊखो बांधे २ हिवे उगारे तो स्यूं फल पामें ते कहो ते उत्तर जीवने उगारवो अर्थात् बचाना ते नही हणवामे पैठो जेणे जीव उगारयो तेणे मरणना भयथकी मुकाव्यो के भयमा नारूयो वले तुम कहो झूठ बोले ते अलप आऊखो बांधे १ झूठ न बोले ते दीर्घ आऊखो बांधे २ साचा बोलाना स्यूं फल ते कहो १०१ जद वादीकहे मारता बचावे तो त्रीजे क रणे हिंस्यालागी तेहनो उत्तर अहो अजाण तुम भू लाछो तुम ३ कर्ण ३ जोगमे पूरा समझता नथी ॥

हिवे १८ पाप ऊपर ३।३ बोलरे मांहि यंत्र लिखीये छे ॥ तेहथी जाणीये ॥

प्रणातिपात १ योगें करे	१ जोगे नहणें	१ जोगें छुडावे
मृषावाद १ जोगे बोले	१ जोगे न बोले	१ योगे बरजे
अदत्तादन १ जोगे करे	१ जोगे न करे	१ जोगे बरजे
मैथुन १ योगे सेवे	१ जोगे न सेवे	१ जोगे बरजे
परिग्रह १ जोगे सेवे	१ जोगे न सेवे	१ जोगे वरजे
क्रोधमान माया लोभ १ जोगे करे	१ जोगे न करे	१ जोगे बरजे
रागद्वेष १ योगे करे	१ जोगे न करे	१ जोगे बरजे
कलह अभिख्या न पिसुन परिप रिवाद रतारति १ जोगे करे	१ जोगे न करे	१ जोगे वरजे
मिथ्यातदंसणसल्ल १ जोगे सेवे	१ जोगे न सेवे	१ जोगे बरजे

(अफासु) अर्थात् सचितादि तथा अशुद्ध स रीरको दुःख कारक आहार देतां अलप आऊखो बांधे १ अफासु न आपे २ फासु आपे ३ तो दीर्घ आऊखो बांधे एहना एक फल जिम जीवहणेतो अ लप आऊखो बांधे १ जीव न हणें अनें मारतानें ब चावेतो दीर्घ आऊखो बांधे ॥ ३ ॥ १०२ ॥ हिवे वा दी कहेछे पोतें जीव न हणवो पिण आगलारा झग ड़ामें क्यों पडणो तेहणो उत्तर साधू नव जोगे जीव नें हणतो नथी पिण आगलानें उपदेस देवेछे ए उ पदेस नही हणयामा के पारका जीव उगारवानो ते कहो १ महा सतकनें दोष लाग्यो तिवारे भगवंत गौतमनें कह्यो (नोखलु कप्पई गोयमा समणो वा सग्गस्स अपछिम जाव झुसीयस्स सरीरस्स भत्तपाण प्पडिया इखियस्स परोसंतेहिं तयेहिं अणिठेहिं अकं तेहिं अप्पिएहिं अमणुन्नेहिं अमणामेहिं वागरितेहिं तं गछहणं देवाणुप्पिया तुम्मं महासयहि समणो वा सयं एवं वदेह नोखलु देवाणुप्पिया कप्पई जाव त न्नं तम्मं एयस्स ठाणस्स आलोयेहिं जाव जहारिहं च पायछितं पडि बज्जाहि) इहां भगवंत गौतमने मे ळीनें प्रायछित देवायो थारे लेखें भगवंत पराया झ गडामें क्यों पडया वली भगवती सतग १२ में उदे से १ भगवंतना समोसर्णमां सर्व श्रावकां संख श्रावकने हिलवा निंदवा लाग्या तिवारे भगवंते बर

ज्या (माणंअज्जो तुम्मे संख समणो वासगं हिलह निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह संखेणं समणो वास ह प्पियधम्मेचेव दहधम्मेचेव) इहां भगवंत संख श्रावकने हिलवाथी बचायो तो मरताथी बचावानो स्यूं अटकावछे वली श्रावकांने हिलणां करतां वरजा तो जीवमारतां वरजे तेहनो स्यूं अटकावछे २ व ली उपासगदसा ६ अध्ययने भगवंत आपणा सा धु साधवीने कह्यो (अज्जोसमणेहिं णीगंथेहिं दुवाल सग्गं गणिपडिगं अदिज्कमाणेहिं अणउत्थियाए अठे हिय जाव निप्पठासिण वागरणं करेंति ते) इहां क ह्यो तुमे अन्य तीरथीने पिष्ट करो जिम जस पामसो तो तुम्हारे लेखे इहां भगवंतने स्युं गुण थयो पिण भगवंतरो मिथ्यात मिटावणरो उपाय कह्योछे जिम भगवंत जीवहिंस्या टलावानो उपाय करयोछे वले मारगमां कीमी हरीकाय पडीहोय पोते तो टालीने हटायां पिण बीजाने कह्यो इण तस्स ऊपर पग मति देवो ए उपदेस न हणानो कि जीव उगारवानो ५ तथा केसी गुरु चित सारथीने परदेसीनो कीधो पा पतो न लागतो पिण एतला उपाय करी समझाव्यो ए उपदेस माहणोमां के जीव उगारवानो ६ तथा द साश्रुत खंधमां १२ पडिमामे पाठछे साधु अगनी मे बलतो होवे तिवारे कोई साधूने काढेतो साधु वो हनी अनुकंपा काजे निकले पिण इम न जाणे ए प्रा

णो नीकलीने स्युं धर्म करसी अने हूं नही निकलूं तो ये भेलो बलसी तो कोई मोने हिंस्या लागती न थी इम न जाणे सुखे नीकले ए उगारवामाटे किमा हणो माटे ७ ॥ १०३ ॥ वली वादी कहस्ये जीव उ गारामे लाभछे तो तुम ठाम ठामना जीवाने पूंजता क्यां नथी धर्मनो कामतो तुमने पिण करवोछे ते उ त्तर–धर्म करवो ते खरो पिण अमारो कलप होय जि म करा पिण तमें धर्म उपदेस देवामें लाभ जाणोछो तो घर घरमें उपदेस क्यां देता नथी वले पहररात पछे उंचे शब्दे सझाय नथी पिण करो तो जाणजो आपणो कलप होसी तिम करसी १०४ वली वा दी कहस्ये साधूनो कलप नथी पिण श्रावक सामा इक पोसामा विरतमे बेठोछे तिवारे पूंजतो क्या न फिरे ते उत्तर–सामाइक पोसा मांहिनो ओर पिण घ णा रूडा कारज अटकाव्याछे पोसह सामाइक मातो साधु मुनिराजनें दान पिण देवावे नही अनें दूजो खुलो थको दान देवे तिणने भलो जाणेछे तिम सा माइकमें पिण जीव बचावे तेहने भलो जाणेछे इत्यादि जो ज्यो ॥ प्रश्न ॥ १०५॥ तथा केई अज्ञानी इम क हेछे साधुजीतो उपदेस देवेछे ते निरजरा निमितें दे वेछे पिण जीव उगारवा माटें नथी देता ते सा ख देवे सुयगडांग १७ में (सेभिक्खु धम्मे किट्टे माणेणो अणस्स हेउ धम्मं आइखेज्जा णो पा

णस्स हेउधम्मं आईखेज्जानो वत्थस्सेहेउ धम्मं आ
इखेज्जाणो लेणस्स हेउ धम्मं आइखेज्जाणो सयणस्सहे
उधम्मं आइखे जाणो अन्नेसं विरुव रुवाणं काम
भोगाणंहेउ धम्मं आइखेज्जा अगिलाय धम्मं माति
खेज्जा ननत्थ कम्म निज्जरठयाए धम्मं माइखेज्जा)
ते उत्तर ए पाठतो सुधछे पिण तुम रहस जाणता
नथी! इहांतो खुसामदी तथा आजीविका निमतें धर्म
नही सुणावे ए मनुष धनवंतछे येहनें सुणांऊंतो मुझ
नें मनोबांछित आहार देस्ये इम जाणी नही सुणावे
तथा तुम कहस्यो जे पाप कर्मथी मुकावानो उपदे
सदेणो दसवीयाल अध्येयन ४ गाथा (कहंचरे क
हंचिठे कहंमासे कहंसुय कहंभुजंतोभासंतो पावकम्मं
नबंधई १ जयंचरे जयंचिठे जयंमासे जयंसुय जयंभु
जंतो भासंतो पावकम्मं न बंधई ॥२॥ १०६ ॥ इहां
पाप कर्म न बंधवानो उपदेसछे पिण जीवरख्यानो
उपदेस किहांछे ते उत्तर अहोमंद बुद्धि तुमनें अज्ञा
न तिमर छायोछे इहां जतना कही ते आपकी के
पारकी ते कहो भगवती सतग २ उदेसे १ खंदक
दिख्यालीधा भगवंतने पूछयो तथा ग्यातायें १ मे
घ कुमारे पूछे संजमनी विध भगवंत कह्यो (यवं
देवाणुप्पिया गंतवं चिठियवं णिसियवं तुयट्टियवं भु
जियवं भासियवं यवं उवठाय उठाए पाणेहं भुते
हिं जीवहिं सतेहिं संजमेणं संजमियवं असिंचणं

अठे णोपमादेयव्वं) इहां कह्यो प्राणीयादि ४ तेह सर्वनी रिख्याते संजमेंइ परवरतवो ए पाठ ओर पिण घणा सूत्रमेंछे ॥ १०७॥ वले वादी कहेछे पृथ्वी काय जीवछे ते दयाछे के पृथवीकाय नें नही हणे ते दयाछे १ इम पाचोंही थावर जीवछे ते दयाछे कि याने नही हणे ते दयाछे ५ इम बेइंद्रीया पचेंद्री लगें जीवछे ते दयाछे के याने नही मारे ते दयाछे ९ वले वादीकहेछे ए ९ जीव आपने आऊखे मरेछे ते पापछे के याने मारे तेहने पापछे १८ तो जाणजो मारे तेहने पाप, नहीमारे तेहने दया स्वभावे जीवमरे ते पाप दया नथी इत्यादि कुबुधीनी वाता कर दया उथापेछे पिण जाणजो अठें गोता चरतो नथी हिवे उत्तर कहेछे इमतो अम कहांछाइज मरे ते पाप न थी जीवे ते दया नथी पिण मारे तेहने तो पापछे अ नें दया आणी मारेनही तेहने अने मारता दया आ णी बचावे तेहने दयाछे अनें जो थे नही समझो तो युक्तसुणो पाना ऊपर अक्षर मांड्या ते ज्ञानछे कि अक्षरमें समझे ते ज्ञानछे १ रजोहरणो दयाछे के रजोहरणाथी दया पाले तेहनें दयाछे २ गुरु वि नोछे के सिष्य विनो करे ते विनोछे ३ साधनो भेखछे ते साधपणोछे के माहिला परणामें साधपणोछे ४ गृ हस्थ वखाण सुणेछे ते उपदेसछे के सर्दहे ते धर्म रु चे ते धर्म उपदेसछे ५ पद्मासन बेठो ते ध्यानछे के

ध्यावे ते ध्यानछे ६ गुरवादिक वेयावच्चछे के चाकरी करे ते तें वियावच्चछे ७ मुपती ते जैणाछे के उघाडे मुखें दया परिणामे नही बोले ते जैणाछे ८ गुरुवादिक मोखछे कि धर्म करे जद मोखछे ९ इत्यादि अनेक युक्तिछे तो जाणजो कार्ण बिना कार्ज किम नीपजे जोतुम कारण नही मानोतो पाना परमुख ९ बोल किम सेवोछो अनुयोगद्वारमें (से किंत्तं कारणेणं २ तंतावो पडिस्स कारणं नोपडो तंतु कारणं एवं वीरणा कम्मस्स कारणं नकमो वीरणा कारणं मयपिंडो घम्मस्स कारणं न घडो मयपिंडस्स कारणं) ए पाठछे तो जोवो कारणछे तिहां कारजनी भजनाः अर्थात् होय वा न होय ॥ अनें कारजछे तिहां कारणानी नीयमाछे माटीनो पिंडछे ते घम्मानों कारणछे पिण घडो ते माटीनो कारण नही तिम जीवछे ते दयानो कारणछे पिण दयाछे ते जीवनो कारण नथी तो जाणजो मारता जीवनें देखीने करुणा आणी बचावेछे ते एकंत अभय दानमें मिलेछे सुयगडांग १ अध्येंन ६ [दाणाणसेठं अभयपयाणं] इति बचनात् बले पन्नवणा पद २२ में (कहिणं भंत्ते जीवा पा[illegible] तिवा तिकिरियां कज्जंति गोयमा छसुजीवनी कायसु) इम पाठछे तो जाणजो जीवआश्रीतो दया पालेहीजछे ॥ प्रश्न ॥ १०८॥ तथावले पाखंडी दया उथापक दृष्टांत देवेछे ते सुणो अनें किणहीक साहूका

रके २ बेटा हुता जिणामे एक बेटो तो रिण माथें करे १ अनें बीजो बेटो ते रिण चुकावे २ अब बा प किणनें बरजे अने किण ऊपर राजीहोय इम पूछे तेहनी रहस एछे पहलाने बरजे १ दूजा ऊपर राजी होवे २ जिम कसाई परमुख बकरानें मारछे ते तो बैर लेवेछे अने बैर करो ते रिण चुकावेछे ते भणी साधु श्रावग मारताने बरजेतो तेहनो रिण किम क टे इसो दृष्टांत देवेछे तेहनो उत्तर अहो दुरबुद्धी इण थारे लेखेतो पशुपंखी आरजानें पकरी होयतो छुडावणी नही १ साध साधवी रोगमे पडा होयतो वैयाबच्च करणी नही बेदनी घणी निरजरे तिणलेखें २ साधु साधवीने भुख त्रिषानो परीसो होयतो श्रा वकने आहार पाणी बहरावणो नही परीसामे कर्म घणा निर्जरे तिण लेखे ३ इत्यादि अनेक युक्तिछे थारा द्रिष्टांतरे लेखे सर्व दया धर्म विछेदत होयजा य १०९ तथा वादी कहिस्ये आप २ ना करम क री पचेछे किण २ नें छुटावसो तेहनो उत्तर जे आ पणे बस पहोता तेहनी रिख्या करसी जिम अनंता जीव डूबेछे पिण साधुकने बाणी सुणस्ये तेहने तार स्ये ॥ ११० ॥ वली बादी कहेछे जीव बचायामे धर म होतो तो नेमनाथजी पशु छुटाव्या किम नथी पशु नें देखी पाछाहीज फिरगया पिण छुडाव्यातो नथी ते उत्तर अहो तुमें सूझतो नथी अंतर हीएमें जे

उत्तराध्ययनमे पाठछे २२ में अध्ययनें पशूवाना बाडा देखानें नेमनाथजी सारथीनें पूछ्यो (कस्स अठाइमेप्पाणा ए ते सवे सुहेसीणो वाडेहिं पिंजरेहिं च सन्निरुद्धा ए अत्थेहं १६ अहसारही तउ नण इ ए एन्नदाउपाणिणो तुज्झं विवाहकज्जंमी नोयावय ब हु जणे १७ सोऊण तस्स सोवयणं बहु पाणि वि णासणं चिंते इसे महापन्नें साणुकोसेजिइंहिय १८ जइ मज्झं कारणाए हणंति सुव हुजिया नस्मे एयं निस्सेसं परिलोगेन्नविस्सइ १९ सो कुंफलाण जुय लं सुतगंच महायसो आनरणाणिय सवाणि सारहि स्स पणाभए २०) इहां कह्यो नगवंत सारथीना ब चन सुणीनें अनुकंपा दया करी जीवाना हित बांछे अनें १९ मी गाथामें स्वयंते पोतायनी दयाछे हिवे त में कह्योछो जे जीव नही बंचाया पोतेंहीपाछा फिरा छे ते कहो फिरया ते तो आपणी आत्माना हितु वां छे पिण जीवाना हितवा किम हुया ते कहो तथा त में कहस्यो जे नही मारया ते नणी हेतु वांछे तो ठी क पिण (जई मज्झं कारणाए) ए पाठछे तथा आ पणें अर्थे जीव हणे तेहने वरजणो कह्योछे ते साख आचारांग २ अध्येंन उद्देसे ९ में [सियासे परो कालेण अणुप्प विठस्स आहाकम्मियं असणंवा ४ उव करेज्जवा उयखडेज्जवा तंचेव गातिउ तुसणीउ उ वहेज्जा आहमेव पचइं खिस्सामी माइठाणं संफासे

नो एवं करेज्जा) इहां इम कह्यो कोईक ग्रहस्त सा धूना सगपणना रागे करी आधा करमी आहार नि पजावे अने साधू जाणें हिवणातो नही बरजुं मोनें देसी तरे निखेदसुं इसोजाणी मोनें रहेतो कपटाई लागे तो स्युं करे [सेपुव्वामेव आलोयज्जा आउसो तिवा नगिणितिवा नोखलुमे कप्पई आहाकाम्मियं असणंवा ४ नातयवा पाइतयवा माउवकरेहिं माउव खेडेहिं सेसेबंनव दत्तस परो अहाकम्मियं असणंवा४ उवखमेत्ता अहद्दलएज्जा तह पगारं असणंवा ४अ फासुयं लाभेसंते नोपमिगाहेज्जा] इहां कह्यो पहलें ही बरजे मतकरो मतरांधो इहां जोवो ने साधूजी आपणे अर्थे हंस्या करता बरजेछे तो नेमनाथजी प शुवानें मुकाव्याहीज जाणज्यो बले दसवीयाल अ ध्येन ५ उदेसे १ में [सम्मद्दमाणीपाणाणी वीयाणि हरियाणीए असंजमं करंनच्चा तारिसंपरिवज्जए२९] इहां इम कह्यो साधूनें आहार देवानणी ग्रहस्तणी बेइंद्रीयादिकनें दमती थकी बीज अने धान हरी ते दरभादिकनें दमतीथकी असंजम ते साधु निमतें सावज्जनी करणी करती थकी एहवो जाणीने साधु ते स्त्री परतें बरजे यो असंजम मतिकर इहां बरज वो चाल्योछे तथा तुम इहां इम कहस्यो इहांतो आ हार लेणो बरजे तो तुम्हारे लेखे पाठते आगे ठाम ठामछे (दिंतियंपडि आईख्के नमे कप्पई तारीसं)

एहवो तो नथी तो जाणज्यो इहां स्त्रीनें आरंभ क
रता बरजीछे तो नेमनाथनें पशु मुकावी दिख्याली
धीछे तथा तमे कहसो छोडाव्यानो पाठ नथी ते उ
त्तर—बरसी दाननो इहां पाठ किहांछे पिण जा
णजो तीर्थंकर होसी ते संवछर दान देसीहीज योही
नेमछै ॥ १११ ॥ वले वादी कहेछे दया उथापेछे
मेघकुमार पूर्वे हाथीनें भवे एक सुसलारी दया अ
नुकंपाकीधी ते चालीछे पिण माडलामेंतो घणाजीव
बचावावे त्यारी अनुकंपानही कही ते उत्तर अहो
तुम सरीखा सूत्रना अजाणछो ते सूत्रना शब्दनें
समजता नथी पिण जोवो ग्याता १ भगवंत मेघ
कुमारने कहेछे हे मेघ तुम पूर्व भवे (जेणेव मंडले
तेणेव पहारत्थ गमणाए तत्थणं अन्ने बहवे सीहाय
वग्घाए वग्गए दीईया अछा तरछा परासारा सियाला
विराता सुणहा कोला ससा कोकंतिया चित्ता चिल्लला
पूर्वं पविठा अग्गिभया भिदया ए गय उविल धम्मेणं
चिठंति तत्तेणंमेघा जेणे वसे मंडले तेणेव उवागछई
२ त्ता तिहिं बहूहिं सिंहेहिं जाव चिल्लय हिय ए गय
उविल धम्मेणं चिठंति तत्तेणं मेघा तुम्मं पाएण गत्तं
कंडुइ सामिति कट्टुपाए उख्यिते ते सिंचणं अंतर
सि अन्नेहिं बलवंतेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे॥२॥ सस
ए अणुप्पविठे तएणं तुम्मे मेहाग्गइ कंडुइ २ त्ता
पायपडिनिखमिस्सामि तिकट्टु उ तंससयं अणुपविठं

ससंपासासि पाणाणुकंप्पयाए नुयाणुकंपयाए जीवा णुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए सेपाय अंतराचेव संधारिए णोचेवणं णिखित्ते तत्तणं तुम्मे मेहा ताउ पाणाणुंकंप याए जाव सत्ताणुकंपयाए संसारे परितीकय माणुसा उयए निबंधे) इहां पाठमेंतो पाणाणं ४ इत्यादि ब हु बचनछे तो ४ जाणज्यो सुसानें देखीने सर्वनी अनुकंपा आईछे जो एक सुसानी अनुकंपाहोयतो (सस्ससस्स अणुकंप्पणठयाए) इम पाठहोवे ते सा ख नगवती सतग १५ में गोशालानी नगवंत अ नुकंपा कीधी ते पाठ (तएणं अहं गोशाला तव अ नुकंप्पणठयाए) इहां एकनी अनुकंपा कही वलीज्ञा ता १ धारणीराणी (तस्सगनस्स अनुकंप्पणठया ए जयं चिठई जयं आसेणति ययं सुविति आहारं पियणं आहारे माणी) इत्यादि इहां पिण गर्ननी अनुकंपा कही अंतगढमां हरिणगमेखी देवता सुल सानी अनुकंपा करी कही बले कृष्ण डोकरानी अनु कंपा कीधी कही बले उत्तराध्येनमे हरकेसीनी अनु कंपा कीधी कही तो जोवो इत्यादि अनेक ठामें तेह नी अनुकंपा कीधी तेहना नामछे तो सुसांनी ठामें सुसानो नाम किम नथी पाणाणं ४ इसो बहु बचन नों पाठछे तो जाणजो जेतला मांडलामें निजरग्या दीठा ते सर्वनो पाठछे तेहनी साख ज्ञाता १८ में (त त्तेणंतस्स धम्मई रुईस्स इम्मेयारुवे अज्झत्थिय जई

त्ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंसि विढुंसि पखि तंसि अणेगाई पिपीलिगा सहस्साति ववरोविज्जंति तंजईणं अहंएयंसालितियं थंफिल्लंसिसवंणिसरामि तो णं बहुणं पाणाणं ४ बहु करणं भविस्सति तंसयं ख लुममेयंसालियं जावगाढं सयमेव आहारित्तए ममं चेवणंए सरीर एणंणिद्याउ तिकट्टु) इहां पाठमें बहु णंनो पाठछेहीज बले किडयां सिवाय उर पिण घणा जीवनी हिंस्या जाणी धर्मरुचीजी जहरनो आहार खायोछे तो जाणजो मेघकुमार पूर्व भवे घणानी अ नुकंपा कीधी संभवेछे ॥प्रश्न ॥ ११२ ॥ तथा तुम क होछो जे अनुकंपा आपरी करवी पिण पारकी कर वी किहां कहीछे ते उत्तर अरे अज्ञानीयों आपकी अनुकंपातो सुयगडांगमें १७ में अध्येनें कहीछे (य वंसेभिक्खुः आतठी आयहिते आयगुत्ते आयजोगे आय परक्कमे आयरखीय आयाणुकंपए) इम इ हां आत्मानी अनुकंपाकरे ते आत्मानी जन्म जरा मरणना दुःख थकी छुटावे इम कह्योछे पिण भगवंत आदिदेई पारकी अनुकंपा करीछे ॥ ११३॥वली के ईक वादी इम कहैछे जो भगवंतनी पहिली वाणी खाली गईछे तिहां देवता परमुख मिल्याछे तेहने ज ती धर्म तो आवे नथी पिण भगवंत इम कहता अ हो देवता साराद्वीप समुद्रामें मछ गिलागिल लगरही वे हजार हजार जोजनरा मछछे ते अनेक मछने

खाईनें पेट भरेछे जीवानें मारेछे ॥ तो तमें जाउ जी
व बचाउ तो घणो धर्म होसी इम कहतातो देवता
मानता धर्म करता तो वांणी खाली क्यानें जावती
इमतो कह्यो नथी ते उत्तर अहो कुबुद्धी थारा मनमें
मोहनीना प्रजोगथी अनेक विभ्रम उपजेछे पिणथारे
लेखेंतो भगवंत कहता अहो देवता श्रमण साधूनें ४
प्रकारे आहार देवानु घणो लाभछे तो तमें घर घर
में जाई आहार सूझतो राखो तो घणो गुण नीपजे
छे इम कहता तो देवता तुरत यो काम करता पिण
थारे लेखें जीवबचायामें धर्म नथी तिम साधूनें आ
हार देवामें धर्म नथी तो अहो कुबुद्धि भगवंत तो उ
पदेस धर्मनो दीधोछे पिण देवतासुं तो चारित्त धर्म
होय नही अनें मनुष तिहां पिन होता नही ते माटे
वानी खाली गईछे पिण तुम खोटो चोज दे दया उ
थापोछो ते किम उथापसो सिद्धांतमेंतो दयाहीज सा
रछे ॥ ११४ ॥ तथाकेईक इम कहेछे जे साधू नावा
में बैठाछे तिहां नावामें पाणी आवतादेखी साधू ना
वडीयानें जणावेतो लोक कुसलखेमें घरें आवे जो
जीव बचायामें धर्म होय तो साधू बतावे क्यो नही पिण
जीव बचायामें धर्म नही तिणसुं साधू पाणी आवता
बतावें नही तेहनो उत्तर–आचारंग दूसरे अध्येयन
तीसरे ईरज्याध्यायनमें उदेसे १ (सेभिक्खुवा २
णावाए उतिंगेण उदयं आसवमाणं पेहाए उवरुवारिं

णावां कच्चलावे पेहाए णो परं उवसंकमितु एयंबुया आऊसंतो गाहावती एतं तेणावाए उदयं उतिंगेण आसवति उवरुवरिं णावाकज्ज लावेतिय तप्पगारं मणंवा वायंवा णोपुरउकटु बिहरेज्जा) इहांतो साधू नो कलप नथी पिन जो साधू नावडीयानें पाणी आ वतो बतावेतो नावडीयो इम कहेछे तु मुझनें बतावे तो तुं पाणी रोके किम नही जद साधू कहे मुझनें क लप नथी जद नावडीयो रीसकरी साधूनें पाणीमे पटके तिण कारण बतावे नही तथा बतावेतो पाणी नी हिंस्याघणी होय ते साधूने लागे पाणी उलिचे ते माटे वली साधुने तो जीव रिख्या कारणे मोन करवी कहीछे आचारांगे ईरजाध्येने ३ उदेसे ३ (सेभिखुवा २ गामाणंग्गमं दुईज्जमाणे अंतराविसे पाफे पथिला गछेज्जा तेणं पाडिपथिया एवं वदासी आउसंतो सम णा अवियाइं एतो पडिपहे पासह तंजहा मणुस्संवा गोणंवा महिसंवा पसुंवा पखिंवा सरिसिवंवा सीहंवा जलयरंवा संतुम्मे आइख धदंसेह तं नो आइखेज्जा णोदंस्सेज्जा णोतंसतपरिणं जाणेज्जा तुसीणीउवहेज्जा जाणंवानोजाणंति वदेज्जा ततो संजयामेव गामाणु गामं दुतिज्जेजा) इहां पाठ मध्ये कोई साधूनें पंथ मां पूछ्यो हे साधू तोनें हिर्ण परमुख मिला होयतो तावो जद साधू जीव रिख्याभणी मोन साझे पिण इम न कहे जे मुझने मिलाछ तो इहांही जीव रिख्या

निमत्तें मोन साधवी कही अने नावानें अधिकारे पि
ण अप्पकायनी रिख्याभणी मोन साधवी कही अ
नें जो बोलेतो बचन जोगमें सावद्य लागे ते माटे
मोन कहीछे पिण साधु इम जाणे जे हुं पाणी आव
तो बतावसुंतो ए लोक बच जावसी ते माटें हूं नही
बतावूं इम चिंतवेतो साधूनें दोषलागे ते भणी इमतो
नही चिंतवणो अनें कलप नही ते माटे नही बोलवो
॥ ११९ ॥ तथा केई एक इम कहेछे जे साधू के
हनो जीवणो वंछे नही बंछे तो पाप लागे वले साधू
आपणो जीववो वांछे तोही पापलागे तो पारका जी
वणो किमवंछे इम कहेछे तेहना उत्तर प्रथमतो साधु
जी सूझतो आहार पाणी गवेषीने करे ते स्याभणी
(संजम भार वहण ठाणाएभुजेज्जा पाण धारणठया
ए) इहां कह्यो जे प्राण धरवानें अर्थे जीवतव्य रा
खणनें काजे आहार करेछे १ वले उत्तराध्ययन २६
में गाथा ३३ पद ३ (तहपाण वत्तियाए) इहां पिण
जीवतव्यने निमत्तें आहार करेछे २ बले दसबियाल
अध्येन ६ उदेसे १ गाथा २९ पद ४ (साहुदेहस्स
धारणा) इहां पिण देह धरवानें अरथे साधू आहा
र करेछे ३ वलि दसवीयाल अध्येन ५ (साणंसुइयंगा
वं दित्तं गोणं हयंगयं संडिभंकलहंयुधं दूरउ परिव
ज्जए) १२ इहां कह्यो स्वान १ व्याइगाय २ मदो
न्मतबलद ३ घोडा ४ हाथी ५ रमता बालक ५ रा

ऋनो संस्थान ७ संग्राम ते शस्त्रनो संस्थानक ८ तथा पूर्वे कह्या ते स्वान परमुख लडता होय तिण स्थानक ८ ए ८ ठांमें साधू नही जाय ते प्राण राखवानें अर्थे ४ इत्यादि अनेक ठामें साधु आपणो संजम जीतववंछेछे बले ठाणागे ५ में (हयणवा गयस्सवा दुठस्सवा आगछमास्सभीय एयंते उरमणुप्प वि सेजा ३) इहां कह्यो जे साधु हया दिकने देखीने राजाना अंतेवरमें पैसेतो आज्ञा उलंघे नही इहां पिण आपणो जीतव बांछयोछे ५ बले आचारांग २ अध्येन ३ उदेसे ३ नावानें अधिकारे साधु इम जाणयो मुझनें एह पाणीमें पटकस्ये इम जाणीनें [सेपुवामेववदेज्जा आउसंतो गाहावती मामेतो वाहाए गहाय णावातो उदगंसि पखिवेह सयं चेवणं अहंनावातो उदगंसिउगाहिस्सामि] इहां पाठमध्ये कह्यो साधु नावडीयानें बरजे मोनें पाणीमें नाखो मती इहां पिण जीवतव्य वंछ्योछे ६ बले ठाणांग ५ मे उदेसे २ पांचकारणें साधू चोमासामे पजुसणा पाहिली विहार करे ते पाठ [भयंसिवा] ते राजादिकने भयें तथा बैरीनें भये १ (दुभिक्खंसिवा) ते भिक्षा न मिले तो २ पवहेज्जमाणंवा ते ३ उदयो० पाणीनो प्रवाह आवतो जाणीने ४ कोई अनार्य आवता जाणीनें ५ इहां पिण साधू जीतव वंछेछे ७ बले कारण पम्ध्यां उषधादि लेवेछे ८ इत्यादि घणा सूत्रामें साधूजी सं

जम जीवतव्य बंछता कह्योछे ॥ ११६ ॥ इहां वादी कहेछे सूत्रमे तो साधूने यहवो कह्योछे (जीवियासा मरणभय विप्पमुक्का) तो इहां जीतवनी आसा न रा खवी कही ते उत्तर इहां तो आसा तृशनारूप जी वणो नही वांछे श्लाघताभणी जे हुं जीवूंतो रुडो मा हिरी महिमा पूजा घणीछे ते माटे इसो जीतव आ स नही राखे अने मरणभय ते पिण नही राखे मरण स्युंतो स्युं होसी इम नचिंतवे नहीतरतो भगवती सतग ९ उदेसे ३३ में जमाली माताने इम कह्यो हे माता हुं [संसारभउविग्गे भीएजम्मण मरणे णं] इहां तो मारवानो भयकीनोछे तिवारे संसार छूटोछे तो जाणजो साधु आपणो संजम जीतव वंछे छे ॥ ११७ ॥ वली वादी कहेछे पारको वंछवो किहां चल्योछे ते उत्तर ज्ञाता अध्येन १६ मे कह्योछे धर्म रुचि मुनिराज नागश्रीना घरथकी कडवो तुंबो ले ई गुरांने दिखायो जद धर्मघोष आचार्य अति गं ध जाणीने (एगबिंदुयं गहाय करय लंसी आ सादेती तिलगं खारं कडुयं अखजं अभोजं बिसभू तिं जाणता धर्मरुतिअणगारं एवं वयासि जइणं दे वाणुप्पिया एयं सालतियं जावणे हावगाटं आहारेसि तोणं तुम्मं अकाल चेव जीवियाउ ववरो विज्जसि तं गच्छहणं तुम्मे देवाणुप्पिया इम्मं सालतियं एगंतम णाबाते अचितथंडिले परिठवेहि २ अणं फासुयं ए

साणिकं असणं ४ पडिगाहेता आहारं आहारेति)
इहां धर्मरुचीनो जीववानो उपाय कह्यो तथा ठाणां
ग ५ में साधू आरजाने ५ कारणे संग्रहे पकडे ते
ग्रहीराखे ते बोल ५ पूर्वे कह्याहीजछे तथा ५ कारणे
साध साधवी एक उपाश्रये भेला रहिवो कह्योछे त
था ठाणांगे ५ मे पांच कारणे करि साधु राजाना अं
तेवरमे प्रवेसकरे (तं नगरे सिया सवउ समंता गु
त्ता गुत्तदुवारे वहवे समणमाहणा नोसंचाएति भत्ता
एवा पाणाएवा निखमित्तएवा पविसित्तएवा तेसिं
विन्नवणठयाए रायंतेउरमणुप्पविसेज्जा) तो जोउ
इहां पिण अनेरा साधुनो आदिदेई सर्व साधु वली
भगवंत सुनखत्र सर्वानुभूतिने वरज्याछे व्यवहार
माटे जीवानो उपाय करयो जीववानो उपाय कह्यो
वले व्यवहार सूत्रने ५ मे उदेसे (णगांथंचणं राउ
वा वियालेवा दीहपुठो लुसेज्जाते इत्थी एवा पुरिसे
उमज्जेज्जा पूरिसोवा इत्थीए उमेज्जा येवंसे कप्प
ति येवंसेचिठंति परिहारंचणो पाउणोति थसकप्पो थे
र कप्पियाणं) इहां कह्यो जे साधवीने सर्प डस्यो
होयतो पुरष साध्र तथा ग्रहस्त पासे तिगछा करा
वे अने साधूने डस्यो होयतो आरज्याने तथा ग्रह
स्थनीने पासे तिगछो करावै इम करेतो थेवर कल
प माथी भ्रष्ट न थाय तो जोउ इत्यादि अनेक ठा
मे पर साधूना जीववानो उपाय कह्यो ॥ ११८ ॥

हिवे इहां बादी षिष्ट हुया थकां इम कहेछे साधु सा
धवीनो संजोग एकछे ते माटे जीववानो उपाय क
रयामें असे पाप किहां कहांछां ते उत्तर अहो अली
क बचनना बोलणहार तुमें साधु साधवीनो उपायमें
धर्म जाणोतो मर्म किम कहोछो गजसुकमालनी अनु
कंपा नेमनाथजी नही कीधी बीरनी अनुकंपा देव
ता न कीधी जो धर्म जाणतातो छोडावता किम न
हीं इम कहोछो तेहना प्रायछित लो आगेसु इम क
हवो साध साधवी माहो मांहिं अनुकंपा करी छुडावे
तो धर्मछे पिण तुमारा बचनरी एक धारा नहीछे ॥
प्रश्न ॥ ११९ ॥ वली बादी कहेछे साधुनी अनुकंपा
साधुकरे पिण साधुनी अनुकंपा ग्रहस्तनें करणी न
हीं ते उत्तर भगवती सतग १६ उदेसे ३ (अणगा
रस्सणंभंते भावीयप्पाणो छठं छठेणं अणिखित्तणं
जाव आया वे माणस्स तस्सण पूरि छमेणं अवठं
दिवसं नो कप्पांति हत्थंवा पायंवा वाहंवा ऊरुंवा आ
उटा वेतयवा पसारेतयवा पचात्थिमेणंसे अवढं दिव
सं कप्पइ हथंवा पायंवा जावउरुयंवा आउट्टा वेत
यवा पसारेतयवा तस्सय आंसिया छलवांति तेचेव वे
जे अदखु इसिंपाफेति २ त्ता आंसियाउ छिंदेज्जा से
नुणं भंते जे छिंदइ तस्स किरीया कज्जई जस्स छिथ
जइ नोतस्स किरिया कज्जई णणत्थगेणं धम्मं तरा
इएणं हंत्ता गोयमा जे छिंदइ जाव धम्मंत्तराइणं

सेवंभंते सेवंभंतेति १६।३) इहा कह्यो जे को
ई साधु ध्यांनमां खडोछे अने नासिकामा हरस ल
टकेछे इतरामां वैद्यदेखीनें लगारेक साधूनें हेटो पा
डीने हरस छेदीतो वैद्यने शुभ प्रकृतिनो बंधवारूप
क्रिया करी साता दीधा माटे १ अने साधुजी कटावा
रूप असाता गमावारूप क्रिरिया न करी २ पिण का
टता वेदनी होयी जद ध्यान रूप धर्मनी अंत्राय पडी
साधूनें ३ तो इहां वैद्यनें साधुनी साता होयवानी बु
द्धिछे ते माटें शुभ प्रकृतिनो बंधपडे हिवे इण पाठनो
अर्थ केईक ठंधमती इम करेछे वैद्यनें पाप रूपणी
किरिया लागी ॥ १२० ॥ साधूनें ध्यांननी अंत्रायदी
धी ते माटे तेहना उत्तर इहां पाठ मध्ये तो अंत्राय
दीधानो पाठनथी (धम्मंत्तराइणं) येह पाठछे ते
अंत्राय पडिवानु पाठछे ते किम कोइक ग्रहस्तसाधूनें
आहार आपता असूजतो थयो तो हिवणा साधूनें
आहारनी अंत्रायपडी के ग्रहस्थे अंत्रायदीधी ते क
हो १ वले साधू वखाण करता घणा श्रावक सुणतां
किणेक आय कह्यो स्वामी तुमनें तुम्हारा गुरू ता
कीदसुं बुलावेछे इम कहता विहार करेतो सुणणवा
लाके अंत्राय पडी के उण कहणवाले अंत्राय दीधी
ते कहो २ वले साधू रात्रे वखान करतां घणा श्रा
वक सुणता किणहीक ग्रहस्त कह्यो स्वामी पहिर रा
त्र आइ गईछे इम कह्या थका वखान उठावेतो सु

णणवाले के अंत्राय पडी के उण कहणवालाइ अं त्राय दीधी ते कहो ३ वले कोई साधुनें आहार कर वाकी त्यारी करी इतरामे दूजा साधु बोल्यो आहार उष्ण घणोछे ते माटें धीरारहो इम कहता साधूनें अं त्राय आहारनी पडीके कहणवालानें अंत्राय दीधी ४ इत्यादि अनेक युक्तिछें तिम जाणजो वैद्यनें हरस काटिवानी बुद्धिछे ते साता होयवानी बुद्धिछे पिण धर्म अंत्राय देवानी बुद्धतो नथी वले क्रिया शब्दे पु ण्यनी क्रीयाछे पिण पापनी क्रियानथी ते किम साता थावा माटें वले मारता साधूनें बचावेतो जीवतव्य दान दीधो कहोजे तेहनी साख भगवती सतग ७ में उद्देसे १ [समणो वासएणं भंते तहारूवं समणं वा महाणंवा फासुएसणिज्जेणं असणं ४ पडिलाभे माणे किं लभइ गोयमा समणो वासएणं तहारूवं समणंवा जाव पडिलाभे माणे तहारुवस्स समणस्स वा माहणस्सवा समाहिं उप्पायति समाहिकारएणं तामेवसमाहि पडिलभइ समणो वासएणं भंते तहा रुवं समणंवा जाव पडिलाभे माणे किं चीयइ गोय मा जीवियं चयइ) इत्यादि आगें पाठछे इहां कह्यो जे श्रावक साधूनें आहार पानी प्रतिलाभे माणे तो साधूने समाधि उपजावे जिसी साधुनें समाधि दीधी तेहवीज समाधि आप पामें वले कह्यो जे साधूनें आहार पानी दीधो तो जीवतव्य दीधो कहीजे तो

जोवोनें आहार पानी दीधां जीवतव्य दीधो कह्यो तो साधूनें मारता बचावेतो जीवतव्य दीधो किम न कहीजे वली साधूनी असाता मेटया पिण जीवत व्य दीधो कहीजे इण लेखे वैद्य पिण साधूने साता दीधी कहीजे १ बली साधूनें पाणीमें वहतां डुबतां थी ग्रहस्थ काढेतो साधूनें जीवतव्य दीधो कहीजे२ साधूनें अग्नमासुं बलताने ग्रहस्थ काढेतो साधूनें जी वतव्य दीधो कहीजे ३ किणी अनार्जें साधूनें बांधी नें मूक्योछे हिवे ग्रहस्त बंधणथी छोडेतो साधूनें जीव तव्य दीधो कहीजे ४ किणी अनार्यें साधूनें बांधीनें रूंखके बांध्योछे हिवे ग्रहस्त बंधनथी छोडेतो साधूनें जीवतव्य दान दीधो कहिजे ५ बले साधू ग्रहस्तके घर गयो थको जवलखाई हेठो पड्यो अचेत होय ग यो हिवे ग्रहस्त साधूनें बैठो करे तो साधूनें जीवतव्य दान दीधो कहीजे ६ इत्यादि अनेक युक्तिछे थोडो कह्यांथी घणो समझवो पिण साधु ग्रहस्थनी चाकरी अनुमोदेतो प्रायच्छित आवे ग्रहस्तनो साहज बंछ णो नहीं सूत्रमां ठाम ठाम कह्योछे जे साधू ग्रहस्त नें पासे कहीने वैयावच करावे तो प्रायच्छित आवे पिण (सहसातकारे) अर्थात् अचानक करण वा लाने स्यूं थयो ते कहो ॥१२१॥ इहां वली वादी इम कहस्ये जे साधूनें (अप्राशुक) अर्थात् सचित सहि त आहार पाणी दीधातो अल्प आऊखा बंधवो क

ह्योछे तो साधूनें पाणीयादिक माहिथी काढताहीज अलप आउखो बंधेछे ते उत्तर अहो दुरबुद्धी थें अप्रासुक आहारनो न्याय मति लगावो अप्रासुक अर्थात सचितादी आहार पाणीनो नेमछे ते जाणीनें न लेवो अनें अजाणें आयो होयतो ठीक पड्यासूं परठदेवे तथा भोगवे तथा अणाशुद्धिथी शुद्ध जाण्या तो भोगवे ते आचारांगमें घणे पाठछे पिण दसाश्रुत खंधमध्ये कह्योछे जे पडिमा धारी साधूनें अग्नमांहिथी गृहस्त काढेतो सुखें निकले पिण प्रायछित कह्यो नथी थारे लेखें अप्रासुक तथा असूझतो आहार पाणी नलेवो तिम पडिमाधारीने निकलवो पिण नथी कलपे १ तथा अप्राशुक आहार अजाण पणे आयो ठीकपड्यां संभोगीनें देवो पिण न कल्पे थारे लेखें तो नदी मांहिथी वहती साधवी तथा साध संभोगीनें पिण काढवो नही बले असूझतो आहार परठेहीज थारे लेखे जिम साधूनें पाणी मांहिथी गृहस्थ काढे तो जीवत असूझतो थयो जीवणो न कल्पे ३ बले अप्राशुक आहारतो श्रावकनें विना कारणें देणो नही साधूनें लेणो नही तिम थारे लेखे लायादिकमासूं साधूनें गृहस्तनें काढणों नही अनें जो काढे तो साधूनें निकलनो नही ४ बली अप्राशुक आहार दीधा ब्रतमें अतीचारलागे अनें साधूनें अग्नादिकमेंसू काढेतो किसा बिरतमें अतिचार लागे ते क

हो ५ वली आधाकरमी आहार दिन दिन प्रतें जो गवीनें खुसी होय तो ४ गतिमें घणो रुले तिम थारे लेखें अन्न माहिसुं नीकलता पिण रुले ६ इत्यादि अनेक युक्तछे तो आहारनो न्यावतो लागतो नथी ॥१२२॥ तथा वादी इम कहेस्ये जे देवगुरु धर्म निमतें हिंस्या करवी नही ते उत्तर इमतो अमे कहां इज किंचत मात्र धर्म निमतें हिंस्या करवी नही ते पाठ (एवं खुनाणीणोसारं जंनहिं सइ किंचणं) इती बचनात् तो साधूनें काढतां जेतली हिंस्याहोय तेतली सर्व सावद्यछे अनें साधूनो काढवो ते एकांत धर्मछे अभयदानछे वली बादी कहसी जो गृहस्त साधूनें नही काढेतो किसो पापलागे अने किसो व्रत भांगेछे ते कहो आरज्यां बहतीनें साधू न काढेतो किसो पाप लागे किसो व्रत भांगे ते कहो तद कहसी संजोग भांगे नही काढेतो ते उत्तर संजोग निमितें किसी हिंस्या करवी कहीछे जीवघाततो काढण आश्री गृहस्तने पिणछे साधूनें पिणछे ते विचारी जो जो बले भगवती सतग ९ मे उद्देसे ३४ में कोई पुरषने घोडाने हाथीने सिंहने वाघ्रने बली अनेरा त्रसजीव प्राणीने इत्यादिकने हणतो थको अनेराइं पिण हणाचे इम कह्यो अने ऋपीश्वरने हणतो थको अनंता जीवांने हणे इम कह्योछे तो एक ऋपीश्वरनी रिख्या करी तिणे अनंता जीवनी रिख्या करी

कहीजे ॥ १२३॥ वली बादी कहस्ये साधुतो अनंता जीवाना पीहरछे पिण ग्रहस्थनो जीवतो अविरतमा छे तेहने छुडावेतो असंजम जीवतव्य वंछयो कही जे ते भणी छुडाणो नही इम कहेछे ते उत्तर अहो दुरबुद्धी मोह ममता करे ते पापछे पिण जीवणो बंछे तेहनो तो पाप किहांइ कह्यो नथी वली दसवे काल क अध्येंन ६ में (सवेजीवाविइछंती जिवीयंन मरि जीयो तम्हापाणवहं घोरं णिगंथावजयंतेणं १) इहां कह्यो जे सर्व जीव जीवणो वंछेछे पिण मरणो कोई न बंछे ते भणी साधूजी जीवनी हिंस्या न करे वली सूत्रमें ठाम ठाम कह्योछे (माहणो माहणो) किणही जीवनें मतिहणो इहां जीवनी रिस्या करवा नो बचन कह्योछे तथा मारतां थका बरजवानो बच नछे बले एहनो अर्थतो बरजवानोछे किणे अनार्ये कोई तिर्यंचादिकने गाढे बंधन बांध्योछे इतरामें साधूनो उपदेसे करुणा ऊपनी पछे जायछोड्यो तेह नो स्युं फल तथा छोडयो ते काम अज्ञा माहिलोके बाहिरलो ते कहो ॥ १ ॥ कोई अनार्य कसाईरी जा त गऊनें विणासतां कोई पुण्यवंत जीव रोटी तथा रूपीयो देईने करडासूंस कराय दीया गऊनें छुडाय दीधी पछे कसाई दुजो जीव पिण मारयो नही अब उण छुडावण वालानें स्यूं होय ते कहो २ कदाच छु डावणरो उपाय करतां कोई जीव मुवो तिणरो पाप

मुख गिणोतो थाने आहार पानी दीधो पेटमें क्रिम ऊपना दिसां गया मर्ण पाम्या थारे लेखे लेवाल दे वाल दोनोही डुब्या ॥ ३ ॥ वले अंतकृत गढमां क ह्योछे श्री कृष्ण महाराजनें जरद कुमरने बाण मा र्यो पछे श्रीकृष्ण कहे हे भाई जा नहीतो भलभद्र तु ऊनें मारसी ये उगारवानी सिखामण दीधी ए केही ले स्या शुभ कि अशुभ ते कहो पछे नरकनी आनपूर्वी आवी तब कह्यो जे मुऊनें मारीने वली ए जीवतो किम जासी ए भाव आव्या तिवारे ७ सागरने आ उखे गया इत्यादि दया ऊपरे अनेक प्रश्नोत्तरछे ॥ वले दसाश्रुत खंधमा पडिमाधारीने अधिकारे वल ता पडमाधारी साधूनें कोई कुरणावंत उत्तम प्राणी काढेतो न कल्पे पोतानी खातर नीकलवो पिण ए तलो विशेष आगला प्राणीनी अनुकंपा माटे नीक लवो कल्पे इहां जोवो साधूइं अनेरानी अनुकंपा क री के न करी साधू अगनी मांहिथी न नीकलेतो ते पुरष जो अगनीमा बले तो कांई साधूना ९ जोग मा पाप न लागे पिण साधू ते पूरष काढनहारनी अनुकंपा माटें सुखें नीकले ॥ १२४ ॥ वले बादी क हेछे जो रुपियादेइ जीव छुडावेतो तारे रुपीयाना बीजा तीर्यंच मोल लेईने मारे तो छोडावण वालाने पाप ला गे तेहनो उत्तर भगवती सतग ५ में उदेसे ६ में क ह्योछे जे कोई वध पूरष पंखीने हणवामाटे बाण ना

खेंचे ते पंखी बाणथी मूवो तिवारें ते बाणना जीवनें अनें धनुषना जीवने अनें नाखणहारनें ए ३ ने पांच पांच लागती क्रिया कही अने तेहिज बाण पो ताना भारथकी हेठो पड्यो तिवारे पडता विचाले अ नेरो जीव हणयो बीचलो जीव मुत्रं ते आश्री बाणना जीवनें धनुषना जीवनें पांच पांच क्रिया लागी कही अनें बाणना नाखणहार पुरषने च्यार क्रिया लाग ती कही प्राणातिपातरी क्रिया न लागी इम कह्यो छे ॥ हिवे जोवो जे जीवमारवाना परणाम हता ते जीव आश्री पांच क्रिया लागती कही अने जेमा पो तानो हणवानो जोग नथी तो ते च्यार क्रिया न क ही हिवे उगारे तेहनें केटली क्रियालागे ते कहो उ गारण वालानो ध्यान च्यारमां केहो छहलेस्या मांहि ली केही लेस्या जोग अशुभके शुभ ते कहो वली भगवती सतग ५ में उदेसे ६ में कह्योछे (गोयमा जेणपरं अलीएणं असंतएणं अभाखाणेणं अभाइख ई तस्सणं तह प्पागारा कम्मा कज्जए) इहां कह्यो जे जेहवा झूठ बोले जेहवा आलदेवे तेहवा आवते भवे तेहवाज फल पामें पिण एतलो विशेष कोई मृ गप्रछानें समे मृग रक्षादिक कारणे झूठ बोले ते द यांना परिणामनो झूठ टालीने बीजा झूठना माठाफ ल कहो इहां प्रभुयें पिण ए झूठ टालीने माठा फल कह्या इहां झूठ बोलवानी प्रभूनी आज्ञा नथी पिण

ए पुरपने झूठ बोलवाना परणाम नथी मृगादिक जी व राखवाना परणामछे ते माटे कोई एक ग्रहस्त साधूनें पात्र भरीनें घृतनो दान दीधो कोईके कह्यो हे भाई तुमे धन्यतो आरीते पात्र भरीने घृतादिक दान देवोछो तिवारे तिण दातारे कह्यो हे भाई हूं तो स्यूं दान दीधोछे लगारेक दान दीधोछे हिवे ए दातारने ए दान दीधाना स्यूं फल लागे के जेहवो झूठ बोल्यो तेहवा फलपामें जिम जीव दया ऊपर जाणवो ॥ कोईक ग्रहस्त साधूने सरीर रोगादिक जाणीने श्रावके महा विरस कडु कसायेलीया परमुखनी उषधी दीधी उषधी लेतांज साधूने वमन बिरेच अवस्था थई घणो दुःख पाम्यो पछे साता थई रोग मिट गयो हिवे ए दातारने साधूने असाता ऊपनी तेहना पाडुया फल लागे वे, मुनीने साता दीधी तेहनो फल पामें ते कहो करतव्य परिमाणे फल लागे के जेहवा मन परिणाम होय तेहवा फललागे ते कहो जिम जीव उगारवानो परिणाम दयानोछे तेहवा फल पामस्ये ॥ प्रश्नोत्तर ॥ १२५ ॥ अथ दान आश्री प्रश्न लिख्यते ॥ केतलाइक दान विध्वंसी जीव कहेछे साधू विना श्रावकथकी मांडी सर्वने दान दीधा एकंत पाप कहेछे तेहना उत्तर भगवती सतग ८ में उदेसे ६ में (समणो वासगस्सणं भंते तहारुवं समणंवा माहणं वा फासूय सणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमं प

डिलाभ्ने माणस्स किं कज्जई गोयमा एकंत सोसे णि जरा कज्जई नत्थियसे पावकम्मे कज्जई १ समणो वा सग्गस्सणं भंते तहारुवं समणंवा माहणंवा अफासु यसणिज्जेणं असणं पाणं खायमं सायमंवा पडिलाभ्ने माणे किं कज्जई गोयमा बहु तरायसे निज्जरा कज्जई अप्पत्तरायसे पाव कम्मे कज्जई २ समणो वासग स्सणं भंते तहारुवं असंजय विरय पडिहय पच्चखाय पावकम्मं फासुएणवा अफासुएणवा एसणीज्जेणवा अ णेसणिज्जेणवा असणं ४ पडिलाभ्नेमाणे किं कज्जई गोयमा एगंत सोसे पावकम्मे कज्जई नत्थिसे किंचि णिज्जरा कज्जई ३) इहां तीजा पाठमां तथा रुप अ संजतीनें दान दीधां प्रतिलाभ्याथकां स्युं पामें एतले प्रतिलाभ्न ते गुरुनी बुधे देवेतो पाप कह्यो पिण अ नुकंपा माटें दान दीधां पाप नथी कह्यो गाथाटीका माहे (मोखत्थं जंदाणं न पियस विही समरकाउ अनुकंपा दांन जिणेहिं कयाइ नपडि सिद्धं १) इहां पिण इम कह्यो जे गुरु बुधे आपे मोक्षहेते जाणीने तो मिथ्यात्वलागे वले वादी कहेछे ए तो तुम्हे जुक्त मेलोछो तेहनो उत्तर एह तीन पाठ लगतां दान दी धानाछ जेहवो असंजतीना दानमा पाप बोल्यो ए पाठ जेहवो कह्यो तेहवोज मानसो काई हेतु युगत मानसो नहीतो बीजा पाठमां तथा रूपसाधूने प्राशु क अप्राशुक एसणीक अणेषणीक आपेतो अल्प

दोष बहु निर्जरा कही ए पाठ जेहवो बोलोछो तेहवो मानोछो के कोई इहां कोई युक्ति मानोछो कारणे नि कारणें जाणे अजाणें इहां अजाणानी तथा कारणें युक्ति मानोछो तो तीजा पाठमा युक्ति साचीछे ते किम न मानो वले दूजो पाठ तुमने संक्या सहित नापेछे तो तीजा पाठ निसंक किम मानो वली तथा रूप असंजतीने दान दीधा पाप होवे तो ठाम ठाम श्रावके असंजतीने दान किम दीधो तथा इहां तीन पाठमे देवालतो श्रावक अनें प्रतिलाभ शब्दते गुरुनी बुद्धे देवेतो असंजतीने गुरु जाणीने देवेतो मिथ्यात्वरूपीयो पाप लागे पिण ए अनुकंपानो प्रश्न नथी ॥ १ ॥ तथा सुयगडांग सुत्तस्कंध २ में आद्र कुमार ब्राम्हण प्रते कह्यो ॥ (सिणायगाणं तदुवे सहस्से जेन्नोयतिसिंय कुलालयाणं सेगन्हई लोलुयसंपगाढे तिवाभितावे नरगाभिसेवी १) इण काव्यमा इम कह्यो ब्राम्हण जीमाड्यां नरक पहुंचाडे पिण धर्मनी बुद्धे मुक्तहेतें गुरुनी बुद्धे ब्राम्हणे कह्या तिवारे निखेध्योछे ब्राम्हणे पोतानें जिमाऱ्या मानवे मोखवतावी तिवारे आद्र कुमारे ए मिथ्यात्वीनी बुद्ध जाणीने निषेधी ब्राम्हणे पहिलां मोख देखाडीछे (सिणाए गाणंतु दुवे सहस्से जे न्नोयए निति एमाहणाणं ते पुराय खंधस्स महं जणिवा भवंति देवा इति वेयवाउ १] एतले सूत्र १ स २ जिन ३

त्याग ४ ए च्यार बोल मुक्ति हेतुछे जिण मारगमा॥ ते ठामें वेद १ ब्राम्हण २ विष्णु ३ जोग ४ ए च्यार बोल मानवा सारु देखाडता वली कह्यो ब्राम्हणा कहेछे हे आद्र कुमार तुम सरीखा राज पुत्रनें ब्राह्म णही गुरु करवा योगछे परं शुद्रगुरु मानवा नही ते माटे वेद विप्र विष्ण संध्या स्नान ए मुक्तिना अंगछे ए थकी मुक्तिथासी दो दो हजार ब्राह्मण जिमाडे ति वारे मिथ्यात्व मारग थकी मुक्तिनथी इम जाणीने आद्र कुमारे विलाडया तुल्य कह्यो तुमनें जिमाडीनें मोखवांछे ते नारकी जाय मिथ्यात्व मोहने उदें ए पिण धर्म हेते गुरुबुद्धें ना कही २ तथा उत्तराध्येंन १४ में नग्गू प्रोहितनें बेटाइ कह्यो (बेया अहिया नहवंतिताणं भुत्ता दियाणं तितमं तमेणं जायायं पु त्तानभवंतित्ताणं कोनामते अणुमनेज्जएवं) १ इहां कह्यो ब्राह्मण जीमाड्यां तम तमाइं पहोचाडे ते स्यां माटें कह्यो पहिलांथी पिताइं कह्योछे हे पुत्रो (अ हतायग्गे तत्थ मुणीणतोसिं तवस्स वाघायकरं वयासी इमंवयं वेयवी दोवईता जहानहोही असुयाणलोगो १) मिथ्यात सूत्रमां जे बचन कह्याछे ते बचन पोताना पुत्रनें साचा सरधावेछे अंगीकार करावेछे जे वेदना जाण मोठा रिखीसर इम कहेछे जे एतला कार्य बि नाकीधा मोक्ष न होय (असुयाणलोगो) अपुत्रीया नें लोगो कहता परलोकें मोक्ष न होय वली खोटो

मिथ्यात्व मारग देखाडेछे मोक्ष मारगनी बुद्धे (आहि ज्जवेय परिविस्स विप्पे पुत्ते परिठप्पगिह्लांसिजाया ओ छ्राण ज्ञोगे सह इत्थियाइं आरण्णगाहोहि मुणी पस त्था) एतले कह्यो एतला कार्य तुम करो अहो पु त्र पछे तुमने मुनी पणो श्रेयछे एतला बोल कार्य ए मोक्षना अंग साधकछे इम पितानुं कह्यो सांभलीनें पछें पुत्र बोल्या हे तात ए कार्य मुक्तना अंगजाणें तु में कह्यो तिम सरदहे तो नारकीयें जाय ए पिण मु क्त फल जाणेतो अनें सहिजे वेद भणया पिण नारकी इं न जाय संसारहेतें विप्रने जिमाडे तो पिण नरकें न जाय न्हायें धोये धर्म जाणेतो मिथ्यात लागे पिण सहिजे न्हायें धोये धर्म जाणे तो मिथ्यत्व न लागे न्हावें धोवेतो समदृष्टी श्रावक पिणछे पिण नारकी तो जाय नही ३ वले ब्राह्मणने जीमाड्यां नरक जा य तो इण लेखे राजा परदेसी सात हजार गावना च्यार भाग करया ज्यामे कह्यो (यगंभागेणं महइ महालयाई कूडागार सालं करे स्सामि तत्थणं व हवे पुरिसेहिं दिणवयं भत्तवियाणाहिं बिउणं असणं ४ उवखडावेति बहुणं समणाणं माहणाणं भिखुयाणं पहियाणं) इत्यादि पाठ घणोछे एमां समणमाहणनें दान दीधो कह्यो तो स्यूं परदेसी राजानें नरक जा वणरी करणी कहिवासे एतलें भगवतीना पाठनो आ द्र कुमारनो भृगू प्रोहितनो अर्थ भणाम एकजछे ए

मां अनुकंपा दान नथी मिथ्यात्वनी करणी कही ए
मां सहिज उदारपणाना गुणना दानमा ए नथी ४
॥ १२६ ॥ तथा केतलाएक कहेछे दान दीधा नंदन
मणीयार डेडको थयो ते उत्तर दान दीधा मेडको न
थयो अने दानथी मेडको होयतो दानतो घणाही श्रा
वकां दीधाछे तो सर्व अशुभ गति पाम्या जोईए
अने नंदनमनीयारतो मेडको दानथी न हुवो इणे पूर्वे स
मकित वमीने मिथ्यात्वपाम्यो मिथ्यातने भलो जाण्यो
मुक्तहेतु गिण्यो तेथी डेडको थयोछे नहीतरतो समद्रि
ष्टश्रावकने तीर्यंचनो आऊखा नही बांधे ५॥१२७॥
तथा केतलाएक कहेछे जे दान दीधा गुणहोवेतो आ
नंद श्रावके अन्यतीर्थीने दान देवाना सोगन किम
कीधा ते उत्तर भगवती सतग २ उदेसे ५ मे तुंगी
या नगरीना श्रावकना गुण वरण्या तिवारे तिहां
अवंगुयद्वारा कह्याछे ए पुण आनंद श्रावकनेछे ते
माटे अनाथ दुर्बलने तो दान देवेछे पिण मिथ्याती
अनतीरथी मिथ्यातना स्वामी जिनमारगनाद्वेषी
तथा रूपपाखंडीने यहवाने दान देवुं नही यहवो अ
भिग्रहलीधो वली एहीज अन्यतीरथीने दान देनो
पडेतो छह कारणे हां कही [राया भियोगेणं] इत्या
दि ६ कारणेछे तमां [वीत्तांकं तारेणं] यहनो अर्थ
इमछे जे हुं अनाथ दुर्बल भिक्षुने दान देवुंछुं तेमां
कंतार कहता अटवीने विषे दुर्भिक्षादिक कार्णे ते

मां जो कोई अन्यतीरथी क्षुधा तृषा पीड्यो थको आवे भिक्षुक मागणाने दान लेइ जाइतो ते दीधा नो आगारछे एतले भिक्षुकने दानतो आनंद श्रावक देवेछे इणलेखेतो अनुकंपा दान परमुख करणी ना धणीतोछे पिण एहवो नत्थी कह्यो जे हुं असंजतीने न आपुं असंजतीमां अन्य तीरथीमां घणो अंतरछे बेहुं सरीखा नथी अन्यतीरथीतो ३६३ पाखंड मिथ्यातीना दिपावणहारा जिनमारगना निंदक तेहने आपतां बांधतां आलाप संलाप करतां जिन मारगनी लघुता लागे पाखंड मारगदीपे लोक पिण इम जाणे आनंद श्रावक यहवा माहाछे तो पिण पाखंडयाने मानेछे तो कांइक खरादीसेछे इसी शंकादि दूषण घणा जीवपामे ते माटे अन्यतीरथी निषेध्या छे अने जो सर्वथा दान निषेध्यो होयतो इसो पाठ होवे [नोकप्पई अक्कप्पभिइचणं असंजय] इत्यादि ते तो नथी वली जेहवो आनंदनो आचार तेहवो १ लाख ५९ हजार श्रावकानो आचारछे अन्य तीरथीना तीन बोल सर्वने नकल्पे वली आनंदादिक तीन बोल पूर्वे बांदताहता ते टाल्या अने तुम भिक्षुक दालद्रीने रांकने अन्य तीर्थीने गिणोगे तो तुमारे लेखे आनंदादि श्रावक स्युं रांकवणी मग पर मुखने वांदताहता तो हिया थकी तो विचारो जेहनें करता हता तेहनें जे टाल्याछे एतो पांचवां गुणठा

णानी करणीछे ॥ १२८ ॥ तथा केईक वादी कहेछे जीक्कुकरांक ए अन्यतीरथीमा गिणस्यो के स्वयती रथीमे गिणस्यो ते उत्तर च्यार तीर्थवीना सर्व अन्य तीरथी अनंताछे पिण आनंद श्रावक पचख्या ते अन्यतीरथी षटदरसनना धणीछे जे वांदवा जोग कह वाइछे तेहनें नवादूं न बोलाउं मिथ्यातमें ए काम कर तो हिवे न करूं ६ ॥ १२९ ॥ तथा केतलाएक कहेछे जे श्रावक असंजतीनें दान देवेछे पिण पनरमो करमादानछे असंजतीना जरण पोषण करया होयतो तस्समिसछामि दुक्कडं तो एह पडकमावा जोगछे ते माटे देवा जोग नथी ते उत्तर इहांतो १५ कर्मादान शब्दें व्यापार वृती आजीविकाकरी जीवो नही ए अर्थछे एहनी साख उपासगदसा अध्येयन १ सातमा व्रत ना २ जेद (जोयणउय १ कम्मोउय २) जोयण कहता जोजनना पांच अतीचार ते (सचित्ताहारे) इत्यादि ५ छे अनें कम्मोय कहता व्यापारना १५ जेद (इंगालकम्मे) इती इंगालाकरीब्रेची तेहनो लाज लेई पोतानी वृती करे ते काम श्रावक न करे जे सहजे काम अर्थे घर अर्थ लावेतो (इंगालकम्मे) न कहिये इम जाव १४ बोलकरी पोतानी आजीव का न करवी तिम पनरमो बोल (असई जणपोस णया) तेह स्यां बुद्धें हिंसकजीवनें पोषे कुर्कट मार्जा र शुक कूकर इत्यादि तथा दासी दास पोषण जाडा

लेवा माटे तथा गणिकाने पोषे स्वार्थ भोग हेते त
था कुतरा पाले सिकार हेते हिरण परमुख जीव ह
णवासारु इत्यादिक १५ पंदरमो करमा दानछे पि
ण कोई दान देवो ते पनरमो कर्मादान नथी अनें
दान देतां करमा दान लागे तो दाननो देणहारनें सा
तमो वृत मूलथीज रहे नही तेहनी साख भगवती
सतक ८ में उदेसे ५ में जे श्री वीरना श्रावकछे तें
१५ कर्मादान त्रिविधे त्रिविधे वोसराव्याछे ते पाठ
(जे इम्मो समणो वासगा भवंति तेसिंनो कप्पंति
इम्माइं पन्नरस्स कम्मा दाणाइं सयं करे तयवा कार
वे तयवा करंतंवा अन्नं समणु जाणत्तएतं) एहवाछे
ते माटे दान दीधा करमादान लागेछे तो वृत किम
रहेछे वले पन्नवणा पद १ (नाणावटी) सूत्रे (वजा
जरुथाला) इत्यादि आर्य व्यापार कह्याछे त स्या
माटे पाप थोडा भणी अने करमा दान न कहीए अ
नें १५ करमादान बरज्या ते स्या माटे हिंस्याघणीछे
तथा त्रसजीव हणाछेछे ते माटे ए काम करी पेट भ
रिवो वरज्योछे ए अर्थ साचोछे अने तमे पाठ खोटो
वतलावोछो मत थापवा माटे (असंजती पोस
णया) एहवो कहोछो एक अक्षर अधिको उंगे वो
लावेछे तो अर्थनो अनर्थ थई जाय जिम कुंती पुत्रौ
युधिष्टर अनें विंदूनो आलोपथी कुती पुत्रौ
युधिष्टरथाय एहवो फेर पडीजायछे अने सूत्रमा तो

(असई जणपोसणया) एह पाठछे ते जाणज्यो वली ए अज्ञानी दानने करमा दानमा घाल्यो तो अहो अज्ञानीउ एवमो स्यूं पापछे ४ कारण नरक जावाना कह्या ४ कारण तिर्यंचमा जावणना कह्या अनें १८ पाप पिण कह्या एमां कठेई दाननो पाप घाल्यो नही तथा सूयगडांग १८ में अधर्मना लक्ष ण वखाणाछे ते इम [हणहछिंदह भिंदहकाकिणीमं साइ करेह हडिबंधण करेहिं इम्मं हत्थछिन्नं पायछि न्नं कन्नछिन्नं नकछिन्नं ऊठछिन्नं वेयछिन्नं करेह) मा हली बाहरली परषदाने थोडे अपरादें भारी दंड देवे एहवा लक्षण कही देखाडया तेमा पिण दाननी कर णी नथी कही वली नारकीना जीवनें परमाहधामी हणेछे ते पूर्वला भवना दुकृत संभारीनें देवेछे ते मा परदारागमन जीव हिस्या चोरी कपट आल निं दा प्रमुख कार्य संभारीनें वेदना देवेछे तेमा पिण दा न रूपीया अधर्म संभारीने वेदना देता न कह्या तो इहां श्री वीतरागे एहवो दानमां स्यूं पाप दीठो ते कमी दानमाज घाल्यो तो जाणज्यो जे अनुकंपा दा नने कर्मा दानमें कहेछे तेहनें एकंत जूठ लागेछे उत्त र सुत्रमाथी जाणज्यो वली परदेसी राजा केसी सम ण पासे धर्म पाम्यां तो पहिला मिथ्याती नास्तक वादी हता ते दिनना लक्षण तिहां वरणव्या (लोहिये पाणीसेउ) हाथ लोहीखरडया रहेछे अणदीठीने दीठी

कहे दीठीनें अणदीठी कहे इत्यादि (ठक्कंचणवंचण) क्रियानो धणीछे इम कह्योछे वली भगवती स तग १५ में विमल वाहन राजाना लक्षण बरणव्या तिहां (समणपडिकुला) कह्यो तेमां पिण दाननो वरणव नही जंबुदीव पन्नतीमें (अबाडचीलाया) अ नार्य राजाना लक्षण वरणव वखाण्या तेमां पिण दा न देता कह्या नथी अने परदेसी राजा धर्म मारग पाम्या तिवारे पछे दान देवो मांड्यो तो इम जाण ज्यो यह दान दीधानीकरणी आरज पुरषोनीछे पिण अनार्य पुरषानी नथी अनेए दान अनर्थादंडमा होवेतो १२व्रत लीधा पछे ए काम किम करे वली प्रदेसी च्यार भाग कर्या तिहां तीन भाग कर्या बिना तो सर तो नथी पिण चोथो भाग किम कर्यो ते विचारज्यो वली केसी कुमारे वरज्यो पिण नथी तु समजीनें नवो पाप किम बंधावेछे इम पिण कह्यो नथी अने रमणी क पणामा दानने व्रत ए दो घाल्याछे ७ ॥ १२० ॥ तथा कोई कहे एह करणी सरब अविरतमाछे व्रिरत मा ए काम करवो नही ते उत्तर बिरतमातो ए कारज नथी तेतो जाणेछे पिण दाननी करणी निषेधो स्या नेंछे जिम कोई पुरषें साधू पासें आवीने कह्यो स्वा मी मुझनें अणगल पाणी पीवानी व्रिरत करावो ति वारे साधू सूखे व्रत करावे कोई कहे मुझनें पाणी ग लीने पीवानो पचखाण करावो तिवारे साधू न करा

वे ते किम साहमो गलवानी हिंस्या टली ते रुडो थ
यो पिण ए अजोग पचखाण पिण न करवो तिम
साधू दानना पचखाण पिण न करावे पोताना खा
वाना पीवाना पचखाण करावे पिण अनुकंपा परमु
ख दान दीधाना पचखाण न करावे जो अनर्था त
था करमा दान जाणेतो पचखाण क्या नही करावे
पिण जिन मारगना श्रावकनी करणीमा पिण दान
देवो दीसेछे ते पाठ भगवती सतग २ में उदेसे ५
में तुंगीया नगरीना श्रावकनो वर्णवमा तिहां दान
आश्रीतीन आलावा कह्याछे [बिछडिय बिपुल भत्त
पाणा] एहतो घरनो आचार जे अन्नपाणी पुष्कल
नीपजेछे जे खाधो पीधो तेहथी वधतो नाखी पिण
देवेछे एरीते विस्तीर्ण भात पानी रंधायछे पछे श्राव
कना पांचमा गुणठाणाना गुण वरणव्या तेमां (ऊ
सियफलिहां अवंगुयदुवारा) ए बोलमा भिक्षुकनें
दान देवा सारू कमाड उघाडा राखेछे पछे तीजो बो
ल साधूने दान दीधानो कह्यो [समणे निग्गंथे फा
सुए सणिज्जेणं असणं ४ जाव बहरंति] दान दी
धा करमा दान जाणे तो श्रावक (अवंगुयदुवारा)
किम राख्यो ॥ १३३ ॥ तिवारे वादी कहेछे अभंग
द्वारातो साधूनें प्रवेस करवा माटेछे जे आडेबारणे सा
धू आवे नही ते माटे कमाड उघाडा राखेछे तेहनो उ
त्तर जे साधूनें काजे द्वार उघाडा मूकेतो साधू तिण

घरमा जावे तोहीज नथी वलो परदेसीनो जीव त
था अंबडनो जीव महा विदेह खेत्रमा दृढपईन्ना प
णो पामस्ये तेहना घर बखाणया तिहां (विगमियज
लपाणा) ए गुण घरना आचारनोछे ते तो कह्यो पि
ण (अनंगदुवारा) न कह्यो एतले श्रावक पणुं न
ही हतो तिहां सुधीतो आडे बारणे जीमवानो नेम
नही अनें तिहांथी श्रावक पणो पांम्या ते दिवसथी
अनंगदुवारो पिण केडे वलग्यो जिन मारग पांम्या ते
दिवसथी उदार्य पणो अधिक अधिक वध्यो द्रव्य अथिर
जाणयो ते माटे अधिक दान देवा लाग्या वली कोई क
हस्ये (अनंगद्वारो) तो साधूनें काजेछे ते उत्तर सा
धूनो तो दान आर्य खेत्रमाछे अनार्य खेत्रमा साधु
नथी हिवे अनार्य खेत्रमां श्रावकने (अनंगदुवारो)
किम नीपजे ते कहो तथा आर्य क्षेत्रमां कोई ग्राम
साधू चोमासो नथी कह्यो पिणश्रावक (अनंग दुवा
रो)राखे के नही ते कहो वले साधूनो उतम कुलनो
आहार लेवेछे अने कोईक अ कलपनीक कुलमा श्रा
वक होयतो तेहने (अनंगदुवारो) किम नीपजे ते
कहो ८ ॥ १३२॥ केतला एक कहेछे साधूविना ओ
रनें दीधो पुण्य अन्य पुण्यनो खेत्र किहांइं नही ते
उत्तर साधूना दानमें तो एकंत धर्मछे पिण अनुकंपा
लावे बीजाने दीधां पुण्यनी ना न कही वले साधुतो
आर्य खेत्रमा छे तिहांतो नव प्रकारे पुण्य नीपजे पिण

अनार्य खेत्रमा केतला प्रकारे पुण्य नीपजे ते कहो १८ पापतो तिहां नीपजेछे तिवारे वादी कहस्ये अन्न प्रमुख दीधां पुन्न थाय एहवोतो पात्र नथी पिण ३ जो ग शुन्न वरते तेह पुण्यछे तेहनें इम कहिये सूत्रमा ठाणांग ३ ठाणे परमुखमा कह्यो होय सो अनार्य खे त्रमा पुण्य बंधायछे इम कह्यो होयतो देखाम्रो वली ठाणांगें नवमें ठाणे इम नत्थी कह्यो जे आर्य खेत्र मा नव पुण्य नीपजेछे पिण अनार्य खेत्रमा न नीप जेछे तथा ठाणांग १० में ठाणेदस प्रकारे दान कह्या छे तेहना नाम अनुकंपा १ संग्गहे चेव २ नय ३ को लुणितिय ४ लज्जाते ५ गारवेणं ६ धर्म दान ७ अधर्म दान ८ कोहे तीय ९ कथंतीय १० ए दसमा धर्म दान ते साधूनो चित्तवित्त पात्र शुद्ध होवे ते तथा उत्कृष्ट नावे दानने परिणामे नियाणादि दुखण रहि त दीधां थाय १ अने एक अधर्म दान ते पोताना विषय कषाइने हेते जीवहिंस्या दिक मोटा दूसण ल थावेस्यादिकना दांन विषयहेत देवे ते अधर्म दान कहिये २ अने शेष ८ दान ते धर्म दानमें मिले अ धर्म दानमें पिण मिले जिम किणहीक ग्रहस्थनें सु पात्र कुपात्रके गुणकीतो ठीक नही पिण नूख त्रीषा ना पीम्या थका सुपात्र तथा कुपात्र देखीनें अनुकं पा॰आणीनें देवेतो अनुकंपादान कहिये अनें सेठा णीनें अर्णक मुनीको दान विसेहेतें दीधो ते अधर्म

दान पिण कहिये जिम चोरनें चोरी करवानो साहज
देवेतो अधर्म दान स्यां माटे भेलो पोतानो पिण
स्वारथछे ते माटे इम करतां बेहीज चोर बंधणमा प
ड्या तेहनें खान पान देवेतो अनुकंपा दान थाय पो
ताना परणाम जेहवो होवे तेहवो दान कहिये फल
पिण पोताना परिणाम शुद्ध अशुद्ध जेहवा होवे तेह
वालागे जिम पात्रतो धर्म रुचि साधू घणा शुद्धहता
पिण नागश्रीना परिणाम अशुभथा तेहनें कडवा तूं
बा दीधा तेहवाज फल लाग्या ते माटे दान तप जप
क्षिमा दया ए सर्व पदार्थना फल पोताना परणाम
पक्षे लागेछे कोई अभव्यछे अनें साधू मध्ये रहेछे सा
धु भेलो खावो पीवो रहवो करेछे पिण परिणाम हो
वे तेहवो फललागे तेहनें वली बिवहार सुध देखी
कोई साधूनी बुद्धे वांदेतो तेहने असाधु वांद्याना फ
ल लागे के साधु वांद्याना फल लागे पोताना परि
णाम ऊपर घणी बारताछे ते माटे ८ दान श्री बीत
रागे एकंत धर्ममां पिण घाल्या नही एकंत अधर्म
दानमां पिण घाल्या नही तथा सूयगडांग अध्येयन
११ में (जेयदान पसंसांते बहमिछंती पाणीणो जेयणं
पडिसेहांति वित्तिछेयं करंतिते १) तथा दूजा सूयगडांग
अनाचार अध्येन (दखणोय पडिलंभ्य अत्थिवानत्थि
वा पुणो नवियागेर जमेहावी संतिम गंच वूहय १)
एटले बेठामें प्रभूयें मध्यस्थभाव रहिवो कह्यो ॥ १३३॥

॥ श्रीवीतरागायेनमः ॥

॥ अथ पांच वादीयांकी चर्चा लिख्यते ॥

शार्दूल विक्रीडितं वृतम् ॥ पंचांधागजमीक्षणार्थ मगमन् कर्णांघ्रि शुंडाद्विजः। पुछान् वीक्षगजो वदंत्य थमथोदृष्टोमयाकी दृशः ॥ सूर्पास्थंभकदल्पयोग्रबल वच्चक्र विंवावंजडा। स्तद्वत्यंचमतानु गामदयुता सर्वा गवादी जिनः ॥ १ ॥ अस्यार्थ ॥ पांच आंधे एक न गरमें हाथी देखणे गये एक अंध सूंड ऊपर हाथ फेरे १ बीजो पगऊपर फेरे २ तीजोदांत ऊपर ३ चोथो कान ऊपर ४ पांचमो पूंछ ऊपर ५ पाछे आवी एकठा मिल्ये हाथीनो स्वरूप कहिवा लागे आपसमें एकें पूछ्यो हाथी केहवोछे तिवारे एक बोल्या केलिना थम्भ सरीखो १ बीजो कहे देहरानो थंभ सरीखो २ तीजो कहे मुसला सरीखो ३ चोथो कह्यो सूपडा सरीखो ४ पांचमां कह्यो वली वंस सरीखो ५ इम मा ह्यो माहि वाद करिवा लाग्या एक कहे तुं खोटो बीजो कहे तूं खोटो इण दृष्टांतें आंधोनी परे पंचमतके धणी अहंकारना लीधा एक एकनें धर्म करीमाने अथवा कालादिक एक मनने विषे पंचे बोल परिमाण करे ते जिन मतमें मानीये ॥ दोहा ॥ मत खटछे संसारमें॥पंच अंधसमान, एक एक वस्तु ग्रहे, जिन मत सवे प्रमान॥१॥अथ पाच वादी नाम ॥ काल वादी १ सुभाव वादी २ नियत वादी ३ पूर्व कृत वादी ४

पुरषाकार वादी ५ ए पांच वादी मांहिंथी काल वादी बोल्या एक कालहीज प्रधानछे ते किम काल जे जोवन आवे गर्भ धरे काले जन्मे बोले चाले आसाढे श्रावणी खेतीहोय वदामादिमेवा होय इत्यादि वस्तु काले नीपजे १ हिवे काल वादी प्रतें स्वभाव वादी बोल्यां सर्व वस्तु स्वभावे नीपजेछे ते किम मोरका पंख किणें चीतरयाछे गाय भेसने किणे तरवो सिखायोछे बचाबचीने चूंघनो किणे सिखायोछे पंखीनें आलणा करणा किणे सिखायोछे मनुषना बच्चा जनमता पगे न चाले अने तीर्यंचना चालेछे तिर्यंचना बच्चा जनमता थन पकडे मनुपना बच्चा जनमतां थनकिम न पकडे एक साथे दो स्त्री निज निज पुरष संजोगमें हुई एक स्त्री गर्भ धरे एक स्त्री गर्भ न धरे किसीनें कोडीयां उछाली ते मांहिंथी कोई सीधी पडी कोईक ऊंधी पडी एक काल माहिं न्यारी न्यारी भांत किमपडी एकभात क्यूं नही पडी इत्यादि सर्व वस्तु स्वभावे परगमीछे २ हिवे स्वभाव वादी प्रते नियत वादी वोल्या सर्व जीव नियतनें बसछे ते किम कोई क्रोधी स्वभावते खिमावान नही खिमावान ते क्रोधी स्वभाव नही किसीना सकत स्वभावते कोमल स्वभाव नही कोमल स्वभावते सक्त स्वभाव नही सरल स्वभावते कपटी स्वभाव नही कपटी स्वभावते सरल स्वभाव नही लोभी सुभावते निरलोभी नही निरलो

भी स्वभावछे लोभी नही इम अनेक भावना अनेक स्वभाव थाछ ते नीयत स्वभाव होणहारपें सब भाव इछा जीवाने बसथी ॥ ३ ॥ हिव नियत बादी प्रतें कर्म बादी बोल्या सर्व जीव कर्मने बसछे ते किम एक इंद्री १ बेइंद्री २ तेइंद्री ३ चउइंद्री ४ पचेंद्री ५ इना मांहि जीव ऊपजे तरुस मरीनें थावर मांहि उपजे थावर मरीनें तरुस मांहिं उपजे राजा मरीनें रंक होय रंक मरीनें राजा होय ब्राम्हणथी चंडाल होय चंडालथी ब्राम्हण होय स्त्री मरी पुरष थाय पुरष मरी स्त्री थाय सत्रू मरी मित्र होय मित्र मरी सत्रू होय जे निश्चे होणहारछे एकेंद्री मरी नारकी देवता क्यों नही होय नारकी देवता तिर्यंचथी मोक्ष क्यो नही जाय दलद्रीनें संपत क्यो नही होय रंकते राजा क्यों नही होय चोरी जारी कर्म करी शुलीयादि क्यों होय निर्लोभी ब्रम्हचारी सत्यवादी क्यों पूजीये ते भणी सुभा शुभ कर्म भोगे विना छूटे नही ते कारणे कर्म वरताछे ॥ ४ ॥ हिवे करम बादीप्रते पुरषाकार बादी बोल्या जो परदेसी राजाने महा पाप कीया ते पाप किहां भोगसी जो जो पाप जीवने कीया ते पाप सवी भागेसूं छूटेंतो जीवका छुटकारा किम थाय ते भणी पुरषाकार ज्ञान दरसन चारित्र तप करी निकाचित कर्म अनेक भवना शुभ पिण भोगवी नियत कर्म खपावीने मोक्ष जाय जे करम वलीया होय

तो जीवने मुक्त जावा नही देता ॥ यतः ॥ अठ विहं पीयकम्मं अरी नूये सव जीवाणं ते कम्मेण अरिहंता अरिहंता तेणवुच्चंति॥१॥ते माटे पुरपाकार प्राक्रम उद्य म विना कोई कार्ण नीपजे नही ॥ ५ ॥ ए पांच वादी आप आपणी सरधाथापता पारकी सरधा उथापता थका तिवारे पछे जैन मती बोल्या जो वादी तुमे पोताना पक्ष थापता थका पारका तुम्ह पक्ष उथापताथका जासुं तुम्ह मिथ्या वादीहो तिवारे पांचो वादी बोल्या तुम स्यूं सरधोछो तिवारे पछे ते जैन मती बोल्या हमतो पाचोनें सरधेछें तिवारें पछे ते ५ वादी बोल्या पांचोना स्वभाव न्यारा न्यारा छे घणा फरक दीसे ते किम पांचोने खरा मानो तिवारे पछे ते जैनमती बोल्या हम अ.प आपने ठाम वीच उनानुं जुदा जुदा राखूंछू ते माहो माहिं विरुद्ध न थाय ते कहेछे प्रथम् काल लब्दी विनां मोक्ष रूप कार्य सिद्ध न थाय एतले काल सर्वनो कारणछे जे काले कार्य होणहारछे ते कार्य तिण वेला थाय ते कहेछे कोईक जीव समकित पामी तथा बिरत पामी नें पडे ते किम काल पका नही देसऊणा अर्द्ध पुदगल संसारथकी तिरवानो बाकी रह्यो ते माटे ए काल समवाय अंगीकार कह्यो तिवारे सिष्य पूछेछे अभव्य मोक्ष क्यो नही जाय तिवारे उत्तर कहेछे जे अभव्यनो काल मिले पिण अभव्यमे सुभाव मिले नही

जिम नारकीनो खिमा करवानो स्वन्नाव नही १ युग लीय ने क्रोध करवानो स्वन्नाव नही २ देवतानें अ रत करवानो स्वन्नाव नही ३ वांऊरी गायने दूध देवानो स्वन्नाव नही ४ तिण कार्ण मोक्ष जाय नही एतले काल स्वन्नाव दोनो कार्ण चाहिज्ये तिवारे क हे जे नव्यनो तो मोक्ष जायवानो स्वन्नावछे तो सर्व नव्य मोक्ष क्यूं नही जाय तिवारे कहि जे नीयत निश्चे समकित गुणजाग्यां मोक्ष जाय एतले काल १ स्वन्नाव २ नीयत ३ ए तीन कार्णमाना तिवारें कहेजे समकित आद कार्ण श्रेणक नेथी मोक्ष क्यों गयो नही उत्तर पूर्व कृत कर्म घणाथा वा पुरषाकार प्राकृन उरमे करयो नही तिवारे कहे जे सालन्नद्र प्र मुख घणाने उद्यम कीधो ते उत्तर पूर्व कृत कर्म खपा या नही तिणे पाचो समवाय मिल्या कार्य सिद्ध था य तिहां कोई पूछे जे मरुदेवी माताने च्यार कार्ण मि ल्या पिण पुरषाकारतो कोई कीधो नही तिवारे क हिजे अलप कर्म माटें शुक्ल ध्यान क्षपक श्रेण चढ वानो उद्यम कीधो (यतः॥ कालो सहावत्र नियइ पु वकयं पूरस कारणो पंच समवाय समत्तं एगंत होइ मिछत्तं ॥ १ ॥ इति पांच वादी मतम् प्रश्नोत्तर १३४

अथ३६३मत जिसके४नेद क्रियावादी१ अक्रियावा दी२ अज्ञानवादी ३विनय वादी४ एकसो असीमत क्रिया वादीना ते कहेछे आपणो जीव सास्वतोछे पिण

काले नीपजे १ आपणो जीव सास्वतोछे पिण नियतनें वसछे २ आपणो जीव सास्वतोछे पिण स्वभावे नीपजे ३ आपणो जीव सास्वतोछे पिण इश्वरने नीपायो नीपजे ४ आपणो जीव सास्वतोछे पिण एक आत्मा सर्व व्यासछे ५ परका जीव सास्वतोछे पिण काले नीपजे ६ परकाजीव सास्वतोछे पिण नियतनें वसछे ७ परका जीव सास्वताछे पिण होणहार स्वभावे नीपजे ८ परका जीव सास्वताछे पिण इश्वरनें निपाया नीपजे अर्थात् इश्वरका पैदा करया होय ९ परकाजीव सास्वताछे पिण एक आत्मा सर्व व्यासछे १० आपणी आत्मा असास्वतीछे पिण काले नीपजे ११ आपणी आत्मा असास्वतीछे पिण नियतनें वसछे १२ आपणी आत्मा असास्वतीछे पिण स्वभावे नीपजे १३ आपणी आत्मा असास्वतीछे ईश्वरीनी नीपाई नीपजे १४ आपणी आत्मा अशाश्वतीछे पिण एक आत्मा सर्व व्यासछे १५ परकी आत्मा अशाश्वती पिण काले नीपजे १६ परकी आत्मा अशाश्वती पिण नियतनें वसछे १७ परकी आत्मा अशाश्वती पिण स्वभावें नीपजे १८ परकी आत्मा अशाश्वती पिण ईश्वरनी नीपाई नीपजे १९ परकी आत्मा अशाश्वती पिण सर्व व्यासछे २० ए वीस जीव ऊपर लीया तिम २० नो तत्व ऊपर लेणा जीव १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४

आश्रव ५ संबर ६ निर्जरा ७ बंध ८ मोक्ष ९ बीस नम्मा १८० हूवा इति क्रियामत वादी ॥ हिवे ८४ अक्रियावादीना मत ते कहेछे अपणी आत्मा शाश्वती पिण काले नीपजे ए पांच पहली तरे कहणा छठी इछा ६ एवं ६ अपणी आत्मा शाश्वती एह ६ परकी आत्मा शाश्वती पूर्ववतु कहणा एवं १२ जीव आश्री अजीव आश्री १२ कहणा साततत्व उपर ८४ मत हूवा पुन पाप आश्री नही कहणा इती ८४ अक्रियामत वादी ॥ अथ ६७ अज्ञान वादी मत कहेछे कोई कहे जीव छतोछे पिण कह्यो न जाय २ जीव छतो अछतो पिण कह्यो न जाय ३ कोण जाणे जीव छतोछे ४ कोण जाणे जीव अछतो ५ कोण जीव छतो अछतो ६ अवाचत छतो अछतो कह्यो न जाय ७ ए सात नव तत्व ऊपर लेणा एवं सर्व नोस्तां ६३ हूआ उत्पति छती १ उत्पति अछती २ उत्पति छती अछती ३ अवाचत छती अछती नही कही जाय ४ ए ६३ अने ४ एवं ६७ मत अज्ञान वादीना कह्या ॥ हिवे बिने वादीना ३२ मत कहेछे सूर्यकी विनय १ राजाकी बिनय २ साधाकी ३ ग्यानकी ४ थेवरकी ५ माताकी ६ पिताकी ७ धर्मकी ८ ए आठरी मनसें बचनसें कायसे आठतीया २४ ए आठरी भक्ति करे १ बहु मानदे गुण ग्राम करे २ असातना टाले ३ एवं पूर्व २४ बोल मांहिं आठ मिला

ये तो सर्व ३२ मत विनय वादीना कह्या (यतः ॥ असीसयं किरियाणं अकिरियाणं चुलसीय अना नियाणं सतसाठि विणेयाणं चवतीसं १ ॥ इति ३६३ मत क्रिये अक्रिये अज्ञान विनय वादी इन च्यारोंके ३६३ मतहैं प्रश्नोत्तर ॥ १३५ ॥

॥ अथ चेईये शब्दका अर्थ लिख्यते ॥

श्री केवली परूपिया धर्म प्रमाणहै लेकिन द्रोपदी ओर सूरियाभ देवतानें तथा सक्र इंद्रने तथा चमर इंद्रनें इनोंने इत्यादिकोने धर्म नही चलायाहे धर्मतो केवलीजी महाराजका फरमाया प्रमाणहै तुम कहेते हो चमर इंद्र जबऊंचे लोकमें जाय तब प्रतिमाका वीसरना लेकर जाय ऐसा तुम बिना बिचारे कहतेहो सरणा अरिहंत महाराजका १ तथा अरिहंत चेईयाणी वा जिणका अर्थ अरिहंतोका चैतः ॥ सो छदमस्त तीर्थंकरहे २ ओर तीसरा अणगार साधू ए ३ सरने लेकर जावेहै ए प्रत्यक्ष देखो जो चमर इंद्र श्रीमहावीर स्वामीके सरणे आया उसवक्त भग वान छदमस्त तीर्थंकरथे लेकिन ३ कालमे कोईभी वक्तमें प्रतिमाके सरने आया होयतो जवावलिखो इ सवास्ते जगह जगह सूत्रके पाठहे अरिहंत महाराज कुं देवताओनें तथा श्रावग लोगोनें वंदना नमस्का र करीहे जिसका पाठ कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं दे खो श्री तीर्थंकर माहाराजकूं सूत्र भगवती ठाणायंग

राय प्रसेनीमे चैत कह्याहै जिसका अर्थ टीका कार में कह्याहै भगवान ग्यानवान तथा मन प्रसन्नका कारण तथा प्रसस्तमन हर्ष उपजनेका कार्ण जगह जगह अभैदेवसूरीजीनेबी टीकामें अरिहंत महाराज कुं चैत शब्दका ए अर्थ कराहै और केसी कुमारजी कूं तथा और साधोकूं पारसनाथ स्वामीके ५०० अणगार तुंगीया पुर नगरीमें पधारे उनको और इत्यादिक घने साधोंकूं घणे श्रावकोनें बंदना नमस्कार करी जिसका पाठ (कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं) इहां भी टीका कारने अर्थ कीयाहै चेईयं शब्दका अर्थ साधू मन प्रसस्तका कार्णहै और श्री तीर्थंकर महाराजनें अरिहंत सिद्ध केवली साधू सरणे ४ सूत्रमे कहे जिसमे प्रतिमाका पांचमा सरना कह्या नही ॥ १३६ ॥ दोहा ॥ आदि ऋषभ अरिहंत जिन, अंत नाम महावीर॥सरन चोवीसी वंदता, कुमती जावे दूर ॥१॥गौतम गणधर गुण निलो, पामी केवल ज्ञान॥वीर पछे जिन केवली, बारह वर्ष प्रमान॥२॥ पाटो धर हूवा सही, स्वामी सूधर्मा जांन॥सिष्य साखा बरती घणी, शुद्ध सत्ताईस जान॥३॥जैन धरम उत्तम खरो, आराना परमान ॥छलनी सरीखा भेक जिस, खेंचातानी आन॥४॥पंचपरमेष्टी सुमरीए, तीर्थच्यारो मांहि॥धर्म दयामें भेदन्ही, मुर्ख चितमन मांहि ॥५॥नागोरीगछहै बडो, श्री पूजवर्द्धमान ॥लघुभ्राता तपवंतहै, मनोहर

रिखसुजान॥६॥नगर मेडते पहोचीया, वैरागे बहु फेर॥ कर्म संग्राम करि वामणी, पकडी तिन समशेर॥७॥सो ष्यो शकल शरीरको, तपस्याके परभाव॥ श्री पूज मनोहरदासके, नित प्रतमें गुणगाव॥८॥तास सिष्यपंडित हूवा, बहुत गुनाकी खांन॥पूज भागचंद विचरत, आगमके परवान॥९॥तास पटो धर जानीये, गुनधारक बहु भांत॥पूज्यजु सीतारामजी, जारे मनमें षांति॥१०॥सिष्य ज्यारा गुनवंतहै, बहु आगमके जान, पूजस्योरामजुदासजी, गुरु भक्ता गुनवान॥११॥तास सिष्य गुनागरा, आज्ञाकारकजान॥नूंनकरनजी साधूहै, सुध संजम मतिमान॥१२॥श्री पूजस्योरामजी, बहुविध गुनभंडार॥दूजा सिष्य तेहना नमूं, हरजीमल हितकार॥१३॥अंतेवासीतास सिष्य, रतनचंद मुनिजान॥ ज्ञान क्रियाके भेदको, भिन्न भिन्न कहे वखान॥१४॥कुवरसेनजी तास सिष्य, तिनके सिष्य ऋखराज॥प्रश्नोत्तर संग्रह लिख्यो, सुजनोके हितकाज॥१५॥ सूत्र अर्थ गंभीरहें, जाणे बुद्धिनिधान॥ मनशा करता सूत्रनी, भेद अनेक बखान॥१६॥जैसे पूर्व प्रश्नथे, तैसेही मन धार॥इस प्रश्नोत्तर ग्रंथमें, लिखे बुद्धिअनुसार॥१७॥ माफ करो सब माहिरा, गुणि जन देखी दोश॥तुछ बुद्धी जाणुं नही, पूर्ण शब्द उर कोश॥१८॥१३७॥

॥ गाथा ॥ नोकाएइ नायरई नोपालइ भावजेय कृिणधम्मं॥ तिपणाइं अठभंगा॥ तेसिंदिठं तया ए

ए ॥ १ ॥ सामण लोय तव लिंगधारिणअगीयत्थ से णियाईया ॥ पंचुत्तरसुर संविग्गपखिणो अठमे सुज्झ ई ॥ २ ॥ पढमा मिछ दिठी चउरो संसार भमणहेउ त्ति इयरा सम्मदिठी अरिहा निवाणगमणस्स ॥ ३ ॥ इत्यागम सौरभम् ॥

॥ अर्थ ॥ नही जाणताहै जे परिज्ञा प्रत्याख्यान परिज्ञा करिके १ नही आदरताहै २ नही पालताहै प्राणी भावसेती जिन धर्म्मकुं ३ इनतीनोपदो करके आठ भांगे होतेहै तिनुंके दृष्टांत ए कहितेहै ॥ १ ॥ सामान्य लोक १ बालतपस्वी २ द्रव्यलिंगी सम्यक्त रहित ३ अगीतार्थ अपठित ४ श्रेणक राजादिक ५ पांच अनुत्तर विमानके देवता ६ संविग्न पाक्षिक अ ध्यात्म मत धारक ७ आठमें भागें शुद्ध चारित्र धर यती अर्थात् साधू॥८॥ २ ॥ पहिले भागे मिथ्यादृष्टि च्यारहै सो भव भ्रमणके कारणहै और अगले च्यार सम्यग् दृष्टिहै सो योग्यहै मोक्ष जावणेकुं पहिले४भां गे नही ऐसी सिद्धांतकी सुगंधता जाणणी ॥

न जाणे ॥ न आदरे ॥ न पाले ॥ सामान्यलोग१
न जाणें ॥ न आदरे ॥ पालइ ॥ तपस्वी २
न जाणें ॥ आदरे ॥ न पाले ॥ द्रव्यलिंगी ३
न जाणे ॥ आदरे ॥ पालइ ॥ अगीतार्थ ४
जाणइ ॥ न आदरे ॥ न पाले ॥ श्रेणकादि ५
जाणइ ॥ न आदरे ॥ पालइ ॥ अनुत्तरसुर६

जाणइ ॥ आदरे ॥ न पाले ॥ संविग्नपक्षी ७
जाणइ ॥ आदरे ॥ पाले ॥ चारित्रीयो ८

॥ श्री गौतमायनमः ॥ जिनेस्वरतारकहै ए देशी ॥

येनर भव उत्तमहै, उत्तम श्री जिन सेव ॥ ये० ॥ ए टेक ॥ उत्तम आरजदेस कुल उत्तम, उत्तम नर भव पायो॥ इंद्रीपांचों पांमी उत्तम, उत्तम दीर्घआयो ॥ ये० ॥ १ ॥ उत्तम देह निरोग अवस्था, ओर उत्तम चतुराइ॥उत्तम साधू उत्तम बानी, उत्तम समकित पाई॥ये०॥ २ ॥ उत्तम बिरती उत्तम करणी, करता सुधगति जावे॥मनुष जनम सुफलोकर भविजन, तव उत्तम पदवी पावे॥ये०॥३ ॥ तीर्थंकर चक्री अरु हलधर, केसव पदवी पावे॥केवली साधू श्रावक सम्यग्, मंडली भूप कहावे॥ये०॥४ ॥ऐसी ऐसी पदवी उत्तम, मनुषतणें भव पावे ॥केवलज्ञानी धर्म अराधी, जन्न मर्ण मिटावे॥ये० ॥ ५ ॥ ऐसा मनुषतणा भव उत्तम, श्री जिन राज बतायो॥च्यारगतीमें भमतां भमतां, अब उत्तम नरभव पायो॥ये०॥ ६ ॥ क्रोधमान माया अरु ममता, इनसें प्रीत हटावो ॥ज्ञान दरसन चारित्र वली तप, इनसें कर्मखपावो॥ ये०॥७॥संवत उनीसे अधिक पचासें, करनाल नगर चोमास॥ऋखराज कहे श्री जिन सेव्यां, पूरें मनकी आस ॥ ए० ॥ ८ ॥

॥ छंद शिखरिणी ॥

विद्यारत्नसरसकविताद्भिमारत्नंतपाश्री ॥

बांगारत्नंपरमपद्वीयानरत्नंतुरंगः ॥
अंनोरत्नंत्रिदशतटनीमासरत्नंवसंतः ॥
नूनृद्रत्नंकनकाशिखरीदेवरत्नंजिनेंद्र ॥ १ ॥

इति श्री सत्यार्थसागर स्वामीजी ऋषिराज प्रश्नोत्तर संग्रह करता नविजनोंके उपकारार्थ द्वितीयो नागवर्णनम् ॥ इती श्री सत्यार्थ सागरका द्वितीयो नाग
॥ संपूर्णम् ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर तृतीय नाग प्रारंनः ॥

॥ श्री ॐनमः सिद्धं ॥ णमो अरिहंताणं॥णमो सिद्धाणं॥णमो आयरियाणं॥ णमो उवज्झायाणं॥ णमो लोएसवसाहूणं॥एसो पंच णमुक्कारो सवपावप्पणासणो मंगलाणं च सवेसिं पढमंहवइ मंगलं ॥ १ ॥ श्री सिद्धांत मांहि मोक्ष मारगनों मूल कारण श्री सम्यक्तछे जेहनें सम्यक्त तेहना तप नेम सर्व प्रमाण ते सम्यक्त श्री आचारांगनें चउथे श्री सम्यक्त अध्येनें लाने ते अध्ययन लिखीयेछे ॥ (सेवेमिजयप अतीता जेय पडुप्पन्ना जेय आगामिस्सा अरहंता नगवंता तेसव एवमाइ क्खंति एवं नासंति एवं पणवेंति एवं परूवेंति सवेपाणा सेवनूता सवेजीवा सवेसत्ता नहंतवा न अद्यावेतवा न परिघेतवा न परितावेयवा नउद्दवेयवा एसधम्मेसुद्धे णितिए सासए समेवलोयं खेतन्नेहिं पवेतिते तंजहा उठिएसुवा अणुठिएसुवा उवठिएसुवा अणुवठिएसुवा उवरयदंडेसुवा अणुवरयदंम्हेसुवासोव हिः

तेसुवा अणोवहिए सुवा संजोग रएसुवा असंजोग र एसुवातवंचेतं तहाचेतं अस्सिंचेतं पवुच्चई तं आइत्तु ण णिहेण णिखेवे जाणिज्जु धम्मंजधातधादिठेहिं णि वेयंगछेजा णोलोगस्सेसणं चरे जस्स णत्थि इमाणा ती अन्नातस्स कउसिया दिठं सुत्तं मयं विनायंजं ए यं परिकहिज्जइ समेमाणा पलेमाणा पुणो पुणो जातिं पकप्पंति अहोयराउयजयमाणे धीरेसया आगयपन्ना णे पमत्ते बहिया पास अपमत्ते सया परिक्कमिज्जासि तिबेमि सम्मत्तस्स पढमो उद्देसो समात्तो १) ॥ एणें उद्देसे एहवो कह्यो जे सर्व प्राण भूतजीव सत्व न हणवा ए धर्म सूधो एतले दयामें धर्म ते सूधो अनें हिंस्यामें धर्म ते असुद्ध जाणवो ॥ इति प्रथम प्रश्न ॥ २ ॥ तथा सम्यक्तनें बीजे उदेसे एहवो कह्यो जे समण माहण हिंस्यामें धर्म परूपे अनें वली एहवो कहेंहें धर्मनें काजें हिंस्या करतां दोस नही ते तीर्थं करे अनार्य बचन कह्यो एतलें एहवा वचनना बोल नहार अनार्य जाणवा ते अधिकार लिखीएछे ॥ (आवंतीके आवंती लोयंसि समणाय माहणाय पुढो विवादंवत्ति सेदिठंचणे सुयंचणे मयंचणे विन्नायं च णे उढअधं तिरियं दिसासु सव्वतोसु पडिलेहियंचणे सवेपाणा सवेजीवा सवेभूया सवेसत्ता हंतवा अज्जावे तवा परियावेयवा किलामेयवा परिघेतवा उद्दवेयवा ए त्थंपिजाणधनात्थित्थ दोसा अणारिय वयणमेयं

तत्थ जेते आयरियाते एवं बयासी सेदुदिठंचन्ने दु स्सुयंचन्ने दुम्मुयंचन्ने दुचिन्नायंचन्ने उद्दं अहं तिरि या दिसासु सवतो दुप्पडिलेहियंचन्ने जन्नं तुन्ने एवं आइखह एवं न्नासह एवं परूवेह एवं पन्नवेह सवे पाणा सवे नूता सवेजीवा सवे सत्ताण हंतवा णअ्र जावेतवा णपरिघेतवा ण परियावेयवा ण उद्देयवा एथंपि जाणध नथित्थ दोसो आरिय वयणमेयं पुव निकाय समयं पत्तेयं २ पुछिसामो हंन्नो पावा दुया किं न्नेसायं दुखं उदाहु असातं समितापडिबन्नेयावि एवं बूया सवेसिं पाणाणं सवेसिं नूयाणं सवेसिंजीवा णं सवेसिं सत्ताणं अस्सायं अपरिणिवाणं महन्नयं दु कखं तिवेमि) ॥ २ ॥ तथा जे सम्यक्त अध्ययन ना बीजा उदेसानें धुरें कह्यो (जे आसवा ते परि सवा) ए आदिच्यार बोल तेहनो अर्थ लिखीयेछे जे [आसवा] कहितां जे स्त्री आदिक कर्म बंधना कारण तेहज वैराग्यनें आणवे करी (परिसवा) क हिता ते निर्जराना ठाम थाइ तथा ज (परिसवा) ते [आसवा] कहिता जे परिश्रव अरिहंत साधु आ दि निर्जराना ठाम ते दुष्ट अध्यवसाये करी आश्रव कर्म बंधना ठाम थाइ तथा जे (अणासवा) ते(अ परिसवा) कहितां जे अनाश्रव व्रत विशेषते अशु न्न अध्यवसायें करी (अपरिसवा) कहिता ते नि र्जराना ठाम न थाइ कुंमरीकन्नीपरें तथा जे (अप

रिसवा) ते [अणासवा] कहितां जे अपरिश्रव अविरतिना ठाम तेहिज अविरतना ठांम हीये पाडु वा जाणी वैराग्यें करी अध्यवसाय विसेषे अविरति नें गांभवे करी अनाश्रवनाठाम थाइ एतलें कर्म बंध ना ठाम न थाइ ॥ तथा कोईक एहना अर्थ फेरवीने कहेंछे जे (आसवा) ते (परिसवा) कहितां जे ध र्मनें कारणें हिंस्या करीये तिहां निर्जरा थाइ तथा वाळी केतला एक इम कहेछे जे धर्मनें काजे हिंस्या कीजे ते हिंस्या न कहिये तो हिवे चतुर होय ते वि चारी जोवो जो धर्मनें काजे हिंस्या करतां निर्जराथा इ अने जो धर्मनें काजे हिंस्या कीजें तो ते हिंस्या न कहिए तो रेवतीनुं पाक श्री महावीरे किम न ली धो पिण रेवती सुध भावनी अपेक्षायें अलप कर्म बहु कर्म निर्जरा कीधी परंत महावीरनें तो थोभीसी भी हिंस्याको टाळीछे तथा बखाण सुणता मुहढें हा थ तथा वस्त्र देई ते स्याभणी तथा धर्मनें काजे हिं स्या परूपे तेहने वीतरागें अनार्य वचनना बोलणा हारा क्यां कह्या तथा जे समण माहण हिंस्या परू पे तेहने (बहुदंभणाणं मुंभणाणं जाव ते माई मरणा णं पीयामरणाणं) इत्यादिबोल क्यां कह्या विवेकी होय ते विचारी जो जो अने वली जो धर्मनें कीधे आश्रव नही तो साधू ईरज्यांइचाले ते स्याभणी पिण जाणज्यो ते सूत्र ४ विरुद्ध कहेछे ॥ ३ ॥ तथा

श्री वीतरागदेवें श्री सूयगडांग अध्ययन १७में एहवो कह्यो जे पूर्व पाश्चिम उत्तर दक्षिणनें विषे एणीपरें मोक्षपामें ते अधिकार लिखीएछे ॥ (सेवेमि पाईणंवा जाव एवंसे परिन्नायकंमे एवं सेविये वेयकम्मे एवंसेवियं तकारए नवतीति मरकायं तत्थ खलु नगवता छ जीवनीकाय हेउपन्नता तंजहा पूढवीकाईए जाव त स्स काइए सेजहानामए मम अस्सायं दंमेणवा अ ठीणवा मुठीणवा लेलूणवा कवालेणवा आउडि ज्जमा णस्सवा हंममाणस्सवा तज्जिज्जमाणस्सवा ताडिज्जमा णस्सवा परियाविज्जमाणस्सवा किलाज्जमाणस्सवा उदविज्जमाणस्सवा जाव लामुखण णमातम्मवि हिंसा कारगं दुक्खं नयंपम्मि संवेएमि इच्चेवं जावणं सवे जीवा सव्वनूतासवे पाणा सव्वसता दंडेणवा जाव कवालेण वा आउट्टिज्जमाणा वाहंममाणावा तज्जिज्जमाणावा तालिज्जमाणावा परिताविज्जमाणावा विउदज्जमाणा वा ज्जावलोमुखरगणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं नयं पम्मिसंवेदेंति एवं नच्चा सव्वे पाणा ४ जाव सत्ताणइंतव्वाणज्जावेयव्वा न परिघेतव्वा न परितावेय व्वा न उद्दवेयव्वा सेवेमि ज्जअतीता ज्जयपडुपन्ना ज्जय आगमिस्सा अरिहंता नगवंतो सवेते एवमाइक्खंति एवं नासंति एवं पन्नवेति सवे पाणा ४ जावसत्ताण हंतव्वा णआज्जवेयव्वा णपरिघेतव्वा णपरितावेयव्वा ण उद्दवेयव्वा ए सधम्मे धुवे णीतिए सासए समे सव

लोगं खेयणेहिंपवेदिते) ॥ इहां श्री वीतरागे एकांत दयाइमोक्ष कही दया सहित करणीये मोक्ष जाण वी पिण कही हिंस्याइमोक्ष नथी ॥ ४ ॥ तथा श्री सूयगडांगने १८ में अध्ययने एहवो कह्यो जे श्रमण माहण हिंस्या परूपें ते संसारमांहिं रुलें गाढा दुखी थाइ वारवार जनम मर्ण करे दारिद्री दो भागीथाइ हाथ पगादि सरीरनुं छेद पांमे अने जे श्रमण माह ण दया परूपें ते सांसार कांतार मांहिं रुलें नहीं ते दुखी न थाइ तेहनां हाथपगादि छेद न पामें ते सी झें बूझें सर्व दुःखनो अंतकरे ते आलावो लिखीयेछे ॥ (एसत्तुलाएसप्पमाणे एससमो सरणे पत्तेयंतुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समो सरणे तत्थणं जेते समण माहणा एवमातिक्खंति जाव परूवेंति सवेपाणा जा व सत्ताणं हंतवा अज्जावेयवा परिघेतवा परितावेय वा किलासेतवा उद्दवेयवा ते आगंतु छेयाए ते आगं तु भेयाए जाव ते आगंतु जाइजरा मरण जोणि ज म्मण संसार पुण भव गब्भवास भवएवंच कलकली भागिणो भविस्सति ते वहूणं दंडणाणं वहूणं मुंमणा णं तज्जणाणं तालणाणं अदुबंधणाणं जाव घोल णाणं माई मरणाणं पिति मरणाणं भातिमरणाणं भ गणी मरणाणं भज्जापुत्तधूत सुण्हा मरणाणं दारिद्दा णं दोहग्गाणं अप्पियसंवासाणं पियविप्प उग्गाणं वहूणं दुक्ख दोमणसाणं अ भागिणो भविस्संतिनो सि

ज्झंति नोबुज्झंतिस्संति जाव नोसव दुखाणं अंतं करि स्संति एसतुलाए सपमाणे एससमोसरणे पत्तेयंतु ला पत्तेयंपमाणे पत्तेयं समो सरणे तत्थणं जेते समणा माहणा एवमाइखंति जावपरूवेंति सवेपाणा जावसवेसत्ता णहंत्तवा जावण उद्दवेयवा तेणो आगंतुछेयाए तेणो आगंतु भेयाएजाव जाइजरामरण जोणी जमण संसार पुणभव गम्भवास भवएवंच कलंकली भागिणो णोभविस्संति तेणो बहू दंडणाणं जावणें वहूणं दुक्खदो मणसाणंणो अभागिणो भविस्संति अणातीयं चणं अणवयग्गं दीहमद्धंवा उरंत संसार कंतार भूजो२ णो अणपरियट्टीस्संति ते सिज्झिस्संति जाव सवदुखाण मंतं करिस्संति)॥ ए आलावाने मेले जे श्री बीतरागना संतानिया ते एकांत दयाइं धर्म्म परूपें पिण हिंस्यां में धर्म न परूपें ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ केतलाएक इम कहेंछें जो दयामें धर्मतो चारित्रियो नदी किम उतरे तेहनो उत्तर भींगे जो नदी उतरे धर्म होयतो बार बार स्यूं न उतरे श्री वीतरागेतो नदी उतरवानी संख्या बोली तथा श्री समवायांगनें इकवीसमे समवाइं तथा दशाश्रुतस्कंधमध्यें एहवा कह्या जे [अंतोमासस्स तउ उदगलेवे करे माणेसवले] तथा (अंतो संवछरस्स दस उदग लेवे करेमाणे सवले) इहां इम कह्यो जे महीना मध्यें तीन लेप लगावे ते सवलु बरस दिवसमांहिं दसलेपलगावेतो सवलु तो हिवे जोवो

अने जो नदी उतरे धर्म्म तो श्री वीतरागें जिको अधिकी नदी उतरे तेहने सवलो क्यां कहे तथा जे धर्म कर्त्तव्यछे ते बहू बहू कीजे अने वली करीने अनुमोदीए अने नदीतो बहू बहू उतरवी न कही अने उतरयांपछे अनुमोदे पिण नही जे बिराधना हुवीहोय ते निंदे यहे तथा साधूनें विहार करता केईक वरस तथा केइयकमास तथा केइयक दिवस खेत्र विशेषें तथा देस विशेषे नदी नावी तथा न उतरयो तो ते कांई साधू नदी अण उतरयांनो पश्चातापतो न करे पिण प्रतिमानो पूजणहारो केईयक मासें केईयक दिवसे कारण विशेषें प्रतिमा पूजी न सके तो पश्चातापकरे इम चिंतवे जे माहिरे पोतें पाप जेमें प्रतिमा न पूजाणी पिण साधू नदी अण उतरे इम न चिंतवे जे म्हारे पोतें पाप जे मे नदी न उतराणी जिको प्रतिमा ऊपर नदीनो दृष्टांत मांडेंछे ते सूत्र विरुद्ध दीसेछे ते एतलाजनणी जे प्रतिमाना पूजनहारने प्रतिमानी पूजा अनुमोदवानें खातेछे अने साधूनेतो नदीनो उतार निंदवा खातेछे तथा हिवे जेणे खाते नदीछे ते प्रेछयो नदी असक्य प्रहारछे अने अनाकुटिछे ते अनाकुटि श्री समायांगमध्ये एकवीसमे समवायेछे विवेकीहोयते विचारी जो ज्यो ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ तथा सिद्धांत मांहिं तुंगीया नगरीना तथा आलंभीया नगरीना तथा सावत्थी नगरीना परमुख श्रावक

गाढाघणाना अधिकार दीसेछे पिण कुणें श्रावकें प्र तिमाघडावी तथा नरावी तथा प्रतिष्टावी तथा पूजी तथा जुहारी कही दीसती नथी ॥ मनुष्य लोक मां हिं एक द्रूपदीए पूजीदीसेछे ते पूजवानो प्रस्ताव केहु सिद्धांतना अर्थतो नय ऊपरि चाले एतो नय संसारना आरणकारणनों दीसेछे जे परणती वेलाइं पूजी वली पुनरपी आखा नवमांहिं द्रोपदीइ प्रतिमापूजी कही नथी जो मोक्षनें खाते होयतो परणवाना अवसर टाली वली वली पूजे पुन ए मोक्षनें खातें नथी दीसती अने जे वास्तुक शास्त्र तथा विवेक विलास मांहिं प्रतिमा घडावा नरावानी विध बोली थता जे हिवडां नवी प्रतिमा नरावे तथा घमावे ते घमावनाहारो जेहने पूछे मुझने प्रतिमा घडावा नरावा तथा प्रतिष्टानी विधी कहो तेहनें ते जेहवीविधिवहे तेहने जो तां संसारनें हेत दीसेछे ते किम ते लिखीयेछे (एक बीत्ति त्थयरासं तिकराहुंतिगेहेसु) जे एकवीस तीर्थंकरनी प्रतिमा घरि मांडी शांति करे पिण त्रिण तीर्थंकरनी प्रतिमा घरिन मांडे जो मोक्षने खाते होइतो त्रिण तीर्थंकर घरें मांड्या शांति स्यूं न करे तीर्थंकरतो चोवीसें मोक्षदायकछे जेणें इम कह्यो जे त्रिण तीर्थंकर घरे न मांडीये जेह नणी तेहने बेटा न होवे ते नणी न मांडीये एणें कारणें संसार हेतें दीसेछे पिण मोक्षने खाते नथी तथा जिको नवी प्रतिमा नरावे तेहनीरा

सि पूछीने तीर्थंकरनी रासिसंघाते मेलता विसे जोई इम करतें जे तीर्थंकर संघातें नासी वेध पडे तथा बी या बारूं पडे तथा नवपंचकपडे तथा षडाष्टको पडे इत्यादिक योग ऊपजे ते प्रतिमा घडावे नही भरावे नही घरिमांडे नही एहेंजोतां संसारने हेतें दीसेछे त था वली जिहां प्रतिमा प्रतिष्ठाइछे तिहां आरंभ का रण घणा करेंछे जवारा वावेंछे चउरी बांधेंछे मरडा सीग मींढोलगेवा सूत्रइं तथा जव अरीठानो काठलो तथा वली अनेरा आरंभ कारण गाढा घणा करेछे तेहहेते जोतें पीण संसारनें खाते दीसेछे तथा वली जे जिणदत्त सूरिनो कीधो बिवेक बिलास तेहमांहिं प्रतिमा घडावा भरावानी बिधिबोलीछे तिहां इम क ह्योछे जो प्रतिमानो मुख रोद्र पडे तथा बीजा अव यवपाडूआपडे तउ ते प्रतिमाना करावनहारनें घणी जनसिनी हाणि बोलीछे पुत्रनी हांण तथा मित्रनी हांण तथा धननी हांण तथा सरीरनी हांण इत्यादि घणा दोष बोल्याछे एह ठाम जोतें संसारने हेते दी सेछे तीर्थंकरतो केहने इज्यांन न करे डाहाहोयते वि चारी जोज्यो ॥ तथा जिहां सुरियाभने प्रतिमा पू जी तिहां पिण मोक्षनें खातें पूजी नथी एतला भणी जे श्रीवीतराग देव बांधा तिहां यहवा कह्या जे ॥ (एयेणे पेच्चा हियाए) इत्यादि पेच्चा कहिता परभव जाणिवो अनें जिहा प्रतिमा पूजी तिहां (पुविंपवा

हियाए सुहाए) इत्यादि कह्यो एह अधिकार जोता
सोह्नें खाते नही जो प्रतिमाने अधिकारे कह्यो हुं
तोतो बीतरागवांद्या अने प्रतिमापूजी सरीखो थाय
इहांतो बीतरागवांद्या अने प्रतिमा पूजी बिचालें श
ब्दनो फेरतो गाढा सवला दीसेछे जे चतुर होयते वि
चारी जोजो ॥ तथा केतलाएक इम कहेछे जे सम्यक्
दृष्टी टाली नमोथुणं कोई न जणे ते श्री अनुयोग
द्वार मांहि इम कह्यो [जेइमे समण गुणमुक्कजोगी छ
कायणिरणुकंपा हयाइव उदामा गयाइवनिरंकुसा घ
ठा मठा तुप्पोठा पंडुर पड पाउरणा जिणाणं अ
णाणाए सछंद बिहरिऊण उभयोकालमावस्स गस्स
उवठांति] तो जोवो अने लोकोत्तर द्रव्यावश्यकना
करणहार ते दिनप्रते बार बे आवश्यक करे ते मांहि
नमोत्थुणं कहे अने ते बीतरागें समकित दृष्टी न क
ह्या आज्ञा बाहिर कह्या तो जोउनें जे कोई इम क
हेछे जे सम्यग दृष्टी टाली नमोथूणं कोन कहे ते बा
त सूत्र विरूद्ध दीसेछे तथा श्री नंदी सूत्र मांहिं इम
कह्यो जे चौदह पूर्व पढनहारनी मति समी होवे जा
व दस पूर्व पूराना जणनहारनें मति समी होवे अ
नें नव पूर्वना जणन हारनी मति समीहोवे अने मि
थ्यात पिण होय एतले नमोथुणं आदिदेई ग्रंथ घणो
जणें पीण मति मिथ्यातहोय॥ अनें समी पिण होइ
तो इणें मेलें जोतां जे इम कहेछे जे सम्यग् दृष्टीटा

ली अनेरा कोई नमोथुणं न कहे ए बात सूत्रसुं वि
रुद्ध दीसेछे तथा प्रत्यक्ष खमणा यत्येण गोजग प्रमु
ख घणाइं नमोथुणं कहेछे ते कांई सम्यग् दृष्टी जा
णया नथी चतुर होयते विचारी जो ज्यो तथा केत
लाइक इम कहेछे जे गणधरे इम क्यां कह्यो जे (जि
णघरे जिणपडिमा) तथा (धूवंदाऊण जिणवराणं)
तेहना उत्तर प्रीछो जे जगमाहिं जेहना नाम जेहवा
परवस्तता होय गणधर पिण तेहनो अधिकार आवे
तेहने तेहवे नामे कहे जिम श्री ठाणांग मध्ये तीजे
ठाणे गणधरे इम कह्यो जे (मारहेवासे तउ तित्था
पन्नता मागह वरदामे पभासे) तो जोउने जिम ग
णधरे तीर्थ कह्या तिम इम क्यांन कह्यो जे तउ(कु
तित्था पन्नता) जो गणधरे ते तीर्थ कह्या तो कांई आ
पणपे तीर्थकरी आराधवा नहीं एतले गणधरे जेहनुं
जेहवो नामहोवे तेहने तेहवो नाम कहे ते नाम कह्या
माटे कांई आराध्यन न थाय श्री वीतरागे तो
ज्ञान दर्सण चारित्र आराध्ये त्रिजे ठाणे बे ल्या (ति
विहा आराहणा पन्नता तं नाणाराहणाए दंसणारा
हणा चरित्ताराहणा) तथा गणधरे आपणे मुखें इ
म कह्यो पूर्णभद्र यक्षने [जे दिवे सच्चे] ये यक्ष सा
चो जो गणधरे इम कह्यो जे ए यक्षसाचा तो कांई
आपणने आराध्य थयो नहीं तथा गणधरे इम क
ह्यो जे गोशालाना श्रावक एहवाछे [जे अरिहंत दे

बताग अम्मा पीऊ सरयू सगा] गणधरे इम कह्यो जे गोशालाना श्रावकने अरिहंत देवछे पिण गणध रे इम स्यूं न कह्यो जे गोशालाना श्रावकने गोशा लो कुदेवछे एतले इम जाणजो जे लोक मांहि जे प दार्थ जेहवा परवरतेछे ते गणधर पिण तिमहीज कहे तथा द्रूपदीना आलावानी वृती माहिं इम कह्यो छे जे एक वाचनामे एहवोछे [जेजिण पडिमाणं अञ्च णं करेति] एतावत् एव दृश्यते जिनप्रतिमानी अर्चा कीधी एतलो दीसेछे एणें (जिणघरे) इत्या दिक बोल कह्या नथी हिवणा जे सूत्र ग्याता प्रति प्र वर्तेछे अने ते प्रति बिचालें आतरागाढा घणा दीसे छे डाहा होइते बिचारीजो जो ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे द्रूपदीये नारदनें इम कह्यो जे (असंजए अबिरए) इत्यादि ए बोल सम्यक् दृष्टी बिना किम कहवाय तेहनो उत्तर परण्या पछे समकित तथा व्रत उदे आव्याछे नियाणा तीव्र परणामें नहीथा तिस कारणें बिवाहपछे सम्यक्तनो उदेछे इम जाणीयेछे जे डाहाहोय ते बिचारीजो ज्यो ॥ इती ७ मा प्रश्न ॥ तथा श्रीबीतरागदेवे सिद्धांतमांहिं साधु चारित्रीया नें श्री ठाणांगमध्ये पंचमहाव्रत पाल्याना फल तथा श्री उत्तराध्ययन चोवीसमामध्ये पांचसमिती तिण गुप्तिनाफल तथा अध्ययन छवीसमें दस बिधि समा चारीना फल फासू आहार दीधाना फल श्री जगव

ली अनेरा कोई नमोथुणं न कहे ए बात सूत्रसुं वि
रुद्ध दीसेछे तथा प्रत्यक्ष खमणा यत्येण भोजग प्रमु
ख घणाइं नमोथुणं कहेछे ते कांई सम्यग् दृष्टी जा
णया नथी चतुर होयते विचारी जो ज्यो तथा केत
लाइक इम कहेछे जे गणधरे इम क्यां कह्यो जे (जि
णघरे जिणपडिमा) तथा (धूवंदाऊण जिणवराणं)
तेहना उत्तर सांभलो जे जगमाहिं जेहना नाम जेहवा
परवरसता होय गणधर पिण तेहनो अधिकार आवे
तेहने तेहवे नामे कहे जिम श्री ठाणांग मध्ये तीजे
ठाणे गणधरे इम कह्यो जे (नारहवासे तउ तित्था
पन्नता मागहे बरदामे पभासे) तो जोउने जिम ग
णधरे तीर्थ कह्या तिम इम क्यांन कह्यो जे तउ(कु
तित्था पन्नता) जो गणधरे ते तीर्थ कह्या तो कांई आ
पणपे तीर्थकरी आराधवा नही एतले गणधरे जेहनुं
जेहवो नामहोवे तेहने तेहवो नाम कहे ते नाम कह्या
माटे कांई आराध्यन न थाय श्री वीतरागे तो
ज्ञान दर्सण चारित्र आराध्ये त्रिजे ठाणे कह्या (ति
विहा आराहणा पन्नता तं नाणाराहणाए दंसणारा
हणा चरित्ताराहणा) तथा गणधरे आपणे मुखें इ
म कह्यो पूर्णभद्र यक्षने [जे दिव्वे सच्चे] ये यक्ष सा
चो जो गणधरे इम कह्या जे ए यक्षसाचा तो कांई
आपणले आराध्य थयो नही तथा गणधरे इम क
ह्यो जे गोशालाना श्रावक एहवाछे [जे अरिहंत दे

भूताग अम्मा पीऊ सस्यु सगा] गणधरे इम कह्यो जे गोशालाना श्रावकने अरिहंत देवछे पिण गणध रे इम स्युं न कह्यो जे गोशालाना श्रावकने गोशा लो कुदेवछे एतले इम जाणजो जे लोक मांहि जे प दार्थ जेहवा परवरतेछे ते गणधर पिण तिमहीज कहे तथा द्रूपदीना आलावानी वृती माहिं इम कह्यो छे जे एक वाचनामे एहवोछे [जेजिण पडिमाणं अच्च णं करेति] एतावत् एव दृश्यते जिनप्रतिमानी अर्चा कीधी एतलो दीसेछे एणें (जिणघरे) इत्या दिक बोल कह्या नथी हिवरा जे सूत्र ग्याता प्रति प्र वर्तेछे अने ते प्रति बिचालें आंतरागाढा घणा दीसे छे डाहा होइते बिचारीजो जो ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे द्रूपदीये नारदनें इम कह्यो जे (असंजए अबिरए) इत्यादि ए बोल सम्यक् दृष्टी बिना किम कहवाय तेहनो उत्तर परण्या पछे समकित तथा वृत उदे आव्याछे नियाणा तीव्र परणामें नहीथा तिस कारणें बिवाहपछे सम्यक्तनो उदेछे इम जाणियेछ जे डाहाहोय ते बिचारीजो ज्यो ॥ इती ७ मा प्रश्न ॥ तथा श्रीबीतरागदेवे सिद्धांतमांहिं साधु चारित्रीया नें श्री ठाणांगमध्ये पंचमहाव्रत पाल्याना फल तथा श्री उत्तराध्ययन चोवीसमामध्ये पांचसमिती तिण गुप्तिनाफल तथा अध्ययन छवीसमें दस बिधि समा चारीना फल फासु आहार दीधाना फल श्री भगव

य सुवासेसु मणुया पगति भद्दगा रोहिता रोहितंस सुवणकुला रूप्पकुला सुसलिला सुदेवयाउ माहिद्दि याउ तासिंपणिसदावाति वियडा वियदृ वेयदृ पव तेसुदेवा महिद्दिया जावपलितो वम ठितीया पणत्ता महा हिमवंत रुप्पी सुवासहर एवयेसु देवा मांहिद्दि या जाव पलिउवम ठितीयाए हरिवास रम्मवासेसु मणुया पगति भद्दगा गंधावति मालवंत परितातो सुवदवेयदृपवतेसु देवा माहिद्दिया णिसदणे लवंते सुवासहर पवएसु देवा महिद्दिया सवाउ दहदेवताउ नाणियवाउ पउ मदहाउ तेगिछि केसरिदहाउव साणेसु देवयाउ महिद्दियाउ तासिं पणिहाये पुवविदे ह अवर विदेहसु वासेसु अरिहंता चक्कवादि बल देव वासुदेव वारण विज्जाहरा समणाउ समणीउ सावगाउ सावियाउ मणुया पगतेसिं पणिहाय लवणे सीया सीता दगा सुसलिला सुदेवता महिद्दीया देवकुरु उत्तरकुरा सुमणुया पगति भद्दगा मंदरे पवते देवता महिद्दीया जंबूएणं सुदंसणाए जंबूद्दीवा हिपती अणाढिएणाम दे वे महिद्दिये जाव पलितोवमठितीए परिवसंति तस्स परिहाय लवण समुद्देणो उवीलेती नो उप्पीलेति नो चेवणं एकोदगं करेति ॥ तो जोवो अरिहंतनो प रजाव कह्यो चक्रवर्तिनो बलदेव वासुदेव चारण वि द्याधर साधू साधवी श्रावक श्राविका प्रकृतिभद्र म नुष्य गंगासिंधुदेवी इत्यादिक जे जेणें थानकें जेहने

दरनावछे तेहना प्रनाव कह्या अनें जेणे जेणे पर्वतें शास्वती प्रतिमाछे तेणें तेणें डुंगरे जे जे देवता बसें छें तेहना प्रनाव वीतरागे कह्या पिण प्रतिमाना प्र नाव न कह्या अने अब कितनेंक लोक प्रतिमाना गाढा घणा परनाव कहेछे पिण श्री वीतरागे काई प्रनाव न कह्या जो कोई प्रतिमानों प्रनाव होतो इ हां प्रनाव कहता जोउने जो कोई प्रकृतिनद्र मनु ष तेहनो प्रनाव कह्यो तो प्रतिमानो प्रनावस्यूं न कह्यो स्याहा होइ ते विचारीजो ज्यो ॥ इति नवमा प्र श्नः ॥ तथा श्री सिद्धांत मांहिं श्री वीतरागदेवे साधू श्रावक सम्यग् दृष्टीनें कही प्रतिमा आराधी न कही अने जिवारे प्रतिमाना थापक कने पूछीये तिवारे सुरियान्न देवताना आलावा देखाडे ते तो सु रियान्न देवताइ मोक्षनें खातें प्रतिमा नथी पूजी ते अधिकार लिखीयेछे जिहां सुरियान्न देवताइं श्री वी तराग बांद्या तिहां ऐसा कह्या एयंमे (पेच्चा हिया ये सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए नाव स्सतिकटु) अने जिहां सुरियाने प्रतिमा पूजी तिहां एहवो कह्यं (किमेपुव्विंपछा हियाए सुहाए खमाए णिस्से साए आणुगामियत्ताए नविस्सइ) तो जोवो जिहां वीतराग बांद्या तिहां [पेच्चा] कहिता परनवे (हि याए सुहाए) कह्या अने जिहां प्रतिमा पूजी तिहां (पुव्विंपछा) कह्यो ॥ पिण परनवे न कह्यो ए बडा

सिद्धांत मांहिं जिहां जिहां देवताए अथवा मनुषे श्री बीतराग बांद्या तिहां (पेच्चाहियाए) अथवा इहनवे परनवे (हियाए) कह्यो पिण कहीं (पूर्विं पछाहियाए सुहाए) न कह्यो अनें जिहां प्रतिमा पूजी देवताइं तिहां [पूर्विंपछा हियाए सुहाए] कह्यो पिण किहांइ पेचा अथवा परनवे [हियाए सुहाए) न कह्यो एणें कारणे प्रतिमा मोक्षने खाते नथी जिम नगवती सूत्रमध्ये बीजे शतकें खंदकने आलावे बहु अधिकार जूजूया कह्या छे तेलिखीएछे (जेणेव समणे नगवं महावीरे तेणेव उवागछइ २ समणं नगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ २ जाव नमंसित्ता एवं वदासी अलित्तेणं नंते लोए पलित्तेणं नंतें लोए आलित्तपलित्तेणं नंतेलोए जराए मरणेणंय सेजहानामति किति गाहावती आगारं सिझियायमाणं सिझसे तत्थनंडे नवइ अप्पसारे मोल्लगुरुएतं गहाय आयाए एगंत मंतं अवक्कम्मति एसमे नित्थारिए समाणे पछापुराए हियाए सुहाएखमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए नविस्सइं एवामेव देवाणुप्पिया मज्जवि आयाएगे नंडे इठे कंते पिए मणुणे मणामे धेज्जे विस्सासिए समए बहुमए अणुमए नंडकरंमग समाणे माणं सीयं माणं उण्हं माणंखुहा माणं पिवासा माणंचोरा माणं वाला मा णंदंसा माणंमसया माणं वाइय पित्तियसं नियसन्नि

आइयविविहासेगायंका परीसहो वसग्गा फुसंतु तिकट्टु एसनित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए निसेसाए अणुयगामियत्ताए भविस्सइ) अहींयें खंदके श्री महाबीरनें इम कह्यो जिम कोई एक गृहस्थनें घरे आग लागी होयते घरनो धणी सारवस्तु काढे अने इम कहे ए सार भंडार काढयो होइ हुंतो मुझनें (पछा पूरा हियाए सुहाए) आदिहोसी ॥ अनें हुं जे चारित्र लेऊंछूं ते मुझने (परलोगस्स हियाए सुहाए) आदिहोसी हिवे जोउने लक्ष्मी काढयांना अने चारित्र लीधाना शब्दना केतला फेरछे (हियाए सुहाए जाव आणुगामीए) ए शब्दतो बेहु अधिकारे कह्याछे पिण लक्ष्मी काढी तिहां इम कह्यो (पछापूरा) अनें चारित्र लीधो तिहां इम कह्यो (परलोगस्स) तो जोवोनें इम इहां एतला बडा फेर शब्दनाछे तिम सूरियाभनें पिण आलावे जिहां प्रतिमा पूजा तिहां (पूविंपछा) अनें जिहां बीतराग बांधा तिहां [पेच्चा] इम कह्यो एवआ शब्दना फेरछे ए आलावाने मेले सूरियाभी देवताइ प्रतिमा पूजी अनें प्रतिमा आगें नमोथूणं कह्यो ते जूनी मर्याद अर्थात् पुरानी मर्याद रीतहै तथा जिम प्रतिमाने (पुविंपछा) कह्योछे तिम दाढानी पूजानें पिण [पूविंपछा] कह्योछे एवहुं अधिकार एकठाणछे तथा केतलाएक इम कहेछे जे सुधर्मासभाइ तीर्थंकर

नी दाढाछे तिहां देवता मैथुन न सेवे ते भणी ते दाढ सम्यक्तमें खातेछे तो जोवो अनें जो सम्यक्तखा तें होइ तो ॥ पुविं पछा ॥ क्यां कहे अनें ॥ धम्मियं विवसाईयं ॥ पीण क्यां कहे तथा श्रीठाणांगमध्ये त्रीजेठाणे व्यवसाय त्रीण कह्या ते लिखीयेछे ॥ तिवि हे विवसाए पन्नते तंजहा धम्मिए विवसाए अध म्मिए विवसाए धम्मिया धम्मिए विवसाए ॥ ते धम्मं विवसाए साधुनो धम्मां धम्मं श्रावकनो बाकी २२ दंडक अधर्म विवसाये कह्या तो जोवोनें देवता श्री बीतरागें अधर्म व्यवसाई कह्या अने जिहां सुरीया भ देवता प्रतिमा तथा द्रह वावि इत्यादि पूजवा ऊ ठ्यो तिहां इम कह्यो जे धम्मियं विवसाईयं गिणिह ज्जा अने ठाणांगमध्ये दसमेठाणे धम्मतो दस कह्या ॥ दसविहेधम्मे पन्नते तंजहा गाम धम्मे १ नगर धम्मे २ रठधम्मे ३ पासंड धम्मे ४ कुलधम्मे ५ ग णधम्मे ६ संघधम्मे ७ सुयधम्मे ८ चरित धम्मे ९ अत्थिकायधम्मे १० ॥ ए दस धर्म कह्या तेहमाहि जे ॥ धम्मियं विवसाइयं गिणिज्जा ॥ कह्यो ते तो कु ल धर्म मांहिं आवेछे अने केतलाएक इम कहेछे जे ॥ धम्मियं विवसाईयं ॥ कहतां श्रुत धर्म कहिये तो डाहाहोयते विचारी जो ज्यो ॥ जे सूरीयाभें तो प्र तिमा द्रह वावि हाथियार इत्यादि घणा वाना पूज्यां छे अनें ॥ धम्मियं विवसाईयं ॥ तो समुचयपद कह्यो

छे ज्यो (धम्मियं विवसाईयं) श्रुत धर्म तो द्रह वा
वि हथियार प्रमुख जेतला वाना पूज्या ते सहु श्रुतं
धर्म थाय अने तिहांतो इम न कह्यो जे प्रतिमानी
पूजा तथा नमोथुणं ते श्रुत धर्म अनें द्रह वावि
हाथियार इत्यादि ते कुलधर्म तिहांतो समुच्चय जे प
दें (धम्मियं विवसाईयं) कह्योछे प्रतिमा नमोथुणं
द्रह वावि हथिआर परमुख सहुने कह्योछे डाहा होइ
ते विचारीजो ज्यो तथा वली पीछयो (धम्मियं वि
वसाईयं) कह्यो ते पुस्तक बाच्या पछे कह्यो अने ते
पुस्तकनें एहज सूत्र मांहिं इम कह्योछे जे (धम्मि
येसत्थे) एतले ते पुस्तकनों नाम त धर्म सास्त्र अनें
आचारांग आदिक जे सम्यक् सास्त्रछे ते तो ते न
होय तो जोवोनें ते कोनसे धर्म शास्त्रछे जो श्रुत ध
र्म्म शास्त्र होइतो तेइमांहिं द्रह वावि हथीयार प्रमुख
जे वाना पूज्या ते पूजवा न नीकले एणे कारणे ते
श्रुत धर्म्म शास्त्र न होय डाहाहोय ते विचारी जो
ज्यो ॥ इति सूरिआभाधिकारः ॥ १० ॥ तथा केत
लाइक इम कहेछे ॥ जे साधू चारित्री आने बिद्याचा
रण जंघाचारण लब्धि ऊपजेछे ते लब्धिने प्रमाणे
मानुषोत्र पर्वते जाइ तिहां (चेईयायं वंदित्तए) ए
हवो शब्दछे तिहां केतलाइक इम कहेछे जे मानुषोत्त
र पर्वते (चेईय) शब्दे प्रतिमा वांदीतेहना पडुत्तर
पीछयो श्री बीतराग सिद्धांत मांहिं मानुषोत्तर पर्वत

पे च्यार कूंट कह्या पिण सिद्धायतन कूंट न कह्या अ
नें अनेरे पर्वतें जिहां सिद्धायतन कूटछे तिहां कूटनी
वर्णव करता सिद्धायतन कूंट पीण माहे कह्याछे अने
जो एणें परवतें सिद्धायतन कूंट न कह्यो हिवे श्रीठा
णांगमांहिं मानुषोत्रें जे कूंट कह्या ते लिखीयेछे (मा
णुसत्तरस्सणं पव्वएस्स चउदिसि चत्तारि कूडा पन्न
त्ता तंजहा रयणे रतणुवते सव्वरयणे रयणसंचए) तो
जोवोनें इहां शाश्वती प्रतिमा नथी तो (चेईय) श
ब्दे स्यूं बांघो अने श्री अरिहंत तो जिहां रह्या वा
दीए अनें (चेईय) शब्द अरिहंतनें तो घणे ठामें
कह्याछे ते ठाम लिखीएछे [तंगछामोणं देवाणुप्पिया
समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो
सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पज्जुवासामो
एतंणे पेच्च भवे इह भवेय हिताए सुहाए खमाए णि
स्सेसाए आणुगामियत्ताए भवस्सती तिकट्टं] श्री
उववाई मध्ये अरिहंत विद्यमाननें [चैत्य] तंगछा
मोणं देवाणुप्पिये समणं भगवं महावीरं वंदामो नमं
सामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चे
ईयं पज्जुवासामो एयंणे इहभवेय परभवेय हियाए सु
हाए खमाए निसेस्साए आणुगामियत्ताए भविस्स
ति) श्री भगवती मध्ये शतक ९ ॥ चैत्या ॥ तंगछा
मिणं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्का
रेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवा

सामि ॥ रायपसेणी मध्ये अरहंत विद्यमान ॥ चैत्य ॥ अम्हेणं भंते सूरीयाभस्स देवस्स अभियोगा देवाणु प्पियाणं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो क ल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पज्जुवासामो इम रायपसे णी मध्ये चैत्य कह्या॥उपासगदशा मध्ये ॥ चैत्य ॥ इ ह महा माहाणे उपन्न नाण दंसणधरे तीयपडुप्पणा णा गय जाणए अरहा जिणे केवली सवनु सवदरि सीते लेक्क नहित पूयिते सदेव मणुया सुरस्सा लोग स्स अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्मा णणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पज्जुवासणिज्जा) इहां उपासगदशांग सातमा अध्ययनमध्ये अरिहं त विद्यमान [चैत्य] इत्यादि घणे ठिकाणे अरिहं तने चेईय शब्द कह्याछे जो मानुषोत्तरे रह्यां अरिहं त वांद्या तो इम जाणज्यो जे सगलेईज अरिहंत वां द्या डाहा होयते विचारीजोज्यो तथा कोई इम कह स्य जे नंदीसरवरे (चेईय) शब्दें स्यूं वांद्या तेहनो उत्तर दीजयो जउ मानुषोतरें [चेईय] शब्दें अरिहं त वांद्या तउ नंदीश्वर वरें प्रमुख सघले (चेईय) शब्दें अरिहंतज वांद्या मानुषोतरे अनें नंदीसरवरें शब्द फेर काईछे नही इहे सरीखा शब्दछे तथा रुच कद्वीपें पीण शाश्वती प्रतिमा सूत्रें किहां कही नथी तथा जंघाचारणने आलावे बीजा प्रत्युत्तरछे पिण जो मानुषोतरें शाश्वती प्रतिमा नथीतो बीजा प्रत्युतर

नो स्यूं कारण ॥ माहा होइते विचारीजोज्यो ॥ ११ ॥
तथा श्री भगवती सूत्रमध्ये चमरेंद्रने अधिकारे एह
वा शब्दछे जे [णणत्थ अरिहंतेवा अरिहंतचेतिया
णिवा अणगारेवा भावियप्पणो निस्साएउढ्ढं उप्पयं
ति) तिहां केतलाइक इम कहेछे जे (अरिहंत चेई
याणिवा] कहतां जिन प्रतिमानी नेश्राइं जाइ तेह
ना प्रत्युत्तर लिखीयेछे जो प्रतिमानी नेश्राइ होइ तउ
चमरेंद्र भरतखंड लगें स्याने आवे शाश्वती प्रति
मातो चमरेंद्रने ढुकमी हती अनें जो तेनें गरजसरेतो
भरत खंडलगे क्यों आवे तथा सौधर्म्मइंद्र वज्र मू
क्यो तिवारे चमरेंद्र भयभ्रांत हुंतो भरत खंडलगें
स्यूं आव्यो जउ प्रतिमाइं गरज सरइतो तिहां शा
श्वती प्रातिमा पासे हती अने तेहनें सरने जात पि
ण जेहना सरणथी छूटीए तेहने सरणे आव्यो दीसेछे
अर्थात् महावीरजीके सरणे सेंगगयाथा ओर उनही
के सरणे आयोछे तथा सौधर्मेंद्रें पिण वज्र मुंकी
एहवो चिंतव्यो जे चमरेंद्रनें एतली शक्ति नथीजे आ
पणी नेश्राये इहां लगें आवे पिण अरहंत चैत्य अ
णगार एहेनी नेश्राये आवे अने मेंतो वज्र मूक्योछे
तो ते अरिहंत भगवंत अणगारनी आसातनाइं मु
झनें महा दुःख होइ एतले जोवोने अरिहंत भगवं
त तथा छद्मस्त जिन तथा अणगारनी आशात
ना कही पिण कांई प्रतिमानी आसातना न कही

एतले सौधर्म्मेंद्रे अरिहंत तथा छद्मस्त जगवंत (चैत्य) शब्दनें कह्या दीसेछे अनें वृत्तिमांहिं पिण अरिहंतज फलाव्याछे पिण प्रतिमा नथी फलावी ॥ डाहा होयते बिचारी जो ज्यो ॥ १२ ॥ तथा श्री उववाई उपांग मध्ये अंबम श्रावकने अधिकारे एहवा शब्दछें जे ॥ ननत्थ अरिहंतेवा अरिहंत चेईयाणि वा) तिहां केतलाएक इम कहेछे जे अरिहंत ॥ चेईय ॥ शब्दें प्रतिमा तेहना प्रत्युतर लिखीयेछे ॥ अरिहंतेवा अरिहंतचेईयाणिवा ॥ ए बेहुं शब्दें अरिहंतेज जाणवा केतलाइक इम कहेछे जे अरिहंतनें बे शब्द किम कहीये वा शब्दतो विकल्प होय तो जोवो नें सिद्धांत मांहिं ठाम ठाम इम कह्यो जे ॥ समणंवा माहणंवा ॥ एक साधूने बेहुं नाम कह्या तथा वा शब्द पिण कह्यो तथा श्री सूयगमांग अध्ययन सतरमें एक साधूना तेरे नाम कह्याछे अने १३ नामे वा शब्द पिण कह्योछे ते लिखीयेछे ॥ समणेतिवा १ माहणेतिवा २ खंतेतिवा ३ दंतेतिवा ४ गुत्तेतिवा ५ मुत्तेतिवा ६ इसीतिवा ७ मुणीतिवा ८ कितीतिवा ९ विदूतिवा १० जिखुतिवा ११ लूहेतिवा १२ तीररठीतिवा १३ ॥ इमवली एक वस्तुना घणा घणा नाम आवेछे तथा वली वृत्तिकारें पिण ॥ अरहंतेवा अरिहंत चेईयाणिवा ॥ तिहां अरिहंतज फलाव्याछे तथा ॥ चेईय ॥ शब्दें सूत्रमांहिं घणे ठामें अरिहंत

कह्याछे ॥ तंगछामो देवाणुप्पिया समणं जगवं महा
वीरं वंदामो ॥ इत्यादि वाकी आलावा जे (चेईय)
शब्दें अरिहंतने कह्याछे ते पूर्वलीपरें जाणवा तथा
केतलायेक इम कहेछे जे वृत्तिकारे (चेईय) शब्द
ऊघाडा माटे न फलाव्यो तो जोतनें [चेईय] श
ब्द उघाडोके अरिहंत शब्द उघाडो जो उघाडो श
ब्द न फलावे तो इहां अरिहंत शब्दनें फलाव्यो जो
ईये डाहा होइते विचारी जो ज्यो ॥ १३ ॥ तथा श्री
उपाशगदशांगमध्ये आणंद श्रावगनें अधिकार के
तलाइक इम कहेछे जे प्रतिमा आराधेछे तेहना प्र
त्युत्तर प्रीछयो ॥ नो कप्पई ॥ कह्यो ते मांहिं नो आ
पणें काई संमंध नथी आपणनें तो संमंध ॥ कप्प
ई ॥ माहिछे अनें ॥ कप्पई ॥ मांहिंलो प्रतिमा न क
ही तथा ॥ नोकप्पई ॥ मांहि केतलाइक इम कहेछे
जे अन्यतीरथी परिग्राहित ॥ चैत्य ॥ न कल्पे तो अ
ण परिग्राहित कल्पे तेहना प्रत्युत्तर प्रीछयो इहां प्रति
मानो स्युं अधिकारछे इहातो इम कह्या जे ज्यां लगे
ए नथी बोलावे तां लगे हूं पूर्वे नथी बोलुं तथा मि
थ्यातीने गुरुभावे अन्न पानादिक न देवुं तो जोवो
नें प्रतिमा काई बोले क्या अन्नादि प्रतिमानें काम
आवे माहाहोइते विचारी जो ज्यो ॥ १४ ॥ तथा
श्री प्रश्न व्याकरण मध्ये त्रीजे संवर द्वारे ॥ चेईअ
ठे ॥ एहवो शब्दछे तिहां केतलाइक इम कहेछे जे

साधू चारित्रीयो प्रतिमानो बियावच्चकरे तेहना प्रत्यु त्तर प्रीछयो तिहांतो एहवो अधिकारछे जे साधू चा रीत्रीयो गृहस्थना घरथकी उपधिजात पाणी आणें अने आणीनें अनेरा साधूनें आपे ते स्यां न णी आपे ते प्रीछो जे (चेई अठेय] चैत्यार्थ ज्ञा नार्थे ज्ञाननें अर्थे तथा निर्ज्जरार्थि आपे तथा एहि ज सूत्रमध्यें घणुं विस्तारछे जे अप्रीतिकारीयाना घरमाहिं न पेसे अप्रीतिकारीयानो जातपाणी उपधि न लिये वली इम कह्यो जे ॥ पीढ फलगसिज्जा सं थारक वत्थ पाय कंबल दंडग रजोहरण निसिज्ज चोलपट्टय मुहपोतीय पायपुंछणादि जायण जंडो वि हि उवगरण ॥ एतला वाना मांहिलो प्रतिमानें स्यूं काजे आवे अनें साधूनेंतो ए सगला वानां काजें आ वे इहांतो दत्तनो अधिकारछे जे दातारनो दीधोलेवो डाहा होयते बिचारी जो ज्यो ॥ १५ ॥ तथा प्रश्न व्याकरण माहिं पहिले आश्रव द्वारिं पृथवी कायने अधिकारें गढ पाटण आवास घरहाट प्रतिमा प्रासाद सभा इत्यादिकनें कारणे पृथवीनेंहणें ते श्री बीतरागें अधर्म्मद्वार मांहिं घाल्यो इहातो विशेष करि आश्रव अधर्मद्वार मांहिं प्रतिमा कहीछे डाहा होई ते बिचा री जो ज्यो तथा केतलाइक इम कहेछे जे इहांतो इम कह्यो जे॥पुढवी हिंसंति मंदबुद्धियात॥ते मंद बुद्धी शब्दें मिथ्यात्वीए अर्थ सूत्रस्यूं मिले नही ते एतलाजणी जे

पाचमा अधर्म द्वारमांहिं परिग्रहने अधिकारे चक्रवर्ति वासुदेव बलदेव अनुत्तर बिमानवासी देवता ॥ इत्यादि घणा कही आगले कह्यो जे मंद बुद्धी हुंता परिग्रह हनों संचो करतो जोवोनें जे कोई कहेछे मंदबुद्धी शहें मिथ्यात्वी ते अर्थ झूठा सूत्र विरुद्ध दीसेछे डा हा होइ ते विचारी जो ज्यो ॥ १६ ॥ तथा केतलाइ क इम कहेछे जे आज्ञामे धर्म कहिये पिण दयामें ध र्म न कहीये तेहना प्रत्युत्तर भीछयो श्री वीतराग देवे घणेठामे दयामे धर्म कह्योछे अने यही आज्ञा धर्म छे दयामे धम्मछे ते लिखीयेछे ॥ तुलीया [illegible] समा दाय दया धम्मस्स खंतिए विप्पसी इज्जमेहावी तहा भूयणअप्पणो १ ॥ श्री उत्तराध्ययन पाचमामध्ये त था ॥ दयावरंधम्म दुगंछमाणो वहावहं [illegible] पसंस माणे एगंपिजे भोययती असीलं णिवोणि संजातिक तसुरेहिं ४५ ॥ श्री सूयगडांग अध्ययन बावीसमा मध्ये गाथा ॥ धम्मो मंगल मुकठं अहिंसासं जमोतवो देवावित्तं नमंसंति जस्स धम्मे सयामणो१॥ श्री दसवैकालिक प्रथम अध्ययनमध्ये तथा ॥ सेवेमि जेय अतीता जेयपडुप्पन्ना जेय आगामिस्सा अरहं ता भगवंतो ते सवे एव माइक्खंति एवं भासंति ए वं पन्नवेंति एवं परूवेंति सवेपाणा सवेभूता सवेजी वा सवेसत्ता न हंतवा न अज्जावेतवा न परिघेतवा ए परितावेयवा न उद्दवेयवा ए सधम्मे शुद्धे ॥ श्री

आचारांग चउथे अध्ययनेंछे तथा श्री वीतरागे द
याई करी मोक्ष कही ते लिखीएछे (सगरो विसाग
रंतं नरह वासं नराहिवो इस्सरियंकेवलं हिच्चा दया
ए परिनिवुड) श्री उत्तराध्ययन अठारमे मध्ये
गाथा ३५ तथा श्री वीतरागें कुसीलीया दया रहित
कह्या ते लिखीएछे (नत्तंअरीकंठ छिता करेइ जंसे
करे अप्पणिया दुरप्पया सेणाहिईमच्चु मुहंतुपत्ते प
छाणुतावेण दया विहूणो) श्री उतराध्ययन २० में
मध्ये गाथा ४८ तथा आज्ञा दयामें कही ते लिखीए
छे (तमेव धम्मं दुविहं आइक्खंति तंजहा आगार
धम्मंच अणागार धम्मंचं अणगार धम्मोत्ताव इहख
लुसवउ सवताए मुंडे नविता आगारातो अणगारि
तं पव तितस्स सवातो पाणाई वायातो वेरमणं म
सावाय अदतादाणं मेहुण परिग्गह राई नोयणाउ
वेरमणं अयमाउसो अणगार सामाइए ए धम्मे प
न्नत्ते एयस्स धम्मस्स सिखाए उवठिए णिग्गंथेवा
निग्गंथीवा विहरमाणे आणाए आराहए नवति
आगारधम्मं दुवालस्सविहं आइखई तंजहा पंचअ
णुव्वयाइं तिन्निगुणव्वयाइं चत्तारिसिखावयाइं पंच अ
णुवयायं तंजहा थूलाउ पाणाई वायाउ वेरमणं थूला
उ मूसावायाउ वेरमणं थूलाउ अदिन्ना दाणाउ वेरम
णं सदार संतोषे इछा परिमाणे तिन्निगुणवयाइं तंज
हा अणत्थ दंड वेरमणं दिसिवयं उवनोगपरिनोग

परिमाणं चत्तारिसिखावयाइं तंजहा सामातियं दे सावगासियं पोसहोववासो अंतिहिं संविनागो अप छिम मारणंतिया संलेहणा जुसणा अराहणा अयमा उसो आगार सामाइये धम्मे पन्नते एयस्स सिखा ए उवठिउ समणो वासएवा समणो वासिएवा विहर माणे आणाए आराहए नविति) इहां पंच महाव्र त अनें बारा व्रत आज्ञा कही एह मांहितो हिंस्या काई नथी श्रीउववाई उपांगे तथा (तत्थिमातत्तियाना सा जंवदित्ताणुतप्पत्ती जंउन्नं तंनवत्तवं एसाअणाणि यंठिया) श्री सूयगमांग अध्ययन नवमा मध्ये गा था २८ इम घणाइ अधिकारछें दयामें धर्म सूत्रें घ णोठामे कह्याछे तथा केतलाइक इम कहेछे जे धर्म आज्ञाइं कहीयेते अम्हारे आज्ञागाढी प्रमाण तेहा हा होइते बिचारी जो ज्यो जे श्री वीतरागनी आज्ञा तेतो पंच महाव्रत अने १२ व्रत तथा बारे भिक्षु प डिमा ११ श्रावगनी पडिमा इत्यादिक बोलनुं पालि वो ते श्री वीतरागनी आज्ञा ते तो दयामईछे तथा कोइएक इम कहस्ये जे साधूनें आहार निहार विहा र करता कांई काई सावद्य लागेछे तेहना उत्तर प्रि छयो ते तो असक्य परिहार अनाकुटिछे अनें ते पण असक्य परिहार अनें अनाकुटिइं जे काई साव द्य लागे ते सर्व आलोये निंदे एतावता श्री सिद्धांत मां हिंस्याते आलोवी निंदवीछे पिण श्री सिद्धांतमां

हिं हिंस्या कही अनुमोदवी नथी तथा श्री वीतरागें श्री प्रश्न व्याकरण मांहि श्री जीवदयानें सम्यक्तनी आराधना कही तथा बोधिकही तथा निर्मली दृष्टि कही तथा पूजा कही एहवा घणा बोल तथा उदाहरणा कह्यांछे ते अधिकार लिखीएछे [तत्थ पढमं अहिंसाजासा सदेव मणुया सुरस्स लोगस्स भवित दीवोत्ताणं सरणगती पईठा नेवाणं नेवुई समाहिः संता कित्ती कंतीरईय विरतीय सुयंगति चीदया विमुत्ती खंती सम्मत्ताराहणा महती बोही बुद्धी द्धित्ती संमिद्धीरिद्धीविद्धीठित्ती पुठी नंदी नद्दाविसुद्धी लद्धि विसिद्धादिठी कल्लाणं मंगलं पामाउ विभूतिरक्खा सिद्धावासो अणासवो केवलीणठाणं सिव समिय सील संजमोत्तिय सीलघरो संवरोयगुत्ती ववसाउ उस्स तोथ जणो आयतण जयणमप्पमाउ आसासो वीसासो अभउसवस्स वियमाघाउ चोख पवित्तासु पूया विमल पभासाय निम्मलत्तरति एवमादीणि नियगुण निम्मियाइं पज्जवनामणिहोति अहिंसाए भगवंतीरा एसा भगवती अहिंसा जासाभीयाणं पिव सरणं पक्खीणं पिवगयाणं तिसियाणं पिवसलिलं खुहियाणं पिव असणं समुद्दमज्झेव पोतवहणं चउप्पयाणंच आसमपयं दुहठियाणंच उसहिवलं अटवीमज्झेवसत्थगमणं एत्तो विसिठतरिका अहिंसाजासा पुढविजल अगणि मारुय वणष्फति वीजहरिय जलचर खह

चर तस थावर सवजूय खेमकारी एसा नगवती अ हिंसा) एहवी जीवदया श्री वीतरागेसार प्रधान क ही एहवी जीव दया श्री बीरागना मारगमांहिछे पिण अनेथिनथी जेहनी मिथ्यामतिछे तेहनी कहणछे पिण करणि नथी ॥ १७ ॥ तथा श्री ठाणांगमांहि इम क ह्यो (चउविहेसच्चे पन्नते तंजहा नामसचे ठवणसच्चे दव्वसच्चे नावसच्चे) इहां केतलाइक कहेछे जो वीत रागे स्थापना सच्च कही तो स्थापना आराध्यथई तेहना प्रत्युत्तर प्रीछयो ए चारि सत्यकह्याते नाष्या ऊपरछे पिण आराध्यऊपरी नथी एहज ठाणांगमध्यें दसमे ठाणे दसमसत्य कह्याछे तो ते कांई दसस्यूं आ राध्यछे ते तो नाष्या ऊपरछे ते लिखीयेछे (दसवि हे सच्चे पन्नते तंजहा जणवयसचे समयसचे ठवणास चे नामसच्चे रुवसचे पडुवसच्चे विवहारसचे नावसचे जो गसचे उवनसचे) तथा श्री पन्नवणाजी मध्ये दसवि हेसचे नापा पदमध्ये कह्याछे तो जोवोनें तेमध्ये (ठ वणसचे) कह्यो ते नाषा सत्य कहीये पिण आरा ध्यनही डाहा होइ ते बिचारी जो ज्यो इहां स चे शब्द कह्यो ते एतला नणी जे जेहवो नामहोय तेहने तेहवे नामे बोलावतां कूठ नही इमकोईकनो नाम कुलवर्द्धन होई अने तेह जनम्यां पछे कुलक्षय थयो होइ तेहो पिण तेहने कुलवर्द्धन कही बोलावतां कूठो नही तथा चित्रकारे हाथी चितारयां हाथी आ

लेख्यो होइ अनें ते देखीनें तेहने हाथी कहतां जूठो नही तथा घीनो घडोहोइ अने तेहमांहिंथी घी ठाल व्यो होइ अने ते घडाने घीनो घडो कहिये तो तेहने कहितां जूठो नही इत्यादि ए भाषा ऊपरिछे इहां आराध्यनों विशेष कांई नथी डाहा होइ ते बिचारी जो ज्यो ॥१८॥ तथा श्री अनुयोगद्वारमध्ये आवश्यकना च्यारी निक्षेपा कह्याछे तिहां केतलाइक इम कहेछे इहां आवश्यक करतां थापना करी माडवी कहीछे ते कहण गाढासूत्र विरुद्ध दीसेछे ते प्रीछयो इहांतो आवश्यकना ४ निखेपा कह्याछे ते इम कह्याछे नाम आवश्यक ते कहिये जे कोई जीव अथवा अजीवनुंनाम आवश्यक दीधो होइ तथा थापना आवश्यक ते कहिये जे साधू अथवा साधवी अथवा श्रावक अथवा श्राविका जिम आवश्यक करे तेहवो आकार कोईएक करे अथवा असद्भावकाष्टादिकने कहे जे ए आवश्यक ते स्थापना आवश्यक कहिये तथा द्रव्यावश्यकना घना एक भेद कह्याछे जाणग सरीर भवीयशारीर तथा लोक विहाणामांहिं ऊठी मुख धोइ लूगमां पहिरे तंबोल वावरे इत्यादिक करे द्रव्यावश्यक कहिये तथा (समणगुण मुक्कजोगीभाव आवस्सयं चिठई) एह पिण द्रव्यावश्यक कहिये इत्यादि घणा बोल कह्याछे एहमांहि आपणें कांई आराध्यनथी आपणेंतो लोकोत्तर भावावश्यक आराध्यछे डाहाहोइ ते बिचारी

जो ज्यो इहां सूत्रमांहि आवश्यक करतां स्थापना करवी कही नथी तथा इहां सूत्रना पिण च्यार निखेपा कह्याछे तथा खंध आदिदेई घणा बोलना निखेपा कह्याछे एकला आवश्यक ऊपरितो निक्षेपा कह्या नथी डाहा होइते विचारी जो ज्यो ॥ १९ ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे राजा वांदवा गया न्हाए करीने गया ते स्यूं घोमाहाथी लेई गयाते स्यूं नगर फूटरा कराव्या ते स्यूं तथा मल्लिनाथे मोहन घर कराव्या ते स्यूं तथा सुबुद्धी मुहते फरस्यो द्रहनो पाणी आणाव्यो ते स्यूं तथा संखपोखलीने अधिकारे श्रावक एकठा जीम्या ते स्यूं तथा चारित्र महोत्सव कर्या ते स्यूं इत्यादि घणा बोल कहेछे तेहना प्रत्युत्तर दीजयो श्री सूयगडांगमध्ये अठारमे अध्ययन किरीएठाणे श्री वीतरागें त्रिण पक्षकह्या तिहां धर्म पक्ष ते सर्व सर्व विरति कह्या अने अधर्म पक्ष ते अविरतिकह्यो अने त्रिजो मिश्रपक्षते काई विरति कह्यो इम त्रिण पक्ष कही सर्व बोल बे थोक कीधी एक धर्म बीजो अधर्म्म श्रावकनी जेतली विरति तेतली धर्म मांहिं घाली अने जेतली अविरति तेतली अधर्म मांहिं घाली हिवे जोउने जे न्हाया घोडा हाथी लेईगया इत्यादि सर्व तेहनी विरति के अविरति न्हाया घोडा हाथी लेइगया इत्यादि सर्व ते तेहनी अविरतीछे अनें अविरत तो श्री वीतरागे अ

धर्मे माहिं कही अने बिरतते धर्म माहिं कही जो सा
धूने बिरतछे तो ते साधू न्हावे नही घोडे हाथी चढे
नही तथा श्रावकने जो पोसह माहिं बरतछे तो पोस
हलीधे न्हाय नही घोडेहाथीइं चढे नही डाहाहोयते
बिचारी जो ज्यो ॥ २० ॥ तथा श्री जीवाजीगममध्ये
नंदीस्वरनें अधिकारे तीर्थंकरना कल्याणकादि कार
णें घणाएक देवता एकठा मिलें मिल्याहुंता क्रीडाकरें
इम अठाई महोछवकरे एतो देवताओनी स्थिती दी
सेछे तथा मागधवरदाम प्रभास १०२ तीर्थना तीर्थो
दक तीर्थनी माटी ल्यावेछे तथा गंगासिंधूआदिदेई न
दीनें विषे जई गंगानो गंगोदक गंगानीमाटी तथा
बीजी नदीना उदक माटी तीर्थंकरनें जन्ममें ल्यावेछे
तथा द्रहनो उदक ल्यावेछे ए आदिदेईनें देवतानी
गाढीघणी सूत्रमें स्थितिदीसेछे केतली एक लिखीये
छे जोउनें गंगानागंगोदक गंगानीमाटी द्रहना उदक
आणयामाटे तथा मागध परमुख तीर्थना
तीर्थोदक तीर्थनीमाटी आणयामाटे कांई गंगा अथ
वा द्रह अथवा ए तीर्थ मोक्षनें खातें न थाय इम दे
वतोनी घणी स्थितीछे डाहाहोइते विचारी जो ज्यो ॥
॥ २१ ॥ तथा प्रतिमाना थापक कनें पूछीयछे जे प्र
तिमा केही अवस्थानी करी मांडेछे श्री महावीरतो प
हिले तीसवरस ग्रहस्थी पणेंहता पछे ४२ वरष चारित्री
या थया तेहवें पूछीयेछे जे को श्री महावीरकी प्रतिमा

करी मांडीएछे ते कही अवस्थानी करी मांडवेछ जउ इम कहे जे अम्हे ग्रहस्थना अवस्थाकरी मांडेछे तो चारित्रीयानें बंदनीक टले ग्रहस्थनेतो चारित्रीयो बंदे नही अनें जो इम कहे जे अम्हे चारित्रीयानी अवस्थाकरी मांडाछ तो जोवोनें ए प्रतिमा मांहिं चारित्रीयाना स्यूं लक्षणछे चारित्रीयानेंतो फूलपाणी आभरण इत्यादि एको न कल्पे अने प्रतिमातो फूल पाणी आभरण आदि घणा वाना सहित दीसेछे फा हा होइ ते बिचारी जो ज्यो जेहने बंदना कीजे तेह नें विणउलखे किम वांदीए मोक्ष मारगे तो आराध्य गुणछे पिण मोक्षमारगे आकार आराध्य नथी जिम चारित्रीयो गुणवंत होइ अनें सहू श्रावकादिक ते चारित्रीया गुणवंतने वांदे कदाचित कर्मयोगें चारित्र भ्रष्टथयो होवे सीतोदक सचितादिक सेवे समकित भ्रष्टहोवे मिथ्यात परूपे मिथ्यात मतीयोमे रहे मिथ्याती देवगुरुकी भक्तिकरे और लिंग तेहिजहोइ तो पिण तेहने कोई डाहो होइते वांदे नही एतलाभ णी जे गुण सम्यक्त होणो थयो तउ जोवोनें जेहमाही ज्ञान दरसन चारित्रनो एको गुण नही तेहने किम वांदे सिद्धांत मांहि मोक्ष मारगे बंदनीक गुणछे बिवेकी होइते विचारी जो ज्यो ॥ तथा श्री वीतरागें सिद्धांतमांहिं प्रतिमा कही आराध्य न कही अनें जे कोई प्रतिमा आराध्य कहेछे तेह कन्हें एहवा एहवा

बोल पूछीयेछे ते बोल लिखीयेछे ॥ २२ ॥ प्रतिमा स्याहनी करावबी कहीछे चंद्र कांतिनी सूर्यकांतिनी वेडूर्यनी पाषाणनी सप्तधातनी काष्टनी लेपनी चीतारानी सिद्धांत सूत्रमांहिं केहवी कहीछे ॥ २३ ॥ प्रतिमानी ८४ आसातना कोणसे सूत्रमे कहीछे ते देखाड़ो तथा सूत्र सिद्धांत माहिं गुरु आचार्य उपाध्यायनी ३३ आशातना कहीछे अने ८४ आशातनातुम कहो ते केही ॥२४ ॥ प्रतिमानी प्रासादनी दंडवा ध्वजनी प्रतिष्टा किम कहीछे प्रतिष्टा श्रावक करे कि साधु करे आचलीया गछवाले कहे कि श्रावक करे बीजा गछमां कहेछे महातमा करे सिद्धांत सूत्रमें किम कह्योछे ॥ २५ ॥ दिगंबर षमणा इम कहे प्रतिमा नगन कीजे सेतांबर कहें नगन न कीजे सिद्धांत सूत्रमें किम कह्योछे ते देखाड़ो ॥ २६ ॥ तीर्थंकर जिवारे मोक्ष पहोंता तिवारे अणसणकीधा पालठी वाली पर्य्यंक आसन ऊभा काउसग्ग निसिज्जा आसण हिवे एह मांहि प्रतिमाकेणें प्रकारे कीजे सिद्धांत सूत्र माहि किम कह्योछे ते देखाड़ो ॥ २७ ॥ प्रतिमा त्रिण कालमांहि केहवे काले पूजीये सूत्र सिद्धांत माहि किम कह्योछे ॥ २८ ॥ प्रतिमा पूजता कैसा फूल चढे कैसा न चढे अने वलि प्रतिमाने काजे शुचिकरीनें वस्त्र धोया पहिरीनें सोनाना नख करीनें आपणे हाथें फूल चूंटीये कि माली पास मंगावीये अने दि

किम बैसीये एहतो विपरीत उपराठो दीसेछे ॥ ३७॥ श्री अरिष्ठनेमीनें वारे पांचपांम्ववहुवा इम कहेछे पांडवे शेत्रूंजे ऊपरि उध्धार कराव्यो प्रासाद प्रातिमा करावी अने तेणें जिवारे श्री थावचा पुत्र अणगार सहश्र १००० परिवार संघाते सुक अणगार १००० परिवार सेलगराजरिखी अणगर ५०० संघाते अनें ५ पांडव अनें वली यादवना कुमर चारित्रलेईनें शेत्रुंजे ऊपर अणसण कीधो पीण पहिले जिवारे चढया तिवारें प्रातिमा न वादी चैत्य बंदन न कीधा भाव पूजा न कीधी प्रातिमा आगलि तो इम जाणियेछे तेणें वारे प्रातिमा प्रासाद न हुंता अने वली इम कहेछे श्री आदिनाथ सेत्रुंजा ऊपरि पूर्व निन्याणवे ९९ वार चढया ते कोणसासूत्र माहिं कह्याछे ते देखाडो ॥ ३८ ॥ तथा केईएक इम कहेछे शेत्रुंजा ऊपरि घणासीधा तेहभणी तीर्थ कहिये अने घणासीधा भणी तीर्थ कहिये तो अढाईद्वीप ४५ लाख जोजन माहिं तेहठाम नथी जेह वालाग्रठामथी अनंता सीधानथी (जत्थएगोसिद्धा तत्थ अनंतासिद्धा) इमतो अढाईद्वीप सगलो तीर्थ जाणवो सिद्धांत माहिं सेत्रुंजो तीर्थ किहा नथी कह्यो ॥ ३९ ॥ श्री भगवती माहिं श्री महावीरने श्री गौतमे पूछ्योछे सनतकुमार इंद्र तीजा देव लोकनो (सणं कुमारेणं भंते देविंदेवराया किंभवसिद्धीए अभवसिद्धिए सम्मदिठी

मिच्छदिदिठी परित्तसंसारिए अनंत संसारीए सुल्ल भवोहीए दुल्लभ बोहीए आराहए विराहए चरिमे अ चरिमे गोयमा सणं कुमार भवसिद्धी समदिठी परत्त संसारी सुलभबोही आराधक चरमे सेकेणठेणभं ते गोयमा सणत कुमार बहुणं समणाणं बहूणं सम णीणं बहूणं सावियाणं बहूणं सावियाणं हिए कामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए णिस्सेयसिय हि य सुह अणुकंपिए णिस्से सकामए सतेणठेणंगोय मा समदिठी भवसिद्धी परित्तसंसारी सुलभबोही आ राधकचरिमे) श्री वीतरागे इम न कह्यो जे प्रतिमा पूजता समकितलहे अथवा केणें लाधो होइ ते देखा डो साधू चारीत्रीयाना रुप देखी घणे जीवे समकित लीधा अथवा पूर्व भवना सम्यक्त उदय आव्या प रित संसारकीधा अथवा बली जीवनी अनुकंपा थ की परित संसारकीधा तेह जघन्यतो अंतर मुहूर्त माहिं सीझे उतकृष्टो तो अर्द्ध पुदगल माहिं सीझे हिबे प्रतिमा पूजतां केणे जीवें सम्यक्तलाधो अथवा परित संसारकीधो होई तेह सिद्धांत माहि देखाडो ॥ ४० ॥ श्री आचारांग मूल सूत्रमाहिं साधू चारि त्रीयानें पांच महाव्रत कह्याछे एकेक महाव्रतनी पांच पांच भावना बोलीछे जिम आचारांगमाहिं बोलीछे तिम श्री प्रश्न व्याकरणमांहिं व्रत व्रतनी पांच भाव ना बोलीछे अने श्री आचारांगनी निर्युक्ती अनें व्र

तिमाहिं इम कह्यो जे सम्यक्तनी भावना भावीए ते
ह भावना लिखीयेछे तीर्थंकरनी जन्म भूमि चारित्र
भूमि ज्ञान उपजवानीभूमि निर्वाण मोक्ष गयानी भू
मि तथा देवलोक तथा मेरु पर्वत तथा नंदीस्वर दी
पादो तथा भवनपति सास्वती प्रतिमा तथा वली
अष्टापद सेत्रुंजा गिरनार तथा अहिछत्रायां श्री पा
र्श्वनाथनें धरणेंद्र महिमा एवं रथा पर्वतिं वयरस्वामी
नां पादिकां श्री वर्द्धमाननें चमरेंद्रें निश्रा कीधी तेह
ठाम तीर्थ कह्यो एतला सघला तीर्थांनी भावना
भावीये निर्युक्ति माहिं वृती माहिं कह्यो अने श्री आ
चारांग माहिं नथी तो श्री आचारांगनी निर्युक्ती व्र
ती माहिं किहांथी आव्यो इम कहेछे निर्युक्ति वृ
तिइं सूत्रना अर्थ कहियाछे आचारांग माहिं ए केहा
आलावानो अर्थ जेह एतला ठाम वंदनीक कह्या अ
नें श्री वीतराग गणधरें न कह्या जे जे प्रतिमा शा
सादना ठाम ते मूल सूत्रमाहिं कहीं कह्या नथी वि
वेकी होय ते विचारी जो ज्यो ॥ ४१ ॥ हिवे अव
कितनेक श्रावकानें परिग्रह परिमाण देइछे तिहां एह
वा नेम देइछे प्रतिमा वांद्या पूजा पाखें जीमूं तो नेम
भंगे एकासणों करुं अथवा वलि प्रतिमाने बरस १
प्रतिं आंगलूणा ४ सुकडीसेर ४ सोपारीसेर ४ व
दामादि सामग्रीसेर १० फूल नवोधान नवोफल मुह
में घालुं जो प्रतिमा आगे चढायो होइ एहवा नेम

श्रावकनें देइछे अनें श्री आणंद श्रावकनें परिग्रह परिमाण माहिं प्रतिमानें विहरइ एहवो नेम नही ते ह स्यूं कारण तो इम जाणीयेछे प्रतिमा वीतरागनें मारगे नथी जो वीतरागनें मारगें प्रतिमा होइतो आ णंद श्रावकने एहवा नेम जोइये ॥ ४२ ॥ हिवे श्री भगवतीमाहिं श्रावक कहियाछे घणा तेह श्रावकना क्या क्या आचारनो करिवो कह्योछे तेह आलावो लि खीयेछे (तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगीया नामं न गरी होत्था वणउ तत्थणं तुगीयाए णगरीए वहवे स मणो वासया परिवसंति अद्दा दित्ता विछिन्ना विपुल भवण सयणासण जाणवा हणाइन्ना वहूधण वहुजा त रूवरयत्ता आउग पउग संपउता विछट्टित विपुल भत्तपाणा वहूदासी दासगो महिस गवेयलप्प भूता वहू जणस्स अपरि भूता अभिगतजीवा जीवा उव लद्द पुन्नपावा आसवसंवर निज्जर किरियाहिं करण बंधमोख कुसला असहेज्ज देवा सुरणाग सुवन्न जक्ख रक्खस किंनर किंपुरप गरुल गंधर्व महोरगादिएहिं देव गणेहिं निग्गंथा तो पावयणाउ अणतिक्कमणिज्जा णिग्गंथे पावएणे णिस्संकिया णिकंखिया णिविति गिछिया लधठा गहियठा पुछियठा अभिगतठा अ ठमिंज्ज पेम्माणुरागता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अठे अयं परमठे सेसे अणठे ऊसिय फलिहा अवंगु त दुवारा वियत्तंते उरपुरघरप्पवेसो वहूहिं सीलव्रय

तिमाहिं इम कह्यो जे सम्यक्तनी भावना भावीए ते
ह भावना लिखीयेछे तीर्थंकरनी जन्म भूमि चारित्र
भूमि ज्ञान उपजवानीभूमि निर्वाण मोक्ष गयानी भू
मि तथा देवलोक तथा मेरु पर्वत तथा नंदीस्वर दी
पादो तथा भवनपति सास्वती प्रतिमा तथा वली
अष्टापद सेत्रुंजा गिरनार तथा अहिछत्रायां श्री पा
र्श्वनाथनें धरणेंद्र महिमा एवं रथा पर्वतिं वयरस्वामी
नां पादिका श्री वर्द्धमाननें चमरेंद्रें निश्रा कीधी तेह
ठाम तीर्थ कह्यो एतला सघला तीर्थानी भावना
भावीये निर्युक्ति माहिं वृती माहिं कह्यो अने श्री आ
चारांग माहिं नथी तो श्री आचारांगनी निर्युक्ती व्र
ती माहिं किहांथी आव्यो इम कहेछे निर्युक्ति वृ
तिइं सूत्रना अर्थ कहियाछे आचारांग माहिं ए केहा
आलावानो अर्थ जेह एतला ठाम वंदनीक कह्या
नें श्री वीतराग गणधरें न कह्या जे जे प्रति
सादना ठाम ते मूल सूत्रमाहिं कहीं कह्या
वेकी होय ते बिचारी जो ज्यो ॥ ४१ ॥
कितनेक श्रावकानें परिग्रह परिमाण दे
वा नेम देइछे प्रतिमा वांदा पूजा पारें
भंगे एकासणों करुं अथवा वलि प्रा
प्रतिं आंगलूणा ४ सुकडीसेर ४
दामादि सामग्रीसेर १० फूल नवोधान
में घालुं जो प्रतिमा आगे चढायो होइ एहवा

श्रावकनें देइछे अनें श्री आणंद श्रावकनें परिग्रह परिमाण माहिं प्रतिमानें विहरइ एहवो नेम नही ते ह स्यूं कारण तो इम जाणियेछे प्रतिमा वीतरागनें मारगे नथी जो वीतरागनें मारगें प्रतिमा होइतो आ णंद श्रावकने एहवा नेम जोईये ॥ ४२ ॥ हिवे श्री भगवतीमाहिं श्रावक कहियाछे घणा तेह श्रावकना क्या क्या आचारनो करिवो कह्योछे तेह आलावो लि खीयेछे (तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगीया नामं न गरी होत्था वणउ तत्थणं तुंगीयाए णगरीए वहवे स मणो वासया परिवसंति अड्ढा दित्ता विछिन्ना विपुल भवण सयणासण जाणवा हणाइन्ना वहूधण वहुजा त रूवरयत्ता आउग पउग संपउत्ता विछड्डित विपुल भत्तपाणा वहूदासी दासगो महिस गवेयलप्प भूता वहू जणस्स अपरि भूता अभिगतजीवा जीवा उव लद्ध पुन्नपावा आसवसंवर निज्जर किरियाहिं करण बंधमोख कुसला असहेज्ज देवा सुरणाग सुवन्न जक्ख रक्खस किंनर किंपुरप गरुल गंधर्व महोरगादिएहिं देव गणेहिं निग्गंथा जो पावयणाउ अणतिक्कमणिज्जा णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिकांखिया णिविति गिछिया लधठा गहियठा पुछियठा अभिगतठा अ ठमिंज्ज पेम्माणुरागता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अठे अयं परमठे सेसे अणठे ऊसिय फलिहा अवंगु त दुवारा वियत्तंते उरपुरघरप्पवेसो वहूहिं सीलव्रय

चारांगने अध्ययन छठाने उदेसे पांचमे साधूनें श्री वीतरागे इम कह्यो जे श्रोतारनें एहवो उपदेसदेजे ते अधिकार लिखीयेछे (पादीणं पडीणं दाहिणं उदीणं आइखे विजये किट्टे वेदवीसे उठिएसुवा अणुठिएसु वा सुस्सूसमाणे सुपवेदएसंति विरतिं उवसमं णिव्वा णं सोयवियं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणइवत्ति यं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स व्वेसिंसत्ताणं अणुवीई भिक्खु धम्मं माइक्खेज्जा अणु वीई भिक्खु धम्ममाई खमाणे णोअत्ताणं आसादे ज्जा णो परं आसादेज्जा नो अन्नाणं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसादेज्जा) ए आलावाने मेले सा धू चारित्रीयो जिहां जाइ तिहां दयामई उपदेस देवे पण हिंस्यानो उपदेस न देइ ॥ तथा श्री सिद्धांतमां हिं ठाम ठाम श्री जीव दया गाढीसार प्रधान कही छे ते अधिकार लिखीएछे(एवंतुसमणाएगे मिच्छ दि ठी अणारिया असंकियाइं संकंति संकियाइं असंकि णो १ धम्म पन्नवणाजासा तंतुसंकंति मूढगा आरं भाइणंसंकंति अवियत्ता अकोविया २) श्री सूयग डांगे प्रथम अध्ययने द्वितीये उद्देसे ॥ (एयं खुना णीणोसारं जन्नहिंसइ किंचणं अहिंसा समयंचेव ए तावतं वियाणिया १) सूयगडांगे प्रथम अध्ययने चतुर्थोद्देसकः ॥ (पाणाई वातेवहंता मुसावाए असं जता अदिन्नादाणे वहंता मेहुणेय परिग्गहे १ एवमे

गे उपासत्था पन्नवंति अणारिया इत्थी वसंगयाबा ला जिणसासण परम्मुहा १) श्री सूयगडांगे तृती य अध्ययन चतुर्थो देसकः ॥ (एता णिसोच्चा णि रगाणिधीरे नहिंसए किंचणसव्वलोए एगंत दिठी अ परिग्गहेउ वुज्झेज्जयलोयस्स वसंनगछे १) श्री सूय गडांगे निरए विभत्ती बीउ उद्देसो ॥ (दाणाणसेठं अनय पयाणं सच्चे सुया अणवज्जंवयंति तंचे सुया उत्तिम बंभचेरं लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते १) श्री सू यगडांगे छठे अध्ययनें ॥ पुढवीय आऊ अगणीय वाऊ तणरुख रुखस्सबीयाय पाणा जेअंडया जेरज्ज राउपाणा संसेयया जेरसयाभिहाणा १ एयाइं का याइं पंचेदियाहिं एतेसुजाणे पडिलेहसायं एतेण का येणय आयदंडे एते सुयाविप्परिया सुचिंति २ जा तिंचखुद्दिंच विणासयंते बीयाइं अस्संजय आयदंडे अहा हुसे लोय अणज्जधम्मे बीयाइंजेहिंसाति आय साते ३) तथा जेहवी अवस्थाइं वरतती वनस्पती छेदे तेहवा मरण पामे ते ऊपरि लिखीयेछे (गब्भा इ मिज्जंति बुयाबुयाणा णरापरे पंच सिहाकुमारा जु वाणगामज्झिमथेरगाय चयंलिते आऊखए पलीणा ४) श्री सूयगडांगे सातमे अध्ययनें ॥ (पुढवीवाउ अ गणिवा ऊतणरुखसबीयगा अंडया पोय जराऊ र ससंसेतउ भिपया १ एतेहिं छहिं काएहिं जेविज्जंपारि जाणिया मणसाकायवक्केणं णारंभीण परिग्गही २

चारांगने अध्ययन छठाने उदेसे पांचमे साधूनें श्री वीतरागे इम कह्यो जे श्रोतारनें एहवोउपदेसदेजे ते अधिकार लिखीयेछे (पादीणं पडीणं दाहिणं उदीणं आइखे विनये किहे वेदवीसे उठिएसुवा अणुठिएसु वा सुस्सूसमाणे सुपवेदएसंति विरतिं उवसमं णिव्वा णं सोयवियं अजवियं मद्दवियं लाघवियं अणइवत्ति यं सबेसिं पाणाणं सबेसिं भूयाणं सबेसिं जीवाणं स बेसिंसत्ताणं अणुवीई भिक्खु धम्मं माईक्खेज्जा अणु वीई भिक्खु धम्ममाई खमाणे णोअत्ताणं आसादे ज्जा णो परं आसादेज्जा नो अन्नाणं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसादेज्जा) ए आलावाने मेले सा धू चारित्रीयो जिहां जाइ तिहां दयामई उपदेस देवे पण हिंस्यानो उपदेस न देइ ॥ तथा श्री सिद्धांतमां हिं ठाम ठाम श्री जीव दया गाढीसार प्रधान कही छे ते अधिकार लिखीएछे(एवंतुसमणाएगे मिछ दि ठी अणारिया असंकियाइं संकति संकियाइं असंकि णो १ धम्म पन्नवणाजासा तंतुसंकाति मूढगा आरं भाइणंसंकाति अवियत्ता अकोविया २) श्री सूयग डांगे प्रथम अध्ययने द्वितीये उद्देसे ॥ (एयं खुना णीणोसारं जन्नहिंसइ किंचणं अहिंसा समयंचेव ए तावतं वियाणिया १) सूयगडांगे प्रथम अध्ययने चतुर्थोद्देसकः ॥ (पाणाई वातेवट्टंता मुसावाए असं जता अदिन्नादाणे वट्टंता मेहुणेय परिग्गहे १ एवमे

ला जाणकर ॥ [तेणावकुवंतेणकारवंति भूताहिं सं काए दुगंछमाणा सयाऊतािवप्पणमांतिधीरा विन्नति धीरायहवंतिएगे १ म्हरेय पाणे बट्टेयपाणे ते आय उपासाति सवलोए उवेहती लोग मिणं महंतं बुद्ध्य मत्ते सुपरिवएज्ञा २] श्रीसूयगडांग अध्येयन वारमे [उद्धंअहेयंतिरिय दिसासु तसाय जे थावर जेयपा णा सदाजएते सुपरि वएज्ञा मणप्पउमं अविकंपमा णे श्री (सूयगडांग अध्ययन १४ में [भूएहिं न विरुज्झेज्ञा एस धम्मे वुसीमउ साहू जग परिन्नाय अस्सिंसजीवित्त जावणा १] श्री सूयगडांग अध्येय न पनरमें ॥ ४६ ॥ तथा आरंभ परिग्रह निरता न जाणे एतावता पाडूआ न जाणे तिहां लगे धर्म न लहे ते लिखीयेछे ॥ [दोठाणइं अपरियाणित्ता आयाणो केवली पन्नतं धम्मं लभेज्ञा सवणयाए तं जहा आरंभेचेव परिग्गहेचेव दो ठाणाइं अपरिया दित्तित्ता आयाणो केवलं बोधिं बुज्झेज्ञा]श्री ठाणांग बीजे ठाणे ॥ ४७ ॥ तथा जीवसाता बेदनी असाता बेदनी बांधे ते ऊपर लिखीयेछे (अत्थिणंभंते जी वाणं साता वेदणिज्ञा कम्मा कज्ञंति हंताअत्थि कह णंभंते जीवाणंसाता वेदणिज्ञा कम्मा कज्ञंति गोय मा पाणाणुकंपयाए भूताणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए स त्ताणुकंपयाए बहूणंपाणाणं जावसत्ताणं अदुखणयाए असोयणत्ताए अजुरणत्ताए अपिप्पणत्ताए अपिट्टणता

तत्थिमावत्तियान्नासा जंवदित्ताणुतप्पती जंछन्नंतं न वत्तवं एसा आणाणियंठिया ३) श्री सूयगडांगजीमे अध्ययनें (पूढवीजीवा पुढोसत्ता आउजीवातहागणी वाउजीवा पुढोसत्ता तणरुक्खसवीयगा १ अहावरातसा पाणा एवंछक्काय आहिया इत्तावए वक्कवकाय नावरे विज्जईकाए २ सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं मइमं पडिलेहिया सव्वे अक्कंत दुक्खाय अतो सव्वे अहिंसया ३ उड्ढं अहेय तिरियं च जेकेति तसथावरा सवत्थविरतिकुज्जा संतिनिवाणमाहियं ४ हणंतंताणु जाणेज्जा आयगुत्ते जिइंदिए ठाणाइंमंति सड्ढीणं गामे सुनगरे सुवा ५ तहा गिरं समारंभ अत्थिपुन्नं तिनोवए अहवानत्थिपुन्नंति एवमेयं महब्भयं ६ दाणठयायजेपाणा हम्मंतिति तसस थावरा तेसिं सारखणठाए तम्हा अत्थि त्तिनोवए ७ जेसित्तंउव कप्पंति अन्नपाण तहाविहं तेसिंलाभंतरायंति तम्हाणत्थि त्तिनोवदे ८ जेयदाणं पसंसंति वहंमिच्छंतिपाणिणं जेयणं पडिसेहंति वित्तिछेयं करंतिते ९ दुहउ विते ण भासंति अत्थीति नत्थिवा पुणो आयंरय स्स हेच्चाणं निवाणं पाउणंतिते १०) इति श्री सूयगडांग ११ अध्ययन मध्ये तथा जे साधू चारित्रीयो धर्मनें स्थानके तथा सम्यक्तनें कारणे जिहां आरंभ होइ पिण आदेस न देइ लाभ देखाने पिण करावे नही ओर जिहां मिथ्याती असंजतीके दान आदिक कथनहै तिहां मोन धारणी ॥ पुण्य पाप नें

ला जाणकर ॥ [नेणवकुवंतेणकारवंति नूताहिं सं
काए दुगंबमाणा सयाजता विप्पणमंतिधीरा विन्नति
धीरायहवंतिएगे १ महरेय पाणे बुट्टेयपाणे ते आय
उपासति सवलोए उवेहती लोग मिणं महंतं वुद्धप्प
मत्ते सुपरिवएजा २] श्रीसूयगडांग अध्येयन बारमे
[उढ्ढंअहेयंतिरिय दिसासु तसाय जे थावर जेयपा
णा सद्वाजएते सुपरि वएजा मणप्पउसं अविकंपमा
णे श्री (सूयगडांग अध्ययन १४ में [नूएहिं न
विरुज्झेजा एस धम्मे वुसीमउ साहू जग परिन्नाय
असिंसजीवित्त नावणा १] श्री सूयगडांग अध्येय
न पनरमें ॥ ४६ ॥ तथा आरंन परिग्रह निरता न
जाणे एतावता पाडूआ न जाणे तिहां लगे धर्म न
लहे ते लिखीयेछे ॥ [दोठाणइं अपरियाणित्ता
आयाणो केवली पन्नतं धम्मं लनेजा सवणयाए तं
जहा आरंनेचेव परिग्गहेचेव दो ठाणाइं अपरिया
दित्तित्ता आयाणो केवलं बोधिं बुज्झेज्ज]श्री ठाणांग
बीजे ठाणे ॥ ४७ ॥ तथा जीवसाता बेदनी असाता
बेदनी बांधे ते ऊपर लिखीयेछे (अत्थिणंनंते जी
वाणं साता वेदणिजा कम्मा कजंति हंताअत्थि कह
णंनंते जीवाणंसाता वेदणिजा कम्मा कजंति गोय
मा पाणाणुकंपयाए नूताणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए स
त्ताणुकंपयाए वहूणंपाणाणं जावसत्ताणं अदुखणयाए
असोयणत्ताए अजुरणत्ताए अपिप्पणत्ताए अपिद्दणता

ए अपरि तावणताए एवंखलु गोयमा जीवाणंसाता वेदणिजाणं कम्मा कजंति एवंणेरतियाणवि एवं जाव वेमाणियाणं अथिणंभंते जीवाणं असाता वेदणिजा कम्मा कजंति गोयमा परदुखणत्ताए परसोयणताए परजुरणत्ताए परतिप्पणत्ताए परपिट्टणत्ताए परपरितावणताए बहूणं पाणाणं जावसत्ताणं दुखणताए सोयणत्ताए जाव परितावणत्ताए एवं खलु गोयमा जीवाणं असाता वेदणिजा कम्मा कजंति एवंणेरइयाणवि एवं जाव वेमाणियाणं) श्री भगवती शतकसातमें ॥ ४८ ॥ तथा गीतनाद तथा भोग भोगादि जीव वेदै पिण अजीव न वेदे अर्थात् अजीव न भोगवे ते ऊपरि लिखीयेछे (रूवीभंतेकामा अरुवी कामा गोयमा रूवीकामाणो अरूवीकामा सचित्ता भंते कामा अचित्ताकामा गोयमा सचित्ता विकामा अचित्ता विकामा जीवाभंते कामा अजीवा कामा गोयमा जीवाविकामा अजीवाविकामा जीवाणं भंतेकामा अजीवाणंकामा गोयमा जीवाणंकामा णोअजीवाणं कामा कतिविहाणं भंते कामा पन्नता गोयमा दुविहा कामा पन्नत्ता तंजहा सद्दायरूवाय रूविभंते भोगा अरूविंभोगा गोयमा रूविंभोगानो अरुविंभोगा सचित्ता भंते भोगा अचिता भोगा गोयमा सचित्तावि भोगा अचित्ताविभोगा जीवाभंते भोगा पुछा गोयमा जीवाविभोगा अजीवाविभोगा जीवाणं भंते

जोगा अजीवाणं जोगा गोयमा जीवाणं जोगाणो अ जीवाणंजोगा कति विहाणं जंते जोगा पन्नता गोय मा तिविहाजोगा पन्नत्ता गोयमा तंजहा गंधा रसा फासा कतिविहाणं जंते कामजोगा पन्नता गोयमा पं चविहा कामजोगा पन्नता तंजहा सद्दा रूवागंधा र रसा फासा) श्री जगवती सातमोसतकनों ७ मो उ देसो ॥ ४९ ॥ तथा केवली जेहवी जाष्या बोलें तेह लिखीयेछे [रायगिहेजाव एवंवदासी अन्न उत्थिया एं जंते एवं आई खंति जावपरूवेति एवंखलु केव ली जखाएसेणं आतिछाति एवं खलु केवली ज खायसेणं आतिठे समाणे आहच दो जासा उजास ति तंमोसंवा सच्चामोसंवा सेकहमेयं जंते एवं गोय मा जन्नंते अन्न उत्थिया जाव जेते एवमाहंसु मिछं ते एवमाहंसु अहं पुण गोयमा एवमा तिखामि ४ नोखलु केवली जखाएसेणं आदिस्संति नोखलु केव ली जखाएसेणं आतिठे समाणे आहच दो जासाउ जासंति तंमोसंवा सचामोसंवा केवलीणं असावजाउ अपरोव घाईयाउ आहच दो जासाउ जासंति तंस चंवा असचा मोसंवा) श्री जगवती अठारमा सतक नो सातमो उदेसो ॥ ५० ॥ तथा श्री वीतरागें जे तीर्थ कह्यो तथा जे आलंबन कह्या तथा जे जात्रा कही ते लिखीयेछे (तित्थं जंते तित्थ तित्थकरे तित्थं गोयमा अरहातात्र नियमा तित्थं करे तित्थं पुण चा

उत्तणाइ संघो तंसमणाउ समणीउ सावगाउ सावि याउ) श्री न्नगवती वीसमासतगनों ८ मो उद्देसो छे ॥ [धम्मस्सणंझाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नता तंजहा वायणा पडिपुछणा परियट्टणा धम्म कहा] श्री न्नगवतीसतक २५ में उद्देसे ७ मे ॥ श्री महावीरे सोमिल ब्राम्हणनें जे यात्रा कही ते लिखीयेछे [किंत्तेन्नंतेजत्ता सोमिलाजंमे तव नियम संजम सज्झायझ्झाणा व स्सगमादीए सुजोए सुजयणा सेत्तं जत्ता) श्री न्नगवती शतक १८ में उद्देसे १० मेंछे ॥ श्री थावचा पुत्रे अणागारे जे यात्रा कही ते लिखीये छे (तएणं सेसुए थावचा पुत्तं एवं वयासी किंन्नंते जत्ता सुयाजत्ता ममनाण दंसण चारित्त तवसंजम माईएहिं जोएहिं जयणासेतं जत्ता) श्री ज्ञाता अध्ययन पांचमेंछे ॥ ५१ ॥ तथा फूल माहिं जीव श्री वीतरागे कह्या ते लिखीयेछे (पुप्फाजलया थलयाय वेंट वद्धायंणालवद्धाय संखेजमसंखेजा बोधवाणंत जीवाय १ जे केइनालियावद्धा पुप्फा संखेज जीविया न्नणियानिहुया अनंतजीवा जेयावन्नेतहा विहा २ पुप्फफलंकालिंगं तुंवंतंत सेलवा लुवालुकं घोसालयं पंडोलंतिं रूयंचेवतें रूसं ३ विटंमंसंकडाहं एयाइं हवंति एगजीवस्स पतेयं पताइं सकेरमे केसरंमिजा ॥ ४ ॥ ५२ ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे सूचि कीधा विना धर्म कर्तव्य न होय अर्थात्स्नान कर्या

बिना धर्म कार्य न होय ते ऊपरें लिखियेछे (तएणं थावचा पुते सुदंसणं एवं वयाति तु नेणं सुदंसणा किं मूलए धम्मे पन्नते अम्हाणं देवाणुप्पिया सोयमूल धम्मे पणते जावसग्गं गच्छति तएणं थावचा पुते सुदंसणे एवं वयासी सुदंसणा सेजहा नामए के पुरिसे एगंमहं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणचेव धोएज्जा तएणं सुदंसणा तस्स रुहिर कयस्स रुहिरेण पखालिजमाणस्स अत्थिकायसोहीणो तिणठे समठे एवामेव सुदंसणा तुम्हंपि पाणा तिवाएणंजाव मिछादंसण सल्लेणं नत्थिसोही जहातस्स रुहिर कयस्स रुहिरेणचेव पखालिज माणस्स णत्थि सोही)श्री ज्ञाता पांचमे अध्ययनें कह्या ॥ [तएणं मल्ली विचोखं परिवाइयं एवंचतुम्हेणं चोखे किंमूल धम्मे तएणं साचोखा परिवाइया मल्लिवि एवं वयासी अम्हेणं देवाणुप्पिए सोयमूलए धम्मेजन्नं अम्हं किंचि असुईभवति तंनं उदए दणमट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्घं गछामो तएणं मल्लीविचोखं परिवाइस्स एवं वयासी चोखं सेजहा नामए केइ पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणं चेवधोवेज्जा अत्थिणं चोरकीतस्सरुहिर कंवयस्स वत्थस्स धोवमाणस्स कायसोही णोइणठे समठे एवामेव चोखीतुम्हेणं पाणाइ वाइएणं जावमिछा दंसणसल्लेणं णत्थिकाइ सोही] श्री ज्ञाता अध्ययन आठमें ॥ ५३ ॥ तथा श्री सिद्धांतमांहिं घणेठामे यज्ञना देहरा कह्याछे

पिण तीर्थंकर २४ माहिं किसी तीरथंकरके नामसे सूत्रामें देहरा कह्या नही जो धर्म कारणें देहरा हो ताती तीर्थंकरोंके नामके सव सूत्रांमें होणे चाहियेथे परंत इहांतो विशेष करिके यक्षोके देहरे संसारकी मर्याद अर्थात् रीतीमें वर्णन करेहे तिन माहिला कितनेक के नामसे वर्णन लिखियेछे [तीसेणंचंपाए नयरीए वहिया उत्तर पुरथिमे दिसिभाए पुणभद्द नामं चेईये हुत्था चिरातीए पुव्व पुरिस पणत्ते पोरा णेसदिए वित्तिएणाए सव्वत्ते सेच्छए सघंटसे पडागा इ पडाग मंडितो सलो मछत्रो कय वेयहीए लाउल्लो इय महिते गोसीस सरसरत्त चंदण ददरादिण पंचगु ली तले उवचिय चंदण कलसे चंदणघड सुकयतोर णे पडिदुवारे देसभागे आसतो सत्त विउल वट्टव ग्घारीत मल्लदाम कलावे पंचविह सरस सुरभिमुक पुप्फ पुंजो वयारकलिते कालागुरु पवर कुंदरुक्क धू व मघमघेंतगं धुधुता भिरामे सुगंधवरगंधगंधिए गंधवट्टि भूतेणडणट्ट कजाउ मल्लमुठ्ठिय वेलंवक पव ग कह कलासक आइखक लंखमंख तूण इल्लतुंव वी णिय भूयग मागरु परिगते वहुजण जाण वयस्सय कितीए वहुजणस्स आइस्स आहुणिजे पाहुणिजे अच्चणिजे वंदणिजे पूयणिजे सक्करणिजे सम्माणणिजे कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं विणएणं पजवासणिजे दिवे सच्चे सच्चोवाए सन्निहिय. पाडिहेरे जागसहस्स

ञाग पडिगिए बहूजणोअचेइ) श्रीउवाई उपांगें इ
म कह्या १ (रायगिहेणामं णगरे होत्था वरणउ
तस्सणं रायगिहस्स णगरस्स वहिया उत्तर पुरत्थिमे
दिसिजाए गुणसिलए चेईये होत्था) श्री नगव
तीमध्येंछे २ (तसस्सणं उज्जाणस्स बहुमज्झ देसना
ए सुरप्पिये नाम जखायायणे होत्था दिव बन्नउ
तत्थणं वारवतीए नयरीए) श्रीज्ञाता ५ अध्येंय
नें ॥ ३ ॥ (तेणंकालेणं २ मियागामं नामे नयरे
होत्था वन्नउ तस्समियागामस्स नगरस्स वहिया
उत्तर पुरत्थिमे दिसी नाए चंदपादवे नामं उजाणे
होत्था सवोय वन्नउ तत्थणं सुहमस्स जखस्स ज
खायतणे होत्था चिरतीए जहा पुनान्दे) श्री
विपाक प्रथम अध्येयनें ४ (तेणंकालेणं २ वणिय
गामे नगरे होत्था रिद्धि तस्सणं वाणियगामे उत्त
र पुरत्थिमे दिसी नाए दुतिपलासेणामं उजाणे हो
त्था तस्सणं दुतिपलासे सुहमस्स जखस्स जखा
यतणे होत्था) श्रीविपाक दुतियोअध्ययेंन ५ (ते
णंकालेणं २ पुरिमताले नामं नयरे होत्था जाव
पछिमे दिसी यत्थणं अम्मोहं दंसीउजाणे तथणं अ
मोहदंसीस्स जखस्स जख आयतणे होत्था)
श्रीविपाकें तृतीयाध्येयनें ६ (तेणंकालेणं २ साहंज
णी नामं नयरी होत्था रिद्धिथम्मिता तीसेणं साहं
जणी वहिता उत्तर पुरत्थिमे देवरमणे णामं उज्जाणे

होत्था तत्थणं अमोहस्स जखस्स जखायतणे हो त्था) श्रीविपाक चतुर्थ अध्यनें ७ (तेणंकालेणं २ कोसंबी नामं नयरी होत्था रिद्धि वाहिं विदोतरणं उज्जाणे सतन्नद्द जखे तत्थाणं कोसंबीए णयरीए) श्रीविपाक पंचम अध्ययनें ८ (तेणंकालेणं २ म हुरा णगरी भंमीरे उज्जाणे सुदरिसणे जखे) श्रीवि पाक षष्टोध्ययने ॥ ९ ॥ [तेणंकालेणं २ पाफलीसंफ नगरे वणसंड उज्जाणं उंबर जखे) श्रीविपाक स प्तमध्ययने १० (तेणंकालेणं २ सोरियपुरे णयरे सो रियवडेसगं उज्जाणें सोरियजखो) श्रीविपाक अष्ट मध्ययने ११ (तेणंकालेणं २ रोहिएणामं णयरे हो त्था रिद्धी पुढवी वंडीसए उज्जाणे धरणोजखो) श्रीविपाक नवमें अध्येयने १२ (तेणंकालेणं २ वद्ध माणपुरे णगरे होत्था विजयवद्धनाणे उज्जाणे मणि भद्दोजखो) श्रीविपाक दसमध्ययनें १३ [तत्थणं हत्थीसीसगरस्स वहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाए पुप्फकरंडए णाम उज्जाणे होत्था सवोउय तत्थणं कतवणमाल पियस्स जखस्स जखायतणे होत्था) श्रीविपाकमें १४ (तेणंकालेणे २ उसभणयरे थुल करंडग उज्जाणें धरणो जखो) श्रीविपाकमध्ये १५ (सोगंधीया नगरी नीलासोग उज्जाणं सुकोसलोज खो) श्रीविपाकमध्यें १६ (कणगपुरं णयरं सेताउ य उज्जाणं वीरभद्दोजखो) श्रीविपाकमध्यें १७

(मृघोषं नगरं देवरमणं उद्याणं वीरसेणो जखो) श्रीविपाकमध्ये १८ (तेणंकालेणं २ सामं णगरे होत्या उत्तरेकुरे उद्याने पासमिद्ध जखो) श्रीविपाकमध्ये १९ और ज्ञाता सुत्रमें शेलग यक्ष कह्या २० अंतगढ सुत्रमें मोगरपाणि जक्ष कह्या २१ उत्राध्ययनमें तिंदुक नामें जक्ष कह्या २२ इत्यादि ॥ ९४ ॥ तथा केतलाइक इम कहेछे जे अम्हारे वृत्ती टीका चूर्ण निर्युक्ति भाष्य सहु प्रमाण ते मा ह्यो होइते विचारी जो ज्यो जे श्रीसिद्धांत पाठसें मिलतीहुई टीका तथा और प्रकरण ग्रंथादि ते सहु प्रमाणछे अनें जे सिद्धांतसें विरुद्ध होय ते किम प्रमाणथाइ वृत्ती टीका मांहिं एहवा एहवा अधिकारछे ते लिखीयेछे जो साधु पंचक मांहिं कालकरे तो डाभना पुतला करवा कह्याछे ते लिखीएछे [दुन्नियदविहखित्त दब्भमया पुतलाय कायव्वा समरिकत्तं मिअइक्को अवट्टअभिईन कायव्वो)१ अवश्यक निर्युक्ति पारिठाविणीया सुमति मांहिं तथा वृहत्तकल्पनी वृत्तीमध्यें पणिपुतला करवा कह्याछे तथा देहरा मांहिंथी कोलीयावडानाघर तथा भमरी भमरानाघर साधु चारित्रीयो अपणें हाथें परहा करे नकरै तो तेह साधूनें प्रायश्चित आवे वृहतकल्पवृत्तिमध्ये ॥ साधूनें षासडा पहिरवा कारणें तथा कारणें पान खावा तथा कारणें फल केळा आदि वृक्षथी खूंटी खावा

बोल्योछे इत्यादि बोल आदिदेइ गाढा घणा बोल वृत्तिचूर्णि मांहिं सूत्रांसें विरुद्ध दीसेछे तो वृत्ति चूर्णि किम मानिये सूत्रांसें बहोत फरकहै सो कितने बोल लिखेहै और कितने बोल ग्रंथ बहु विस्तार होने कर नही लिखेहै सो इतने बोलोसें चतुर होय ते विचारी जो जो इति ॥ ५५ मा प्रश्नः ॥ हिवे जे जीव अनंता मोक्ष पहुता अनें बरतमान कालें जे मोक्ष पहोचेछें अनें अनागति कालें अनंता मोक्ष पहोचसी ते श्रीबीतरागें एणें परें मोक्ष कही ते लिखीएछे (अलविंसु पुराविभिखवो आएस्साविभवंतसुवता एयाइं गुणाइं आहुते कासवस्स अणुधम्म चारिणो १ तिविहेण विपाण माहणे आयहिए अनियाण संवुडे एवंसिद्धाअणंतसो संपयजे अणागयावरे २ एवंसे उदाहु अणुत्तरनाणी ॥ अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाण ॥ दंसणधरे अरहानायपुत्ते ॥ भगवं वेसालिएवियाहिए त्तिवेमि ३) श्रीसुयगडांगे क्रियाध्ययने तृतीयोद्देसक ॥ इहां श्रीजीवदयाइं करी मोक्षः ॥ ५६ ॥ श्रीवीतराग देव तथा श्रीगणधर तथा साधु चारित्रीया संसार मांहिं एह उत्तमछे तो वंदनीक पूजनीकछे अनें एहज तीर्थंकरादिक जिवारें ग्रहवास मध्येंहोइ अनें षट कायने आरंभें वर्ते तिवारे श्रीसाधुनें वंदनीक नही तो जोवोनें जे अजीव अचेतन चित्राम प्रतिमा मांहिं कांई ज्ञान दर

सन चारित्रनो गुणनथी अनें खटकायनो आरंभ तिहां वरतेछे ते किम वंदनीक होय ते विचारी जोज्यो ॥ ५७ ॥ तथा तीर्थंकर गणधर साधू एहनी भक्ति आरंभें नथाय तो प्रतिमानी भक्ति आरंभमे किम थाई ५८ तथा गुण बंदनीकके आकार वंदनीक अनें जो गुण बंदनीकतो प्रतिमा मांहिं केहवो गुणछे अनें जो आकार बंदनीक तो आ वडा पुरुष आकार बंतछे तें बंदनीक किम नही ॥ ५९ ॥ प्रतिमा मांहिं केही अवस्थाछे जो गृहीनी तो साधुनें बंदनीक नही अनें जतीनों तो चिहन तो छे नहीं अनें जती अर्थात् साधू वृत्ती जाणो तो फूल पाणी दीवा प्रमुख आरंभ किम करोछो ॥ ६० ॥ तथा देव मोठा कि गुरु मोठा जो जाणो जे देव मोठा तो देवनें फूल जडे तो गुरुनें स्यूंन पहिरावो फूलमाला अनें जो जाणो गुरुमाहाब्रतीछे तो देव क्या अविरतीछे तेविचारी जो जो ६१ तथा श्रावक साधूनें वांदवा आव्यो होइ अनें फूल फल कनें होइतो अलगो रहे जो संघट थाइ तो देवनें संघट स्यों न थाय ते बिचारीये ६२ तथा केतलाइक श्रावक पास प्रतिमा पूजावेछे पूजनार धर्म जाणीनें पूजेछे तो जती स्यूं न पूजे धर्म तो जतीनेंवी करवो तो केतला इक कहसी जे जती विरतीछे पिण जोवोनें जतीनें अर्थात् साधूनें पाप करवानोनेमछे पिण धर्म करवानो नेम

नथी ते कहो ६३ तथा प्रतिमाना वंदन वाला प्रतिमानें वंदे तिवारें वंदना केहनें करेछे जो इमकहे जेहुं प्रतिमानें वांदुंछूं तो वीतराग अलगारह्या वंदणा नही अने इम कहे जे ए वंदना वीतरागनें तउ प्रतिमा अलगीरहे अनें जो इम कहे जे एहज वीतराग जूदा जूदा नही तो (अजीवे जीव सन्ना] थाय अर्थात अजीव काष्ठ चित्राममें की प्रतिमाको जीव कह्या ते मिथ्यात संज्ञा कही अनें जीव एकसमें बे क्रिया नवेदे ६४ तथा केतलाइकना देवगुरु अनें धर्म सारंभी सपरिग्रहीछे अनें केतलाइकना देव गुरू धर्म निरारंभी न परिग्रहीछे ते बिचारी जो जो ६५ तथा केतला एक कहेछे जोउनें जो पुतली दीठे जो राग ऊपजे तो प्रतिमा दीठें बैराग स्यों न ऊपजे तेहना उत्तर कोईएक अनार्य पुरुषनें प्रहार मुके तो पाप लागे तो तेहनें वांदे तो धर्म स्यों न लागे तथा बेटा बोसराव्या न होय तो तेहनो कीधो पाप बापनें लागे पिण बेटानो किधो धर्म स्यौं न लागे तथा केतला इक इम कहेछे जे छाणानो गोहीस कीधो होई अनें भाजे तो पाप तो तथा तेहनें वांदे तथा दुध धरी पूजे तो धरम किम नही ६६ तथा केतला एक इम कहेछें जे अम्हारे प्रतिमानी पूजा करें ते हिंस्या अहिंस्याछे तउ रेवतीनों पाक श्रीमहावीरे स्युं न लीधो जो हिंस्या अहिंस्या समानथी फूल पाणीनी

हिंस्या प्रत्यक्षछे ६७ तथा कोईएक गुलीना विणज
नो नेम नव भांगे लेई अनें गुलीना विणजनो ला
भ बीजानें देखाडे इम तेहना नेम भांजे तो जोवोनें
जेणें पंच महाव्रत ऊचरया होय ते सावद्य करणी
माहि लाभ देखाडे तो तेहना विरत किम सुद्ध रहे विचा
री जो जो ६८ तथा श्रीअरिहंतनी स्थापना मांहिं अ
रिहंतनागुण नथी अनें गुरुनी स्थापना मांहिं गुरुना
गुण नथी अनें केतला इक इम कहेछे जे गुण तो
स्थापना मांहिं नथी जो पण आपणो भाव भेलतो
वंदनीक पूजनीक थाय तो हिवे जोवोनें गुणबिना दे
वनी गुरुनी स्थापना मांहिं आपणो भाव घाली गरज
सरेतो बापनी मानी तथा रुपानी सोना रतन गुल
खांड साकर परमुख आपणो भाव घाले गरज नसरे
आगलिवस्तु मांहिं पिता दिकनो गुण नथी अणे आ
पणो भाव भेलीयें गरज काई नसरे डाहो होइते विचा
री जो जो तो देव गुरुनी गरज किम सरे धर्म ठिकाणे
गुणबिना गरज नसरे मोक्षमारगमे तो ज्ञान दर्सन
चारित्र तप प्रधानछे ॥ ६८ ॥ प्रश्न धर्म आ
ग्यामेहै अथवा आज्ञा बाहिरबीहै उत्तर धर्म आज्ञा
मे सबही कहतेहै परंतु इसका यह प्रमार्थहै आज्ञा
नाम उपदेसकाहै भगवंतकी आज्ञा उपदेस आराधे
तिणाको आराधक कह्या जबलग साधुकुं संपराय क
षाय संबंधी क्रिया लगेहै तबलग ओ साधु उत्सूत्र

चालेछे पिणयथा सूत्र नही चालेछे यथा सूत्र तो य
था ख्यात संजमी १२ में १३ में गुण ठाणे वाला
चाले तिणानें इरियावही क्रिया लागे पिण उत्सूत्र
चलनें वाला आज्ञा बिराधक नही किसकरके केवली
ये उपदेसमें एही भाष्यो सराग संजमी ते उत्सूत्र
चाले उपसांतिराग खीणराग होवे तिकेयथा सूत्र
चाले एउपदेसहै अबार वादीहै ते निन्हव वादी वा
तेरापंथी जिनको भीषम पंथीभी कहतेहै तेकहेछे (सा
धूतो यथा सूत्रही चाले) थे इणा केवलीनो उपदेस
उथाप्पो तथा श्रावक पोसह पडिकमणो पडिमाको
वहिवो इत्यादिक काम करे तिणमें पूजण पडिलेहण
राथडलो मातरो परिठणरी आज्ञा मागे तो साधू दे
वे नही तथा ५डिमा धारी श्रावक आहार पानी
ल्यावणरी आज्ञा मागेतो साधूजी आज्ञा देवे नही
मोंनराखे उन्हाने पूछणो एहवातनो पाठ किसा सूत्र
में कह्योछे थेतो मुहसें कहोगे हमे सूत्र मुजब कहां
गां सो जिण सूत्रमे एहवात कहीहै सो सूत्रपाठ बता
वो तुम कहस्यो ग्रहस्तनी वियावच्च साधूनें नही क
रणी तो १० प्रकाररी वैयावच्च सूत्रमे कहीछे तिण
रो प्रमार्थ कांईहै संघनाम किणरोछे भगवती सूत्रमा
पाठछे (चउविहेसमणसंघे) इम संघ ४ विधि ब
तायो इणारेमतवाला संघशब्दनो अर्थ आपणी इछा
सें यह करेहै संघनाम घणा आचार्यांकाचेला इसो

कहेछे इणबातरे अर्थमें पिण झूठा जाणीयेछे इणमें तो साध साधवी दोय आया (चउविहे समणसंघे) एहवचन इणां उथाप्यो भगवंतरो तो साधूनें हिये उपदेसछे साधू जयणासें चाले जयणासे ऊभारहे प रंतु एहवो केवलीको आदेस नही जयणासे चालो जयणासे उभारहो एह आदेस नही एह आदेस नही देवे सो आज्ञा नाम केवलीके उपदेसकोहै ७० प्रश्न ध र्म व्रतिमें कि अविरतमे वा दोनोमें उत्तर धर्मतो कर्मकी निर्जरा तथा दीर्घ कालरी थिती कर्मांरी थोडा काल की करणी तीव्ररजकर्म प्रकृति मंदरस करणी बहुल प्रदेसरी थोडा प्रदेसरी करणी एतो धर्म ॥ कर्मरो अ शुभदलीयो सो पाप कर्म सुभदलीयो सो पुन्न एतो नोही जीवरे परिणाम लेस्या अध्यवसायसें होवे ति ण ऊपर दृष्टांत विपाक सूत्रमध्ये सुमुखगाथापती बिरत बिगर जो मनुषरे देसबिरत पिण होयतो मनुषरो आउखो किम बंधे साधूनें दानदीधो संसार परतकीधो मनुषरो आउखो बांध्यो तो बिचारो इण सुमुखरे किसीबिरतीथी पिण परिणामें संसार परत कीधो ते धर्म सुभमनुषरो आउखो ते पुन्य अविरत है तिणसे पाप बंध पिणकीणही कारजमें पापरी रो टी होवे पुन्य बंध पलेथनरुपहोवे अनें किणही कार जमें पुन्य रोटी पाप पलेथणरुप होवे एकलो पापजी वरे नही बंधे एकलो पुंन्यपिणजीवरे नही बंधे रोटी

पलेथनसमान पाप पुन्य बंधरोस्वनावछे पिण सवा
द शेटीरोही आवे सुविरत अविरतमें धर्म पापपुन्यती
नोही ज्ञानीके बचनसुंनीपजेहै कोई कहगें कि विरतमें
पाप कैसे बंधे पन्नवणासुत्रमध्ये कह्योहै प्रतिमादि सा
धू कर्म प्रकृती बांधेतो सात तथा आठ कर्म बांधे एह
पाठछे इणारे सात तथा आठ कर्मारो बंध और ए
ह वृत वालाछे जादि वृति मांहिं पाप प्रकृति सूत्रानु
सारे बांधी ७१ प्रश्न ध्यान ४ आर्त १ रुद्र २ ध
र्म ३ शुक्ल ४ इन च्यारोमें दो माठा कह्या सो नीषमपं
थीकहेछे दोयध्यानमे तो एकांत पापछे सोमिथ्याती
कें पुन्य बंध किस्या ध्यानसूंछे पहिले गुणठाणें तो
धर्मध्यानसंनवे नही उत्तर तोध्यान स्वरुप तो धेय ध्या
ववण जोग्य बस्तुनोछे अनें ध्यान सरुपमनवालेमेछे
और मनतो सन्नी पाचिंद्रीयनेछे अनें क र्म बंध शुन अ
शुन थावर बिकलेंद्रीय सर्वकेछें सो शुनाशुन कर्म
को बंध लेस्या परिणाम अध्यवसायसें बंधेछे सूत्र
नगवती मांहिं थावर विकलेंद्रियका अध्यवसाय प्रस
स्त नला अप्रसस्त नूंडा कह्याछे तिणलेस्या परिणाम
अध्यवसायसें कर्मको बंधछे इणा सन्नी पचेंद्रीके मन
रेवलसे ध्यानहे सो माठा ध्यानसुं माठा कर्म बंधे
दीर्घ थितिनो बंध और सुनध्यानवालेरे घणा शुन
बंधे साधूके ध्यानमे ऐसी रसायन नीपजे सो शुना
शुन कर्मको अंतकरे एहनो यह उत्तरछे ७२ प्रश्न

भगवती सतग आठमे उद्देसे छठे कह्योछे असंजती अव्रतीनें सुझतो असूझतो असणादिक देतां थका एकांत पाप कर्म बंधे निर्जरा नथी तिणमें तेरा पंथी कहेछे असंजतीनेंदीयांरो एकंत पापछे सो वह पाठ किण कारण ऊपरछे ॥ उत्तर॥ एह पाठछे ते (समणो वासगस्सणंभंते तहारूवं असंजय अविरययावत गोयमा एगंत सोसे पावकम्मे कज्जई णत्थिसे काई णिज्जरा कज्जई) इण पाठको अर्थ अब पहिला प्रश्न मांहिं (तहारुवं संजय विरय) औसा गुणवान साधूनें असणादिक प्रासुकदीयां एकंत निर्जरा होवे इणमें निर्जरारोही प्रधान पणयो गिणयो बाकीदान देवानो फल पुन्य प्रकृतिरो शुभ वस्तुनो बंध ओर सूत्र देखता होवेछे पिण ज्ञानीने लेखव्यो नही प्रधान एकांत निर्जरा वखानी औसे तथारुप अवगुणवान असंजतीतेह खोटा परिणामी हाथमे छुरी ले मछीका जाल हाथमे चीडीमार कसाई प्रत्यक्ष वाको स्वरुप पापी रुप दीसेछे तिणने दियां एकंत पाप फल भगवंतें वखाण्यो तथा मिथ्यादृष्टीको गुरुके भाव करी देवे तो मिथ्यात आश्री पाप वखाण्यो पिछला प्रश्नमेंतथारुप साधूहै इण पाठमे तथा रुप असंजतीहै तिणकारणे एकंत पापरो प्रधान पणो गिणयोछे बाकी अनुकंपादान भगवंत केवलीनें कठेही केवलीनें निषेध्यो नही भीषमपंथी असंजतीनें दीयां एकांत पाप कहेछे पिण (तहा

स्वं) इण पाठरो अर्थ नही करे सो इणानें सूत्र उ
थाप्यो भय थोमो दीसेछे ७३ प्रश्न तथा सूयगडां
गें अध्यन ३ उदेसे ४ गाथा ५ तथा ६ मे इसो क
ह्योछे कोईजीवकहेछे सातादियां सातापामें तिणनें भ
गवान आर्य मार्गसें अलगा कह्या जिन धर्मनो हील
णहार कह्यो इसतरे भीषम पंथी कहेछेउत्तर सो उणभी
षम पंथीयांनें पूछनों एह गाथानों अर्थ तुम्हारे पंथ
बालानें पुछजो कि तुम अपनें मनोक्त अर्थ करोगे
पिण तुमारे तांई सूत्र बिपरीति कहवानो भय नही
मत पक्षी वणनहार होई उद्देसे ४ पाछली गाथामें
अन्यमती वखाण्योछे तिणारेहिज बरणव ५,६,७ मी
गाथामेंछे उणा अन्यमतीरीकही भगवंतें कहीछे उर
वे शाक्यादिक कहेछे (सायंसाएण बिज्जएसु) अप
णे जीवनें सातादीया सातापामें एहजीव सुखनो अ
रथीछे तिणवास्ते इणजीवनें सुखहीजदेणो औसो उ
णारो मत भगवंत वखाण्योछे सातमी गाथारे छेहले
पदमे कह्यो (अयहारीवकूरह) लोहवाणीयांनींपरें
वेकूरसी लोहस भानडणा आपणा जीवनें सुख वि
चार्यो परं परजीवनी पीमा नही विचारी इणागाथा
में यह प्रमार्थहे सो जांणज्यो भगवंतें सर्व जीवनी
रिक्षा वरणवीछे ७४ प्रश्न आश्रव पांचछे तिणमें
मिथ्यात १ अविरत २ परमाद ३ कषाय ४ योग
५ जिनमे एहच्यार आश्रव पुन्य करताछे कि पाप

करताछे किसका करताछे ॥ उत्तर ॥तिणरो परमार्थ यह है मिथ्यात १ अविरत २ कषाय ३ परमाद ४ इणा री तो एकही वजेहै परंत योगना २ नेदछे शुन योग अने अशुन योग तिणमे अशुन योग परवर ते तिवारे पापकर्म बंधे अने शुन योग परवरते तिवारे पुन्य प्रकृतिनो बंध होवे च्यारुंही आश्रवा मांहिं जोगनो प्रधान पणोछे प्रमादीसाधुने शुनजो ग आसरीयने नगवती मांहिं कह्योछे (सुहंजोगं प डुच्चनो आयारंना नोपरारंना नोतदुनयारंना) अ णारंना शुनयोगनो एहवो प्रधान पणोछे तथा आ श्रवहै सो शुन अशुन कर्मानो आगमनसो आश्र व परंत सव कर्म जीवरे कर्मनो आगमनछे तिणसें आश्रव रुपीहै कर्मना प्रधान पणाथी जैसें जीव ना वा सकर्म जीवरे कर्म आगमनसो आश्रव छिद्र परं त नावरो गुण तिरवानो सो छिद्रमे नही छिद्ररो सुना व पानी आवारो सो नावा गुणमे नही इणवास्ते आश्रव रुपीहै ७५ प्रश्न ॥ उपशम समकितमे उद य मांहिं मिथ्यात होवे सो खयजावे वा नही ॥ उत्तर अने उदयमें दलिया मिथ्यातना होवे सो उपशमहै एहीतरे खयोपसमगीछे परंतु उपसममे अनुनागथी प्रदेसथी दोनु प्रकारें उपसम रहे ते उपसम खयोप समने अनुनागथकी तो मिथ्यात नही छेद उपस म खयोपसममे एविसेषछे वेदनी कर्मोंके दलियाको

जिहां जिस वस्तुमे जितना निक्षेपा जाणें तिहां तेत ला निक्षेपा करे और जे वस्तुमां अधिका निक्षेपा न जाणीसके ते वस्तुमां च्यार निखेपातो अवश्य करे मित्यर्थं ॥ पिण निखेपो करी चीजरो नाम ठहरयो जद इणांहिलसे नाम लिख्यो १ द्रव्य निखेपो २ स्थापना निखेपो ३ भाव निखेपा ४ आपणो निखेपो जद उण द्रव्यमें तो एक आपरो द्रव्यहै सो बेहीज उणद्रव्यमे इणानें च्यारुंचीजां अपणी इछासें निक्षेपा जद इणारी इछासेंहीज प्रतिमामे ४ निखेपा हुया पिण उण द्रव्य धातु अथवा पृथ्वी मांहिंतो नही हुया चित्तमे विचारी देखो जे भगवंते कह्यो होवे नाममें पिणमाहिरो निखेपोहै थापनामे पिण माहिरो निखेपोहै द्रव्यमे पिण मांहिंरो निखेपोहै भावमे पिण माहिरो निखेपोहै जदतो चारोहीज निखेपा बंदनीक होय सो सूत्रमें एहवो उपदेस भगवंतरो नही होवेतो सूत्र बतावो चारों निखेपा बंदनीक ठहरावो स्थापना निखेपनें बांदोतो नाम द्रव्यने किम नही बांदो परंतु इणारी इछामे एचार निखेपा प्रतिमाजीमें ठहरावेछे जैसें बालक आपणी इछासें लाठीरो द्रव्य तिणनें घोडो कहै जद उण घोडारो नाम निक्षेपो स्थापना पिण बाकीरा लोकांमे कहे एह मांहिंरो घोडोछे द्रव्य निखेपे म्हारे घोडारे हाथ लगावजो मति भाव निखेपें दोय सांथला विचे आपणा

भावसें कूदे म्हारे घोडे कूदे ए ४ निखेपा पिण भा
वनिखेपा उणवास्तकरे मनकाहै तिम इणा पिण आ
पणे मनका अभिप्रायसें च्यारोही निखेपावत्तावे सो
(अदेवेदेव सन्ना) एहिज मिथ्यादृष्टीपणोंछे इणार,
ही ग्रंथ तथा आवश्यककी निर्युक्तीमे एहवी गाथा जि
न शद्धरा निखेपारी कहीछे (नाम जिणा जिण ना
मा ठवण जिणा जिण पडिमाणं दवजिणा जिण जीवा
भावजिणा समोसरणे १) एहवी गाथाहै इणानें आ
पणे मनसं जिन मंदिरही समोसर्ण ठहरायो एपिण
एह गाथा मुजब मिथ्या बादीहे अनुयोगद्धारनी गाथा
(जत्थयजं जाणेज्जा) इत्यादि इण गाथा मांहिंतो
व्याख्यान करणो सो अनुयोग कहिजे तिण चार द्वार
उपक्रम १ निखेप २ अनुगम ३ नय ४ एह ४ द्वार
उपक्रम ते तो सिद्धांत वांचवानो उद्यम १ निखेपना
४ भेद मुख्यनाम निखेप जैसे जंबुद्वीप पन्नती थाप
नासुं जंबुद्वीप पन्नती सूत्रनी परत द्रव्य निक्षेपसुं
पोथी मांहिं पानाना अक्षर तथा विगर उपियोग बां
चणे वालो भाव निखेप सो उपियोग सहित वांचणे
वालो इसबजे और निक्षेप क्षेत्र कालादिनद्दी नि
क्षेपा जाणे तो चार निखेपा जाणेसुं अनुयोग व्या
ख्यान करें इण गाथामे परमारथहै यह कहे हमे हमा
रो भाव प्रतिमाजीमे निखेप्योहै सो तुम्हारे भाव
तो एकहै सो फूल सचित पाणी मृदंग ढकमा नाच

कंसाल बजाबामे बर्तेहै के भगवंत मांहिं बरतेंछे चि त्तविगरतो मृदंग दुकडा ताल कंसाल पिण नही वाजे भावतो एक जगां बरते सराग भावमे तो इंद्री यांनो पोषणछे परंत भगवंतनी भक्ति नही भगवंत भक्ति (मनसा स्मरणीयं वचसावक्तव्यंस्तुतिः काये नतद्गुणाचरणीयं) एहवो ध्यानते भगवंतनी भक्तिहै इणानें प्रतिमाजीकुं नाम स्थापना द्रव्य आपणे भा व करीनें थापाहै तो सम्यक्तदृष्टी प्रतिमानें पूठ न ही देवे विप्रीत बचन नही बोले ॥ दोहा ॥ (जिन पडिमा जिन सारखी, कहे सो मिथ्यादृष्टी ॥ जिन पडि मा जिनपडिमा कहे भाठो बचन अनिष्ट १) समकती पु रुष जे चीज जिन भावे होवे तिन भावेहीन जांणें और नाम सामाइक करुंछुं थापना सामाइक आसणऊपर अं ग मोडने बैठ्यो दोय घडीनी मर्याद द्रव्य सामाइक उपियोग विगर सामाइकना उपगरण भाव सामाइक उपियोग सहित स पाप जोगनो छांडवो एह सामा इकरा चार निखेपा उणारी कहणी स्थापना सामाइ क करतां मुंदडीही सामाइकरी थापना करी किणनें उठायलीनी जद उणारी सामाइक गई और फेर तिसनें पाछी मुंदडी दीधी तो कहो मुंदडी दीधी के सामाइक दीधी ८० प्रश्न ॥ (सुत्तत्थोखलुपढमो बीउ नीयुत्ती मिसउभणिउतईउ निरवसेसो एसविहीहोइ अणुउगो १) इह गाथा भगवती मांहेछे ॥ उत्तर ॥

पिण इण गाथा मांहिं तो अनुयोग नाम वखाणरी विधि करवारो अधिकारहे एक अनुयोग करतां सूत्र अर्थही वांचे दुसरो निर्युक्त मेले जैसे मेरु गिरिरे पूर्वरे अंतरो ४५ हजार जोजन विजय दरवाजो है तिणां योजनारी युक्ति मेले भद्रसालवन वखारा विजय अंतर नदी सीता प्रमुख वन इणारे जोजनारी चो डासरी युक्ति मेले इसतरेसे पश्चिम दिसिना जोजन मेल दस हजार जोजननो मेरु भेले जद लाख जो जन प्रमाण पूर्व पश्चिम होवे इम युक्ति मेलवीनें वां चे तीसरो निरवसेख ते धर्म कथानुयोग हेतु दृष्टांत करी समझावे (एम विहीहोई अनुओगो) व्याख्यान करवाकी ए बिधिहोवे इणारी कहणी निर्युक्तिरी कहणी पंचांगी मानीतो पांचारा पाच मत न्यारा न्यारा निर्युक्तिकार कहे टीकाकार युं कहेछे टीकाकार कहे चूर्णि कारसे मतछे चूर्णिकार कहे अवचूरकारको एह मतहे अवचूर कार कहे भाष्यकारको एह मतहे तो बिचारो पांचारो पाचमतहे तो एक निर्युक्तिके कहणे पंचांगी किम मानी जावे ओर केवलीनो एक मत इणापांचारा पाच मत तो बिगर केवली के बचन किम पंचागी मनाय ८१ प्रश्न ॥ अनुयोग चार द्रव्या नुयोग १ गिणतानुयोग २ चरणानुयोग ३ धर्म क थानुयोग ४ एह च्यार अनुयोग च्यार प्रकार को व खाणहे द्रव्यानुयोगमे षट द्रव्यनो वखाण गिणतानु

योगमे सासता नरका बासा द्वीप समद्र पर्वत नदी या देवलोक प्रथवीरो लांब पणो चोड पणो जाड पणो वखाणवो चरणानुयोगमे साधु श्रावककां आचार व खाणवो धर्म कथानुयोगमे श्रुत धर्म चारित्र धर्म जि णां पुरषां आराध्यों अथवा बिराध्यो तिणारो बखा णवो धर्मकथानुयोग चोथोहे कुछ कथानुयोगतो नही जे कथानुयोग होवे तो सदेव ह्रसावलंगा ढोलो मारु णी शशि पुनम एह पिण कथा वाचणी हुइ पिण धर्मरो अधिकार जिणमे आदिमध्य छेहडेहोय सो धर्म कथा मानीजे ओर तुमनें कह्या आपारे सूत्र ३२ मानाछा तिणमे नंदीजी सूत्रहे सो नंदी सूत्रमे ७२ सूत्रोंका नाम चाल्याहे नाम लिख्याछे सो सा स्त्रमे इसी कहीछे कानो मात्रा अधिकी उछी कहणी नही जिणसे संवेगी कहेछे तुमे नंदीजीतो मानो ना म चाल्यातिके सूत्र मानो नही तो नंदीजीको मानवो कठे हुयो इसो कह्यो सो नंदीजीमे ७२ सूत्रोंका ना मछे पिण ७२ मे सें कितराही विछेदगया कितना इकहै विछेद गया तिकेतो अबार नही जिनमे ३२ हम मानेछे वे कहे है ४५ छे १३ अधिका मानेछे देविंद थुवो १ तंदुल वयालियो २ गणविज्जा ३ मरण विभ त्ती ४ आउर पच्चखाण ५ महा पच्चखाण ६ महानि सीथ ७ एहसात नाम तो नंदीमेछे पिण मूलगा ए नही नवा जोडयाछे ओर १३ माहिला चउसरन

१ भत्त पईन्ना २ चंदविज्झा ३ संथार पईन्ना ४ जी
तकल्प ५ पिंडनिर्युक्ति ६ ए छहका तो नाम नंदी
सूत्रमे नही ए ग्रंथ किसने बणाव्या ते एह सूत्र कर
किम मानिये और ते कहै कि हम ४५ मानतेहै तो
महानसीथमे कमलप्रभा आचार्य पांचमा भवणीय
सार अध्ययनमें देहरा प्रतिमा करावारो उपदेसदेतां
अनंतो संसार वधारयो इसो कह्योछे ते किम नही
मानों जद इणारें ४५ आगम मानणरी बात कठै
स्यूं रही तथा जीतकल्प ए मानछे तिणमे कह्यो प्रति
मा बांद्या बिगर आहार करे तो ५ उपवासरो प्रा
यश्चित आवे साधूनें और श्रावकने बेलेरो प्रायश्चित
आवे ए बात जीतकल्पमे कही नंदीमे इणरो नाम
ही नही यो सूत्र कहासे आयो इसवजे पईन्नामे घ
णीवात सूत्रसू विरुद्ध तिण वास्ते छदमस्तरी कही
कोई कोई वातोमे फरकहै और उणांने पूछणो सूत्र और
पईन्नामे फरक क्याहै जो नाम जुदे जुदे दीयेहै सूत्रग
णधरांना गूंथ्या और पईन्ना सामान्य छदमस्तना गूं
थ्या सो सूत्र भगवती मांहिं कह्यो (तहमेवसच्चं नि
संकं जंजिणेहिं पवेदियं) तिणभणी छदमस्थनी
कही सर्ववात प्रमाणिक नही छदमस्थ तीर्थंकर उप
देस नही देवे कहो किम नदेवे अनंत कालें जितरा
तीर्थंकर हुवा तिणाने केवल ज्ञान उपना पीछेही उ
पदेस देवे सो छदमस्थरो कह्यो उछ. पूंज.रो ज्ञापा

रहै ८२ प्रश्न ॥ द्रव्य हिंस्याकिणने कहिजे जीव हिंस्या किणनें कहीजे द्रव्य हिंस्यारो फल कांई औ र भाव हिंस्यारो फलकांई ॥ उत्तर ॥ सो द्रव्य हिं स्या इसतरे कहीजे श्रावकनें त्रस जीव हणवानो पच्च खाण करयो तिको माटी खणवानेकिहांइं गयो तिको प्रथ्वी खोदतो त्रस जीवने राखवानो कामीछे त्रस जीवहणवानो पिण संकल्प पिण नही अने त्रसनी पृथ्वी खणता बिराधना होवे तो उणरोवृत्त पिण अ तिचरे नही इतरे वृत्तमे अतिचारपिण नही लागे ऐसो भगवती शतग ७ उद्देसे पहिले कह्योछे तो उण श्रावकने द्रव्य हिंस्यालागी पासे खडो होय सो कहै ते त्रस जीव मारनारूयो एहिज इनरो फल॥ भा व हिंस्यारो फल अशुभ कर्मरो फल सो जीवरे अ शुभ कर्मना दलियारो बंध प्राणातिपातहै सो जिण जि वमें जितना प्राणछे तिणारो अतिपात सो वियोग पापसो प्राणवालेरे पर प्राणरो वियोग कीयोसो कर्म बंध ८३ प्रश्न ॥ केवलीरो मारग सावद्य कहे कि तनेक ते किसतरे ॥ उत्तर ॥ एह वचन बोलणे वाले केवलीके वचननी आसातना करेछे (सियअ त्थि सियनत्थि) एहतो स्याद्वादवचनहै सो पट द्रव्य आसरी वचनछे द्रव्य धर्मास्तिकाय आपरे स्व भावे सियअस्ति कहतांछे अधर्मास्तिकाय आसरीने सियनास्ति नहीछे धर्मास्ति कायरो चलणगुण

अधर्मास्ति कायरो थिरगुण चलणो सु ठहरणो नही ठहरनो सो चलनो नही असे षटद्रव्य रत्नप्रभा दि पृथ्वी माहो मांहिं अपेक्षाइं (सियअत्थिसिय नत्थी) एहवो सिद्धांतमे पाठछे एह पाठ हिंस्या राकार्य अनें दयाना कारजमे मिलावे तो कठे कठेहिंस्या मे धर्म दयामे धर्मयाने बावलेरी लंगोटो कन्नीकमरमे बां धे कन्नी मस्तकमे लपेटे एहवा केवली भाषित सि द्धांत नही सूयगडांग मांहिं कह्योछे (एवंखुनाणी णोसारं जंनहिंसई किंचणं अहिंसा समयंचेव एता वतं वियाणह १) एह वचन केवली गणधरारो झूठो नही केवली महाराजरी सम दिष्टी चोथा गुण ठाणावालारी श्रद्धा तो एकछे परुपणा नाम बोलण रोछे सो बोलतां तो साधु परमादी हां बोलनो नाक है ना बोलतो हा कहै सो परूपणामें फेरहे ८४ प्रश्न ॥ संवेगी प्रतिमानी पूजा करेछे सचितपाणी फू लचढावेछे आरंभसारंभकरेछे मुक्तफल बतावे ॥ उत्तर ॥ सो मुक्तफलतो जमामे अजाण मत पक्षीसे कहैछे पुन्य फुलतो घणा कहैछे सो केवली तो सिद्धांतमे ए कहीछे (नहुपाणवहंअणुजाणे मुच्चइकयाविस व्वदुखाणं एवंआयारियेहिंअक्खायं जेहिंइम्मेसाहुध म्मो पन्नतो १) अर्थः निश्चे जिहां प्राणकोवध होवे तिणकारजको भलो पिण मतजाण क्यूंनही भलो जाण प्राणवध किणही कारजमे दुखसुं छोडावे नही

रहै ८२ प्रश्न ॥ द्रव्य हिंस्याकिणने कहिजे जीव हिंस्या किणनें कहीजे द्रव्य हिंस्यारो फल कांई ओर भाव हिंस्यारो फलकांई ॥ उत्तर ॥ सो द्रव्य हिंस्या इसतरे कहीजे श्रावकनें त्रस जीव हणवानो पचखाण कर्यो तिको माटी खणवानेकिहाइं गयो तिको प्रथ्वी खोदतो त्रस जीवने राखवानो कामीछे त्रस जीवहणवानो पिण संकल्प पिण नही अने त्रसनी प्रथ्वी खणता बिराधना होवे तो उणरोव्रत्त पिण अतिचरे नही इतरे व्रत्तमे अतिचारपिण नही लागे ऐसो भगवती शतग ७ उद्देसे पहिले कह्योछे तो उण श्रावकने द्रव्य हिंस्यालागी पासे खडो होय सो कहै ते त्रस जीव मारनारुयो एहिज इनरो फल॥ भाव हिंस्यारो फल अशुभ कर्मरो फल सो जीवरे अशुभ कर्मना दलियारो बंध प्राणातिपातहै सो जिण जिवमें जितना प्राणछे तिणारो अतिपात सो वियोग पापसो प्राणवालेरै पर प्राणरो बियोग कीयोसो कर्मबंध ८३ प्रश्न ॥ केवलीरो मारग सावद्य कहे कितनेक ते किसतरे ॥ उत्तर ॥ एह वचन बोलणेवाले केवलीके वचननी आसातना करेछे (सियअत्थि सियनत्थि) एहवो स्याद्वादवचनहै सो षट द्रव्य आसरी वचनछे द्रव्य धर्मास्तिकाय आपरे स्वभावे सियअस्ति कहताछे अधर्मास्तिकाय आसरीने सियनास्ति नहीछे धर्मास्ति कायरो चलणगुण

इसी पिण जुदी दीसे नही सो साहिब जैन श्रद्धा वा
लाने तो एह प्रतिमा पूजनी श्रेष्ठछे और श्रद्धावाला
ने उणरी श्रद्धारी प्रतिमा बतावे चाकर धणीरी श्र
द्धा मुजब अरज करता मनुष लोकमे पिण दीसेछे
उणरे उवा श्रद्धाही नही जद प्रतिमाजी उह श्रद्धा
बिगर देव करिके कद पूजे मिथ्यातीरे देव पूजनरी
दूजी हरिहरादिकनी प्रतिमा पिण सिद्धांतमे पिण
नही चाली देव लोकमे तो पूजारो प्रतिमा संबंधी
तो एहीज ठिकाणो तथा च्यार महेंद्र ध्वजरे चौगर
दे प्रतिमा कहीछे इण टालके और हरिहरादिकनी
प्रतिमानी वस्त सिद्धांतमे नही कही उणारे लेखे स
मकती तो एह प्रतिमा पूजे पिण मिथ्यादृष्टी देवा
धिदेवकरके किणने पूजे जैसे मनुष लोक जे इणारी
श्रद्धा मुजब थेतो जिन प्रतिमाने देवाधिदेव कहिके
पूजे मिथ्यादृष्टी अनमती नारायण रघुनाथजी माहादेव
इणाने देवाधिदेव कहिके पूजे इण दृष्टी वालाने बाल
तपकार्य अकाम निर्जरासे देव लोकमे जावे जदि वे
कोणसी प्रतिमा पूजे सो सूत्रानुसारे जाणीयेछे उणा
देवारो कुलाचार प्रतिमाने पूजवारोछे (हियाए सु
हाए खेमाए निस्सेसाए अणुगामियत्ताए नविस्सई)
ए पाठछे तिणऊपर संवेगी कहेछे हित सुख खेम
मोख फल हमारे गेल एह कार्य चालस्यो एह पाठ
तो घरमे लाय लाग्या घरको धणी बिचारे एह न

इस्यो आरय पुरपे कह्यो जिणाकोनलो नाख्यो धर्महै ए गाथारो अर्थ इणाने मुक्तफल पुन्य फल इ एजीवाने बंधमे दीस्यो तो केवलीनें नही दीस्योदिसे ठे इणारो ज्ञान केवलीके ज्ञानसेही जादा सो दीसे ठे ८५ प्रश्न ॥ संबेगी सूत्र ४५ मानेठे आपणे ३२ की परुपणाहै सो १३ पईन्ना औरहै तिणमे शास्त्रसे मिलेतो जुवाबकांई कहिये तथा १३ ही अणमिल तांहै क्या ॥ उत्तर ॥ पईन्ना सगले तो अण मिलता नहीं पिण ए पईन्ना नाम प्रकीर्ण विखरी बस्तुनोठे सो ठदमस्त आचार्याने बिखरी चीज भेली करीहै परंतु भेली वस्तु करतां कूडो भिले ठदमस्तनो ए कांत उपियोग न रहे तिणकारण ३२ रो पिण आं क आपारे परंपरायसे कहेठे सूत्र मांहिं तो (दुवाल संगंगणि पिडगं) एह १२ अंग गणि आचारजनो रत्ननो करंडीयोठे एहवो पाठठे सुद्ध श्रद्धा वालेको निरपाप वचन रागद्वेष रहित सर्व सिद्धांतठे ८६ प्रश्न ॥ देवता प्रतिमारी पूजा करेठे सो सम दृष्टी करेठे मिथ्यादृष्टी करेठे ॥ उत्तर ॥ सो सूत्रनी नेश्राय भग वंत देवाने कह्याहै देव तुम्हारो पुरानो जीत आचार ठे भगवंते एतो नही कही समकती देवतानो पुरा णो जीत आचारठे देवता पिण आपरे सामानिक देवतानें पूठयो [किंमेपुवं करणिज्जं किंमे पछाकरणिज्जं) इसो पूठयो जब इण पाठमे सामानीक देवतानी कहनी

अर्थ द्रव्य पूजानो करेछे जैसे मथेन वंदामि इसो शब्द सुणिने कहै सगलाही जैनी मथेणा बंदामी कहैछे सो हमारेताइ वंदना करेछे ऐसे पिण इण। (पुया) इसो पाठमे देखके मनराजी करेछे हमे द्रव्य पूजा करांछां सो दयामे गिणीछे परंतु अभयदेव सूरि (यज्ञ) नामनो अर्थ भाव अर्च्चननो करयो। छे जिणपर जीव दया भाव अणयो तिणे जाणे सर्व [यज्ञ] कीधो अने [पूया) शब्दरो अर्थ (पूया) प्राकृतमे शब्द होवे संस्कृतमे (पूता) इसो होवे (पूता) नाम पवित्र निर्मला दया समान दुसरी वस्तु पवित्र नही (सर्व भूतदयाशौच्यं] इसो शब्द अनमतीके पिण शास्त्रमे कह्योछे सो पूया शब्दनो अर्थ टीकाकारे करयो जीवहिंस्या होवे तिको दयारो नाम कदेही नही जाणनो ८८ प्रश्न॥ पक्खीकरनेकी चरचालिख्यते गाथा नमीऊण सयल जिणवर धम्मसमायारीय चउविहोसंघो पव पक्खीय वियाशे भणामि जिणसासणेसारो १ आगारि समाईयगाणि सढीकाएण फासए पोसहोदुहउ परवं एगराईनहावइ २ सवे सुकाल पव्वेमो पसत्थो जिणमए तवो जोगो अठमिपनरसीसूय नीयमेणहविज पोसहीयो ३ छठि सहियाउ अठमि तेरससयं न पक्खीयं होई पडवे सईयं कयावि ईय भणीय जिण वरिंदे हिं ४ पनरसंमि दिवसे कायवं पक्खीयं तुपाएण च

गदी धननी गांठडी इण लायमांसे काढ्या मुक्तने (हियाए सुहाए खेमाए निसेयस्साए अणुगामिय त्ताए भविस्सइ) सरीखो पाठछे तो देखो धननो पर भवमे गेल क्या चलसी पिण धन लाइसे बच्या सारी बातरी बर करारी घरमे रहै तैसें देवा पिण एह बात कहीहै यथायोग्य ३२ बाना पुज्यासे नवा देवरे सारी बातरी बर करारी इण भवमें रहैगी इस वास्ते एह बाना ३२ पूजवा योग्यछे ८७ प्रश्न॥ प्रश्न व्याकरणजीरा संबर द्वारमे दयारा ६० नाम कह्या तिणमध्ये ४७ मो नाम (पूया) सो संबेगी कहैछे पूजा दयामा गिणीछे॥ उत्तर॥ सो इणानें द्रव्य पूजा सचित पाणीरो ढोलणो फूल फल सोना रुपानी कचोली धूप दीप वाजित्र वजावणा सारंगी सतार ताली वजावणी मुखसे राग गावणा द्रव्य पूजा ठेरी सो दयामे गिणीयो पूजानो संबेगी अर्थ करे तो प्रश्नव्याकरणमे ६० नाममे जाणो दयानें (यग्य) कहीये सो (यग्य) अन्यमती धर्म जाण करेछे अश्वमेधी गोमेध गजमेधीय महीषमेधीय अजामेधीयएह [यग्य] करेछे तस थावर जीवांना प्राण वध करेछे अने (यग्य) कीयानो मोटो स्वर्गादि फल बतावेछे सो (यग्य) दयामे होय साठा नामामे यज्ञ पिण नामछे परंत मत पक्षी (पूया) नाम प्रश्न व्याकरणमे दीठो जदखुसी थया पुया नाम दयानो

एह गाथानो बिस्तार पूर्वक अर्थ लिख्यते.

प्रथम चंद्रवर्ष १॥ भाद्रपदवदि २ कार्तिक वदि ४ पोस वदि ६ फाल्गुन वदि ८ वैसाक वदि १० आषाढ वदि १२.

द्वितियचंद्र वर्ष २॥ भाद्रपद वदि १४ कार्तिक सुदि १ पोससुदि ३ फाल्गुन सुदि ५ वैशाक सुदि ७ आषाढ सुदि ९

त्रतीय अभिवर्द्धन वर्ष ३॥ भाद्रपद सुदि ११ कार्तिक सुदि १३ पोस सुदि १५ फाल्गुन सुदि २ वैसाक वदि ४ आषाढ वदि ६

चतुर्थचंद्र वर्ष ४॥ भाद्रपद वदि ८ कार्तिक वदि १० पोसवदि १२ फाल्गुन वदि १४ वैसाक सुदि १ आषाढ सुदि ३

पंचम अभिवर्द्धन वर्ष ५॥ भाद्रपद सुदि ५ कार्तिक सुदि ७ पोस सुदि ९ फाल्गुन सुदि ११ वैसाख सुदि १३ आषाढ सुदि १५.

आठमनी तिथी विचार---तिथी नाम जया॥ दिन नाम इंद्रसुधाभिसतेय॥ रात्रि नाम वैजयंती॥ रात्रीनी तिथी नाम भोगवती॥ तिथी खुटे तिवारे सात दीन आठमि होई सूत्र मांहिं बिमासी जो जो सिद्धांते जो तिथी न खुटे तो आठे दिन आठमी होवई॥ जया तिथी आठमकिजे॥

पाखी पूर्णा तिथी किजीये--तीथी नाम पूर्णा॥ दि

उदससयं कईयावि नह तेरस सोलमे कहवे ५ अ
ठमि दिणमिसायं कायवा अठमीखपाएण कईयावि
सत्तमंमि नवमे छठे न कयावि ६ पखस अद्धा अठ
मि मासद्धा उए पखीयंहुंति सोलसम दिणे पाखियं न
का यवं होइ कयावि ७ पखीयपाडिक्कमणाउ साठिय पुहरं
मि अठमा होई तत्थेवपच्चखाणं करांति पवेसुजिणव
यणे ८ जहीआउ अठमीलग्गा तहीयाउ हवंति पख
संधीसो साठि पुहरंमिनेया गरेए तिहि पाखपाडिक्कम
ए ९ चंदेचंदेअभिवढीईया चंदे अभिवढीएचेव पं
चसाहि यंयुगमिणं भणीयंतिलुक दंसीहिं १० नहवक
त्तीपोसे फागुणवयसाह मासि आसाढो एया पडंति
तत्थी नूणं ए ए सुमासेसु ११ किन्हे बीयचउत्थी छ
ठठामि दसमि दुवालसीचेव चाउदिसी सुक्कपुण पडि
वतीयाय पंचमीया १२ सतामिनवामिकारासित्तेरसि त
हपुणमाय वोधवा एया युगपारिमाढि ताइचियपाडि सिद्धि
वि १३ पडिवगं विय तइयाय चउत्थी पंचमीय छठीया
सत्तामि अट्ठमि नवमी दसमी एकारसीचेव १४ बार
सि तेरासि चाउद्दसीय निठ विणगाय पनरसी कि
न्हंमि [शुक्ल] जोन्हंमिय एसवि वहीमुणे यवो
१५ ॥ इति श्री सूत्रात् पाक्षिक विचारो ज्ञेयः ॥

एह गाथानो बिस्तार पूर्वक अर्थ लिख्यते.

प्रथम चंद्रवर्ष १॥ भाद्रपदवदि २ कार्तिक वदि ४ पोस वदि ६ फाल्गुन वदि ८ वैसाक वदि १० आषाढ वदि १२.

द्वितियचंद्र वर्ष २॥ भाद्रपद वदि १४ कार्तिक सुदि १ पोससुदि ३ फाल्गुन सुदि ५ वैशाक सुदि ७ आषाढ सुदि ९

त्रतीय अभिवर्द्धन वर्ष ३॥ भाद्रपद सुदि ११ कार्तिक सुदि १३ पोस सुदि १५ फाल्गुन सुदि २ वैसाक वदि ४ आषाढ वदि ६

चतुर्थचंद्र वर्ष ४॥ भाद्रपद वदि ८ कार्तिक वदि १० पोसवदि १२ फाल्गुन वदि १४ वैसाक सुदि १ आषाढ सुदि ३

पंचम अभिवर्द्धन वर्ष ५॥ भाद्रपद सुदि ५ कार्तिक सुदि ७ पोस सुदि ९ फाल्गुन सुदि ११ वैसाख सुदि १३ आषाढ सुदि १५

आठमनी तिथी विचार---तिथी नाम जया॥ दिन नाम इंद्रसुधाभिसतेय॥ रात्रि नाम वैजयंती॥ रात्रीनी तिथी नाम भोगवती॥ तिथी खुटे तिवारे सात दीन आठमि होई सूत्र मांहिं त्रिमासी जो जो सिद्धांते जो तिथी न खुटे तो आठे दिन आठमी होवई॥ जया तिथी आठमकिजे॥

पाखी पूर्णा तिथी किजीये--तीथी नाम पूर्णा॥ दि

न नाम उवसमे १ सुवयगा १॥ रात्री नाम देवानंदा २ द्वितीय निरती २॥ रात्रीनी तीथी नाम जसवती ॥ तिथी खुटे जदचऊदे दिने पाखी आवे तिहां कीजे अतिचार आलोईये विशेषजो तिथी न खुटे तो पंद्ररे दिनमे पाखी होय ॥ पूर्णा तिथी पाखी किजीये ॥ प्रश्न ८९ ॥

॥ अथ संवत्सरी पंचमीके दिन करणी ते चौथकी संवत्सरी करणे वाले साधु श्रावकोसें प्रश्न लिख्यते ॥ प्रश्न १ चोथके दिन पंचमी कोणसे सूत्रसे करतेहो प्रश्न २ चोथको चोथ कहणी पंचमीको पंचमी कहणी चोथको पंचमी कोण कहे ऐसा विवहार वरतताहै सो आप चोथको पंचमी तथा संवत्सरी कैसे कहते हो ॥ प्रश्न ३ और आलोयणा गये कालकीहै याने बीते हुये कालकीहै तो पंचमीका काल बीता नहीं तो आलोयणा पूर्ण कैसे हुई क्योंकि दिन छिपे चोथमे पंचमी आई तवतो पहर दो पहरकी पंचमीकी आलोयणाभी न हुई ॥ प्रश्न ४ और आगमी कालका तो पचखानहै परंतु आलोयणा नही होवे तुम संवत्सरीकी आलोयणा कैसे करते हो विना कालबीतेपे दिनकी आलोयणा सूर्य अस्त होते वक्त करतेहैं रातकी आलोयणा सूर्य उदै होते वक्ततक करतेहैं इसीतरे संवत्सरीका दिन व्यतीत होलेवें तव आलोयणा करणी युक्तिहै ॥ प्रश्न ५ और

कालिका आचार्यनें तो कारण सिर चोथमे पंचमी क रीथी ॥ पईठान पुरमे सालिवाहन राजाने कह्या कि महाराज पंचमीको इंद्रमहोछव मेला करुं छठको पोसह करदुंगाजव गुरूने १ रात दिनका अंतर यानें फरक पडता जानकर चोथमे पंचमी कराई क्यों किं छठके दिनमे तो पंचमीका कोई अंस ज रासाजी नहा रहता और वहांतो सत्तमीकी घ डीया आजातीहै इसवास्ते एक रात दिनका अंत र पडता जानकर उनोंनें चोथमे संवत्सरी करीथी प रंतु पहली असलमे महावीरजीके वारेसे तथा परं परायसे पंचमीकी संवत्सरी चली आवेथी तो तुम लोगोने उसका मानना कैसे छोड दिया ॥ प्रश्न ६ और बहोतसी बाते नवे ग्रंथ शास्त्रोकी नहीं मानतेहो कि जैसे धर्म रत्न शास्त्रकी गाथा (अवलंविऊण कज्जं जं किंपसमयारंतिगीयत्था थोवावराह वहुगुण सव्वेसिंतं प्रमाणंतुं८५)अर्थ अवलंबनको आश्रित होके जो जो सं जोपकारी कृत्य गीतार्थ सिद्धांतानु सारी आचरणकर तेहै तिस्मे दूषणतो अल्पहै और निकारणें परिभोग क रे तो प्रायछित पामे और जिस्मे बहुत गुण होवे गुरु ग्लान बाल वृद्ध प्रमुखोके उपकारक होव मात्रक अर्था त मोटे बडे पत्रादि परिभोगकीतरे जो सव चारित्रीयों को परिमाणहै मित्यर्थ ॥ और आर्यरक्षित सूरिने मुनी यो की दयाकरिके मात्रक मोटे बडे पात्रके परिभोग

की आज्ञादीनी ओर साधु पुरुष साधवीको दिक्षा न दे वे साध्वी साधु आगे आलोयणा न करे ओर साधवी को छेद सूत्र नही पढाने यद्यपि आगममे पूर्वोक्त काम करणेनी कहेहै तोभी काल भावदेखी आच रणा बांधीहै सो तुम लोक ऐसी ऐसी आचरणा नही मानते तो चोथमे संवत्सरी करनेकी आचरणा कोणसे सूत्र सिद्धांतसे मानी ॥ प्रश्न ७ ओर कालिका आचार्यतो महावीरजीके मोक्ष पहोचे पछे ९९३ वर्षमे हुवा सो संवत्सरी पहले कोनसी तिथि मे करतेथे परंपरायसें ते कहो ॥ प्रश्न ८ ओर महा वीर स्वामीके रिवाजको आपलोगोनें कैसा छोडा औ र पांचमे आरेके आचार्यके रिवाजपर छमबरी करणे पर तुम कैसे कायम हुये ते कहो ॥ प्रश्न ९ ओर तु मजो कहोगे हमारे तो यही रीत चली आतीहै चो थमे संवत्सरी करनेकी तो ओर गछ संप्रदायके स्वेतांबर मतको क्यों निषेधतेहो कि इनके शास्त्र पीछेके बणें हुयेहै हमारे सूत्र पहले बणें हुयेहै जैसा कुछ तुमनें चोथमे संवत्सरी करणेका गुण विशेष स मजा होगा तैसाही कुछ वे लोग आपने मतको जानते होगे प्रश्न १० ओर जो ५० दिनकी संवत्सरी होय तो आषाढ सुदी १५ सें उपरांत श्रावण मासके दिन ३० भाद्रपद मासके दिन २० ओर जो एकतिथि कम होतो १९ दिन भाद्रपदके तो उणंचास दिनकी

संवत्सरी होय अथवा २९ दिन श्रावण मासके औ
र २० दिन भाद्रपद मासके तो ४९ दिनमे की संवत्स
री होय वा पंचासमे दिन की पंचमीकी संवत्सरी
होय और ४९ मे वा ५० मे दिनकी रात्रीका अंतर न प
डे याने फरक न पडे सोई जो ४९ वा ५० मे दिन
की जो पंचमीकी संवत्सरी हुई तो उस्की रात्री न
बीते रात्री पहिलेही संवत्सरीका पडिकमणा करे दि
नकी रात वो कहलातीहै कि जैसे पंचमीका दिन
बीत्या तो आगे उस्की रात्री हुई अब बरतमान काल
मेभी पंचमीके दिन बीतेपे पंचमीकी रात्री कहतेहै
येही कल्पसूत्रकी पहिली समाचारीका पाठहै कि
(अंतरावियसे कप्पई) कल्पै संवत्सरी अंत्र विषे
ते अंत्र पंचमीका दिन सांझके समे आलोयणा कर
णी संवत्सरीकी पंचमीकी रात्री पहिले आगले दिन
छठका दिन हुवा उसकी सांझको आलोयणा संव
त्सरी की न कल्पै (नोसेकप्पइ तंरयणं उवबाया वित्त
ए) न कल्पै वो जो पंचमीकी रात्री बीतेपै क्यों
कि एक रात दिनका अंत्तर पडगया इस वास्ते न
कल्पै ॥ प्रश्न ११ और धर्म रत्न ग्रंथकर्तानेभी प
हिले पंचमीकी संवत्सरी वर्णन करीहै और पीछसे
चोथकी संवत्सरी कारण महोछवके करीहै ॥ गाथा ॥
(सिक्किगनिखिवणाइ पज्जोवसाणाइ तिहि परावत्तो चो
यणविहियअन्नंतं एमाइंविविहसव्वंपि) अर्थ टीका

द्वर कडोरी करिके रचा हुआ नांजना धार विशेष तिस्मेरखके पात्रांको बांधना आदि शद्बसें उक्त लेप रोगनादिसें पात्राको लेपकरना तथा पर्यूषणादि तिथिका परावर्त्त करणा पर्यूषणा तिथि संवत्सरि का नामहे तिसका परावर्त्त पंचमीसे चोथके दिन करणी आदि शद्बसे चतुर्मासिक ग्रहण करणा तिसकी तिथिका परावर्त चोमासा पूर्णमासीसे १४ को करणा ऐसाजो तिथ्थंत्तर करणा सो प्रसिद्धहै एवमादि ग्रहण करणेसें षटजीवनिकाय अध्ययन पढनेसें सिष्यको छेदोपस्थापनीय चारित्रदेतेहै और पहिले आचारांगका सस्त्र परिज्ञाध्ययन पढे पीछे छेदोपस्थापनीय चारित्र देते इत्यर्थ ॥ प्रश्न १२ इस वास्ते चारित्रादि बहोत बाते तो कालभावकासमे जानकरे आचरणामे प्रमाण करीहे परंतु चोथकी संवत्सरीमे तो एक आचार्यने महावीरजीसे पीछे ९९३ के वर्समे महोत्सव कार्णसे चोथमे संवत्सरी करीथी वा राजादी लोकोसें करवाईथी परंतु अबतो कोई कारण चोथकी संवत्सरी करणेका निश्चै नही होता और जो कोई सूत्रमे संवत्सरी चोथमे करणी कही होय तो कहो और जो इहां संवत्सरी के कोई लिखनेमे ज्यादे वा कम शास्त्रसें बिरुद्ध लिख्या होय तो तिसकी मुझको न्यारो तीर्थोंकी साखमे तस्सामिछामि दुक्कडं अब इन १२ प्रकारके प्रश्नोसें पंचमीको पंचमीकासंवत्सरी कर

णी युक्तहै ॥ इति पंचमीकी संवत्सरीके प्रश्न ९० प्रश्न जो साधु साधवी लघुनीत बडीनीत होकर सरीर शुचि न करेतो प्रायश्चित्त होय के नही उत्तर प्रायचित्त होय नसीथ सूत्रके चतुर्थ उदेसमें कह्योहै ते पाठ (जे भिखु उच्चार पासवणं परिठ वित्ताणायमइणायं मत्तंवा साइज्जई १४०) अर्थ जे कोई साधु साधवी दिशा मात्रा फिरकर पाणीसे सुच न करे तो प्राय श्चित होय तो साधुवा साधवी रोगादि कार्ण विशे ष जानकर सरीर सुचिके वास्ते रात्रीको राख मिला यकर पाणी सरीर सूचि कार्णं रखेतो कोईसा साधू का माहाव्रत नही जाताहै क्यों कि बडीनीत लघूनी तकी दुर्गंध जहांतक होगी तहातक सूत्र पढना मने है और प्रभात कालें पडिकमणा कैसें करे और व्या ख्यान सूत्रका कैसें करे जो सूचि सरीर न होतो असिज्झाई रहे ते असिज्झाई सूत्र मे टलाणी कहीहै तथा कोई ऐसा कहे कि सूत्रमें पाणी कही रात्री को रखना लिखा नही सो सहीहै परंतु सूत्रांमें कार्ण विशेषतो जगे जगे लिखेहै तो तेह कारण रो गादि तथा सरीर सक्ति हीण होयतो क्या करे ला चारीकी बातहै तो कार्णपर वृहत्कल्पमे पंचमाध्यय नें सूत्र पाठ ४७ में एसा कथनहै (नोकप्पई नि ग्गंथाणवा निग्गंथीणवा पारियासियाए भोयणजाय जाव तयप्पमाणमेत्तंवा विंदु पमाणमेत्तंवा भूइप्पमा

णमेतवा आहार माहारित्तएवा णणत्थ गाडेहिंरोगायं केहिं) इसका अर्थ इसी पाठके शद्बोंसें समजना तथा वृहत्कल्प सूत्रके टबेसें अर्थ जाणना इसतरे गाढे रोगादि कार्णें सूत्रमें निषेध नही और कार्णें साधू वृद्ध अवस्थामें एक नगरमे रहै १ कार्णें चो मास उतरया पछे उसी नगरमें साधू रहै २ कार्णें औषधी साधु लेवे ३ कार्णें साधू जलमेसें वहती साध्वीको निकाले ४ कार्णें साधू चोमासमें विहार करे ५ कार्णें साधू नदी उत्तरे ६ कार्णें साधु रोग तथा संथारेमे लोच नकरे ७ कार्णें साधू आहार लेवे ८ कार्णें साधू आहार न लेवे ९ कार्णें साधू नवणी घ्रत तीन पहिर तक रखके १० कार्णें खाडामें पडता साधू वृक्षकी साख पकडै ११ कार्णें साधू लब्धि फोडे १२ कार्णें साधू जोतिस प्रकासे १३ कार्णें साधु वैक्रै लब्धी करे १४ कार्णें साधू मास उपरांत गाम नगरमे रहै १५ साधू गृहस्थीके घर बैसे १६ इम कार्णें साधूके औरभी बहोतहै तो इस वास्ते श्री प्रवचण सारोद्धार ग्रंथमे रातको सूचिके लिये पाणी रखणा लिखाहै ९१ और कितनेक साधु वा श्रावकोको जिस गुरुनें धर्म उपदेश दीया और समकित धर्म बताया और समकित धारण कराई तथा धर्म ध्यानका करणा धर्म लक्षन बताया मिथ्यात छुडाया अनेक सूत्र वा शास्त्रोके जाणकार कीये तो ऐसा

परम उपकार गुरु महाराजका हुआ जिस ते मनु
षो की बुद्धि निर्मल हुई और ज्ञान दरसन चारित्र
तपके धणी हुये फिर वे ऐसे उपकारी गुरुको छोड
कर ऐसा दूसरे गुरुकी समकित सरधा करतेहै औ
र पूर्व गुरुके द्वेषी बनजातेहै वा अवगुण बाद बो
लतेहै तो वे महा दोषके अगवाणी होतेहै सो आ
गमद्वार स्मरण कराके कहतेहै (एवंअवमन्नंतो वुत्तो सु
त्तंमिपावसमणुत्ति महमोहबंधगोविय खिसंतोअप्प
डि तप्पंतो) अर्थ ऐसे पूर्वोक्त कहे गुरुको हीलता
हुआ साधु सूत्र उत्तराध्ययनमें पापी श्रवण कहाहै
और गुरुको निंदनें खिजनें वाला आवश्यक समवा
यांगादिकमें महा मोहनीय कर्मका बंध करने वाला
कहाहै मित्यर्थ ॥ और जो शिष्य कठिन क्रिया का
रकभी होवे तोभी गुरुकी आज्ञा करने वाला होवे
उक्तंच (छठम दसम दुवालसेहिं मासद्ध मासखमणे
हिं अकरंतो गुरुवयणं अणंत संसारीउ भणिऊ) अर्थ
छठ अठम दसम द्वादसम अर्ध मास मास क्षमण तप
करनेवाला शिष्य गुरुका वचन न मानेतो अनंत
संसारी कहाहै अथ गुरु सेव्यया फल माह ॥ (वि
दलयतिकुबोधं बोधयत्यागमार्थं सुगतिकुगति मार्गौ
पुण्य पापेव्यनक्ति अवगमयतिकृत्याकृत्य भेदंगुरो
र्यो भविजलनिधिपोतस्तंविना नास्तिकश्चित) व्या
ख्या ॥ भोभव्यास्तं गुरुं बिना अन्यः कश्चित भवजल

निधि पोतः भव संसार सएव जलनिधि समुद्रस्तत्र पोत इव पोतः संसार समुद्र तारणे प्रवहण समानो गुरुं बिनाऽन्यः कश्चिन्नास्ति तं कथं योगुरुः कुबोधं कुत्सित ज्ञानं मिथ्यात्वं बिदलयति पुनर्योगुरुः आगमार्थानां सिद्धांतानां अर्थं बोधयति ज्ञापयति पुनर्योगुरु पुन्यपापे अन्यंच पापंच पुन्यपापे तद्धर्माधर्मौ अपिव्यनक्ति प्रगटयति इदं पुन्यं पापं इति कथंभूते पुन्यपापे सुगति कुगतिमार्गौ सुगतिश्चकुगतिश्च सुगतिकुगति तयोमार्गौ पुन्यंदेवनरादि सुगतिमार्गः पापं नरक तिर्यंकरुप कुगतिमार्गः पुनर्योगुरु कृत्या कृत्य भेदं अवगमयति कर्त्तुं योग्यं कृत्यं अयोग्यंअकृत्यं कत्यंच अकृत्यं कृत्याकृत्ये तयोर्भेदोबिवेको बिचारस्तं ज्ञापयति यथा प्रदेसी नृपः महानास्तिकमतिः केसी श्रमण गुरुणां प्रतिबोध्य तत्व मार्गे स्थापितः॥ पुनः गुरुसेवायाफलमाह॥

पितामाता भ्राता प्रिय सहचरी सुनुनिवहः सुहृत्स्वामी माद्यतकरिभटरथाश्वपरिकरः निमज्जंतंजंतुनरक कुहरे रक्षितुमलं गुरोर्धर्माधर्म्म प्रगट नपरात्कोपिनपरः॥ व्याख्या॥ नरक कुहरे नरक विवरमध्ये निमज्जंतं बुडंतं पततं संतं जंतु जीवं गुरोः परोःऽन्यः कोपि रक्षितुं न अलं कोपिन समर्थः कथं पिताजनको रक्षितुं नालं माता जननींनालं भ्राता सहोदरंनालं प्रीया अत्यंत वल्लभा सहचरी स्त्रीरक्षितुं नालं सुनुनि

वहः पुत्र गणोपिरक्षितुंनालं सुहृतिमत्रमपिनालं स
र्थे स्वामी नायकोपिनालं किंनुतः स्वामी माद्यत व
रि न्नटरथाश्वः माद्यंतो मदोन्मता कारिणो गजा न्न
टाः सुन्नटाः रथा अश्वाश्वयस्यस एवं विधो बलवानपि
स्वामी रक्षितुंनालं पुनः परिकरः प्रन्नूत सेवकादि वर्गो
पि नकरे पतंतं जीवं रक्षितुं न समर्थः किं विशिष्टात्गुरो
धर्म्माधर्म्म प्रगट न परात धर्म्मश्च अधर्म्मश्च ध
र्मा धर्मा पुण्य पापे तयोः प्रकटने प्रकाशने परस्त
परोयः सः तस्मात्गुरुः धर्मा धर्मौ द्वावपि दर्शय
ति ततश्चयः प्राणी धर्म मंगी करोति सनरके नपत
ति किंतुसुगति सुखं न्नवति ॥ इस वास्ते सुगुरसेव
सदा सुखदायक है १२ प्रश्न ॥ मुहपति कोणसे सू
त्रमे कहीहै ॥ उत्तर प्रश्नव्याकरण उत्तराध्ययन सू
त्रमे कहीहै॥१३ प्रश्न रजोहर्ण का प्रमाण कोणसे
सूत्रमें कह्या ॥ उत्तर नसीथ सूत्रके पांचमे उदेसमे
१४ प्रश्न ॥ मैलावस्त्र बहोत जादे माधुरखे कि नही उत्त
र॥ नही रखे जो रखेतो तिस साधूको प्रायश्चित कह्या
नसीथ उदेसे ६ मे १५ प्रश्न ॥ साधूने रोग उपना साधू
औषधी देवेके नही उत्तर ॥ साधू औषधी आणी दे
वे नही देवेतो प्रायश्चित कह्या नसीथ उदेसे दसमे १६
प्रश्न सूत्र ॥ कितने प्रकारके होतेहै उत्तर सात प्रका
रके ते विधि सूत्र १ उद्यम सूत्र २ वर्णकसूत्र ३ न
य सूत्र ४ उत्सर्ग सूत्र ५ अपवाद सूत्र ६ उन्नय सू

त्र इन सातोका ७ स्वरुप इसतरे है कि कितनेक सूत्र विधि मार्ग केहै तथा दशवैकालिकके पांचमे अध्ययने (संपत्तेभिख कालंमि असंभंतो अमुछिउ इ म्मेण कम्मजोएण भत्तपाणं गवेसए १) इत्यादि १ और कितनेक उद्यम सूत्र जैसें उत्तराध्ययन दसमे अध्ययने [दुम्म पत्तए पंडुए जाहा निवडइ रायगणाण अच्चए एवंमणुयाण जिवियं समयं गोयम मापमायए १)इत्यादि २ और कितनेक वर्णक सूत्र जैसें ज्ञाता उववाई प्रमुखमें जैसें (रिद्धित्थिमियसमिद्धा) इत्यादि ३ और कितनेक भय सूत्र कि जैसे सूयगडांग प्रथम श्रुतस्कंध निरय विभती पंचमाध्ययने प्रथम उदेसे (हणछिंदह भिंदह दहेणं सद्दंसुणित्तापरहम्मिायाणं ते नारगाउभयभिन्न सिंन्ना कंरकंतिकिंन्नामदिसंवयामो) इत्यादि ४ उत्सर्ग सुत्ताणि यथा [इच्चेसिंछएहं जीवनिकायाणं नेवसयं दंडं समारंभिज्जा) इत्यादि ५ अपवाद सूत्रतो प्रायेछेद ग्रंथोसे जाने जातेहै तथा [नयालभिज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणउस्समं वा इक्कोवि पावाइ विवज्जयंतो विहारिज्जकामे सुय सज्जमाण १)इत्यादि भावार्थ जव निपुण सहायक गुणाधिक अथवा वराबर गुणवाला न मिले तव पापांको वर्जता हुआ और काममे अनासक्त होकर एकलाभी विचरे साधू ॥ ६ ॥ तथा तदुभय सूत्र जिनमे उत्स

गौपवाद दोनो युक्त कहे जातेहे यथा (अट्टजाणा नावेसमं, अहियासियव्व उत्ताही ॥ तज्जावं मित्तवि हिणा, पडियार पवतणंत्तेयं ॥ इत्यादि नावार्थ जिस रोग व्याधिके हुए आर्तध्यान न होवे तव तो सहनी जेकर आर्तध्यान तिस रोग व्याधिके हुए हुवे तव तिस वे.उपचारमे वर्त्तना औषधी करणी ऐसे नाना प्रकारके स्वसमय परसमय निश्चय व्यवहार ज्ञान क्रियादि नाना नयोके मतके प्रकासक सिद्धांतमे गंनीर नाव वाले महा मतिवालोके जानने योग्य जिनका अनि प्रायहै इस इस तरहकें सूत्र बहुत विस्तार करिकहे ॥ ७ ॥ ९७ प्रश्न ॥ श्रावक कितने प्रकारकेहै ॥ उत्तर च्यार प्रकारके श्री ठाणांग सूत्रके चउथे ठाणेमे क हेहै यदुक्तं (चउविहा समणो वासगा पन्नत्ता तंजहा अम्मापिइसमाणे १ नायसमाणे २ मित्त समाणे ३ सवत्ति समाणे ४ ॥ गाथा ॥ चिंतइ जइ कज्जाइं नदिह ठ खलिउविह्रोईनिन्नेहो एगंत वळ्लो जइ जणस्सज णणी समोसहो १) नाषार्थ साधुओके सर्व कार्य आहार पानी वस्त्र पात्र औषधी प्रमुख जे होवे ति नको तिनके दान देनेकी चिंतवणा रखे शुद्ध नाव सें दान देवे कनी परमादके वसते साधु समाचा रीसे चूक जावे तव आखोसे देखकेनी स्नेह रहित न होवे साधुजनाका एकांत वत्सल कारक होवे सो माता पिता समान श्रावक कहतेहै १ (हिजएससि

णेहोच्चिय मुणीणमंदायरो विणयकम्मे न्नाइ समोसा
हुणं पराजवे होईसुसहाउ २) न्नावार्थ ॥ हृदयमे तो
साधुओ उपर बहुत स्नेह रखताहै परंतु साधुओ
की विनय करनेमे मंद आदर वालाहै साधुओको
संकट पडे तब न्नलीरीते सहाय्य करे सो श्रावक
न्नाई समानहे २ (मित्त समाणो माणाई सिंरुसइ
अपुछिउकज्जे सन्नंतो अप्पाणं मुणीण सयणाउअज्ञ
हियं ३) न्नावार्थ ॥ जब साधु किसी कार्यमे न पु
छे तब रूसजावे परंतु साधुको अपने स्वजनोसेंन्नी
अधिक मानताहै सो मित्र समान श्रावकहै ३ [थ
द्धोछिदप्पेही पमाय ॥ खलियाणिनिच्च मच्चरईसट्ठो ॥
सवत्तिकप्पोसाह्नु ॥ नणं तणसमंगणइ ४ ॥ न्नापार्थ॥ अ
न्निमानी काष्टवत कठिन होवे छिद्र देखने वाला हो
वे प्रमादसे चूकजावे तो तिस दोषको नित्य कहे
साधुजनोको तृण समान गणे सो श्रावक शौकन
तुल्यहै ॥ ४॥ ९८ प्रश्न ॥ तथा श्रोताजन श्रावक चतुर्द
स प्रकार उपमा सहित कहहैं यदुक्तं (म्रत १ चालिनी
२ महिष ३ हंस ४ शुक ५ स्वन्नावा ६ मार्जार ७ कंक
८ मशकौघ ९ जलोक तुल्य १० सछिद्र कुंन्न ११
पशु १२ सर्प १३ सिलोपमाना १४ ते श्रावका न्नू
विचतुर्दशधान्नवंति ॥ १ ॥ न्नापार्थ ॥ पृथ्वीवतधी
र्यवान १ चालनीवत जिम गणसलेय तिम अवगुन
लेवे २ नैसाजिम पाणी गदला करी पिवे तिम

जिन वाणी मेले प्रणामसें सुणें ३ हंस जिम दूध पां
णी न्यारा न्यारा करै तिम मिथ्यात दूर कर जिन
वाणीके रसको धारण करे ४ तोता जिम फल कुत
र कुतर गेरे तिम गुरुनां वचन काटे ५ श्वान जिम
जीमे करी ऊवल करे औरनें देखी चुके तिम ईर्षा
करे ६ बिलाव जिम छिद्र ताके जीव मारवाने तिम
साधुना छिद्रताके ७ कागसी जिम जलके केस जु
दे करे तिम संदेह दुर करे ८ मछर जिम चठका
देवे तिम कठिन वचन बोले ९ जलोक जिम दुध
न पीवे तिम जिन वाणी रसको न चाहे १० छिद्र स
हित घडा मांहिं पाणी न रहे तिम जिन वांणी याद
न रहे ११ गाय जिम पाणी पीवे गातन भिगोवे ति
म प्रणाम मेला न करे शुद्ध भावसें जिन वाणी सु
णै १२ सर्प डंकवत वचन कहीनें क्रोध करे पिण
मुरख बुद्धी समके नहीं जैसें (उपदेशोहिमुर्खाणां
परंकोपायनशांतये पयपांनभुयंगानां केवलंविश वर्द्ध
नं १] १३ सिलाऊपर जिम मेघबरसे पिण भेदे
नहीं तिम जिन वाणी सुणे पिण समके नहीं १४
अक्रोध वैराग जितिंद्रियत्वं क्षिमादयासत्नजणे न
शीतं निर्लोभ दाताभय शोक मुक्ता ग्यानप्रलह्दश
लक्षणानि १॥९९॥ प्रश्न कितनेक वादी ऐसा कहते
है कि मुखपोतियं का पाठहै परंत सूत्रमे डोरेका
पाठ नहीहै ॥ उत्तर जो डोरा नहोतो रायसी देवसी

का पडिकमणा करे जब इच्छामी खमासमणोके १२ आवर्तन प्रदक्षिणा दोनो हाथ जोमके मस्तक मि लाट पर लगाके किसतरां करेगा मोपती मुखके बां धे बिना तो १२ आवर्त्तन तथा प्रदक्षिणा ३ का लमे बणें नही और तागे बिना मुहपती बंधीजावे नही और सूत्र भगवती शतक ९ मे उदेसे ३३ मे (अठ पडलाए पोतिय मुहबंधेति मुहबंधईत्ता) ऐसा पाठहै तो डोरे बिना मुहपती का बंधई पाठ न हो ता इहातो (बंधई २ त्ता) कह्याहै कि मुहपती बांधी बांधीनें और सोमिल ब्राम्हणेने अन्यमत की दिक्षा व्रतमे (कठमुद्दाएमुहबंधई बंधईत्ता) अ र्थ काष्ठकी मुखपतीसे मुख बांधीबाधीनें ऐसा निरा वलका सूत्र मांहिं पाठहै इस वास्ते मुहपती बांध नी योग्यहै और ३२ सूत्रां मांहिं किसी सूत्रमे हा थमे रखणा मुहपतीका कहीं कह्या नही और बं धई का पाठ तो कई जगेहै सोइ लिखादिखलायाहै और कितनेक अज्ञानी विवेक रहित ऐसा कहतेहै कि मोहोपती मुखपर बांधणेसे मुहपतीमे जीवकी उत्प ती होतीहै जिसका उत्तर जैसे भठीमे अंगारे ज लरहेहै उनके ऊपर मट्टीकी हंडी चढा दियी उसमें आटा और पानी डाल दिया लेकिन जबलग भठी मे अग्नीहै तबलग उसहंडीमे जीव नही उपजेंगे और अग्नीतो बुझजावे लेकिन जबलग हंडी गर्महै तोबी

जीव नही उपजेंगे जब हंडी शीतल ठंढी होजावेगी और भीतरका आटा तथा पानी बिलकुल ठंढा शितल होजावेगा जब कितनाक काल पीछे जीव उत्पन्न होने का संभवहै इसतरह तेजस्स सरीर भटी समानहै प्रत्यक्ष देखो ठंढ कालकी ऋतुमे तडके के वखत आ दमीके मुखसे धुवांकी लाटे निकलतीहै साक्षात जै से अग्नीमेसें धुवा निकलताहै और कबूतर पारेवा पखेरू इत्यादिक कंकर पत्थरका आहार करलेतेहै लेकिन पेटमे गया फिर सब चूना बनजाताहै एह स ब तेजस्स सरीर का पराक्रमहै जैसे अग्नी जलत भ ठी पर मट्टी की हंडी चढीहै इसतरा मुखपर मोहोपती है सोई मुहपतीमे जीव उत्पन्न नही होते और जो कोई कहै सो अपने कर्म भारी करताहै.

श्लोक ॥ अनुष्टुब् वृतम् ॥ इत्युक्तं बहुशः धर्म्म सा रस्य लिखितंमया दृष्टवा ग्रन्थाननेकस्य संग्रह्यते प्रय त्नतः ॥ १ ॥

॥ इति श्री स्वामीजी ऋखराज कृत सत्यार्थ साग र ग्रंथका धर्मसार संग्रह नाम तृतीयो भाग संपूर्ण म् ॥ श्री ॥ शुभंभवतु ॥

॥ श्री बीतरागायनः ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर चतुर्थ भाग प्रारंभः

अथ सम्यक्त निर्णय लिख्यते ॥ अरिहंतो महादे

वो जाव जीव सूसाहूणं गुरुणं जिनपन्नत्तं ततं एसम
त्तं में गहियं ॥ १ ॥ अस्यार्थ अरिहंतादि पंच परमे
ष्टीमे प्रथम देव लक्षण जाणकर देव अरिहंत कर
मानीये ते देवाधिदेवके गुण लक्षणोका वर्णन क
थ्यते ॥ छंद ॥ उपजातिर्वृतम् (अर्हन जिनः पारगत त्रि
कालवित् क्षीणाष्टकर्मा परमेष्ठ्यधीश्वरः शंभूःस्वयंभू
र्भगवान जगत्प्रभूः तीर्थंकरस्तीर्थकरो जिनेश्वरः १
स्याद्वाद्यभयदसार्वाःसर्वज्ञःसर्वदर्शिकेवलीनौदेवाधिदे
व बोधिद पुरुषोत्तम वीतरागाप्ताः २) अर्हन पुल्लिंग
(चतुस्त्रिंशतिमतिशयान सुरेंद्रादिकृतां पूजां वा अर्ह
ति इति अर्हन) अथवा अष्ट कर्मरुप वैरियोंको हननने
से तीर्थंकरकानाम अर्हनहै १ जिनः (जयतिरागद्वेषमो
हादि शत्रून इति जिनः) रागद्वेष महामोह आदि
शत्रुवोकु जितनेसे जिनः २ पारगतः (संसारस्य प्र
योजनजातस्य पारंकोर्थः अंतं अगमतामिति) संसा
र समुद्रके पार जानेसें और सब प्रयोजनोका अंत
करनेसें पारगतः ३ त्रिकालवित (त्रीनकालान वे
त्ति) तीनकालकी वार्ता जाणे ४ क्षीणाष्टकर्मकी उत्प
णानि अष्टौ कर्माणि अस्य) क्षीण हो [illegible] गारे ज
र्णादिकर्म ५ परमेष्टी (परमेपदे तिष्ठं [illegible] यी उसमें
ज्ञानदर्शन चारित्रमेस्थित ६ अधीश्वर [illegible] वलग भठी
इत्येवंशीलोऽधीश्वरः स्थसन्नासपिस [illegible] जेंगे और
रः जगत जनोकों आश्रयभूतहै ७ शं [illegible] र्महै तोवी

तसुखं तत्र भवति] सदा सुखके समुदायहै ८ स्व
यंभूः [स्वयंआत्मना तथा भव्यत्वादि सामग्री प
रिपाकात न तु परोपदेशात भवति] अपनी भव्य
पनेकी स्थिति पूर्ण होनेसे स्वयमेव पैदा होताहै ९
भगवान॥ भगः कोर्थः जगदैश्वर्यं ज्ञानं वा अस्ति अ
स्य इति भगवान अतिशायिने मतुः ॥ अर्थ ॥ इस
जगतका सव ऐश्वर्य और ज्ञानहै जिसकुं ते भगवा
न १० जगत्प्रभूः (जगतां प्रभुः) जगतका स्वामी
है ११ तीर्थंकरः (तीर्थते संसार समुद्रोऽनेन इति
तीर्थं प्रवचना धारश्चेतुर्विधः संघः तत् करोति)
च्यार प्रकारे तीर्थसंघकरे १२ तीर्थकरः तीर्थंकरो
ती ति तीर्थंकरः) तीर्थसंघके प्रवर्तकहोनेसे तीर्थक
रहै १३ जिनेश्वरः॥ रागादिजेतारोजिनाः केवलिनस्ते
षामीश्वरः जिनेश्वरः॥ रागद्वेषादि महाकर्मशत्रुवोके जि
तनेवाले सामान्य केवलीकोभी जिनेश्वरः १४ स्या
द्वादि ॥ स्यादिति अव्यय मनेकांत वाचकं ततः स्याद्दि
ति अनेकांतं वदतीत्येवंशील: स्याद्वादी स्याद्वादोऽस्या
स्तीति वा स्याद्वादी यौगकित्वादनेकांतवादी इत्यपि
पाठः ॥ अर्थ सकलवस्तुस्तोम अपने स्वरुप करिके क
चित अस्तिहै और पर वस्तुके स्वरुप करिके क
ना तरुपहै ऐसातत्व प्रतिपादन कर्ता स्याद्व
है १५ अभयदः ॥ अभयंददाति॥ सर्व जीवाके
दायकहै १६ सार्वः (सर्वेभ्यः प्राणिभ्यो

हितःसार्व) सर्व प्राणीके पर हितकारीहै १७ सर्व ज्ञः सर्वं जानातीति सर्वज्ञः सर्व पदार्थोंकु ज्ञानकारी जाणतेहै १८ सर्व दर्शी सर्वंपश्यती त्यवंशील सर्व दर्शी ॥ सर्व वस्तुदेखतेहै १९ केवली सर्वथाऽऽवरणवि लये चेतनस्वभावाविर्भावः केवलं तदस्यास्तीति के वली ॥ सर्व कर्म आवर्णके दूर होनेसे चेतन स्वभाव का प्रकट होना सो केवलीहै २० देवाधिदेवः (देवा नामप्यधिदेवोदेवाधिदेवः) देवोके देवहै २१ बोधिः [जिन प्रणित धर्म प्राप्तिस्तां ददाति मिति बोधि दः] बोधबीजकेदेने वालेहै २२ पुरुषोत्तमः (पुरुषो णां उत्तमः सर्वं पुरुषोमें उत्तमहै २३ वीत रागः वीतो गतो रागोऽस्मात] दूरहुया अंगनादिकोसे राग २४ आप्तः ॥ जीवानां हितोपदेश दातृत्वात आप्त इव आ प्तः जो जीवोंके ताई हितोपदेस करने वालेहै ऐसे गुणो संयुक्त अरिहंत देव १८ दोषोसे रहितहै ते श्लोक ॥ अन्तराया दान लाभ वीर्य भोगोपभोग गाः हासोरत्यरती भीति जुगुप्साशोकमेवच १ का मोमिथ्यात्वमज्ञानं निद्राचाविरतिस्तथा रागोद्वेषश्चनो दोषा स्तेषामष्टादशाप्यमी २) अर्थ दानगत अंत राय १ लाभगत अंतराय २ वीर्यगत अंतराय ३ भोगगत अंतराय ४ उपभोगगत अंतराय ५ ए पाचों अंतरायोके भगवानके विघ्न नहीहै हांसी ६ रति अर्थातप्रीति ७ अरति अप्रीतीतथाचिंत्या ८

भय ९ जुगुप्सा अर्थात तृष्णा १० शोक ११ काम अर्थात मन्मथ १२ मिथ्यात दर्शन १३ अज्ञान मूढपणा १४ निद्रा सोना १५ अविरति १६ राग १७ द्वेष १८ ए १८ दोष रहित अरिहंत देव देव करिमानीये और यह देव स्त्री संयोग शस्त्र जपमाला कमंडल पुस्तक विभूति ऽस्वारी इनोके धारी नहीहै क्योंकि जो देव कामी होय तो स्त्री संग धारन करे जिस देवको वैरियांसें भय होय वह शस्त्र धारण करे जिस्को पुराज्ञाननही हो वह जपमाला धारण करे जो जिस्का शरीर अशुद्ध होता होय वह पाणी का कमंडल धारण करे जिस्को केवल ज्ञान वा अंतर जामी पणा नहो तो तिस वास्ते पुस्तक धारण करे जो कृत्याकृत्य धर्माधर्म हिताहित न जाणताहो वह विभूती रमावे और जो असमर्थपणा जिस्मेहो वह सवारी करताहै और पशूपक्षीयोको पिडा देता है तिसको देव न कहीये देवतो पूर्ववत गुणलक्षणो सहित है ऐसे देवका भजन ध्यानस्तुती हमेस्यां करणे योग्यहै याने जावजीवतक इन्ही देवोको ध्यान करणा तथा स्तूती नमस्कार करणा योग्यहै और शुद्ध साधू कनक कामनीके त्यागी छहकायाके दयाल ते गुरू करिके मानीये २ और जिन, तथा केवली महाराजका कह्या उपदेश तिस्को धर्ममे सत्य कर मानीये ३ ॥ दोहा ॥ देव अरिहंत निर्ग्रंथगुरु

जीव दया धर्म सार॥एकवार आराधीयां निश्चैखेवा पार १॥ ते देव ३४ अतिसय ३५ वाणीकर सहित होय १००८ लक्षण वज्र रिषभ नारायच संघयण समचौरंस संठाण जघन ७ हाथ सरीर प्रमाण उत्कृष्ट ५०० धनुष सरीर प्रमाण अनंता ज्ञान दर्सन चारित्र तप बलवीर्य सहित ते देव अरिहंत के १२ गुण अनत ज्ञान १ अनंत दर्सन २ अनंत सुख ३ अनंत वीर्य ४ सोवनमय सिंहासन पाएपीठ सहित ५ देवदुंदुभी ६ तीन छत्र ७ चौसठ चमर ८ भामंडल ९ अशोकवृक्ष १० देव कृत्यफूलाकीवर्षा ११ जोजनसमाणी वाणी १२ इत्यादि और अनंत गुण करी अरिहंत जाणीये १ गुरु ते सू साधु पाच महाव्रत पाले॥ ते हिंस्याके त्यागी १ झुठ २ अदत्त ३ स्त्री ४ परिग्रह ५ के त्यागी श्रुत्त १ चक्षु २ घ्राण ३ रस ४ फरस ५ ए पांच इंद्रीयांको वस करे १० क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ कषाय टाले १४ भावसच्चे १५ कर्णसच्चे १६ जोगसच्चे १७ खिमावंत १८ वैरागवंत १९ मन समाधारण २० वय समाधारण २१ कायसमाधारण २२ नाणसंपन्ने २३ दंसण संपन्ने २४ चारित्र संपन्ने २५ सीतादिक वेदनासहे २६ मरण आए सम आहियासे २७ ए २७ गुण जाणवा वली परिग्रहके २ भेद वाहिर परिग्रह १ माहिलो अर्थात अभितर परिग्रह २ ते बाहिर परि

ग्रहके १० भेद भूमि १ जात २ धन ३ धान ४ ग्रह ५ भाजन ६ कूप ७ सयणासण ७ चौपद ९ द्विपद १० अभिंतर परिग्रहके १४ भेद क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ हास्य ५ रति ६ अराति ७ भय ८ सोग ९ दुगंछा १० मिथ्यात ११ वेद १२ राग १३ द्वेष १४ सर्व मिली २४ भेद परिग्रह रहित ते शुद्ध साध जाणिये २ ॥ धर्म के २ भेद देसथी धर्म श्रावक नो १ सर्वथी धर्म साधुनो २ ते जीव दयाधर्म केवली पन्न तं धम्मं (अहिंसा मंजमोतवो) ते धर्म श्रद्धा स हित प्रमाण करिये ॥ ३ ॥ ते सम्यक्ती जीवकुं २५ प्रकारकी मिथ्यात त्याग कर शुद्ध सम्यक्त कर ते लिख्यते (अधम्मेधम्मसंन्ना) अधर्ममें धर्म कहे १ [धम्मे अधम्मेसन्ना) धर्मसें अधर्म कहे २ उ मग्गो मसग्गन्ना) कुमारग कोमारग कहे ३ (मग्गो मसग्गन्ना) मार्गकुं कुमारग कहे ४ (अजीव जीवस न्ना अजीवसे जीव कहे ५ (जीवे अजीवसन्ना) जीवसूं अजीव कहे ६ [असाहूसाहूसन्ना) असाधूको सा धूकहे ७ [साहूअसाहूसन्ना] साधको असाधकहै ८) अमुत्तेमुत्तसन्ना] अमोक्षकुं मोक्ष कहे ९ [मु त्तेअमुत्तसन्ना) मोक्षकोअमोक्ष कहै १० ॥ अभिग्रही क मिथ्यात ॥ जो पकडी सोपकडी ११ (अणभिग्र हीक) जैनभी अछा शिवभी अछा १२ [संसईक] मनमे संदेह रहे १३ (अनाभ्योगी) अनादि कालकी १४

(अभिनिसेबक) एक वचननों उथापक जमालीवत्
१५ [लौकिक) हरिहर ब्रम्हादिकको मानें १४
(लोकोत्तर) गुण रहित को गुण सहित मानणा
१६ (कुप्पशावचन) जोगी जंगमादिक १८
(उणाइरित्ते उणा परुपणा १९ ॥ अइरित्ते ॥
अधिकपरुपणा २० ॥ बइरित्ते ॥ विपरीत परुपणा
॥ अक्रिया ॥ दुष्टपणा माटे २२ ॥ अविनय ॥ सास्त्रकी
अविनय २३ अन्नाण अज्ञान २४ आसातना गुरां
की तथा बडांकी २५ ए २५ प्रकारकी मिथ्यात दु
र कर सम्यक्त सुद्ध पाले तथा सम्यक्तके ९ भेद द्र
व्य सम्यक्त १ भाव सम्यक्त २ व्यवहार सम्यक्त
३ निश्चैसम्यक्त ४ निसरग सम्यक्त ५ उपदेस स
म्यक्त ६ रुचकसम्यक्त ७ कारक सम्यक्त ८ दीपक
सम्यक्त ९ प्रश्न ॥ द्रव्य सम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर
तीर्थंकरके वचन ऊपर प्रतीत रक्खे लेकिन परमार्थ
न जाणे नव तत्व खट द्रव्य ४ निखेपा इनके भेदा
न भेद न जाणे देव अरिहंत साधु मुनिराय धर्म्म
केवली भाषित तिनकी सर्दहणा जिस्कूं होय तिकुं
द्रव्य सम्यक्त कहिये १ ॥ प्रश्न २ भावसम्यक्त
किसकुं कहिये उत्तर तीर्थंकरके वचन ऊपर प्रतीत
रक्खे देव गुरु धर्म इनकी सर्दहणा जिस्कूं होय न
वतत्वकुं जाणे ते प्रथम तत्व जीव चेतनालक्षण
अजीवजड वस्तु २ पुण्यशुभ कर्म ३ पाप अशु

नकर्म ४ आश्रवकर्मांका आवन ५ संवर करमांकु रोक
ना ६ निर्जरा पूर्व कर्म १२ प्रकारके तपसे दूर करना
७ बंध जीव अजीव संजोगसे कर्मका बांधना ८ मो
क्ष कर्मांसे निवर्त्त होणा अर्थात कर्मांका छोडना ९
और जीव अजीव पुंण्य एह तीन जानणे लायकहै
और पाप आश्रव बंध एह ३ छोडने जोगहै और
संवर निर्जरा मोक्ष एह ३ आदरणे जोगहै षट द्र
व्यको जाणपणो करे रूपीको अरूपी बोलाको जान
पणो करे ते भाव सम्यक्त कहिये २ ॥ प्रश्न ३ व्यव
हार सम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर लक्षण करी जा
णे इसजीवकुं व्यवहार समकितछे तथा ६७ बोला
मांहिंसें ६१ बोलके गुण करी सहित उपसम सम्य
क्त क्षयोपसमसम्यक्त जिस जीवकुं होय तिसकुं
व्यवहार समकित कहिये ३ ॥ प्रश्न ४ निश्चै सम्यक्त
किसकुं कहिये उत्तर वेदक सम्यक्त क्षायक सम्यक्ती
जे जीव होय समकत आयापीछे जाय नही तथा
ज्ञानादिकने प्रणाम शुद्ध होय तिसकुं निश्चै सम्यक्त
कहिये ४ ॥ प्रश्न ५ निसरगसम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर
नीसरग समकतते पोताना क्षयउपसमे आपणी बुधे
करी सर्व वस्तुनो प्रमाण करे साचो करी सरदहे जा
तीसमर्ण ज्ञानकरीजाणे तेहने निसरग सम्यक्त कहि
ये ५ ॥ प्रश्न ६ उपदेस सम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर न
वतत्वनो स्वरूप देव अरिहंत गुरू निर्ग्रंथ धर्म केव

ली भाषित ए ३ तत्वना स्वरूप द्रव्यनो स्वरूप इ
त्यादिक आगमनो स्वरूप गुरू उपदेसथी जाणे ति
स्कुं उपदेस सम्यक्त कहिये ६ ॥ प्रश्न रुचक सम्यक्त कि
स्को कहिये उत्तर श्री वीत्तराग देवनी आज्ञानें रुची स
हित तहत करी सरदहै लौकीक धर्म जाणें लोकोत्तर
धर्मजाणें सिद्धनो स्वरूप जाणे एतले श्री वीतरागकी
बांणीसुं सरव वस्तुनो स्वरूप जाणे वीतरागनी आ
ज्ञामे रुची घणी ऊपजे पिण उदे भावकरी संसारकी
अवस्थामे सुं निकल सके नही तिस वास्ते अनेक
प्रकारे भाव शुद्ध आणे बिषे कषायना फल बिषमा
न जाणे धर्म साधवानी रुची घणी करे पिण उपाय
थकी छूटसके नही ते जीव चोथे गुन ठाणेछे ते रुच
क सम्यक्ती जाणीये ७ ॥ प्रश्न ८ कारक समकत कि
सकुं कहिये उत्तर जो पहिले रुचक समकितमे भाव
कह्या ते सर्व जाणकर आदरे संसारका सर्व काम
छांडीने छठे सातमे गुणठाणेमे प्रवरते तिसको कार
क सम्यक्त कहिए ८ ॥ प्रश्न ९ दीपक सम्यक्त किस
को कहिये दीपक कहतां दीवासे आगे उद्योत होई
पाछे देखतां दीवाने अंधारो रहै एह दृष्टांत मिथ्या
ती अथवा अभवी औरांने उपदेस देईकरतारे पि
ण आपतीरे नही तिसकुं दीपक सम्यक्त कहिये ९
सम्यक्ती जीवांको दस प्रकारकी रूचीया करणी जो
ग्यहै ते लिखीयेछे ॥ नीसरगरुची १ उपदेसरुची २

अज्ञारुची ३ सूत्ररुची ४ श्रद्धारुची ५ संक्षेपरुची ६
अन्नीगमरुची ७ बिस्ताररुची ८ क्रीयारुची ९ धर्म
रुची १० ए दस रुचीका जिस जीवको ज्ञान होवे ति
सजीवको क्षायक समकती कहिजे॥ नीसरगरुची क
हतां आश्रवरुपकामाबरजे संबर निर्जरारुप कामासे
प्रबरते जातीस्मरण ज्ञानादिकसुं जाणे तिसकुं निस
रगरुची कहिये २ उपदेसरुची कहतां गुरूना उपदे
सथी जाणीनेसरदहै परतीतराखे ते उपदेशरुची क
हिये २ अज्ञारुची किसकुं कहिये जे प्राणी रागद्वेष
मोह खयगया अज्ञान मिट गयाछे ऐसे अरिहंत देव
की अज्ञा परिमाणकरे ते अज्ञारुची कहिये ३ सूत्र
रुची किणनें कहीये केवली न्नाषित सूत्र १० पूर्व त
था ११ पूर्व तथा १२ पूर्व तथा १३ पूर्व तथा १४
पूर्व धारीके कहे सूत्र तिणां ऊपर रुची होवे सूणवा
नो पढवानो उद्यम करे तिसको सूत्ररुची कहिये ४
श्रद्धारुची किसकुं कहिये बीतरागदेवके बचन ऊपरें
आस्ता राखे मिथ्यात्वने बोसरावे तिसको श्रद्धारुची
कहिये ५ अन्निगमरुची किसको कहिये सिद्धांत अर्थ
सहित जाणे सुणवानी न्नणवानी चाहघणी राखे सि
द्धांत पढवानो उद्यम करे तिणने अन्निगम रुची क
हिये ६ बिस्तार रुची किणनें कहिये द्रव्यना सगला
न्नाव सर्व प्रमाणें करी सर्व नये विधीनो जांण नवत
त्वनो जाण होय तेहने बिस्ताररुची कहिये ७ क्रि

थारुची केहने कहिजे ते ज्ञान दरसन चारित्र बिनय साचवे ५ सुमति ३ गुप्ती एहने आराधे तेहने क्रिया रुची कहिये ८ संक्षेप रुची किसकुं कहिये ३६३ म तनी संगत छोडे जिन धर्मनें समान रीतसुं ओलखे तिणनें संषेप रुची कहिये ९ धर्मरुची किणने कहिये छद्रव्यनो जाणपणो करे शुद्ध चारित्र धर्म सदेहे जिन भाषित धर्म क्रिया करे तिणने धर्मरुची कहिये १० सम्यक्तके ६७ बोल जाणनेसे सम्यक्त शुद्ध होवे ते लिखीयेछे ॥ गाथा ॥ चउसद्दहणातिलिंगं ॥ दसविण यतिसुद्धी पंचगयदोसं ॥ अठपभावण भूसण ॥ लक्ख ण पंचवीहसंजूत्तं ॥ १ ॥ छविहजयणागारं ॥ छभावण भाविमं चछठाणं ॥ इयसत्तसठि लक्खण ॥ भेय विसुद्धं च सम्मत्तं ॥ २ ॥) समकितकी च्यार सद्दहणा ते क हैछे पहिले बोले नवतत्त्वसे परिचय करे १ बीजे बोले जिस गुरुसे सम्यक्त पाई जिस गुरुने मिथ्यात दूर करा देव गुरधर्मका उपदेस दीया सामाइकादि धर्म में थिरश्रद्धा कराई तिस गुरुका उपगार भूलै नही जावजीवताई तिनकी सेवा भक्ति करे कितनेक साधू पहिले जिस गुरुसे धर्म पाया फिर उनकी सम्यक्त ध र्मका उपगार हटाकर अपने नामसेसिष करेहैते एह बात जोग नहीहै गुरुका गुण मेटनेमे महा दोषके भा गी होना पडताहै किसी सूत्रकी ये रीतनहीहै कि जै ते किसी साधूके गुरुका बहुत करमोके उदे संजम

सें डिग गयातो क्या चेलेको फेर संजमका लेना कही कह्या नही और कितनेक पार्सनाथजीके साधू केसी श्रमण और महावीरजीके गौतमगणधरसे प्रश्न पूछे तव उनोनें काल अंतर फरक दूर करा पाचवरणके वस्त्र तथा ४ महाव्रतरुप धरमसे आरेके स्वभाव जाण कर महावीरके सासनकी रीत वा वचन प्रमाण कीये परंत दीक्षा अर्थात संजम दुवारें नही लीया और जो कोई आपने धरम गुरुको निंदे तो तिसकी समकित श्रद्धा भ्रष्ठहै अर्थात सुद्धनही क्योंकि दसवैकालकसूत्रमे कह्याहै कि [नयाविमोखो गुरुहीलणाए] इतिवचनात याने जो आपने गुरुकी निंदा बुराई करताहै सो उसकी मुक्ति नही और कह्याहै कि गुरुद्रोही महा पापी होताहै इसवास्ते गुरुमहाराज तथा शुद्ध सम्यक्तवान मुनीयोकी सेवा करे २ तीजे बोलें मिथ्यादृष्टी तथा सम्यक्त भ्रष्टकी सेवानकरे ३ चौथे बोले कुशास्त्र अर्थात मिथ्यात उपदेस जिसमे होवे ते सुणे नही ४ तीन समकितके लिंग ते कहेछे जिम किन्नर देवता राग जाणी गीत ऊपर चित देई सुणै तिमगुरुनो उपदेस सिद्धांत सुणवा ऊपर अत्यंत राग होई १ जिम भूखो धाननी अभिलाखा आने तिम व्रतपचखान करिवा ऊपरि अत्यंत राग होई २ धर्म आचार्यनी सेवा करे धर्मनासाजदेवा ऊपरि अत्यंत राग होई ३ दस समकितनी विनय ते

ऊभा होणा १ आनंद होणा २ गुणग्रामकरणा ३ ध र्मसे निंद्या नही करणी ४ करताने मने करणा ५ आसातना टालणी ६ इत्यादि॥ विनय दस अरिहंत जीकी १ सिद्धजीकी २ ज्ञानीजीकी ३ अस्तुतकरे कोई अवगुण वादवोले नही ३ आचार्यजीनो १ उपाध्यायजीनो २ घणी भक्ति करे घणो मानआपे ५ साधुजीनो १ समस्तसंघजीनो २ समकित दृष्टीजी नो ३ जिन धरमीजीनो ४ सिद्धांतजीनो ५ घनो मा न देई भक्ति करे॥ १७॥ तीन शुद्धता सम्यक्त की ते ए मननी शुद्धता जिनेश्वर देवके मारग उ प्रांत और वस्तु सर्व असारहे १ वचनकी शुद्धता जिनेश्वर देवके अराध्यासूं मेरा कल्याण होयगा सि थ्यात देवके अराध्यासूं कल्याण न होगा २ काया नी शुद्धता मिथ्यात देव मिथ्याती गुरु आगें काया नमावे नही भावे कोई छेद भेद जलाय नाखो ३ तथा अरिहंत सिद्धजीने देव करीजाणे १ साधूजीने गुरुकरी जाणे जिनसे सम्यक्त धर्म ज्ञानादि श्रद्धा पाई होय तिनको धर्म आचार्य करी माने २ ज्ञाना दि दया धर्म करी जाणे ३ एह ३ शुद्धता कही पांच समकितना दूपण देव गुरु धर्म ऊपरि संक्याराखे तो सम्यक्तमें दोष लागे १ और मतकी याने मि थ्यामतकी वांछा करे तो २ फल प्रते संदेह आणे तो ३ पर पाखंडी मिथ्यातीकी प्रसंस्याकरे तो ४ प

रपाखंडी मिथ्यातीकी संस्तो परचा (अर्थात सते संगत) करे तो ५ ए ५ दोष ॥ २५ ॥ आठ सम कितनी प्रभावणा ॥ प्रवचनना जाण होय तो जिन मा रगने दिपावे १ धर्म कथानो कहिण वालो होईतो २ न्यायसुं बाद करे तो ३ निमतका जाणकारहोई तो ४ तपस्वी होइ क्षमावंत होइ निलोभीहोइ ५ विद्या का जाण होई तो ६ विद्यासुद्धहोइतो ७ कविता होइ तो ८ए ८ प्रभावणा ३३ पाच समकितना भूषण जेणेकरी समकित सोभे ते आभर्ण भूषण चतुर होइ वांदणा पच खाण क्रियानी धिविकरी जाणे १ स्थार तीर्थनी सेवा करे २ देव धर्म गुरुका भक्त होइ ३ धर्ममे दृढ हो इ आनेराने थिरकरे ४ साधर्मीनें भक्ति करीने गुण करीने दीपावे धर्मनी प्रभावणा करे ५ ए ५ भूषण ३८ पाच समकितना लक्षण समसमता भाव होइ तथा समादृष्टिराखे तथा उपसम वरस १ ऊपरि क्रो धमान माया लोभ न राखे सभावि मंद कखाय क रवो १ संवेग वैराग करे मुक्तिनो अभिलाखी अने संसा रना देव मनुषना सुखथी उपराठा थाइ २ निरवेग त्याग करे संसारस्युं विरक्त होइ ३ छह कायाके जी वांकी अनुकंपाकरे ४ बीतरागना बचन ऊपरि आ परतीत करे सूत्रसिद्धांत शास्त्रमा संदेह नकरे निश्चे राखे ५ ए ५ लक्षण ४३ छह समकितनी जयणा जयणा कहता एहनी संगति न करे परतीरथी देव परती

स्थी गुरु तथा परतीर्थीना शास्त्र धर्म ए ३ पदारथ ठह
बोल नकरवा ते केहा ॥ वंदणा हाथ जोडवा मस्तक
नमाववो ए न करवा १ नमंसण वचने करी नमस्का
रनो करवो गुणग्रामनो करवो तथा मननुहरष कर
वो ए न करवा २ दान देवो गउरव अर्थात अभि
मान पिण न करवो धर्म बुध्धि ३ अनुप्रदान घणे आदरे
आवकार सहित वस्त्र पात्रादि दान देवो नही ४ विना
बोलावे एकवार मीठे वचने कुशल पूछवो सुखे आ
छ्याते आलाप न करिवो ५ संलापते घणोघणो पूछे
सुखीछो किहाथी आव्या किहां जास्योते न करवो ए
६ जयणा ४१ छह समकितना आगार छह आगारे
करी समकित पालवो पिण छींडी टालवानो खपकर
वो ते कांई बारवार सेविवा नही राजानाआगार रा
जादिक कहे १ गणसमुदायना आगार सज्जन कबी
लो कहे २ बलवंतना आगार बलातकारे कोई हठ
पडे ३ देवताना आगार देवता आवी कहे आहार
पाणी देवे वांदना करे तो समकित भांगे नही ४ मा
ता पिताना आगार मातपिता हठ करे मातपिताने
कहे भक्ति करै ५ दुर्भिक्षने विषे अने अटवी उजा
डमे भूले पडा होय तेहना आगार अर्थात दुर्भिक्ष
अथवा अटवीमे भूला प्राणी मिथ्या मती तथा मि
थ्यामतीना गुरु तेहने अनुंकपा हेत दान देवा ते
आगार ६ ए ६ आगार ५५ छे समकितनी भावना

एणे करी भाविवो समकित केहवाछे मूल उतावली मोक्ष फल प्रते देइ तेणेकरी सगला धर्मनो मूल जे ए मूलेकरी धर्मरुपीयो वृक्ष वधे मोक्ष फल प्राति देइ ते णे मूल भूत १ बारणा ॥ जिन धर्म रूपीया नगरमां पे सवाने बारणारूप समकितछे जिम नगरमे बारणेज पैसाइ तिम २ नीव ॥ धर्मरुपीया महिल तेहना नीचे नीव समानछे जिम वृत रूपीयो महिल रहे जो सम कित रुपीयो नीव होइ तेणे नीव भूत कहिये ३ नी धान भूत ॥ मूल गुण उत्तर गुण रूपीया रत्न तथा ज्ञा न दरसन चारित्र रुपरत्न तेहना नीधान समान स मकितछे ४ आधार भूत ॥ जिम सर्व जीव संसारना पृथ्वी ऊपरे रहेछे तिम चारित्र रूपीया जीवलोकनो आधार ते समकितछे ५ भाजन भूत ॥ ते श्रुतशील रूपीयोरस समकित रूपीये भांजने भराइ तेणे भां जन भूत दुध शंखनी ऊपमा जिम दूध संख माहे वि राजे तिम खिमा धर्म दया रूपीयो बिनय धर्म सम कितना कोठा मांहिं विराजे अविनासी भाजन कह्यो विपयकरीने दुधने विनसाडे नही खाटो करे नही ए ६ भावना ६१ समकितना ६ स्थानक तेणे करी आ त्मा ऊलख्यो जाइ ते किहां अनुभव सिद्ध आत्मा चे तना लक्षण असंख्यात प्रदेशी सदीव स[illegible] द्रव्यछे अवरणी अगंधी अरूपी अफरसी [illegible]

स्वतो परज्यायक नयनें मते अशास्वतो अनीत्य क
रमे कीधोने अनुसारे नित्यछे २ पुन्य पापनो कर्ता
कर्मनोछे मिथ्यात अविरत योग कषाय एणिकरीबां
धिछे जिम माटी फंड चक्र दोरो तेणे करी कुंनार
सर्व कारि तिम ४ कारणे जीव करमकर ३ नुंजइ
नोगवै पोताना कीधा पिण परकाकाधा नो कोई नो
गवनार नथी निश्चैज ४ निर्वाण मोक्षपद शाश्वतो छे जे
हनी ऊपमा सुखनी न कहिवाइ राग द्वेष रहित पुरपे
कह्यो अनंत ज्ञानीये कह्योते सत्य ५ मोक्षनो उपाय
समकित ज्ञान दर्सन चारित्र तप पोतानी समकिते
आराधवो ते उपाय ६ ए ६ सम्यक्तस्थानक ६७
एह सम्यक्तके ६७ बोल कह्या ॥ और समकितके
आठ गुण कहैछे निसंका १ जिन आगममे सुक्ष्म
अर्थ कह्याते साचा सर्दहै पिण संदेह नाणे अने सात
नय पिण न आणे ॥ १ ॥ बीजी निकंख्या गुणजे पु
न्यरुप फलनी चाह नराखणी जिहां इछा तिहां क
र्मनो बंधछे २ तीजो निविगंछागुण जे सुग न करवी
शुनअशुन पुद्गलांनो स्वनावछे अने पुन्य उदे शु
न संजोग मिल्या खुशी होवे अहंकार करणो नहीं
पापने उदये अशुन संयोग मिल्या दिलगिर होवे
नही ३ चोथे अमूढद्रिष्टि गुणजे आगममे सुक्ष्म वि
चार निगोदना छ द्रव्यना तेसुं मुंजावे नही जे धारणी
आवे ते धारे जे धारणी नावे ते सरदहे ४ पाचमो

अववुह गुणजे एणे आपणें जीवमे अनंत ज्ञानादि
गुणछे ते छिपावणो नही शुद्ध सत्ता जेहवीछे तेह
वी कहवी रागद्वेष अज्ञान कर्मनी उपाधीछे जीव
एणे उपाधीस्सुं न्यारोछे ५ छटो थिरी करण गुणजे आप
णो परिणाम ग्यान ध्यानमे थिर करणो डिगावणो
नही ६ सातमो बछलता गुण जे जीवस्सुं ग्यानध्या
न तप पडिक्कमण जेलोकीजीये सर्दहणा एक होवे
तो ते आपणा साधर्मीछे तेहनी भक्तिकीजे ते बछ
लता कहीजें अथवा सर्व जीव आपणा सारीखाछे
तिणे सर्व जीवानी दया कीजे ते बछलता गुण जाण
वो अथवा एणे आपणा जीवना साथी ज्ञानादिक
गुणछे तेहने पोखवा जे ज्ञानादिध्याननो अभ्या
स करिवो ते बछलता गुण जाणवो ७ आठमो प्र
भावक गुण जे भगवंतना धर्मनी प्रभावना महिमा
करवी अथवा आपणो जीव ग्यानादिक गुण
वधारण ओराने धर्म उपदेशकी बडाई करे ए प्रभा
वना गुण ८ ए सम्यक्तना ८ गुण कह्या ॥
समकित शुद्ध करीने चारित्र आराधे तेहना २ भेद
तिहां निश्चै चारित्र १ विवहार चारित्र २ इहां प्रथ
म विवहार चारित्र कहेछे प्राणातिपात विरमण प्रमु
ख ५ महाव्रतरुप जे पंचाश्रवनो त्याग ते सर्व विर
ति कहिजे अने श्रावकना १२ व्रत थूल प्राणातिपा
ति वेरमण ते देसविरति कहिजे ए २ भेद चारित्र

ते विवहार चारित्र छे विवहार चारित्र सुखनो कारणछे एहवी करणीरुप साधूना ५ महाव्रत अने श्रावकना १२ व्रतना विवहार कर्तव्य अनंतव्यने पिणआवे तेदेवगति पामे पिण सकाम निर्जरानो कारण नही सम्यक्त रहित करणी विवहार रुपछे मोक्षनो कारण नही इहां पुछस्ये जे मोक्षनो कार्ण नहीतो एतलो कष्ट क्याने कीजे ते उत्तर ए तो सत्य परंत जिनराजनो मारग निश्च १ विवहार २ ए दोइ नयरोछे जे कोई एक माने तेहने मिथ्यात्वी जाणवो जे त्याग बुधे निश्चै ग्यान सहित मोक्षनो कारणछे तिणने निश्चै ग्यान सहित चारित्र विवहार चारित्र पालणो मोक्ष मार्ग निश्चै विवहार स्याद्वाद नय करी साधकछे परंत एकांत वादी साधक नही ते भणी एकांत विवहारथी मोक्ष नही अने एकांत निश्चै चारित्रथी पिण मोक्ष नही ते भणी दोनो ही चारित्रसु मोक्षछे जिम अंधपुरषने कंध उपरी पंगु नर चढे तो दोनो मिल मार्ग उलंघे तिम निश्चै विवहार दोनो मिल्या संसार उलंघै ते भणी निश्चै व्यवहार दोनोही आराधवा जोग्यछे ॥ हिवै शब्द नय ऊपर च्यार निखेपाकी चर्चा लिखीयेछे ॥ जे वस्तु गुणवंत अथवा निगुण तेहना नाम कहि बोलाववो ते भाषा वरगणाथी शब्द कह्यो ते शब्द व्याकरणासे प्रकृति प्रतएधार करी शब्द सिद्ध होय सो शब्द नय कहिए तिहां शब्दनो जे अर्थ ते मांहिं होय ते

शद्व नय कहिने जैसें अरिहंत कह्ह बोलाव्या ते श
ब्दना अर्थ करयां अरि कहिए कर्मरूप शत्रु हंत क
हतां हण्या ते अरिहंत कहिए अने नामादि अ
रहंत होय तें मांहिं शद्वारथ न होय तेहने अरिहं
त नमानें ते शब्द नय इम तीर्थ ४ करे सो तीर्थंक
र इम शद्व सिद्ध होय ते शद्ध ते शब्द ४ नाम
१ थापना २ द्रव ३ भाव ४ ए निखेपा कह्या ते
विस्तारसुं कहेछे हिवे प्रथम नाम निखेपा कहे जे
आकारछे हित गुण रहित बस्तु होय तेहना नाम
गुण सहित सरीखी वस्तुना दीधा ते नाम निखेपा
कह्या जिम लकडीना नाम जीव दीधा तथा काली
डोरीना नाम साप दीधा ते नाम निखेपा तथा जिम को
ई गोपालदारकना नाम इंद्र दीधो पिण नामना गुण
सुधरमी सभाकेविषे वरतेछे ३२ लाख बिमाननी इ
श्वर्यता करि संजुक्तहै तेह इंद्रमे छे पिण दारीद्री
भ्रामणीना बालकमे नही ते माटे अर्थ सुन्यछे तथा
ले इंद्रना बीजा परजाय नाम मघवा १ पाक सास
न २ शक्र ३ सहस्राक्षी ४ इत्यादि नाम ते गोपा
लदारकने विषे नही एतला नाम तो भाव इंद्रमे
संभवे पिण निर्गुण नामने विषें न होय पिण गर्व
गहेली माताइं मोहांधथई व्याकुल चित्तथी आपणा
मननी अभिप्राये नाम इंद्र दीधो ते नामनो जे स
द्धारथ ते ईश्वर्यता ते मांहिं नथी ते भणी सब्द

नय पोखतां तेहने इंद्र नमानें इति नाम निखेपा १
बीजाथापना निखेपा तेहना अर्थ कहैछे भावरहित
होय गुणरहित होय पिण भावपणाना अभिप्राय कल
पीने थाप्या होए ते थापना निखेपा कहिये एतलै काष्ट
पाषाणनी मूरत अथवा चित्राम करी हाथी घोडाना आ
कार कीधा होय तेहने थापना निखेपा पिण ते थापना
ना गुणतिनमांहि नथी ते किम काष्ठ पाषाण चित्रा
मनी गाय दुग्ध दान गुण नही इत्यादिकहेतुकरि
सरदहीजे थापना निखेपामे भावार्थ कहता जे वस्तु
नी थापनाछे तेहना अर्थतिण मांहिं नथी प्रयोजन
नसरे ते भणी सब्द नय थापना ने थापना माने पिण गु
ण न कहै जिम इंद्रनी मूरति बनावी मस्तके मुकट और
कंठे हार काने कुंडल वज्रायुध सुंदर वस्त्र विभूषित
करी इंद्र थाप्या तेहने ८४ हजार सामानीक देवता
सेवा करता नही देवीनी भोग संबंधी इच्छा पूराय न
ही ते भणी गुणबिना थापनाना मोह दसाना वि
कलपछे ते शब्द नयकी अपेक्षाइं ते थापना भाव
सून्यछे ते थापना निखेपा कहिये हिवे थापना अने
नाम निखेपा मांहिं भेद किसा ते एह भाव सुन्यतो
दोनोही निखेपाहै इसा प्रश्नकीधा तब गुरु कहै अ
होभव निखेपा दोना मांहिं अरथ भेद नथी पिण
कालथी भेदछे नाम निखेपा जावजीव तांई रहै बी
चमे मिटै नही अने बीचमे मिटैछे जिम किणी बा

लक लाकडीका घोडा थापी तिण ऊपर चढी कित
नीक देर रामत कीधी पछे तेहज बैल थापी रामत
कीधी पछे गाडीरथ इत्यादि जीवथी अजीव थापी
अजीवथी जीव थापी रामत कीधी इमहिज पिण को
ईक कुमारी कन्याने गुड्डी थापी ते गुड्डी सासू थापी
पछे तेहिज बहु कीधी तेहज गुड्डी दोहती तेहिज
गुड्डी सखी पणें थापी इम नवी नवी थापना करीएछे इ
म नवी नवी थापना एम नर मांभी पिणथापना नि
खेपानो परमारथ नाम निखेपाने विषे नथाए नाम
घडी घडी नवा नकलापिजे जिम इंद्रना नाम पलट्या
न जाए थापना इंद्रनी फेरी औरनी कलपना करजछे
नाम निखेपा सदा रहै थापना थोडा काल पिण र
है घणा काल पिण रहै इति थापना २ हिवे द्रव
निखेपा कहैछे अतीत अनागत काले ते प्रजाएना
कारणछे ते द्रव निखेपा कहावे अत्र दृष्टांत कहेछे जि
म घृतादिना घडाछे बरतमानकालै ते घडा मांहिं
घृत नथी परं पूर्वे घी घाल्या होता तिण माटे घृ
तना घडा कहिजे ए अतीत प्रजायें द्रव निखेपा
कह्या हिवे अणागत प्रजाय द्रव निखेपा कहैछे
जिम कुंभकारे घी घालवाना भाजन घडा तेहनें घी
लोडी कही बोलावेछे तिण मांहे पहिलां अतीत का
ले घी नथी घाल्या बरतमान काले ते मांहिं घृत
नथी जे आगमीये कालें घी घालवाना कारणछे ति

ए भणी घीलोडी कहियेछे एअनागत प्रजाए द्रव नि खेपा कहिजे दूजा दृष्टांत जिम कोई राजाना प्रधा नछे पाछे राजाना मन भंगथया तेहनी प्रधान मुंद री उतारि लीधी तिवारें लोक सहु प्रधान कहै एह वरतमान कालें प्रधानपणा तिण मांहिं नथी परंत अतीत प्रजाय भणी प्रधान कहिजे ए अतीत प्रजा ए द्रव निखेपा कह्या अने प्रधानना पुत्र कला सा म दंड भेद करी निपुणछे वरतमानकालें प्रधान मु द्रका तेहने नथी परंत आगमीयें कालें प्रधान पद थापवाना कारणछे तेहने लोक पिण प्रधान कहेछे ते अनागत कारण द्रव निखेपा कहावे ॥ तीजा दृष्टांत जिम अष्टोत्तर सहस लक्षण करी देह विराजे ३ ज्ञान मत १ श्रुत २ अवधि ३ एतीन ज्ञान सहित ती र्थंकर गृहवासें वसतां ४ अतिसे करी संजुक्त तेहने तीर्थंकर कहिये तीर्थंकरवाना कारण आगमी काल होसी परंतु तेहने अणागत प्रजाए द्रव तीर्थंकर कहिये जिम सूत्रना पाठ कह्या [तएणंसे समणेभग वं महावीरे तीसं वासायं आगारमज्झे वसित्ता] ए एवा आचारांग तथा कल्पसूत्र पाठ कह्याछे जे अतीत प्रजाय कार्ण दरव तीर्थंकर कहिये तथा ती र्थंकर निर्वाण गया पाछे तीर्थंकरना सरीर रह्या ते ह रे अतीत प्रजाय कार्ण द्रव तीर्थंकर कहिये ए अ तीत प्रजाये द्रव निखेपा कहिये जिम (समणे

नगवं महावीरे कालगए जाणित्ता) इत्यादि पाठ
नी निश्राय अतीत द्रव निखेपा कहिये अणुयोग
द्वारे जाणग सरीर १ नविए सरीर २ जाणग स
रीर नवियसरीर वइरित्त तत्र निखेपा द्रवना नेद क
ह्या इतिद्रव निखेपा ३ हिवै नाव निखेपा कहैछे जे वरत
मान काल गुणवंतछे जे वस्तुना नावगुण जेहवाछे ते
हवा वरतेछे ते नाव निखेपा जिम अरिहंत शब्दनो
अर्थ जे ते वस्तु मांहिं परगट दीसे छे ४ घातियाक
र्म खय करी अरिहंत पद थया ते नाव अरिहंत जा
णवा दूजा दृष्टांत जिम पूर्व पुन्योदय करि उत्पात
सनानें विषे उपजीने सुधर्मा सनाइं ईश्वर्यता गुण
सहित बैठाछे ३२ लाख विमाणवासी देव आज्ञा
मानेछे इंद्राणी हात जोमी ऊनीछे इत्यादि ठकुराई
सहित वरतेछे ते नावनिखेपा इंद्रमे कहिये इतिना
व निखेपा ४ ए ४ निखेपा अणुयोगद्वार सूत्रमे क
ह्या ते शब्द नय अनुसारे जे जेहवाछे ते तेहवामा
ने जिम नाम अरिहंत्त आकार नही गुण नही ते ना
म मांहिं शब्दना अर्थ न संनवे ते नणी शब्दार्थ न
थाय जिम किसी पुरुषनो नाम अमरछे पिण ते म
रस्ये ते नणी नामके गुण रहित १ जिम किसीका
नाम धनपालछे पिण ते दोहिला पेट पालेछे धनने
पाले नथी तेनणी नामना गुण रहित ते नणी शब्द
नयनमाने तथा नाम मंगलछे पिण महा उदंगलछे त

था नाम धरमचंद पिण अधर्मनों चांदछे तथा नाम लक्ष्मीछे पिण परघर घरटी पीसेछे इण दृष्टांतें करी शब्द नयनी अपेक्षाये जे शब्द गुण रहित होय ते नमाने इमाहिज पिण थापना जाणवी गुण रहित जे व स्तुछे गुण विना निवल कल्पना रुपछे पिण गरज न सरे जिम थापना गायमे दूधना गुण नथी थापना स्त्रीसें भोग कर्म नथी थापना अरिहंतमा ग्यान गु ण नथी इण दृष्टांते शब्द नय गुण रहित थापनाते नमाने इमहीज पिण द्रव निखेपा जाणवा अतीत अणागत गुण कारण ते द्रव निखेपाछे अतीत का लें गुण हुंतो अथवा आगमीये काले गुण थासी पिण हिवणा गुण नथी अर्थात बरतमान कालमे गुण न थी ते दृष्टांत करी देखाडेछे किसी बालकनी माता मृत थईने कलेवरपड्योछे ते बालकने दुध धवराव वा गुण नथी तथा कोई पुरषने रुपवान राजानी पुत्री दीठी ते पुरुषने किसी ज्ञानीने कह्या ए स्त्री तु म्हारे पत्नी पणे थासी इम सांभली परम हरप पा या जाणया ए स्त्री आगमीए कालें म्हारी होस्ये तो पिण आलिंगण दे सके नही अणागत प्रजाए वरत मान कालगुण दे सको नही इमहीज पिण अतीत काले पूर्व भव म्हारी स्त्री होती इम निश्चै ग्यानथी वचनथी जाणी पिण आलिंगणदेवाय नही इम अ तीत प्रजाए वरतमान कालें गुणवंत नथी तिण वा

स्ते द्रव निखेपाने शब्द नय नमाने भाव निखेपा जौ
वस्तुना नामादिक करी निखेपतां तिण वस्तुना सह
त गुणना अर्थ तिण सद्द मांहिथी नीकले ते भाव निखे
पा जाणवा जिम अरिहणवे ते अरिहंत अने तीर्थंकरता
तेतीर्थंकर इत्यादि अनेक हेतु जाणवा शब्दना जे अर
थ सहत वस्तु थाय तिणे भाव निखेपा कहिये ते गुणने
वस्तु माने ते शब्द नए मित्यर्थ हिवे कोईएक पाचमा का
लक प्रभावसे इण ४ निखेपाकी वाख्या विप्रीतपणे
करेछे ते इम कहे छ निखेपा च्यारो बंदनीकछे आ
पणा भाव भेलता नामादि निखेपामे भाव निखेपा
थाय ते भणी वंदनीकछे ते विरुधछे सूत्र देखतालो
भावनिखेपा बंदनीकछे अने ३ निखेपा भेद प्रकास
रुपछे अत्र हेतु कहेछे भगवान गृहवासे वसता भविए
सरीर द्रव तीर्थंकरछे तिण मांहे द्रव निखेपाछे अने
साधू श्रावक बांदता न जाणया ते ऊपर मत पक्षी
कहेछ चतुर संघमिली थापना नकीधी ते माटे
मिले नहीं अने बांदे पिण नहीं इम कहे तेहने दू
जा प्रमाण बतावेछे तीर्थंकर मोक्ष गया सरीर रह्या
महुरत प्रमाण ते सरीरमाही (जाणग सरीर) द्रव नि
खेपाछे ते सरीरने पासे गणधर साधू छता
होता ते सरीर भणी वंदनी न करे ते क्यूं न करे
द्रव निखेपा बंदनीक होय तो गणधर साधूवाने अ
वस्य बांदवा जोइजे अने गणधर साधू बांदता न

जाणया ते द्रव निखेपामे भाव भेलीने बंदना न की
धी ए अनुमान प्रमाणथी जाणीयेछे तो भाव निखेपा
वंदनीकछे अने जाणगभविये सरीर द्रव निखेपामे
भाव मिल्या नही तो थापनामे भाव भेलीने वंदणा
किम होसी ते अनुमान प्रमाणथी उलखणा करवा
जोगछे जो आपणा भाव भेली थापनामे भाव नि
खेपा थाय तो द्रव निखेपामे भाव मिले स्यूं नथी इ
न प्रमाणे आगम प्रमाण देखतां तो भाव निखेपा
वांदणीकछे इति ४ निखेपाकी चर्चा संपूर्णम्॥ अथ
आज्ञा अणाज्ञा सावद्य निरवद्य इत्यादि बोलांनी च
र्चा लिख्यते॥ ते पिण नय प्रमाणे प्रमाण करि देखि
ये श्री जिन धर्म आज्ञामेछे आज्ञा बाहिर नथी इम
सर्व कहैछे पिण एहना बिचार आलोचवा अर्थात
विचारवा अति कठिनछे ते कहेछे जिनराजनी आ
ज्ञा दोय भेदनीछे एक उपदेस १ बीजी आदेस २
हिवे ए दोइ आराधना जिणराजनी आज्ञा उलंघा
ए नही इहां चोभंगी थायछे ते कहैछे प्रथम भागा
उपदेसबी देवे अने आदेसबी देवे १ ते पहिला भागा
ते मांहिं सिझाए ध्यान पोसह व्रतादि जाणीये १
अने दूजा भांगा उपदेस तो देए पिण आदेस न
देय ते इस भागा माहिं जिम श्रावकने उपदेस दीजे
छे साधूने आवताने लेणजाय रह्याने सेवा करे जा
ताने पहुंचावण जाय तथा साधु आवे तो उभा था

थवो इत्यादि उपदेस देवेछे पिण श्रावक पूछे साधू
ने पहोचावण जावाछां इम पूछ्या साधू आदेस न
देइ अहो श्रावक जाउ इसो न कहणा ते बीजा भां
गामे जाणवा २ तीजा भागा उपदेस दे नही आदे
स देवे ते मांहिं नदी उतरवानी तथा मेघ बरसते
बाह्य भोम जावानी मेघ बरसते लघुनीत प्रमुख पर
ठवानी आज्ञादे पिण उपदेस न देवे अहो शिष्य न
दी उतरवा मेघ बरसते बाह्य भोम जावामे बडा लाभ
छे अवस्य जाएवा जोगछे इम उपदेस तो न देवे
पिण कारज पड्या आदेस आज्ञा देइ एतीजा भागा जा
णवा ३ चोथा भागामे आदेस न देवे ते हिंस्यादि का
रज ४ तथा चोथा भागाना दोय भेदछे एक तो उ
पदेस न देवे आदेस न देवे निषेध करे अर्थात मने
करे ते १८ पाप जाणवा १ अने बीजाभेद उपदेश
न दे पूछ्या निषेधे पिण नही ते विन पूछे निषेधे न
ही दुषित भूषतके दानादिकको जिस मांहिं पुंन्य पा
प भेलाछे ते कार्यनी उपदेस आदेस आज्ञा पिण नही
निषेधपण नही अर्थात मने करे नही तेहनी साख सूथ
गडांग सूत्र अध्ययन ११ मे की (जे ये दान पसं
संति वहामिछंतिपाणीणो जेदाणंपडिसेहंति वितिछेयंक
रंतिते ॥ दुहउवितेण भासंति अत्थिवा नत्थिवापुणो आ
यंरयस्सहच्चाण निवाणंपाउणंत्तिते २) जे मिथ्यात म
ते दानादि प्रसंसत्ता प्राणि वध वांछे और दानादि

निषेध करतां घणानी वृत्ती आजीवकाना छेद करे अर्थात भंग करे इण गाथाको देखतां मिथ्याती दानादिक निषेधे नही क्योंकि साफला पुन्य पाप भेलाछे किणी ठामे पुन्य घणो पाप थोडो केणे ठामे पाप घणो पुन्य थोडो इतिज्ञेयम हिवे ७ नय दृ ष्टांत करी उतारेछे अनुयोगद्वार सूत्रमे कह्या वासा रहिवा ऊपर नय ७ दिखाडछे जिम किसी पुरषने पूछ्या तुं किहां बसेछे तवते बोल्या लोकमा बसूंछूं ए वचन नएगम नयरोछे परंतु नयगम नय अशुद्धछे जिसने लोकमा बसता कह्या ए अशुद्ध नयगम जाणवी व ली तेहनेहीज पूछ्या लोकतो ३ है स्वर्ग १ मृत २ पाताल ३ तुं किसा लोकमे बसैछे तिवारे थोडीसी शुद्ध नयगम वाला कहैछे हुं मृत लोकमा बसूंछूं ए शुद्ध नयगम वली पूछ्या तिरछा लोकमा असंख्या ता द्वीप समुद्रछे तुं किसी समुद्रमा बसेछे तिवारे बोल्या हूं जंबुद्वीपमा बसुंछूं ए और शुद्ध नयगम नयरो वचनछे वली पूछ्या जंबूद्वीपमां भरत प्रमुख क्षेत्र घणाछें किसा क्षेत्रमा तुं बसैछे तिवारे बोल्यो मगध देसादि देसमा बसांछां ए और शुद्ध नयग म नयरो वचनछे वली पूछ्या मगधदेसमा नगर ग्राम घणाछे तुं किसे नगर तथा गाममे बसैछे ति वारे बोल्या नालंदा प्रमुख पाडानो नाम लेई कह्यो असुके पाडे वसंछुं ए और शुद्ध नएगम नयरो व

चनछे बली पाडामे घर घणाछे तु किसा घर मारहैं छे तिवारे बोल्या अमुके घरमा मघशाला प्रमुख ना नामलीधा ए और शुद्द नइगम नयरो वचनछ वली पूछ्या घरमा जायगा घणीछे तु किसी जायगामे वसे छे तिवारे बोल्यो अमुकी जायगामे बसुंहूं जिसजाय गा ढोलीया प्रमुख जिस जायगानो नाम लीधो ए वचन अत्यंत शुद्द नैगम नयरो बचनछे इहां लगे नैगम नयरा वचनछ शुद्द अशुद्द विकल्प जाणवा इति नैमग १ बली पूछ्या घरमा जायगा घणीछे तुं किसी जायगामे रहैछे तिवारे बोल्या जिसजायगा ढो लीया प्रमुख बिछावणा रहैछे इतरी जायगामे रहुंछु ए सं ग्रह नयरो वचन जाणवा जे भणी ढोलीया तथा बिछा वणा तथा सरीरने जायगारुंधीछे ते सर्व आपणामे संग्रह्या ते भणी संग्रह नयरो बचनछे २ बली पुछ्या ढोलीया परमुख बिछावणामे खेत्र घणाछे तु किसा खेत्रमारहैछे तिवारे बोल्या सरीर अवगाहणा प्रमाण खेत्रमा रहांछा ए विबहार नयरो वचनछे जेणे ढो लीया प्रमुखनी जायगा टालदीधी जीवनो व्यापार वरते हालण चालणरो तेतली जायगालीधी इति विवहार नय ३ बली पूछ्या असंख्यात प्रदेसमा स रीर अवगाहणा प्रमाण खेत्रमे धर्मास्ति १ अधर्मा स्ति २ पुदगल प्रमुखनी पिण अवगाहनाछे तु कि सी अवगाहणामे वसेछे तिवारे बोल्या चेतन गुण

मे वसांछा जे चेतनाछे ते मांहिंरे गुणछे अने धर्म १ अधर्म २ चेतन स्वन्नावछे ते मांहिं माहिरा गुण नथी इण न्याये चेतन गुणमे वसूंछूं एऋजु सूत्र नयरो वचन छे वली पूछ्या चेतन गुणनी प्रजाय अणंतीछे तु किसी ग्यान चेतना अज्ञान चेतना इत्यादि चेतनाछे तु किसी चेतनामे वसेछे तिवारे बोल्या ग्यान चेतनामे वसांछा इहां अज्ञान मिथ्या दृष्टी प्रमुख अशुद्ध चेतना टाली ए शद्वनयरो वचनछे ५ वली पूछ्या ग्यान चेतन गुणनी प्रजाय अणंतीछे तु किसी ग्यान चेतन गुणमा वसेछे मत्यादि ग्यानना न्नेद घणाछे तु किसी चेतना गुणमा वसेछे तिवारे बोल्या आत्मस्वरुपमा वसूंछूं आत्मानुन्नव ग्यान चेतना गुणमे वसूंछूं इहा व्यवहार ज्ञान टाल्या निमा ग्यान चेतन गुणमे बतायो ए समन्निरुढ नयना वचनछे ६ वली पूछ्या आत्मानुन्नव चेतन गुणमे तो हानि वृद्धि घणीछे न्नाव अपेक्षा घणा स्थानकछे तुं कोणसे ठिकाणे वसेछे तिवारे बोल्या जे हुं शुद्ध क्षायक न्नाव अवस्था निजरुप सच्चिदानंद शुक्ल ध्यान रूपातीत एहवा जे सिद्ध रूप अवस्थाने ठिकाणे वसुंछूं एह एवंन्नूत नयरो वचनछे एवं बासा ऊपर ७ नए कही हिवे जीव ऊपर ७ नय उतारेछे नएगम नय निमते प्रजाए प्राण सहित सरीरने जीव कहै ते सरीरमांहिं धर्मास्तिका ए देस प्रदेस एवं अधर्मास्तिकाए देस १ प्र

देस २ आकाशास्तिकाय देस १ प्रदेस २ तथा पुदग
ल प्रमुख अजीवना भेद सरीरावगाहणाछे ते जीव
मां गिण्या १ अथ संग्रह नय निमिते असंख्यात प्र
देसावगाहणाने जीव कहे इहां आकासटाल्या धर्म अ
धर्म तथा तेहज सरीर संबंधी पुदगल जीवमा गि
ण्या २ तिवार बिवहार नय वाला कहे वासना वि
षयादिकनी लेवेछे ते जीवछे एणे इंद्री जीवमा गि
णी अने मोठा पुदगल टाल दीधा द्रव लेस्या द्रव
जोग मन प्रमुख जीवमा गिण लीधा कारणे इंद्री ले
स्या जीवथी न्याराछे पिण जीवना व्यवहारछे इंद्री
लेस्या जोगना व्यवहार देखी जीव जाणीजेछे ते भ
णी विवहार नयने मते इंद्री लेस्या जोग जीव
मे गिण्या ३ तिवारे ऋजुसूत्र नयनेमते उपियोग
ने जीव कहे इण नय निमते लेस्या इंद्री वासना प्र
मुख सर्व पुदगल टाल दीधा परंतु शुद्ध तथा अशु
द्ध उपियोगने जीव कहे ग्यान तथा अज्ञान बेहुंने
जीव कह्या जे कारणे अज्ञानमे मिथ्यात मोहनी कर्म
नी वर्गणा भेली जीवमा गिण लीधी ते ऋजुसूत्र न
यरो वचनछे ४ तिवारे शब्द नय वाला कहेछे जीव
शब्दनो अर्थ मिले तेहने जीव कहे अर्थ (जीवं जी
वित जिविस्सइ) पूर्वे जीवे अबजीवे आगे जीवसी ए
हवा अर्थ संभव तेहने जीव कहे इण द्रव्यात्माने
जीव बतायो आत्मानाजे गुण सदा जीवछे ते भणी

जीव केहेछ इण तेजस कारमण तथा आठखा क
र्मना उपियोगसा पुदगल तथा परगुण ते जीवना
अनादि संगी जीवमा गिण लीधा ए शद्ध नयना
वचनछे ५ तिवारे समभिरूढ नय वाला कहेछे द्रव्या
त्माने परगुण पिणछे ते जीवमान गिणजे शुद्ध स्व
रूप सत्ता जेणे उलखी आत्माना स्वद्रव १ स्वखेत्र
२ स्वकाल ३ स्वभाव ४ निजगुण रमणरुप सम्य
क दृष्ट अनुभव आस्वादित मोह ग्रह स्थलता रहित
होय तेहने जीव कहिये एणे क्षायक सम्यक्त प्रमुख
ने जीव कह्या ए समभिरूढ नयना वचनछे ३ ति
वारे एवं भूत नय वालो कहे अणंत ज्ञान अनंत द
र्सन सुद्ध रुप चेतन कर्म रहित तेहने जीव कहेएणे
नयने मते तो सिद्धने जीव माने निमा जीव सिद्ध
है एह एवं भूत नयरो वचनछे ए ७ नय जीव ऊपर उ
तारी हिवे ७ नय धर्म ऊपरि कहेछे नैगम नयने स
र्व धर्मने धर्म कहे जे कार्णे सर्व पाखंडी जनछे जेत
ला धर्म चाहेछे एहनी बांछा धर्म करवानीछे एणे न्या
ये करी सर्व धर्मने कहे ते ठाणांगे १० मे ठाणे कह्या
(दसधम्मे पन्नते तंजहा गामधम्मे १ नगरधम्मे २
कुलधम्मे ३ गणधम्मे ४ पासंफ धम्मे ५ संघध
म्मे ६ गिहत्थधम्मे ७ सुएधम्मे ८ चरित्तधम्मे ९
अत्थिकाय धम्मे १०) इहा गाम धर्म नगर धर्म इ
त्यादि वचन नैगम नयना जाणियेछे एक अंस रूप

ले कहेछे एवं नैगम नय १ हिवे संग्रह नयवाला कु
ल धर्मने धम्र्म कहेछे वर्फे वडेरा आदरयाते धर्म ए
णें नय निमते अणाचार छोड्या पिण कुलाचारने ध
र्म माने ते मे अधर्म कुलाचार पिण धर्ममे गिणाली
धा ए संग्रह नय २ ऋजुसूत्र नय वाला उपयोग स
हित वैरागरूप प्रणाम होय तेहने धर्म कहे एणे न
य निमते यथा प्रवृत्ति करण ना प्रणाम प्रमुख सर्व
धर्ममा गिणया इसा उदासीनता प्रणामरूप मिथ्या
तीने पिण थाय ए ऋजुसूत्रना वचनछे ४ हिवे शब्द न
य कहेछे शब्द नय वाला सक्तने धम्र्म माने सुयधम्मे
१ चरित्तधम्मे २ ए वचन शब्द नयरोछे सम्यक्त धर्म
ना मूलछे संसार बूडता जीवने उधारि राखे ते धर्म
कहे ए अवृती समगदिष्टीने पिणथाए ए शब्द नयरो वच
नछे ५ हिवे समभिरूढ नयवाला चारित्र प्रमुख उ
पादेय वस्तुने ध्यावे तेहने धर्म कहे प्रवस्तुथी विर
क्त इंद्री विषयाभिलाषारूपहो ए वस्तुना त्यागवो
ते साधक पदछे तेहने धर्म कहे एणे व्यवहार त्याग
ने धर्म कहे ए समभिरूढ नयना वचनछे ६ हिवे एवं
भूत नए निमते ते जीवना मूलस्वभावते धर्म कर्म
वर्गणाथी भिन्न थायवो ते धर्म शुक्ल ध्यान रूप क्ष
पक श्रेण चढवा ते कर्म खपना कार्णे ते धर्म कहे आ
त्मा उज्वलपणा थाय ते धर्म कहे एवं भूत नयरो
वचनछे ए ७ नय धर्म ऊपर लगावी ॥ हिवे सिद्ध ऊ

पर ७ नय लगावेछे नैगम नए निमते तो सर्व जी
व सिद्ध समानछे सिद्धथावानी सक्त सर्व जीवमाछे प
रंतु द्रवात्मा सर्व जीवनी सरीखी ते भणी आगम
प्रजाय लेइने तथा द्रवात्माना असंख्यात प्रदेसप
णा लेईने सर्व जीवने सिद्ध कहै १ संग्रह नय वाला
कहै द्रवार्थिक नयरी अवस्था अंगीकार करी सर्व
भव जीवनी सत्ता सिद्ध रूपछे सिद्ध जीव १ संसारीजीव
२ द्रव एक छे द्रवात्मामे भिन्नता नही कर्म भेदछे परंतु
द्रव भेद नथी एकजातछे सर्व भव सरिखा ए संग्रह
नयना वचनछे २ बिवहार नय वालो बिद्या लब्धि
प्रमुख गुण साधीने बाह्य तप प्रमुख करि कार्य सि
द्ध कीनो ते सिद्ध कहिजे जिम अमुके विद्या सिद्धछे
ते बाहिर वस्तु सिद्ध कीनी ते बिवहार सिद्ध ए बिव
हार नयना वचनछे ३ ऋजुसूत्र नय वालो सम्यग
दृष्टीने सिद्ध कहै जे भणी सिद्धसत्ता आत्मारी उलखी
जे अने ध्याननो उपियोग वरतेछे सिद्ध अवस्थामे
वरतमान समे सिद्ध समान ध्यावेछे इण न्याये ऋजू सूत्र
नये सम्यक्तीने सिद्ध कहे ए ऋजुसूत्र नयना वचन
छे ४ शब्द नय वाला जे शुक्ल ध्यान रूप परणाम रू
ढ थयो गजसुकमालनी परे निजगुण सिद्ध कीनो
तेह रूप ध्यानने सिद्ध कहै सर्व कार्य सिद्ध कीधा
जे निजगुण ध्यावेछे तेणे ए शब्द नयना वचनछे ५
हिवे समभिरूढ नय वाला केवल ज्ञान १ केवल

दरसन १३ मे १४ मे गुणस्थान वरती मुक्तने स
नमुखहुवा सलेसी अवस्थाने सिद्ध कहे ए समानेरू
ढ नयना वचनछे ६ हिवे एवं भूत नयवाला सकल
कर्म खपाए लोकने अंते बिराजमान अष्टगुण संपन्न
तेहने सिद्ध कहै एह एवं भूत नयना वचनछे ए ७
नय सिद्ध ऊपर लगावी हिवे ज्ञान ऊपर ७ नय ल
गावेछे ग्यान ते मुक्ति कार्ण इहा नैगम नयवाला जा
णपणा भणी अज्ञानने पिण ज्ञान कहे तथा अक्ष
रादिकने पिण ग्यान कहे एक अंसग्याननोछे ते भ
णी ज्ञान कहे भगोती सूत्रमे जिम (नाणेअठ बि
हे) ए नैगम नयरो वचनछे जिम श्रुतज्ञान १४ भेद
मांहि अक्षर श्रुत १८ जातिनी लीपीना व्यंजन अ
क्षरना आकार लवध अक्षर ते आकार देखीने जा
णपणानी लबध ऊपजे ते मिथ्या श्रुतना अक्षर पि
ण श्रुत अज्ञानमे आया तेहने पिण आठ ज्ञानमा
ग्यान कह्या एक अंस ज्ञानवरणी कर्मना क्षयोपस
मथयो तेतला मुक्तिने अंस जाणवा कर्मथी मुकाय
वा ते मुक्ति कहिजे ते भणी अज्ञानने पिण ज्ञान क
हे ए नैगम नयरो वचनछे १ हिवे संग्रह नय कहे
छे संग्रह नयवाला एकहि ग्यान कहे ५ ज्ञान ३ अ
ज्ञान सर्व नाणमे (एनेनाणे) इति वचनात ए संग्र
ह नयरो वचनछे २ हिवे बिवहार नय वालो ज्ञानी
ने ज्ञानी कहै अज्ञानीने अज्ञानी कहे वा

ह्य बिबहार देखे जैसा कहे अभ्यंतर भाव न लेवे जैसे कोई सूत्रके अर्थ विस्तारसुं धर्म कहता होइ तेहने बिबहार नय वालो कहे ए बड़ा ग्यानीछे अभिंतर स्वरूप न लेवै ए बिबहार नय ३ ऋजुसूत्र नय वाला जे जे ज्ञानने विषे प्रयोग प्रवर्त्तता होय तेहज ग्यानी कहिए जैसें छदमस्तने ४ ज्ञान बिबहार नयने मते कह्या अने ऋजुसूत्र नय वाला अतीत अनागत माने ते भणी ग्यान कहे एक जो मत ज्ञानने विषे उपियोग वरततो होए तो मत ज्ञानी कहे जे कारणे एकसमेमे एक ग्यान विषे उपियोग वरतेछे जे ज्ञान विषे उपयोग बरते तेहज ज्ञानी कहे ए ऋजुसूत्र नयना वचनछे ४ इमहीज अग्यान पिण दर्सन जाणवा ए ऋजुसूत्र ४ शब्द नय वाला सम्यक्त सहत ९ पदार्थ जांने तेहने ज्ञान कहे ते शब्द नयना वचनछे ५ समभिरूढ नयनी अपेक्षा ए सम्यक्त सहत ज्ञानवंत परगुणसे विरक्तहोए तेहने ग्यान कहे ग्यानने सनमुखथावो ते परगुणसे विरक्त होणो ते समभिरूढ नयना वचनछे परगुण वो कहीये किं जो ७२ कला विधि चतुराई लौकिक ते तिस परगुणसे विरक्त होणो ६ एवं भूत नय वालो केवल ज्ञानने ग्यान कहे ७ एवं ७ नय ग्यान ऊपर लगावी हिवे धर्मास्ति काया ऊपर ७ नय नैगम नय एक प्रदेसने धर्मास्तिकाय कहै जे कारणे नयेगम नयवाला

एक अंसनै वस्तु माने १ देस प्रदेसादिने अस्तिका ए कहे जे कारण अस्तिकाए देस प्रदेस आया ए संग्रह नय २ बिवहार नय प्रदेस प्रदेस विषे जीव पुद्गल गतगमण करेछे ते धर्मास्तिना बिवहार षट गुणी हान बृद्ध रूप धर्मास्ति कहे ३ ऋजुसूत्र नय जीव पुदगल चालता बरतमानकाले गत गुण करे तेहने कहे अतीत अणागत काल न लेखवे ए ऋ जुसूत्र नय ४ सद्द नय वाला स्वभावने धर्मास्तिका ये तेतले ग्याणादिना उपियोगसुं धर्मास्तिने जाणे ५ समभिरूढ नए वाला गुण परवरत्तन जाणे ते ध र्मास्तिना गुण प्रवर्त्तताले देखे ते समभिरूढ ६ एवं भु त नय धर्मास्तिना अनेकांत स्वरूप सप्त भंगी सप्त न य प्रमुख करी सिद्ध वचन थाए तेहने कहे एतले नि श्चै ग्यानने धर्मास्तिकाहे कए एवं भूत नय ७ इण प्रकारे धर्मास्तिपिण कहवा २ आकास्ति नैग म नय एक आकास प्रदेसने ए आकास्ति कहे १ सं ग्रह नय (एगेलोए एगेअलोए) खंधदेस प्रदेस भे द न करे २ बिवहार नए अधो लोकना आकास १ तिरछा लोकना आकास २ उरध लोकना आकास ३ लोकाकास ४ अलोकाकास ५ घटकास ६ इत्यादि नाम लेई कहै जैसो बाह्य विवहारछे जैसा कहे ते बिवहार ३ ऋजुसूत्र षट्गुणी हान वृद्धि रूप क्रिया करता आकास एतले जीव पुद्गलने अवकास दे

ता ते आकास ४ शब्द नय वाला आकास उगाह लक्षण बिकासपणाने एतले पोलाडने आकास ५ स मभिरूढ आकासना गुण जीव पुदगल ऊपर थया ते आकास ६ एवं भूतनये आकासना द्रवगुण प्र जाएना जाणपणाते आकास ७ ए आकास ऊपर ७ नय लगावी हिवे कालदरव ऊपर ७ नय कहेछे नैगम नय अतीत अनागत वरतमानरूप एक सम यने कहे एक गुण तीन कालना समएनोछे ते असने ब स्तु कहे इणन्याये १ संग्रह नय अभेद रूपसम आ वलका आद सर्प्पणि उत्सर्प्पणी प्रयंत सर्व काल वरतणरूप एकछे २ बिबहार अढाई द्वीपमा दिनरात अएण संबरसर प्रमुखछे अढाई द्वीपबाहिर कालना सं ख्या रूप बिबहार नथी ते बिबहार काल अढाई द्वी पमाछे दिनरात संख्या बिबहार नय ३ ऋजुसूत्र नय वर्तमान कालना सम कालछे अतीत काल बि णस गया अणागत काल अजी आया नथी ते भ णी काल तो वरतमान समछे एऋजुसूत्र नय ४ स ब्द नये जीव अजीव ऊपर वरतेछे अनंत प्रजाए ते हने काल कहे ५ समभिरूढनए जीव पुदगलनी थित पूर्ण करवाने सनमुख थया तेहने काल कहे ६ एवं भूत नए कालना द्रव गुण प्रजाएना ग्यान पणाने काल कहे ७ हिवे पुदगल ऊपर ७ नय कहे छे नैगम खंधना एक गुणमा गुण नही जिम एक

गुण कालाने काला पुदगल कहै एक अंसने ग्रहवे करी वस्तु कहे ते भणी १ संग्रह नय पुदगल द्रव एकछे ऐसा कहणा ते संग्रह जे कारण पुदगल द्रव अणंताछे परंत पूर्ण गलण स्वभाव सर्व इमछे ते भणी भेदान भेद न करे ते संग्रह जिम ठाणांगे (एगे पोगलत्थिकाए) ए संग्रह नयका वचनछे २ बिवहार नय साथे लागा ते उपियोगसा जिम करम बरगणा नी पुद्गल १४८ प्रकृतना भिन्न भिन्न स्वभाव ते उपियोगसा पुदगल १ जीवने छेडया परकारांतरपणे परणम्या नही जहांलगे मीसा पुदगल २ स्वभावे मिले स्वभावे बिखर जाय ते अभ्र पटल इंद्रधनुष प्रमुखना पुदगल ते वीस्सा पुदगल ३ बाह्य बिवहार देखे जैसा कहै ए बिवहार नय ३ ऋजुसूत्र नय पूर्ण गलणने पुदगल कहै बरतमानकाले गुण होय सो कहै ए ऋजुसूत्र नय ४ शब्द नय पूर्ण गलणरी क्रियाने पुदगल कहै एक प्रमाणुयामे गुणछे तेहिज अणंत प्रदेसमे गुण एकछे ते शब्द नय ५ समभिरूढ नय वाला कहै एक अणुमे बीस गुणी एक एक गुणमे एक गुण लगाये अणंत गुणपरजाये ते मांहिं षटगुणी हान वृद्धि रूप प्रजाये फिरे तेहने पुदगल कहै ६ एवं भूत नय वाला षटगुणी हान वृद्धि प्रगट होय ते पुदगल ७ इति पुदगल ऊपर ७ नय लगावी इत्यादि सर्व पदार्थ ७ नय करी प्रमाण कीजे ए ७ नय माने

तो सम्यक्ती एक नय मानेछे नय न माने २ नय माने ५ नय न माने इम जावत छह नय न माने एक नय नमाने ते मिथ्यातीछे ऊक्तंच [सत्तनयाजिणेन्न णीया सद्दहंत्तासमदिठी एगोपुणनसद्दहंतो मिछादिठी उनाएवा [१ ए ७ नयसुं वचन सिद्ध थायते प्रमाण अने ७ नयसुं असिद्ध वचन होय ते अप्रमाण ॥ इति सप्त नय चर्चा संपूर्णम् ॥ अथ अजीव मतनी चरचा लिख्यते ॥ प्रश्न अजीव मती किणने कहिये उत्तर श्री तीर्थंकर महाराज ने २४ जातके धान मे तथा इण उपरांत अनेक जातरा धान होवे तिणमे तथा बीज फलसु न्यारा हुवा पछे तथा तलावका पाणीमे तथा प्रत्येक बनरुपती प्रमुख ठिकाणोमे केवल ज्ञानीने एकेंद्री जीव बत्तायाछे अजीव मती इसमे जीव नथी मानता ते भगवंतनी आज्ञा विराधकछे जैनी साधु श्रावक नाम धरावे पिण पूर्व कहे ठिकाणोमे भगवंते जीव कह्याहै एजीवानी रक्षा करे अनुकंपा करे ते जीवांने बचावणको उपदेस देवे ते उपदेस देणे वाला तथा बचावणे वाला साधु अथवा श्रावक भगवंत महाजकी आज्ञाका अराधकछे अने ए वचनाने नमाने ते मिथ्या दृष्टी जाणवा ॥ प्रश्न केई बीज फलथी न्यारा थया पछे बीजमे जीव न माने तेहनो उत्तर लिखीयेछे प्रथम आहारके प्रमाणमे सूयगडांगके श्रुतस्कंध दूजा आहार परिज्ञा

अध्ययनमे अग्र बीजादि ४ जातिना बीजमे छे दिस
ना आव्या पुद्गलनो आहार करे और छही कायके
पुद्गलांको आहार जावत् (पुढवी सिणंह माहा
रंति) इत्यादि पाठ देखता तो ऐसा निश्चै नही दी
याहै अग्र बिजादि पृथ्वी ऊपर जलकाही आहार ले
इ इण न्याये पवनादिकना आहार बीजने पिणछे ॥ प्रश्न
किसीकुं ऐसा संदेह ऊपजे पाचथावरमे एक जीव कह्या
नही संख्याता असंख्याता अनंता जीव कह्याहै तो
बीजमे १ जीव किम मानीये तेहनो उत्तर पत्तादि ७
स्थानमे बीजमे एक एक पन्नवणा सूत्रमे कह्याहै ते
हनी निश्राये और जीव ऊपजे जिम लाखनी गो
ली अग्निसे तपायने तिलामे नाखेतो तिल लाखनी
गोलीसुं चिमटे तिम एक जीवनी निश्राये संख्याता
असंख्याता जीव ऊपजेछे ते भणी एक जीवनी कहीजे
संख्याता असंख्याता भी कहिजे एणे न्याये एक
जीव कहता संख्याता असंख्याता के पाठसे विरुद्ध
नही निश्राय भूत जीव चव्या एक रह्यो ते नैगम
नयने मते अतीत प्रजाए अपेक्षाये संख्याता असं
ख्याताना पाठ विरुद्ध न थाय सर्वज्ञ वचन स्याद्वा
दछे अणंत नयात्मक छे जिसका हेतु पूछ्यो पन्नव
णाजीमे १ वणस्पतीमे (सिय संखेज्जा सिय असं
खेज्जा सिय अणंता) एहवो पाठछे वलि इम कह्यो
(जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा अपज्जता)

तो सिय संखेज्जानो पाठ किम संभवे इण न्याये देखतां एकने संख्याता नैगम नय पूर्व प्रज्ञा ए अपेक्षाइं विरुद्ध नहीं एहना परमाण ओलख्यो पन्नवणा १८ मा पदमा कायस्थित पदमे सागारोवउत्ता अणगारोवउत्ता उपियोगनी काय स्थित अंतर मुहुर्तनी कही केवल ज्ञान केवल दर्सननी काय स्थित एक समयनीछे प्रथम समय ज्ञान बीजे समयदर्सन दर्सन पूर्व ज्ञानछे ते एक समयनी स्थिति परंतु इम न कही ४ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्सननी काय स्थित अंतर मुहुर्तनी केवल ज्ञान केवल दर्सननी इम एक समयनीछे इम तो नथी कही जे कारणे संग्रह वचन अपेक्षाइं १ समयने अंतर मुहुर्त कहीजे इण प्रमाणे नयेगम संग्रह नय अपेक्षाइं एकने संख्याता कहतां विरुद्ध नहीं कोई इहां प्रश्न पुछे अनुयोगद्वारे ष्यालाने अधिकारे दोइने जघन्य संख्याता कह्या एकने किम न कह्या तेहनो उत्तर सूत्रनो प्रमाण ओलखज्यो विशेष अविशेषपणे सूत्रमे विस्तार कीधो जिम किणे किणे ठामे विशेष शब्दे सवेदीनी काय स्थित मनयोगी वचनयोगी १ समय कही अविशेष शब्दे केवल ज्ञानी एक समयनी स्थितिने अंतरमुहुर्त कही इण प्रमाणे एकने संख्याता कहितां विरुद्ध नहीं पछे केवलीकहे ते प्रमाणछे १ इण न्याय प्रमाणे तथा परं परायसे पिण जाणीछे कोइ क

है परंपराय नमाना केहनी परंपराय नमानीजे इम कहै ते सत्य परंतु सूत्र पाठमे अर्थमे खुलासा होइ ते परंपराय नमानीजे सूत्र पाठ अर्थमे नथी खुल्यो ते परंपराय मानवा योग्यछे कोई पूछे बीजमे जीव किसा सूत्रना पाठ अर्थमे कह्या सूत्र पाठ कहैछे ते बीजमे जीव प्रत्यक्षहै ते इरीयावही पडिकमता (बी थकमणे) कोई हरया बीज सरदहे ते संदेह टालण भणी गणधरे (हरीयक्कमणे) भिन्न कह्या इण पाठ नी अपेक्षाइं निश्चै बीजमे जीव सर्दहीजे तथा अव स्यकमे [बीयभोयणहरिय भोयणाए] हरी (या) बीज (हरीयभोयणाए) कह्या ते [बीयभोयणाए) किसा कहजे तथा दशवे कालक ४ अध्ययन (बी येसुवा वीयपइठेसुवा हरियेसुवा हरियेपइठेसुवा) इ हा पिण बीज हरी भिन्न पणे कह्या तथा दसवे कालिक अध्ययन पाचमे गाथा (सम्मदमाणी पाणीणी बी याणी हरियाणीय) इहां हरी बीज भिन्नपणे कह्या तथा उत्राध्ययनमे (वीएसुहरिएसुवा) इत्यादि ठा म सूत्र पाठ देखता बीज सचित जाणीजे कोई बी ज हरयानी रूढ करे तेहना प्रमाण सूत्रथी लिखी एछे ॥ जिण बंदन बेला पांच अभिगम सांचव्या तिहां [सचिताणं दवाणं बिउसरणयाए) तेहना अर्थटीका कारे पुष्फ तंबोल कह्या ते तंबोल इला यची कंकोल प्रमुख हरया संभवता नही इण प्रमा

णथी बीज सचित जाणीजेछे तथा आज्ञा सूत्र अ अध्ययन ५ मे सूखदेव सन्यासी थावच्चा आचार्य प्रते पुछ्यो मासा कुलत्था सरिसव नखेया ते पाठ घणाछे तिहां पिण शस्त्र परिणत शस्त्र अपरिणित कह्या इण पाठने परिमाणे बीज सचित जाणीजेछे तथा उत्राध्ययने १७ मे अध्ययन गाथा ६ मी (समद्द माणीपाणाणी बीयाणी हरियाणिय) इत्यादि इण प्र माणे सचित बीज जाणीये तथा ऐसा भर्म ऊपजे हरि द्रोबादिक्कने कहीजे तो हरी हरी नाम ठाम ठाम क ह्या कंद मूल खंध साखा प्रमुख जुदा क्यों न क ह्या इण प्रमाणे हरीमे कंदादि ९ बोल समाया बीज जुदा कह्या ते पाठने प्रमाण बीज सचित कह्या जाणिजे ९ ठि काणे सूका पछे जीव नथी ते भणी तेभणी हरित काय कही बीज मांहिं सूका पछे जीवछे ते भणी बी ज जुदा कह्या इण प्रमाणे सचित बीज सरदहिजे पछे सर्वज्ञ बचन प्रमाणछे तथा ऐसा भ्रम ऊपजे एसा बीजमे कठिनपणा कह्याहै कदापि ९ ठिकाणे के जीव चवि गए सूक्या पछे बीजमे जीव रह्या तो बीजमे कठिनपणा क्याहे तेहना उत्तर कठिनपणा की सर्वज्ञ जाणे आपणे तो आगम वचन प्रमाण करयो चाहिजे आगममे पूर्वोक्त प्रकारे नाम ठाम क ह्या ते प्रमाण करयो जोइ जे तथा तलाइके पाणी मे कठिनपणा कोणहै जो सीत तापादिक चोपदना

मल मूत्रना उपद्रव्य होइ सचितपणे रहैते निर्यु क्ति करी जोइजे तथा और पिण घणे ठामे निर्युक्ति करी जोईजे बीजनी सचित पणानी व्यक्तव्यता क ही पन्नवणा प्रथम पदे गाथा कही १ (योनी नु ए जीवे उववज्जइ सोवा अवन्नोवा) इत्यादि प्रमाणे बीज सचित्त जाणजो ॥ इती अजीव मतीयांसें च र्चा संपूर्णम् ॥

॥ अथ मिश्र धर्म चर्चा लिख्यते ॥

दोहा ॥ अरिहंत सिद्ध साधु नमुं, भवजीवांहित ल्याय ॥ सुख होवे सांसो मिटे, कहीए सूतर न्या य ॥ १ ॥ कालोदाई पूछीयो, सूत्र भगोती जोय ॥ पापबंधेछे पापथी, पापतज्यां पुण्य होय ॥ २ ॥ ध र्म अधर्म धर्माधर्म, तिन करणे तिन ठाण ॥ सत्य असत्य भाखी मिसर, तीजो बोल पिछाण ॥ ३ ॥ धर्म फल बीते धर्मरो, अधर्म मिश्ररो एम ॥ श्राव करे तीनुं हुवें, देख अर्थ धर प्रेम ॥ ४ ॥ सुकृतराछे सुख फल, दुकृतसुं दुखहोय ॥ बेभेला तीजो कह्यो, तिणरो एहिज होय ॥ ५ ॥ ढाल ॥ जुठोहे जात का मण केरी ॥ एदेसी ॥ सूयगडांग पहिले श्रुत खंधे, मोखमारगमे देखोरे ॥ सोलमो गाथाथी लेने छेमे, दानरा भाव विशेषोरे ॥ सूत्र विचार करीने जोवो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ वखाण माहिं भिन्न भिन्न बांचे, इ हां तो मौन न राखीरे ॥ दोष लागे ते सवले ठा

मे, मौन जिनेस्वर भाखीरे ॥ सू० ॥ २ ॥ कुवो खणा
था सत्रुकार दियां, कोईक पूछे धर्म एहोरे ॥ आ
त्मगुप्त साधे आरंभने, अनुमोदे नही तेही तेहो
रे ॥ सू० ॥ ३ ॥ शत्रूकार फल पूछ्या साधू, पुन्यछे
नछे न भाख्योरे ॥ बेकंतरो एकंत कियार्थी, दोष म
हाभयदाख्योरे ॥ सू० ४ ॥ त्रसथावररी रूख्या की
जे, पुन्यन कहे किण आगेरे ॥ कहे तिको ऋष पा
लन कहीये, ना कह्यां अंत्राय लागेरे ॥ सू० ॥ ५ ॥
घणा जीवां उपगारी गणीने, प्रसंसे गुण गावेरे ॥
जीव घातकेरे बांछक निरदये, भावे पापलगावेरे
॥ सू० ॥ ६ ॥ निंदे तेह व्रतरो छेदक, भणीयो ठोठ
कहायोरे ॥ मुनी दोषण बिनएक कहतां, कूडमे पडी
यो आयोरे ॥ सू० ॥ ७ ॥ (दुहगवित न भासंती)
चाल्यो, एकंत आश्री जाणोरे ॥ बेभेलामिश्रमे दोष
नही, कह्या विनाकिम ताणोरे ॥ सू० ॥ ८ ॥ बेमे एक
बोल्यां पाप लागे, तिणसुं मौनज राखीरे ॥ निरव
द्य बोल्यां मोक्षतणासुख, सूत्र बोलेछे साखीरे ॥ सू०
॥ ९ ॥ मिश्र कह्यां कोई दोषण हुवे सो, किहांई काढ
दिखावोरे ॥ दोष अनेक उथाप्यालागे, सूत्र बोले चा
वोरे ॥ सू० ॥ १० ॥ मिश्र उथाप्यादोष महाभय, पु
न्य पाप रह्या बाकीरे ॥ एकंत कह्या पेला पकमे, मुन
ग्रही जाए थाकीरे ॥ सू० ॥ ११ ॥ मिश्रदिखावो
तिणे पूछीयो, निषेध्यो ते बतावोरे ॥ ते तो काढन स

के कोई, ठाम मिश्र बतावोरे ॥ सू० ॥ १२ ॥ मिश्र उथाप्या प्रगट दीसे, पुन्य पाप बे रहीयारे ॥ दोष घणा एकंत कह्याथी, ते किम जासी कहियोरे ॥ सू० ॥ १३ ॥ मिश्रउत्नयबे एकजबाणी, नोलेइं मत नम कोरे ॥ ठाम ठाम सूत्रना अर्थ बोले, सुणने टालो धडकोरे ॥ सू० ॥ १४ ॥ धर्मअधर्ममिश्रथानक, क्रिया अध्ययनें पाठोरे ॥ धर्मअधर्म बेनेल अर्थमे, घा रोदिलमे काठोरे ॥ सू० ॥ १५ ॥ धर्मअधर्म दान फल दाख्या, आंटएकमे नाणोरे ॥ घणा दोष एकंत परूप्यां, इण न्याये मिश्रजाणोरे ॥ सू० ॥ १६ ॥ नगवती आठमा श्रुत खंधमे, ठठा उदेसामे घाल्योरे ॥ धर्मअधर्मने मिश्रदानफल, तीनुं तिणमे चाल्यारे ॥ सू० ॥ १७ ॥ सूयगडांगे दूजे श्रुतखंधे, पाचमे अध्ययने बिचारोरे ॥ नाषा अध्ययनमे एकंत बोल्या, लागे कह्या अणाचारोरे ॥ सू० ॥ १८ ॥ गुण कह्या संजम अनुमोदे, दोष कह्या अंतरायोरे ॥ साधूनि वेद्य नाष्यानाषे, मुंनकही इह्या कायोरे ॥ सू० ॥ १९ ॥ चिरमी देख तिलंगा नडके, त्युंकेई मिश्रसु नडकेरे ॥ निश्चनषारो फलउलखेतो, आघोजायनसकेरे ॥ सू० ॥ २० ॥ एकंत लोक सासतो नको, असासतो पिण टालोरे ॥ स्याद्‌वाद बे नेला कहणा, दसवी कालक अर्थ संनालोरे ॥ सू० ॥ २१ ॥ एके गाथा माहे अटकले, सेणा श्रावक साधोरे ॥ पुन्य पापबरजी ति

हांमिश्र, दान न्याय तिहां लाधोरे ॥ सू० ॥ २२ ॥
दोष चाले तेहनी मुंन चाली, ओररे मौनन कोईरे
॥ च्यार जाण्या जिमछे तिम कहता, साध आराध
क होईरे ॥ सू० ॥ २३ ॥ एकंत बोल्यां पाप लगे ति
हां, बेकंत ते सत वाणोरे ॥ पाठ सच्चामो सारो चा
ल्यो, मिश्र अर्थमे जाणोरे ॥ सू० ॥ २४ ॥ धर्म फ
लछे व्रत धर्मरो, अधर्म फल मिश्रछेएमोरे ॥ श्रावक
ने कह्यातीजे ठाणे, तीन वीसते साठोरे ॥ सू० ॥ २५ ॥
गुण दोषण कहनो जिम पाल्यो, वली गुण दोष ब
तायोरे ॥ वीरवचन तो विरचे नही, मेलदिखायो न्यायो
रे ॥ सू० ॥ २६ ॥ पाप महा नय पुन्य कह्याथी,
पुन्य नही मतिकाहिज्योरे ॥ पुन्य पिणछेनर एगजणायो,
मोख मारगमे जोज्योरे ॥ सू० ॥ २७ ॥ गुणने दो
ष एकंत सर्वथी, कहता दोष दिखायोरे ॥ देसथकी
गुण दोषण कहैतो ॥ दोप नहीओ न्यायोरे ॥ सू०
॥ २८ ॥ मिश्र लगे तिणरी मुंनज करणी, ए बातछे
सांचीरे ॥ इणरो फलमे तो क्यूं नही जाण्यो, ए वा
तछेकाचीरे ॥ सू० ॥ २९ ॥ कोई कहै गृहस्थराजग
डामे, साधाने क्याने पडणोरे ॥ जिनमत मेरो बोल
न चाले, दुध पाणी ज्यूं निरणोरे ॥ सू० ॥ ३० ॥
अधर्म दान तेहने चाल्यो, उपादेय धर्मदानोरे ॥
मिश्र दान मेरे वहु ठामे, न्यायसूत्ररो मानोरे ॥ सू०
॥ ३१ ॥ मौन वालाने तो बोलणो नही, पेलोपरूपै क्यूं

हीरे ॥ मिश्रउथाप्यामुनंज आंगी, मुंनबतावेयोहीरे ॥ सू० ॥ ३२ ॥ तीजा मिश्रदानने ठेले, पुन्यके पाप बतावेरे ॥ मुंनकपटसरणो लेवे पिण, साफ ज्वाबन हीं आवेरे ॥ सू० ॥ ३३ ॥ मिश्र धर्म किणकहियो नाहीं, ले कोई परनोनामोरे ॥ कूठउघाडो तेहने लागे, आलदियोबेकामोरे ॥ सू० ॥ ३४ ॥ धर्ममिश्रतो पाप मिश्र होवे, ते तो दीसेनाहीरे ॥ तीजो ठाम कणपख वीथी, साचग्रहो मनमाहीरे ॥ सू० ॥ ३५ ॥ आचारांग पहिलारे बीजे, दान वलीकर्मदाख्यारे ॥ इहपर लोकरे हेते करे, आरंभ अनर्थ भाख्यारे ॥ सू० ॥ ३६ ॥ आचारांग पहिलारेछठे, पांचमउदेसएहोरे ॥ आतमपर आशातणाटाली, साध धर्म कहे तेहोरे ॥ सू० ॥ ३७ ॥ लौकोककुलिंगी मिथ्यामतरो, दान प्रसंसे कोईरे ॥ छकायानी विराधना लागे, निंद्याअंतरायहोईरे ॥ सू० ॥ ३८ ॥ दूजे संबरसोजन दियां पूछे, पुन्य केता पाप थायोरे ॥ बेमांहिं एकही बोले, तिण हिंस्या कूठलगायोरे ॥ सू० ॥ ३९ ॥ आणंदजीकह्यो अन्यतारथीने, देणोन कल्पै मोनेरे ॥ सिकडाल गुरुगुण थीदीहट, धर्मजाणनचुंतोनेरे ॥ सू० ॥ ४० ॥ जगन्मवानोकारण जाणी, साधुअनेराने नदेयरे ॥ सूयगडांग नवमे अध्ययने, ओरने हाना न देयरे ॥ सू० ॥ ४१ ॥ बेकंतरो एकंतपरूप्या, मिश्रलागे ज्वाबनावेरे ॥ बेकंत एकंतछे ज्युं कहीता, सांचोज्वाबबतारे ॥ सू० ॥ ४२ ॥

इरीयावही संपराई क्रिया, समकतने मिथ्यातोरे॥ साता असाताने विगोनर, साथे बंधनथातोरे॥ सू०॥ ॥४३॥ समे समे कर्म साते बांधे, साध प्रमादीजोयोरे ॥ पुन्य पाप पिणसुद्गल बांधे॥ एक समामेदोयोरे ॥ सू०॥ ४४॥ सतभाषा आराधनाचाली, असत बिराधनी जाणीरे॥ सच्चामोसाते बेहुकहिए, बिवहारएकमे नाणीरे॥ सू०॥ ४५॥ सतभाषा एकंत धर्मछे, असत एकंतछे पापोरे॥ धर्म अधर्म तीजोहुवे, तो क्यां मिश्रउथापोरे॥ सू०॥ ४६॥ साधथकी पुन्य नव निरवद्सुं, करी जिणेसर थापोरे॥ सावद्यथी सर्वथा पुन्य नमाने, ताहे लागे बहु पापोरे॥ सू०॥ ४७॥ अनेरानेदीया अन्य प्रकृत, पुन्य अर्थमे घाल्योरे॥ देस टालसर्वथा पुन्यथापे, ते तो चवडे उजड चाल्योरे॥ सू०॥ ४८॥ श्वान साप बाजने बिल्ली, भेल अल्प बहु आवेरे॥ आउखो दारो पुन्य प्रकृत, पापउदे गत पावेरे॥ सू०॥ ४९॥ अनुकंपा आणीतपसीते, आरंभ करीनेजीमायोरे॥ मिश्रथापकने फल पूछ्यां, साफ ज्वाब नही आयोरे॥ सू०॥ ५०॥ पुन्य पाप कहणो जिण पाल्यो, मिश्र रह्यो तेही पाल्योरे॥ नास्तक मतिसुं मिलतो बोले, झूठो झगडो झाल्योरे॥ सू०॥ ५१॥ पुन्य पापएकंत न कहणो, मिश्रदान जिहां जाणोरे॥ मोखमारगमे पाठ अर्थछे, कूमकिसाने ताणोरे॥ सू०॥ ५२॥ आठ

दान एकणमे घाल्यो. मिश्रदानजो नहीछेरे ॥ मुंन थक्यां सुधज्वाबनदीया; पिछतावोला पीछेरे ॥ सू० ॥ ५३ ॥ चित्तबित पात्रसुद्धसुं धर्म होवे, कुबिसनीसु अधर्मोरे ॥ दुरबल दुखिया मिश्रदानमे, ओलखल्यो ओमर्मरे ॥ सू० ॥ ५४ ॥ जीव दुखे तिहांमोन बताई, निर्णो दीधोदिखायोरे ॥ सुंन मुंन कहेज्यां जे मनुषां, परमार्थ नहीपायोरे ॥ ५५ ॥ साधटाली सर्व पाप कहै, कूठ जोडीभरमावोरे ॥ मिश्रठल पुन्यरी करजोडा, ते पिणक रीदृढावेरे ॥ सू० ॥ ५६ ॥ पुन्य पाप एकंत दानके, ते तो न्याय उथापोरे ॥ पुन्यपाप मिसरदानतीने, कहिने सांचो सुधथापोरे ॥ सू० ॥ ५७ ॥ पुन्य पापएकेरी मौनचाली, भेलरी भौनन कायोरे ॥ निर्वद्यक बोलणो कह्यांसुंभर्मे, एह उघाभो न्यायोरे ॥ सू० ॥ ५८ ॥ साचा सिंहगाजे जिण ठामे, कुरंगिदड ते भाजेरे ॥ मुंन कहे तेहनो लेओलो, प्रत्यक्ष पुन्यसुं लाजेरे ॥ सू० ॥ ५९ ॥ एकंते एकंत कह्यांते, सत्य बेकंत बेकंतोरे ॥ उरकह्यां मिश्रभाषा लागे, पामे दोष अनंतोरे ॥ सू० ॥ ६० ॥ ॥ पापीसूतो भला कह्याछे, ते तो नहणे जीव अपेक्षारे ॥ ए पिण असं थकीआछेने, सर्वथकी मतलेखोरे ॥ सू० ॥ ६१ ॥ प्रमादी सकषाई साधु, जथात थनचलायोरे ॥ असथकी एसापिणधरमी, पापी कह्या नवीनायोरे ॥ सू० ॥ ६२ ॥ भगवती सातमेश्रु

तखंधे, नवमे उदेसे एहोरे ॥ प्रमादी असंवरीसाधु, ते करे विक्रिय तेहोरे ॥ सू० ॥ ६३ ॥ जघन्य उत्कृष्टो जिहां नाही, तिहां उघीकजणायोरे ॥ स्वार्थसिद्धअसनी मिनखमे, देखणम्मांरो न्यायोरे ॥ सू० ॥ ६४ ॥ पापपापथी धर्मथकी पुन्य, न्यूराजलाएकंतोरे ॥ मिश्रमेरजुखिसतो नाही, तीजो बोल बेकंतोरे ॥ सू० ॥ ६५ ॥ नियमकूडो टिकसे नाही, जिहां प्रगटयोसाचोरे ॥ हीरो घणसेती नही भांगे, टूक टूक होयेकाचोरे ॥ सू० ॥ ६६ ॥ धर्म अधर्म एकंत नही जे, जिहां मिश्रछेदानोरे ॥ पखियो प्रगट बोले नही, जाणे सूत्र निदानोरे ॥ सू० ॥ ६७ ॥ एक गाथारे मांहिं अटकलो, बीजारो नहीकामोरे ॥ धर्म अधर्म एकंत नही जिहां, मिश्रदान तिणथामोरे ॥ सू० ॥ ६८ ॥ पापबुरोने धर्म भलोछे, एकंत कहै सवलोयोरे ॥ समचे मिश्र भेलथीहुवे, लखसे पारखहोयोरे ॥ सू० ॥ ६९ ॥ धर्मसंजतने व्रतपख, पंडित दृष्ट एकेकोरे ॥ धर्म अधर्मने मिश्रथी, हुआतिन तिन अनेकोरे ॥ सू० ॥ ७० ॥ पाप अठारे एकंत जुआ, रूडा धर्म समाणारे ॥ यामे मिश्र एकही नाही, मिलिया मिश्रकहाणोरे ॥ सू० ॥ ७१ ॥ पुन्यपाप एकंत नही जिहां, मिश्रदानसही जाणोरे ॥ सच्चामोसाछे भेलापाठमां, मिश्रअर्थने आणयोरे ॥ सू० ॥ ७२ ॥ मिश्रभेलवे एकज वाणी, किहां अर्थ किहां पाठोरे ॥ साचगीरसातिरे तिम सम

ओ, तीन बीसते साठोरे ॥ सू० ॥ ७३ ॥ पापएकं तने परोनिषेध्यो, धर्मरी आज्ञा देवेरे ॥ मिश्र ठि काणे हाना न कहवे, इम कह्यो जिण देवेरे ॥ सू० ॥ ७५ ॥ वायबागा कणीयाइज ठहरे ॥ तूतराते उडजायोरे ॥ सतसद्धा मे माहा टिकमी मोलाते नर्मनुलायोरे ॥ सू० ॥ ७४ ॥ नेम कियो नही तिण गिरसतरे, घरघरनो पाप आवेरे ॥ निर्वद्य दोष तजो नही तिणरो, निर्वद्यकेम कहावेरे ॥ सू० ॥ ७६ ॥ पुन्यपापसुन मुंन तिणरी, सूत्र जे करे उथापोरे ॥ मिश्र रह्याते पाल्यालागे, कूड कपटनो पापोरे ॥ सू० ॥ ७७ ॥ बेकंत ठेल्यां एकंतरहीयो, ते किमकहीजायोरे ॥ मुंनकहें तिणरो ओलोलेवे, पिणनसकेसाफ बतायोरे ॥ शु० ॥ ७८ ॥ बेकंतने बेकंत कह्या, सत्य एकंतने एकोरे ॥ कुडक पट बिणपरगटकहसी, तेहोसीसत्यवंतोरे ॥ शु० ॥ ७९ ॥ धर्म सदर गुण जोग दिसादी, बेबे गुना शुनहो योरे ॥ समचेती जो मिसर कह्याते, तिणमे ओही हीजदोयोरे ॥ शु० ॥ ८० ॥ पापपुन्य धर्म मिसर नहीछ; एकंत प्रगट नास्यारे ॥ मुंनमिसररो निर्ण यकाढयो ॥ बाना कपट नरास्यारे ॥ शु० ॥ ८१ ॥ कहे मे तीजो बोलनमानो, बले मानताजायोरे ॥ मुं न करीने मिसरछिपावे, कपट करे इण न्यायोरे ॥ ॥ शु० ॥ ८२ ॥ इति॥

॥ अथ तेरा पंथीयांकी चरचा लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ थासमीकत शुणताथका, राखेरोषअ पार ॥ तिणरेसिरपर लागसी, चरणपट्टकीमार ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ प्रथम उठीया पापीपुरा, गद्धांगुराकांगेरी ॥ पुन्यहीणनेदुष्ट प्रणामी, बीतरागरा बेरी ॥ १ ॥ सुण ज्यो पंचमहाव्रत नही पाले, पमीया और निंचारे चाले ॥ एटेक ॥ गिनाताभे गुरुका गुणछे, सूत्र देख लो साखी ॥ निगुरानिगुणा जावेनारकी, याभगवंता भाखी ॥शु० ॥ २ ॥ भंडशुरोभीष्टापरजावे, चोखीब स्तनचावे ॥ उत्राध्ययन पाचमी गाथा, श्री जिनरा जबतावे ॥ शु० ॥ ३ ॥ जीवमातररो सुख नही चावे, ऊरखा बोलेकुठा ॥ दानदयारो भाव न जाणे, परत खहीयाफूटा ॥ शु० ॥ ४ ॥ बाताजायने करे ज्ञानरी, लुंडातिणशुंलडसी, ऊगमाकोराकुठा बोलो, कुत्रा कुबा कज्जा करसी ॥ शु० ॥ ५ ॥ निगुणा कपट चलावे नागा, एक बेस साधरोधारी ॥ दसमी कालक मांहि कथीयो, होसीबोहल संसारी ॥ शु० ॥ ६ ॥ असल धर्मरी नही आसता, भोलाबनकर जाणे ॥ भवसागर मे तिरसीभमतां, उत्राध्येयन प्रमाणे ॥ शु० ॥ ७ ॥ चूकाकहे बीरजीने चोडे, कारलोपनाकीधी ॥ पापत णो तो पंथपकडीयो, नीवनरकरी दीधी ॥ शु० ॥ ८ ॥ चोडे कहो थें वीरने भूला, तो तुम परतख पापी ॥ जगतारण जिनराजरी ॥ इतरी बात उथापी ॥ शु० ॥

॥ ९ ॥ आचारांग नवमे अध्येने; वीरतणी छे वाणी ॥ किंचित पापकीयो नही गोतम, जिनसासन सहु नाणी ॥ सु० ॥ १० ॥ श्रवणे बात सुणे नही सखरी, मुंरू बोले मीठा ॥ जीवांतणा तो दुस्मनजबरा, परतख जगमे दीठा ॥ सू० ॥ ११ ॥ सिद्धंतामे जगतजीवनी, साता वेदनी सुजी ॥ अभयदानने मुक्तसुखारी, गोतमस्वामी बुजी ॥ शु० ॥ १२ ॥ संकाघालकहे श्रावकने, आलधरे अपराधी ॥ देतां दानभावनाफेरे. तांने खुंटे बांधी ॥ सू० ॥ १३ ॥मगजधरने कहे मूरखा, जगमे म्हेइज साधु ॥ घात अनंती होसीथारे. फिर फिर पडसी बांधु ॥ शु० ॥ १४ ॥ निंद्या न करो किणरीपराई. सिद्धंतामे साची ॥ परीभ्रमणते परीयाकरसी. ब्रेहत कलपमे बाची ॥ शु० ॥ १५ ॥ दान दया अनुकंपाकेरी, सरधामानो साची ॥ दान दया विनकोई न तिरीया. येही जिनेश्वर बाची ॥ शु० ॥ १६ ॥ इति ॥

अथ भीष्मपंथीयाने तेरा पंथीयासे चरचा लिख्यते

॥ दोहा ॥ सांभल जो सहुको तुमे; चितराखीजे ठाम ॥ परख करो जिन धर्मनी. सीझे आतमकाम ॥ १ ॥ भगवंतनें चुक्या कहे. दान दयादिइ उठाय ॥ विनें वियावच बंदणा. कुडकुहेतलगाय ॥ २ ॥ ठाम ठाम बहु सूत्रमे. दान दया अधिकार ॥ तिणउपर निरणय करू. सांभलजो नरनार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ जगतगुरू त्रिस

लानंदनवीर ॥ एदेसी ॥ आचारांग श्रुत खंध पहिलें कह्योजी. नवमा अध्ययनमे होय ॥ भगवंत किंचित पापकीयो नहीजी. चौथा उदेसा लेवो जोय ॥ चतुरन र सुणज्यो ज्ञानबिचार ॥ १ ॥ एटेक ॥ बावीसपरी सां आयाथकांजी, मेरुआडिंग जिमथाय ॥ भगवंत च लीया चूक्या नहीजी, जोवो आचारांगमाय ॥ च० ॥ २ ॥ दोपतो लाग्या थकाजी, बिराधक होयजाय ॥ प्रायश्चित लीया बिनाजी, केवल ज्ञान किम थाय ॥ च० ॥ ३ ॥ भगवती सूत्रमे कह्योजी, पनरमा सत करेमाय ॥ केवल ज्ञान उपनापछे वीर कह्योजी ॥ सुणो गोयमचितलाय ॥ च० ॥ ४ ॥ दया अनुकंपारें वासतेजी, गौसालाने दियोरे बचाय ॥ च्यार ज्ञान तणाधणीजी, अनुकंपा करीजिणराय ॥ च० ॥ ५ ॥ छ दमस्त साध चूकापछेजी, पूछे भगवंतने जाय ॥ केवल ज्ञानी सांसो भाजदेजी, प्रायश्चित देवे जिणराय ॥ च० ॥ ६ ॥ दया अनुकंपा सूत्रमे कहीजी, सांभलजो चितलाय ॥ सावज अनुकंपा चाली नहीजी, किणही सूत्ररे माय ॥ च० ॥ ७ ॥ उपासगदसामे कह्योजी, आठमा अध्ययनरेमांय ॥ श्रेणक ढंढेरो फेरीयोजी; जीवमारण नही थाय ॥ च० ॥ ८ ॥ जीवबचायां पाप हुवे तो, भगवंत बरजता जांण ॥ भगवंत वरज्यो को नहीजी, मूरख करे कुडीताण ॥ च० ॥ ९ ॥ च्यार वोल राजानें कह्याजी, कथाकाररे मांहिं ॥ दान समा

इ नवकारसीजी, कषाइ जैंसामारण नहीथाय ॥ च० ॥ १० ॥ भगवती सतगसातमेजी, छठा उदेसारे मांहिं ॥ जीवदया अनुकंपा कीयाजी, साता बेदनी पुन बंधाय ॥ च० ॥ ११ ॥ दया अनुकंपा कीथांथकाजी, बंधे पुन्यराठाठ ॥ पापतो बंध कह्यो नहीजी, किणहीसूत्ररो पाठ ॥ च० ॥ १२ ॥ ज्ञाता पहिले अध्येन मेजी, अनुकंपा कहीसार ॥ गजभवसुसलोराखियोजी, श्रेणकघर अवतार ॥ च० ॥ १३ ॥ दया अनुकंपा करताथकांजी, पामीये सुखराथाट ॥ हाथी घोडा रथपामीयेजी, जिहाबहुली कमाई पाट ॥ च० ॥ १४ ॥ ज्ञाता सूत्रमे कह्योजी, पाचमा अध्येनरेमाय ॥ थावचा सुदरसण सुखदेवनेजी; कह्यो बिनें मूलधर्म थाय ॥ च० ॥ १५ ॥ बिनयतणादोय भेदछेजी, आगार नें अणगार ॥ च्यार प्रकारे संघनोजी, बिनो क्रिया खेवापार ॥ च० ॥ १६ ॥ बिनोकरे सुधभावसुंजी, कर्मारीकोडखपाय ॥ जिनजीरा बचन अराधनेजी, मुक्तणा फलपाय ॥ च० ॥ १७ ॥ भगवती सतक बारमेजी पहले उदेसे मांहिं ॥ उतफलाने पोखलीतणोजी, बिने कियोसाम्हीलाय ॥ च० ॥ १८ ॥ बंदना कीधी भावसेजी, दीधो आसन ताय ॥ पोखली उतफलाने पूछेजी, बंदे संखेन ते जाय ॥ च० ॥ १९ ॥ संखेन बंदन कीयापछेजी, दुजाने ऊपन्यो द्वेष ॥ भगवंतकने जायनेजी, संखने निंदस्या विशेष ॥ च० ॥ २० ॥

भगवंत कहे निंदोंमतीजी, संखरा चोखाभाव ॥ संखने सहुखिमावीयाजी, श्रावककरसूधभाव ॥ च० ॥ २१ ॥
॥ वंदनमे जो पापथोजी, तो जिनवर बर्जताजाण ॥ जिनवर बरज्या को नहीजी, बोलेकूठीबाण ॥ च० ॥ २२ ॥ भगवती सतग ग्यारमेजी, बारमा उदेसा रेमाय ॥ असोम पुत्र आय बंदना करीजी, बीजा श्रावककांइ चितलाय ॥ च० ॥ २३ ॥ उववाई सूत्र० मे कह्योजी, अमर सिष्यसातसे जाण ॥ नमोथुणरापाठ सुंजो, बंदणा करी प्रमाण ॥ च ॥ २४ ॥ नसीत सूत्र मे कह्योजी, अष्टम उदेसेमाय ॥ न्याति अन्याति स्त्रीभणीजी, रात रख्यां प्रायश्चित थाय ॥ च० ॥
॥ २५ ॥ जिणअर्थेरो निर्णोकरोजी, भोजनस्त्री परिग्र हपास ॥ जाणीने राख्याथकाजी, प्रायश्चितवे चउमा स ॥ च० ॥ २६ ॥ ब्रहत कल्प मांहिं कह्योजी, पहले उदेसे मांहिं ॥ अस्त्रीरहे जिणजायगांजी, साधुनरहै तिहां जाय ॥ च० ॥ २७ ॥ पुरुष रहे जिणजायगा जी, आरज्यांनरहे काय ॥ ब्रहत कल्प मांहिं कह्योजी, पहला उदेसाजोय ॥ च० ॥ २८ ॥ भग वती सूत्र मांहिं कह्योजी, पनरमासतकमाय ॥ गोसा लो ग्रहस्थेपणेजी, रह्या जिनपासे आय ॥ च० ॥
२९ ॥ ग्रहस्तीने रखणो नही हुंतोजी, तो भगवंत व र्जताजाण ॥ गोसालो नहीजो मानतोजी, जिनरहते और ठिकाण ॥ च० ॥ ३० ॥ सूयगडांग पहले क

ह्योजी, दूजा अध्येनरेमांय ॥ च्यार बोलसेवे नहीजी, जिनकलपी मुनिराय ॥ च० ॥ ३१ ॥ अडोकिंवाड़ जडे नहीजी, बखाण नही दीराय ॥ तिणापिण बिग ये नहीजी, काचो नही लेवे मुनिराय ॥ च० ॥ ३२ ॥ (ऐसे मुनीजिनकल्प इस आरेमे नही होते अ ब साधू थेवर कलपीहै) जिन कलपीने बरज्यासही जी, थेवरकलपे बरजन कोय ॥ इण मांहें संक्याहुवे तो, दूजोउदेसो जोय ॥ च० ॥ ३३ ॥ ब्रेहतकलप मांहिं कह्योजी, पेहला उदेसामाय ॥ अवंगद्वार क लपे नहीजी, आरज्याने तिनमाह ॥ च० ॥ ३४ ॥ आडो न जडणो साधनेजी, इसोन कह्योतिणमात ॥ आज्ञा लेइ खोलणो कह्योजी, देखो सूत्रसाख्यात ॥ च० ॥ ३५ ॥ आचारांग दुजे कह्योजी, सातमा अध्येनरे माय ॥ग्रहस्ती बार ढक्यो हुवे तो, अज्ञा खोले मुनिराय ॥ च० ॥ ३६ ॥ अज्ञाले बार खोलणोजी, दसवी कालक माय ॥ पंचमा अध्येनमे देखल्योजी, अ ठारमी गाथा थाय ॥ च० ॥ ३७ ॥ आचारांग दुजे कह्योजी, पंचम उदेसे माय ॥ संभोगीसाधआयांथका जी ॥ आहार पाणीदे मुनिराय ॥ च० ॥ ३८ ॥ अ संभोगी साधआयाथकांजी, पाटपाटलादेय संथार ॥ बिनोसांचवे बडा तणोजी, होसी खेवोपार ॥ च० ॥ ॥ ३९ ॥ उत्तराध्येन तेवीसमेजी, केसी गौतम सो जाण ॥ पंचप्रकार तिणादियाजी, बिगवणको हि

त आन ॥ च० ॥ ४० ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलका जी, तीजा सुपनविचार ॥ समाचारी जूई जूईजी, ओलखजो ततसार ॥ च० ॥ ४१ ॥ दसमी काल कमे कह्याजी, तीजा अध्येनमंझार ॥ ग्रहस्तीरे घर बैठताजी, सताईसमो अनाचार ॥ च० ॥ ४२ ॥ ब्रेहत कलप माहें कह्योजी, चोथा उदेसा मांहिं ॥ घरमे वखाण देणो, बरजगया जिनराय ॥ च० ॥ ४३ ॥ जो काम पडीया थकाजी, उन्हा गाथा दे सुणाय ॥ थिरता होतो बखाणदेजी, जो उतरे उणघरमाय, ॥ च० ॥ ४४ ॥ उववाई सूत्रमे कह्योजी, छठछठ पारणो थाय ॥ अंबडने लवध ऊपनीजी, पारणे सो घर जाय ॥ च० ॥ ४५ ॥ सक्र ईसाण इंद्रन्हणीजी, झगडो न्हारीजी थाय ॥ लड लड अपकाया होवेतो, संत कुमार बुझावे आय ॥ च० ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामी पूछा करीजी, सूत्रन्हगोती मांहिं ॥ किण अरथेंसुख पामीयेजी, फुरमावो जिनराय ॥ च० ॥ ४७ ॥ न्हगवंत कहे गौतम सुणोजी, चउविधसंघ सुखकार ॥ हीयेमुयेपतकामीयेजी, सुखनो बहु विस्तार ॥ च० ॥ ४८ ॥ रायप्रसेणी देखलोजी, परदेसी धर्मसु राग ॥ सात हजारे गांवनाजी; कीधाच्यारजुन्हाग ॥ च० ॥ ४९ ॥ एक न्हाग राणयां न्हणीजी, दुजो न्हागखजान ॥ तीजो न्हागज फौजनेजी, चौथे न्हाग दे दान ॥ च० ॥ ५० ॥ कोई तपसीने विप देवेजी, कोई पावे दूधनी

जात, पापकहै दोनो माहेजी ॥ ज्यारीकिण विध मा ने बात ॥ च० ॥ ५१ ॥ कोई सतीने सतावताजी, कोईक बरजे आण ॥ पापकहै दोनो विशेजी, बोले झूठीवाण ॥ च० ॥ ५२ ॥ बारे सूत्र मांहे कह्योजी, श्रीजिनजाण्या सोय ॥ अधिकाउछा जो होवे तो, मिछा मिछुकडंमोय ॥ च० ॥ ५३ ॥ संवत अठारसे गुणा सिमेजी, सहर पिपाडरे मांहिं ॥ ऋषचोथमल प्र सादसेजी, श्रावक गुमानचंद धर्म पाय ॥ च० ॥ ५४ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्य मतीयासे चरचा लिख्यते ॥

सासणनायकादियो उपदेस, धर्मकरो ज्युं मिट जावे क्लेस ॥ ज्ञान दरसन चारित तपभाव, इनकुं आराध्यां भविजन तरणरोडाव ॥ १ ॥ थे जिनजीरा बचनहीये धरोजी, तुमजीवहणीने पूजा काई करो जी ॥ एटेक ॥ सतरे भेदी पूजालेईनाम, षटकायजी बांराकरोगेहाम ॥ इमकिमरीझे श्रीवीतराग, जिके अ ठारे पापराकर बैठाजी त्याग ॥ थे० ॥ २ ॥ पूजा करा वो साधू नामधराय, इसडो अंधेरो नही जिन धर्म माय॥ माहिरी माताने भल कहीजेजीबांझ, दिनदोपहरो कि मथायजी सांझ ॥ थे० ॥ ३ ॥ प्रभूने अंगीरचो फि र गहिणापहिराय, नाटककरोवलीतालबजाय ॥ धामक धेयाकर चावोजी मोख, जिणसांसो पडीयो जावणरो देवलोक ॥ थे० ॥ ४ ॥ प्रभूत्यांगी हुवाजाने भोग ल

गाय, थे खलगुलकीधोजी एकणभाव ॥ भोला न जा
णे गाडरीप्रवाय, सीखदीधा चोर दंडेजी सहाय ॥ थे०
॥ ५ ॥ सतरे प्रकारे करीजीवानेराख, ए पूजा कही
सूत्रनीसाख ॥ भावसुं पूजो श्रीअरिहंत देव, सत्य वा
सील चंदनतुं अगरज खेव ॥ थे० ॥ ६ ॥ आचारांग
प्रश्नव्याकरण पाठ, दया पालो ज्यूं बंधे पुनराजीथा
ट ॥ साठ नाम कह्या दयारा सोय, जिनमे जीव रि
ख्याते पूजा लेवोजोय ॥ थे० ॥ ७ ॥ महणोमहणो
बाणी तो श्री जिनराज, थे हिंस्या धरम कर काईकीयो
जी अकाज ॥ तीर्थंकर त्यो तीनकालरादेख, सूत्र आ
चारांगमे बाणीजी एक ॥ थे० ॥ ८ ॥ दयारा सागर
कह्या श्री भगवान, थे जीव हणीने कोई तामोजी तां
न ॥ फूलचढावो फिरपाणी ढोल, धर्म बतावो थारे घटमे
जी घोल ॥ थे० ॥ ९ ॥ छकायतो कूटोकर मानोजी
धर्म, इण बातासुं बंधे जादाजीकर्म ॥ आश्रव कह्या प्र
सण व्याकरण माय ॥ मंदी बुद्धी कह्या श्री जिन
राय ॥ १० ॥ नवोप्रासाद करावेजी कोय, ज्याने सु
रगबारमो बतावेजीसोय ॥ आरंभ करताजाये मोख
सरग, तो चक्री केशव क्यों जावेजीनरग ॥ थे० ॥ ११
॥ उज्जवणा करिने टलावोजी पाप, वलिरोकडदाम
दिरावोजी आप ॥ नाम लेई त्यो प्रभू देवलठोड,
वे त्यागी थया गया मोख करम तोड ॥ थे० ॥ १२ ॥
जगमे तार्ण तो हुवा बीतराग, थे करो सो ओकुण

सोजी माग ॥ निरवद्य मारग दाख्यो जिनराज, इण ने अराध्यां सरे आतमकाज ॥ थे० ॥ १३ ॥ बिना भरतार चोडे सुवे नार, तग बांधे मिलीया चौकी जीदार ॥ जोवो इणरी किम रहै सर्म, थे जविहणी ने काई कर रह्या धर्म ॥ थे० ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ तेरेपंथी (भीषम पंथी) आम्नासे चरचा लिख्यते

इण आरासे निन्हव बिगडीया, दुषम पंचम काळेजी, बोगा लोकाने भरमावे मूरख मांझ्यो जाळेजी, निन्हव जाणो इण चलगतसुं ॥ १ ॥ एटेक ॥ दुष्टांरी आसरधा देखो, साधपणो दीयोखोयजी ॥ कूडो मारग काढ्यो कुमती, दान दया उठायादोयजी ॥ नि० ॥ २ ॥ साधपणारो सांगजधार्‍यो, पापगिने छुडायाजीवजी ॥ पंचमाहाव्रत कुण पळीया, ज्याने नहीं दयारी नीवजी ॥ नि० ॥ ३ ॥ गायारे गोकुल बाडामे, आण पहुंती आगजी ॥ काढे जिणने पाप बतावे, माठा ज्यारा भागाजी ॥ नि० ॥ ४ ॥ काढण वाळो धर्मजजाणे, तो लागे पाप अपारेजी ॥ या सरधाने साधुकहावे, ते जिन आज्ञा बारेजी ॥ नि० ॥ ५ ॥ भरीया भाररो गाडो आवे, मारगमे सूतो बालजी ॥ दया देख कोई लेवे मानव, तिणने पाप कहै चंडालजी ॥ नि० ॥ ६ ॥ तीमहला ऊपरसु बालक पडतो, कोई झेल लेवे ते देखजी ॥ झेले जिणने पाप बतावे, ए साध नहींछे भेषजी ॥ नि० ॥

७ ॥ कोई किणरोग लोम सोसे, कोई बरजे धर्म जा
णजी ॥ दोनो जणानेबताके; एदुष्टरा अहिनाणजी ॥ नि
८ ॥ कोईक बेठयोकीमीया किचडे, कोई बरजे पुरुष
सुज्ञानजी ॥ दोनुंजणाने पाप बतावे, मूरख घोर अ
ज्ञानजी ॥ नि० ॥ ९ ॥ कोईक ग्राम बालणने ढुंकयो,
कोई बरजे दया भंडारजी ॥ दोनु जणाने पाप बता
वे, तिके निश्चे नहीं अणगारजी ॥ नि० ॥ १० ॥
कोई सुपातर दानजु देवे, कोई बरजे अज्ञानजी ॥
दोनोजणाने पाप बतावे; आ पाखंडीयानी बाणजी
॥ नि० ॥ ११ ॥ कोई किणहीनेकू वामे नांखे, को
ई बरजे जाणी धर्मजी ॥ दोनुजणाने पाप बतावे,
ते मूरख बंधे कर्मजी ॥ नि० ॥ १२ ॥ कोई ऊबकेर
कोई ऊटके मारे, मुसलमान रजपुतजी ॥ प्राण बचा
यारो पाप बतावे, ज्यादिया माठी गतरा सूतजी
॥ नि० ॥ १३ ॥ दान दयामे पाप बतावे, निन्हव
नीच करमरा पुतजी ॥ निन्हव सरधा घटमे पैठी,
जाणे लाग्यो भूतजी ॥ नि० ॥ १४ ॥ कोई सतीरो
सीलज खंडे, कोई पुन्यवंत राखे पालजी ॥ दोनुज
णाने पाप बतावे, महा मिथ्यातमे लालजी ॥ नि०
॥ १५ ॥ कोईक वेस्याने घर देवे, कोई देवे पोसाने
सालजी ॥ दोनु जणाने पाप बतावे, ज्यारी सरधा
हुई आलमालजी ॥ नि० ॥ १६ ॥ कोई भूखाने
माठा मारे, कोई रोटी दे प्यावे गांसजी ॥ दोनु जणाने

पाप बतावे, ज्यारो हुवो ज्ञानरो नासजी ॥ नि० ॥ १७ ॥ मास पारणे कोई जेहरज पावे, कोई पावे दुधनीबातजी ॥ दोनुंजणाने पाप बतावे, देखोविकलारी बातजी ॥ नि० ॥ १८ ॥ गोसालाने बीरबचायो, सूत्र भगोतीरो पाठजी ॥ निन्हव भगवंतने भूला जाणे, ज्यारी पुन्याई घाटजी ॥ नि० ॥ २० ॥ बीर कदे नही होवे भोला, नही लगावे दोषजी ॥ ज्या पुरुषाने दोष बतावे ॥ करणी ज्यारी फोकजी ॥ नि० ॥ ॥ १९ ॥ भगवंतने पिण भारी करमा, लाग्यो जाणे पापजी ॥ मनरा लाडु खावे मूरख, माठो मारग थापजी ॥ नि० ॥ २१ ॥ बुध तो बुडगई निन्हवारी, जिनजीने दीयो आलजी ॥ तिके गुरसेंती कहो किम बुझे, धुर दया बिनाने बालजी ॥ नि० ॥ २२ ॥ हीरा माहें हुंता भेला, वाने दीया कंकरा टालजी ॥ रीसां बलता आवगुण बोले, वांधे गुरासुं चालजी ॥ नि० ॥ २३ ॥ भांगल कुटल कर कर भेला. सामा मांडे सींगजी ॥ बेसरमाने भारी करमा ॥ होय बैठावा बाराधींगजी ॥ नि० ॥ २४ ॥ उर बोलणने नही कोई काचा. जमाली ज्यूं जोइजी ॥ भगवंत आगे मूखा भाख्यो, हुं केवल ज्ञानी होईजी ॥ नि० ॥ २५ ॥ अरिहंत आगे कूठज बोल्या, तो हिवडास्यूं बातजी ॥ दान दयामे पाप बतायो. आ बिकलपणेकी बातजी ॥ नि० ॥ २६ ॥ दान दयारो कोई निरणो पूछे,

तरे बोले वली न बोलजी ॥ पूछ्यां उत्तर देवे नही पाछो, कोई कुहेत देवे मेलजी ॥ नि० ॥ २७ ॥ चित लगाय चहु टामे चाले, गातीरी देवे गाठजी नीची गरदन चाले निन्हव, पिण घटमे घणोंज आंटजी ॥ नि० ॥ २८ ॥ दासका भरतां धव धव चाले, जठे ईरज्या निरतो जोयजी ॥ घणा कोसारी मजल कर जावे, कपटी श्वान तणी परे जोयजी ॥ नि० ॥ २९ ॥ फुंक फुंकने पावजमेले, बंदरने जिम न्हारजी ॥ तिमझीणी चाल चहुटामे चाले, कपटी चले कपट आचारजी ॥ नि० ॥ ३० ॥ सूयगडांगे तेरमे अध्येने, अरिहंत भाख्यो एमजी ॥ निन्हव निकलसी साधाम्हांसु; ए परतक्ष दीठीजेमजी ॥ नि० ॥ ३१ ॥ मनमे जाणे म्हे मारग काढ्यो, हुवारहे बडा निवजी ॥ अज्ञामेटी श्री जिनवरकी, दई दुरगतिकी नीवजी ॥ नि० ॥ ३२ चोरासी मांहिं चाल्या जासी. दान दया उठाई दोयजी ॥ साधांरी पिण निंद्यामांडी, निन्हव दीयो जमारो खोयजी ॥ नि० ॥ ३३ ॥ दान दयारी सरधा राखो, जिन आज्ञा तत सारजी ॥ निन्हवा केरी श्रद्धा त्यागो, जिम होय सुध आचारजी ॥ नि० ॥ ३४ ॥ ए सांभलने निन्हव सरधा, नही माने पुन्यवंत प्राणीजी ॥ आ सुणने सरधा नीकी राखो, ज्यारो होसी परम कल्याणजी ॥ नि० ॥ ३५ ॥ ए बतीसी नही कोई बानी. नही इणमे कांई धेख

जी ॥ जोकिणरे मनमे हुवे सकां, तो अरू ब रू ल्यो देखजी ॥ नि० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ मिश्र चरचा लिख्यते ॥

पुन्य जोगे तो नर भव पायो, साध श्रावक व्रत धारीरे ॥ नव बोलारो निर्णयकीजो चतुर केई नर नारीरे ॥ १ ॥ हिंस्याधर्म थाप्पो ने मिश्र उथाप्पो, ज्यारी अकल गई दपटाईरे ॥ भोला लोकांने भरममे पाडे, कूडा कुहेत लगाईरे ॥ २ ॥ हिंस्यां धर्म थाप्पोने मिश्र उथाप्पो ॥ एटेक ॥ नव बोलसेती पुन्य परूप्पो, दस परकारे दानोरे ॥ उन्नीस बोल ए तीजा आगममे, भाख गया भगवानोरे ॥ हिं० ॥ ३ ॥ धर्म दानमे तो धर्म बतावे, तिणरी साधकरे प्रसंस्यारे ॥ आठ दानरी न करे प्रसंस्या, तिणमे थोडी वा बहु हिंस्यारे ॥ हिं० ॥ ४ ॥ अधर्म दान तो बेस्यादिकनो, ते तो लगाडे पापोरे ॥ स्त्रीसेवन बहु जीव हिंस्या तो, अधर्म ए थाप्पोरे ॥ हिं० ॥ ५ ॥ एक तो सावद्य बले दूजो निरवद्य, दोनुंदान ज जाणीरे ॥ दोनु मांहिं एकलो धर्म बतायो, आपाखंडीयारी बाणीरे ॥ हिं० ॥ ६ ॥ निरवद्य दान तो निर्ग्रंथ केरो, तिणमे नहीं कांई हिंस्यारे ॥ करण करावण न अनुमोदे, तिणरी साधकरे परसंस्यारे ॥ हिं० ॥ ७ ॥ सावज दान संसारी जीवांरो, जिनमे पुन्य पापछे बेईरे ॥ चतुर हुवे सो विचारी ले

ज्यो, पछे मिश्ररा भागाछे केईरे ॥ हिं० ॥ ८ ॥ अनु
कंपा आदि आठ दानमे, दोई बात नही छानीरे ॥
पुन्य पाप थोडाने बहु तो, ते विध जाणे ज्ञानीरे ॥
॥ हिं० ॥ ९ ॥ श्रावक छठरप भात संभाले, छकायच
वदे नेमोरे ॥ आगार राखे तो रांध जिमावे, तो हिं
स्या गिणे नही केमोरे ॥ हिं० ॥ १० ॥ कोई कहे
मिश्रकठे चाल्यो, ते सूणजो सूत्रनी साखोरे ॥ मि
श्र ठिकाणे बहु सूत्रामे, श्री जिनवरने भाख्योरे ॥
हिं० ॥ ११ ॥ मिश्रदान शत्रुकारज केरा, सूयगडांग
सूतखंध दूजेरे ॥ पंचम अध्येन बतीसमी गाथा, ते
देखी चतुर नर बुझेरे ॥ हिं० ॥ १२ ॥ सतुकारनो
साधुने पूछे, देणवालो कोई आणीरे ॥ पुन्यछे के पा
पछे इम भाषे, साधु मौन करे मिश्र जाणीरे ॥ हिं०
॥ १३ ॥ जे निषेधे तो अंत्राय लागे, पुन्य कहे तो
व्रत भांगेरे ॥ त्रसथावररी होवे हिंस्या, तिणरो पा
प साधूने लागेरे ॥ हिं० ॥ १४ ॥ एकंत धर्म ठिका
णे बोले; पापरो कर्म निषेध्योरे ॥ मिश्र ठिकाणे कि
म नही बोले, इहां पुन्य पापना बंधोरे ॥ हिं० ॥ १५ ॥
सूयगडांग इग्यारमे अध्येनें, मोख मारग साख्या
तोरे ॥ संक्या होवेतो निचिंता देखो, कोई नही मुं
डारी बातारे ॥ हिं० ॥ १६ ॥ धरमी अधरमी धर्मा
धर्मी, तीन करण तीने ठाणेरे ॥ तिण ठामे फल
कह्यो मिश्रनो, मूरख नमाने जाणीरे ॥ हिं० ॥ १७ ॥

मिश्रगुणठाणो तीजो चाल्यो, मिश्र चाल्यो वले योगोरे ॥ ए दोनु पाठ समावांगमे चाल्या, ते सह्व जो जो जे लोगोरे ॥ हिं० ॥ १८ ॥ सचित अचित मिश्र द्रव्य तीन, नाम राजग्रही बोलाईरे ॥ सूत्र जगो तीरो पाठ उघाडो, बिन जाण्या खबरनकाईरे ॥ हिं० ॥ १९ ॥ आराधणी बिराधणी मिश्रजाण्या, पाठ पन्नवणामे चाल्योरे ॥ साक्षात सूत्रनी वातनमानो, मत ऊठो जिण झाल्योरे ॥ हिं० ॥ २० ॥ श्री वीर जिणंदने सुरियाने पुछ्यो, आप कहो तो नाटक पारूंहो ॥ थारा गोत्मादिक साधाने, म्हारी ऋद्धि दिखाडुं हो ॥ हिं० ॥ २१ ॥ आज्ञा न दीधी नकारो न कीधो, मिश्रजाण मुनराखीरे ॥ अर्थमे ऊघाडो देखो, रायप्रसेणीछे साखीरे ॥ हिं० ॥ २२ ॥ दसमीकालक मे मिश्र पाणी; कांई उनो कांई काचोरे ॥ पंचम अध्येन आहार मिश्रते, सूत्रमे जाणो थे साचोरे ॥ हिं० ॥ २३ ॥ दोष बयालिसमे बेठामे, दोय मिश्र तिहां देखोरे ॥ इणरो निरणो थारे हात न लागे, तिणसुं मांडोरागने द्वषोरे ॥ हिं० ॥ २४ ॥ इत्यादिक इम सूत्रमेछे, मिश्रतणा घणा बोलोरे ॥ इण बातरो म्हाने इचरज आवे, थे अंतर पाठ क्यों न खोलोरे ॥ हिं० ॥ २५ ॥ जिन बचनाकी श्रद्धा न राखे, तिणसुं उलटो पड गयो आटोरे ॥ इण श्रद्धामे नही निकले दाणो, थे कांई फोकटछाणोरे ॥ हिं० ॥ २६ ॥ ध

रम पक्षामे साध मुनिसर, मिथ्याती अधर्ममे घा
ल्यारे ॥ मिश्रपक्षमे श्रावक कहीया, ए तीन पाठ दू
जे अंग चाल्यारे ॥ हिं० ॥ २७ ॥ पुन्य ठिकाणे पुन्य
परूपो, पाप ठिकाणे पापोरे ॥ मिश्रठिकाणे मौनज
राखो, इम सरधा सुधथापोरे ॥ हिं० ॥ २८ ॥ शिव
धरमी तो धर्म बतावे, ते पंचथावर नही जाणेरे ॥
केईक जैनी हुवाज्यारा जोडायत, ए दोनो बात
मिली एकठाणेरे ॥ हिं० ॥ २९ ॥ पहले श्रावक केई
साधारा धरमी, पाछे निन्हवारे पासोरे ॥ जाईने हुवा
हिंस्या धरमी, श्रद्धारो कतीयो कपासोरे ॥ हिं० ॥
३० ॥ कोईक नूखाने भाठामारे, कोई देवे बासने
बाटीरे ॥ दोनोने एकंत पाप बतावे, ज्यारी अकल
किहाने नांठीरे ॥ हिं० ॥ ३१ ॥ दया धर्मरी श्रद्धामी
धी, सूत्र परखकर जाणोरे ॥ कुमी बातरो पक्षन
करणो, पक्ष धर्मरो मानोरे ॥ हिं० ॥ ३२ ॥ कोई
तो भोजनरांध जिमावे, कोई सूखडी देवे सुज्ञानीरे
॥ पुन्य बिशेषरो निरणो कीजो, चतुर हीयामे जा
णीरे ॥ हिं० ॥ ३३ ॥ मूरख लोक हुवा बसज्यारे,
बोले जिम पढायासूवारे ॥ जाणपणारी जुगतन जाणे,
निंदक साधाराहूवारे ॥ हिं० ॥ ३४ ॥ हिंस्या अहिं
स्या कर दई सरखी, दान अदानज सरीखोरे ॥ कुडोम
त ओ परतखदीसे, हाथ कंगण स्यूं अरीसोरे ॥
हिं० ॥ ३५ ॥ इम नाणी मिसरको मति उथापो, घ

णा सूत्रनी भाखोरे ॥ पुन्य पाप पिण उलखीखलीजो, निरवद बीतराग भाखोरे ॥ हिं० ॥ ३६ ॥ निन्हवण एकंत कूठ बतावे, नव बोलांमे पापोरे ॥ ज्यांरी श्रद्धा सुणने अलगा रहिजो, सुधकीजो घट आपोरे ॥ हिं० ॥ ३७ ॥ जिणमे कोई पडोलारे भाई, ते जाणो अपछंदारे ॥ घोर मिथ्यात ने दुरगति गामी, ते तो निन्हवांरा बंदारे ॥ हिं० ॥ ॥३८ ॥ सतरे बोलमे सगले ठामे, पुन्य पाप दोय जाणीरे ॥ श्रावक गुणवंत ब्रतमे घाल्या, समझे चतुर सुग्यानीरे ॥ हिं० ॥ ३९ ॥ आरंभरी तो थे हिंस्या जाणो, अनुकंपा ते दानोरे ॥ इम सांभलजो थे उत्तम प्राणी, लीजो मिश्र ठिकाणों मानीरे ॥ हिं० ॥ ४० ॥ त्रसथावरना जीव विणासे, ते हिंस्या निश्चेकर भाखोरे ॥ सगला सूत्रना अर्थ विचारो, श्रद्धासाची राखोरे ॥ हिं० ॥ ४१ ॥ दान दयासुं तो शिवपद होसी, इणसे सुख अपारोरे ॥ साधांरी तो सुणजो बांणी, उत्तम करजो विचारोरे ॥ हिं० ॥ ४२ ॥ आगम पाठ अरथमे देखी, सिझाय जोमी इम जोयरे ॥ अधिको उछो भाख्या होवे तो, मिछामि दुकडं मोयरे ॥ हिं० ॥ ४३ ॥ सात सूत्रनी साखछे इणने, घणा सूत्रनो समासोरे ॥ श्री बीतरागना वेणसुणीने, श्रद्धामे नकरोसां सासोरे ॥ हिं० ॥ ४४ ॥ हिंस्यारो पाप अनुकंपारो पुन, आ श्रद्धा छे सूधीरे ॥ हिंस्यागिणे नही त्रस थावररी, अक्क

ल ज्यारी मुंधीरे ॥ हिं० ॥ ४५ ॥ चर्चा सिझाय कही जुक्तीसुं, सोझतसहर मंझारेरे ॥ पुज्य श्री जैमलजी प्रसादे, ऋषरायचंद पर उपगारेरे ॥ हिं० ॥ ४६ ॥ इणरी तो परतीतजु राखो, जिम होसी सिव पुरवासोरे ॥ संबत अठारेसे बर्ष तेतीसे, कही चैत्रजु मासोरे ॥ हि० ॥ ४७ ॥ साची श्रद्धामे सेठो रहिज्यो, खोटी श्रद्धा द्यो टारीरे ॥ सूत्र अर्थरो निर्णौ कारिने, लेजो सुरत बिचारीरे ॥ हिं० ॥ ४८ ॥ इति भीषम पंथी वा तेरा पंथी जो संवत १८१८ के मे रघुनाथ साधूजीका चेला भीषम तिसने तेरा पंथी मत चलाया तिन को निन्हव नामसे कहिवर चरचा करीहै ते मिश्र चरचा संपूर्णम्.॥

॥ अथ चेइय मतीयांसें चरचा लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ श्रावक धर्म करो सुखदाई ॥ एदेसी ॥

दया भगोतीछे सुखदाई, मुक्त पुरीकी साईजी ॥ साठ नाम दयारा चाल्या, प्रश्न व्याकरण मांहिं जी ॥ १ ॥ हिंस्या धर्म मिथ्यामत बाणी ॥ एटेक ॥ हिंस्या आद अनादरीसेधी, बछरो चूंघण ध्यावेजी ॥ गेटा मोटा करकर इरखे, गुरबिन ज्ञान न पावेजी ॥ हिं० ॥ २ ॥ धर्म अपूर्व करतां दोहिरो, इंद्रीया स्वाद घटावेजी ॥ हिंस्या करता धामक धेसा, भोलाने मन भावेजी ॥ हिं० ॥ ३ ॥ धर्म बतावे सुरग बारमो, नवो प्रासाद करावेजी ॥ इण वाता देव लोक सि

धावे, तो धनवंत नरक नजावेजी ॥ हिं० ॥ ४ ॥ ला खा कोडांरो द्रव्य लगावे, भोलानर बहिकावेजी ॥तीका चूरण भाषा दिखावे, गोलागूंथ चलावेजी ॥ हिं० ॥ ५ ॥ एक सूत्रनी बात नही मानोतो, सगला सू त्र देखोजी ॥ हिंस्या करकर कुगत पोहोता, तिहांमा रतणो नही लेखोजी ॥ हिं० ॥ ६ ॥ जिण सासणनी नींव दया ऊपर, खोजी हुवे तिको पावेजी ॥ हिंस्या मांहिं धर्म बतावे, जलमथीया घृत न आवेजी ॥ हिं० ॥ ७ ॥ जिण आलाते पापना थानक ॥ महानसीत पाटउथाप्याजी, देवरा भोजग पेट भरीया, हीन अ चारि थाप्याजी ॥ हिं० ॥ ८ ॥ देखादेखी बाबर प डीया, अंधाआगल अंधोजी ॥ पुन्यरा थाट दयासु बंधसी, नही हिंस्यासुं संधोजी ॥ हिं० ॥ ९ ॥ पंच महाव्रत साधुजीलीना, दूर भांगा इक्यासीजी ॥ ते हिं स्याने रूडी जाणे, तो वरतमे होय विनासजी ॥ हिं० ॥ १० ॥ देसथकी श्रावक व्रतपाले, हिंस्याकरे घर बैठोजी ॥ जो हिंस्याने आछी जाणे तो, समकतमे न ही सेठोजी ॥ हिं० ॥ ११ ॥ हिंस्या मांहिं धरम प रूपे, ए अनार्जनी वाणीजी ॥ आचारांग सूयगडांग मे सुणता, नरकतणी सेनाणीजी ॥ हिं० ॥ १२ ॥ ग्याता अंगे द्रोपदा पूंजी, परणेवाने वारेजी ॥ जो द्रोपदा श्राविका हुवे तो, पांच धणी किम धारेजी ॥ हिं० ॥ १३ ॥ तेहने समकत किण विध आवे,

नियाणो नही पुंगोजी ॥ मदन मास पचावे कान्हो, श्रावक आणे सूंगोजी ॥ हिं० ॥ १४ ॥ सुरसुरियान्ने प्रतिमा पूजी, राजबैसणने ठाणोजी ॥ बीजीवीरीया पूजी नही दीसे, बीजे देव इम जाणोजी ॥ हिं० ॥ १५॥ आणंदने आलावे भाखी, प्रथही चैतन बंदेजी ॥ साधु होयने निलियाजमाली, ते आणंद नही बंदेजी ॥ हिं० ॥ १६ ॥ अरिहंतने अरिहंत साधांने, अंबड बंदे धर प्रेमोजी; चेइय अर्थ प्रतिमाने वांदेतो माधुने बांधेसे केमोजी ॥ हिं० ॥ १७ ॥ पर मंदिर होनुने लेखा, साधूने जाय जुहारोजी ॥ प्रतमाने दोषण स्यूं लाग्यो, ते पूजंताने बारोजी ॥ हिं० ॥ १८ ॥ जंघा विद्या चारण बांदता, केवल ज्ञानके ताईजी ॥ बिन आलोया बिराधक भाख्या, मानुषोत्र चैत नाहीजी ॥ हिं० ॥ १९ ॥ चमर इंद्रने अधिकारे चरचा, तिहां तुम प्रतिमा जाणोजी ॥ प्रतिमा तो सुर लोकमे हुंती, पिण बीर वचाया प्राणोजी ॥ हिं० ॥ २० ॥ अरिहंत चेइय साधुनो सरणो, तिहां तुम आटोआणोजी ॥ चेइय शब्द छदमस्त जिनेश्वर, तीजो शब्द एम पिछाणोजी ॥ हिं० ॥ २१ ॥ राजा नगरादिक सिणगास्या, सैन्यासुं परवरीयाजी ॥ जिण आरंभमे धरम बतावे, तो लागे सावद क्रिरीयाजी ॥ हिं० ॥ २२ ॥ मान वडाई कारण कीधा, ऋद्धिवंत बिधकर गर्जेजी ॥ संसारयानो बांदो जाणी, भगवंतते नही

वरजेजी ॥ हिं० ॥ २३ ॥ वांदणनी अज्ञा दीधी, तिहां तुम धर्म पिछाणोजी ॥ तीखुत्तो गुण वंदणा कीधी, भावे सुणो वखाणोजी ॥ हिं० ॥ २४ ॥ सुरियाभने नाटकनी वरीया, भगवंत मौंनज कीधीजी ॥ वांदवा कार्ण अज्ञामागी, भगवंत हरखेदीधीजी ॥ हिं० ॥ २५ ॥ तीर्थंकरने घरमे बैठाणे, साधु न वांदे कोईजी ॥ तो साधु प्रतिमा किम वंदे, अतिसे एक होईजी ॥ हिं० ॥ २६ ॥ चामर छत्र सिंहासणछाजे; भगवंत आप विराजेजी ॥ भगवंतरे मूरछा नही कांई, देवतणी चतुराई साजेजी ॥ हिं० ॥ २७ ॥ बीजो साधु इण बिधसेवे, करमांसुं लीपावेजी ॥ भगवंतरे इरीया वहीकिरीया, तीजे समे खपावेजी ॥ हिं० ॥ २८ ॥ गोसालो निंद्याकर बोल्यो, भगवंत ऋधि किम मानोजी ॥ साधकहे भगवंत बीतरागी, तुं घरमरो मरम न जाणेजी ॥ हिं० ॥ २९ ॥ गौतमने पाखंडी बोल्या, थे सूध ब्रत नही पालोजी ॥ ऊठो बेठो हालो चालो, थे पाप किसी बिध टालोजी ॥ हिं० ॥ ३० ॥ म्हे साधु सूधा आचारी, करां छकायानो पालोजी ॥ थांरी कहणी थेइज मूरख, बिरत बिनाछे बोलोजी ॥ हिं० ॥ ३१ ॥ च्यार निखेपा सूत्रे चाल्या, भावबिना किम मानोजी ॥ तीन बोलमे गुण नही लाधे; भाव मिल्या परधानोजी ॥ हिं० ॥ ३२ ॥ सूत्रमे चरचा बहुली चाली, कहता लागे बारोजी ॥ हलुकरमी हिं

हनो खेवा पारोजी, हिंस्याधर्म मिथ्या मत बाणी ॥ हिं० ॥ २३ ॥ इति चेईय मतीयांसें चरचा संपूर्णम्

॥ अथ सामाईक सूत्रपाठके शद्वार्थ लिख्यते ॥

॥ अथ बंदन नमस्कार करनेका पाठ अर्थः (तिखुत्तो) तीनबार [आयाहिणं] आदक्षिणतः एतले जीमणा पासाथकी प्रारंभीने (पयाहिणं) प्रदक्षिणा प्रते (करीकरीत्ता) करीकरीने (बंदामि) वादूंछुं पगें लागुंछु (नमंसामी) मस्तक नमाडीने नमस्कारकरूंछुं (सक्कारेमि) सत्कार देवुंछुं (सम्माणेमि) सन्मान देवुंछुं (कल्लाणं) कल्याण कारी [मंगलं] मंगलकारी ॥ देवयं ॥ धर्मदेव (चेईयं) छकायना जीवाने सुखदायक एहवा ज्ञानवंत प्रते [पज्जुवासामि) पर्युंपासुछुं एतले मन बचन कायाये करीने सेवा करूंछुं (मत्थएण बंदामि) मस्तके करी वांदुछुं ॥ १॥ अथ रस्तेके चलेनेकी क्रियाका पाठ अर्थः (इछाकारेण) तुम्हारी इछा पूर्वक [संदिसह] आज्ञा करोतो (भगवन) हे महाभाग्य ग्यानवंत (इरिया वहियं) चलवानो जे मार्ग ते माहे थई एहवी जे जीव बाधादिक सपाप क्रिया ते थकी हुं (पडिक्कमामि पडिक्कमु निवर्तुं इहां गुरु कहे (पडिक्कमह) पडिक्कमो निवर्तो पाप टालो तिवारे सिष्यकहे (इछं) प्रमाणछे हुं पिण (इछामि) इछुंछुं जे [पडिक्कमिउ] पाप कर्मसुं निवर्तन वास्ते (इरिया) रस्ता मांहिं (वहियाए) चलता (विराह

णाए) दुखदीनोहोए (गमणागमणे) जावाताने आ
वतां [पाण] प्राणी जीव (कमणे) पगे करी चां
प्या होय (बीय) बीजने [कमणे] पगें करी चां
प्या होय [हरियक्कमणे] नील वर्ण वाली बनस्प
ती पगेकर चांपी होय (उसा) सूक्ष्म अप्पकाय
आकाससे पडेते [उतिंग] कीमीयाना नागरां (प
णग) पाचवर्णनी नीलण फूलण [दग] पाणी
(मट्टी) काची माटी ' मकडा ' कोलकातण मर्कट
' संताणा ' जालो पाडते जीव मर्कटना संताण ' सं
कमणे ' एसर्वने पगेकरी पीड्या तथा मसल्या ' जे '
जे कोई ' मे ' मे पोते ' जीव ' जीवने ' बिरादिया '
बिराध्या होय दुख दीनो होय ' एगिंदिया ' जेहने स
रीर रूपि एकज इंद्री होय ते पृथ्वी पाणी अग्नि वायु
वनस्पतीना जीव ' बेइंदिया ' सरीर तथा मुख दोय
इंद्रीवाला जे संख सीप गंडोला अलसीया एहवा
जेहने पग न होय ते बेइंद्री ' तेइंदिया तीन ' इंद्रीवाला
शरीर मुख नाक होय ते कुंथुवा जूं लीख माकड़ कीडी
' चउरिंदिया ' च्यार इंद्री सरीर मुख नाक ने आं
ख होयते माखी मछर डांस बिछु भमरी जे उडन
वाला जीव जेहने आठ पग तथा मस्तके सींग हो
यते ' पंचिंद्रिया ' पांच इंद्रीयवाला जेहने सरीर मुख
नाक आंख ने कान होयते जलचर १ थलचर २
खेचर ३ उरपर ४ भुजपर ५ एतिर्यंच तथा मनुष

देव नारकी सर्व संसारी जीवते 'अभिहया' साम्हा आवतां हण्याहोय 'वत्तिया' एक ढिगले करी या त था धूलमें ढक्या होय 'लेसिया' भूमिमे घस्या त था लगारेक मसल्या होय 'संघाइया' माहोमाहि सरीरने मेलवीने एकठा मेलव्या होय 'संघटिया' थोडो स्पर्श करिवे करी दूहव्या होय ,परियाविया सर्व प्रकारे ताप्या पीडा उपजावी होय 'किलामिया' गाढो दुख उपजाव्यो मृतप्रायकीधा 'उद्दविया' उ द्वजते दसको उपजायो होय त्रास देने हाली चाली सके नही एह्वाकीधा 'ठाणाउ' एक स्थान थकी उ पाडीने 'ठाणं' बीजे ठिकाणे 'संकामिया' मूक्या होय 'जीवियाउ' जीव थकी 'ववरोविया' मारीया होय नाशकीधो 'तस्स' ते संबंधि 'मिछामि दूकडं' पाप कहिये ते दुष्कृत माहिरा मिथ्या एतले निष्फल थाउ ॥ अथ आगे इरियावहीके वास्ते काउसग्ग करणेमे आगार पाठ तिसके शद्बार्थः 'तस्स' ते पापनोज वली विशेष शुद्धिने अर्थे जे कांई आग ले करवुं तेहने उत्तरी करण कहिए एतले तेने हि ज 'उत्तरी करणेणं' विशेषे करी बली ऊपर शुद्ध करवुं अर्थात जे अतिचारोने आलोयण प्रमुख पू र्वे कीधोछे तेहनो वली विशेष शुद्धिने अर्थे कायो त्सर्ग करवुं ते कायोत्सर्ग तो 'पायछित करणेणं' शुद्ध प्रायश्चित ते पापनी आलोयणा करवा से होय

ते प्रायश्चित पिण ॥ विसोहिकरणेणं ॥ विशुद्धि नि र्मलता करवे करीने होय वली विशुद्धि पिण विशल्य होय तो थाय माटे ॥ विसल्ली करणेणं ॥ माया १ नि याण २ मिथ्यात ३ ए तीन शल्य टालवा थकी थाय ए उत्तरी करणादिक च्यार हेतु ये करी स्युं करवोछे ते कहेछे ॥ पावाणं कम्माणं ॥ संसार हेतु रूप जे पा प कर्म तेहने ॥ निग्घायणठाए ॥ निर्घातन एतले छे दन करवाने अर्थे ॥ ठामि ॥ कायाने एक ठामे करूं छुं ॥ काउसग्गं ॥ कायाने हलाववी नही ते रूप का उसग प्रते करूंछुं ॥ हिवे इहां काया हलाववी नही ए वी प्रतिज्ञा करीछे ते माटे सरीरनुं कांई पिण हालवो थयांथी प्रतिज्ञानो भंगथाय तेहथी काउसग्गमां बारे आगार मोकला राख्याछे ॥ अनत्थ ॥ आगे कह्या मूजब कायाहले तेहनो आगार माफी ॥ उससिएणं ॥ ऊंचोश्वासलेवाथी ॥ निससिएणं ॥ नीचोश्वास मुंकवा थी ॥ खासिएणं ॥ खासीखोकलाथी ॥ छीएणं ॥ छींक आयाथी ॥ जंभाइएणं ॥ जांभली अगर वगासुं ले वाथी ॥ उडुएणं ॥ ऊकार आयाथी ॥ बायनिसग्गे णं ॥ बायु निकलतांसे ॥ भमलिए ॥ अकस्मात च क्री कर आववाथी ॥ पितमुछाए ॥ पित्तरा कोपसुं मुर्छा आयांसे ॥ सुहुमेहिं ॥ सूक्ष्म थोडोक ॥ अंगसंचालेहिं ॥ शरीर हलाववाथी ॥ सुहुमेहिं ॥ थोडो ॥ खेलसंचाले हिं ॥ श्लेष्म तथा मुखना थूकनो चालववाथी कफागिल

वाथी ॥ सुहुमेहिं ॥ सूक्ष्म थोडी ॥ दिहसंचालेहिं ॥ चक्षु द्रिष्ट हालववासे ॥ एवमाइएहिं ॥ ए आदि करीने बीजा ॥ आगारेहिं ॥ आगारलेताथका सर्पादिक तथाभीत पडता तथा बिल्ली कोई जीव ऊपर फल घाल्यो होय तथा आगलागी होय इतरा कामार्थे अधबीच कावसग्ग पारेतो भांगे नही ॥ अभग्गो ॥ भागे नही खंडित हुवे नही ॥ अविराहिउ ॥ हानी पहोचे नही ॥ हुज्ज ॥ होजो ॥ मे ॥ म्हारो ॥ काउसग्गो ॥ कायास्थिर राखवो ॥ जाव ॥ ज्यासुधी ॥ अरिहंताणं भगवंताणं ॥ अरिहंत भगवानने ॥ नमुक्कारेणं ॥ नमस्कार करूं त्या सुधी ॥ नपारेमि ॥ पारूं नही ध्यान संपूर्ण न करूं ॥ ताव ॥ त्यासुंधी ॥ काय ॥ म्हारी कायाने सरीरने ॥ ठाणेणं ॥ एक ठिकाणे स्थिरपणे राखीने ॥ मोणेणं ॥ अबोल रहीने ॥ झाणेणं ॥ एकाग्र ध्यान तेणे करीने ॥ अप्पाणं ॥ म्हारी काया ते प्रते ॥ बोसरामि ॥ हुंतजूं ॥ आ पाठ कहीने काउसग्ग ॥ लोगस्स उज्जोयगरे ॥ इत्यादि मन मांहिं ध्यान करणा ॥ णमो अरिहंताणं ॥ कहिने काउसग्ग पारिए ॥ प्रश्न ॥ कितनेक साधु साधवी श्रावक श्राविका इरियावहिके काउसग करणेमे इच्छा कारेणके पाठ का काउसग करतेहै ॥ उत्तर ॥ इच्छा कारेणका ध्यान मनमे नही चिंतवणा इच्छाकारेण गुरु तथा अरिहंत महाराजकी आज्ञा मुजिब प्रथ

म इरियावहीके वास्ते इच्छा कारेणका पाठ पढा ति
स्मे रस्तेके चलनेकी क्रियाका मिच्छामि दुक्कडं हुवा
फिर तस्स उत्तरी करणका पाठ आगार रखणेका
कह्या तो काउसग्ग पहिले इरिया वहीका पाठ कह्या
था ते क्या वोही ध्यान अर्थात काउसग्गमे कहणा
एसा वही कह्या नही परंतु इरियावहीके अर्थ चोबीस
गुणस्तवन मनमे चिंतवन कर काउसग्ग करणा औ
र इरिया वहीका पाठ प्रथम खुलासा पढणा और
दूसरे तस्स उत्तरी करणेणं का पाठ पढकर काउस
ग्गमे लोग्गस्स उज्जोयगरे इत्यादि ध्यान करणा तो
येही इरियावही का काउसग्ग कहाताहै अब का
उसग्गमे चौबीस जिनस्तवन पाठ तिस्के शब्दार्थः
॥ लोगस्स ॥ पंचास्ती कायात्मक लोकने ॥ उज्जोय
गरे ॥ उद्योतना करणहार ॥ धम्मतित्थयरे ॥ धर्म
रूप तीर्थना करणहार एवा ॥ जिणे ॥ राग द्वेषना
जीतनहार जे ॥ अरिहंते ॥ श्री अरिहंत तेहनो ॥ कि
त्तइस्सं ॥ कीर्तन करीसुं तेहमे ॥ चउविसंपि ॥ ऋष
भादिक २४ परमेश्वरनो नामोच्चारण पूर्वक कीर्तन
करसुं अने अपिशब्दथकी अन्य जिनानुं पिण कीर्त
न करसुं ते केहवाछे तोके ॥ केवली ॥ केवल ज्ञानी
छे ते तीर्थंकरनो हुं कीर्तन करिसुं ॥ १ ॥ हिवे ते २४
जिनना नाम कहैछे ॥ उसभ ॥ श्री ऋषभ देव स्वा
मीप्रते ॥ मजियं ॥ श्री अजितनाथ प्रते ॥ च ॥ व

ली ॥ वंदे ॥ वांदूंछूं ॥ संभव ॥ श्री संभवनाथ प्रते ॥ अभिनंदण ॥ श्री अभिनंदननाथ प्रते ॥ च ॥ वली ॥ सुमइं ॥ श्री सुमतिनाथने ॥ च ॥ वली ॥ पउमप्पहं ॥ श्री पद्म प्रभूस्वामी प्रते ॥ सुपासं ॥ श्री सुपार्श्वनाथजीने ॥ जिणं ॥ राग द्वेषना जीतनहार ॥ च ॥ वली ॥ चंदप्पहं ॥ श्री चंद्र प्रभुजीने ॥ वंदे॥ वांदूंछूं ॥ २ ॥ (सुविहं) श्री सुविधिनाथजीने (च) वली एहनुं बीजो नाम [पुप्फदंतं] श्री पुष्पदंतजीछे ते प्रते [सीयल] श्री शीतलनाथजीने (सिज्जंस) श्री श्रेयांसनाथजीने [वासपुज्जं] श्री वासपुज्य स्वामी प्रते (च) वली [विमल] विमलनाथजीने (मणंतं) श्री अणंतनाथजीने (च) वली [जिण] राग द्वेषनाजीतनहार एहवा (धम्मं) श्री धर्मनाथजीने ॥ शांति ॥ श्री शांतिनाथजीने ॥ च ॥ वली ॥ वंदामि ॥ वांदुंछुं ३ ॥ कुंथुं ॥ श्री कुंथुनाथजीने ॥ अरं ॥ श्री अरहनाथजीने ॥ च ॥ वली ॥ मल्लि ॥ मल्लिनाथजीने ॥ वंदे ॥ वांदुंछुं ॥ मुणिसुव्वयं ॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रते ॥ नमिजिणं ॥ श्री नमि जिनने ॥ च ॥ वली ॥ वंदामि॥ वांदुंछुं ॥ रिठनेमि ॥ श्री अरिष्टनेमिजी प्रते ॥ पास ॥ श्री पार्श्वनाथस्वामी प्रते ॥ तह ॥ तथा ॥ वद्धमाणं ॥ श्री वर्द्धमानस्वामी प्रते हुं वांदूंछुं ॥ च ॥ चकार शब्द पादपूर्णार्थछे ॥ ४ ॥ एवं ॥ ए प्रकारे ॥ मए ॥ म्हारे जीवे जे ॥ अभिथुआ ॥ ना

म पूर्वक स्तव्या ते २४ परमेश्वर केहवाछे तो के ॥ विहुय ॥ टाल्याछे ॥ रयमला ॥ कर्म रूपी रज तथा म ल जेणे एहवाछे वली ॥ पहीण ॥ अतिशये करीने क्षयकरयाछे ॥ जरमरणा ॥ जरा तथा मरण जेणे ए हवाजे ॥ चउवीसंपि ॥ २४ तीर्थंकर तथा अपि श ब्दथी बीजा पिण तीर्थंकर पूर्ववत लेवा ते सर्व ॥ जि णवरा ॥ जिनवर ॥ तित्थयरा ॥ तीर्थंकरते ॥ मे ॥ म्हा रा ऊपर ॥ पसीयंतु ॥ प्रसन्नहो ॥ ५ ॥ कित्तिए ॥ कीर्तितछे ॥ वंदिए ॥ वंदितछे ॥ महिया ॥ पूज्यछे इं द्रादिक पूजे एहवा ॥ जे ॥ तीर्थंकर ॥ ए ॥ एप्रत्यक्ष ॥ लोगस्स ॥ लोकने विषे ॥ उत्तमा ॥ उत्तम एहवा ॥ सि द्धा ॥ सिद्धथया एतले सिद्धिपाम्या एहवा हे सिद्ध भ गवंत तुम मुझने ॥ आरुग्ग ॥ रोग रहित निर्मल ए हवो सिद्धपणो जाणवुं ते सिद्धपणो तो ॥ बोहिला भं ॥ बोधवीज जे श्री जिन धर्मनी प्राप्ति थाय ते वारे प्राप्त थायछे ते माटे श्री जिन धर्मनी प्राप्ति नो लाभ थवाने अर्थे ॥ उत्तमं ॥ प्रधान समाधि ते प्रते ॥ दिंतु ॥ देवो ॥ ६ ॥ चंदेसु ॥ चंद्रमासे ॥ नि म्मलयरा ॥ अत्यंत निर्मल ॥ आइच्चेसु ॥ सूर्य समु दायसे पिण ॥ अहियं ॥ अधिक ॥ पयासयरा ॥ प्र कासना करणहार ॥ सागरवर ॥ प्रधान स्वयंभुरमण समुद्र तेहनी परे ॥ गंभीरा ॥ गुणेकरी गंभीर एह वाजे ॥ सिद्धा ॥ सिद्धो ते ॥ सिद्धिं ॥ मुक्तिजे तेह

ने ॥ मम ॥ मुझप्रते ॥ दिसंतु ॥ देवो ॥ ७ ॥ अथ सा मायिक करणेका पाठ तिस्का शब्दार्थ ॥ करेमिभंते सामाइयं ॥ इत्यादि ॥ भंते ॥ हे पुज्य ॥ सामाइयं ॥ समता परिणामरूप सामाइकने ॥ करेमि ॥ हुं करुं छुं ॥ सावज्जं ॥ पाप तेणे करी सहित एहवा ॥ जोगं ॥ मन बचन कायाना योग ते प्रते ॥ पचखामि ॥ निषेध करूंछुं ॥ जाव ॥ ज्यांसुधी ॥ नियमं ॥ सामाइक ब्रतना नियमने ॥ पज्जुवासामि ॥ हूंसेवुंछुं रहुं त्यासुधी ॥ दुबिहं ॥ दोयकरणसो करणो करावणो ॥ तिविहेणं ॥ तीन योगसुं ॥ नकरेमि ॥ हुं करूं नही ॥ न कारवेमि ॥ हुं दुजापासे न करावुं ॥ मणसा ॥ मने करी ॥ बयसा ॥ बचने करी ॥ कायसा ॥ कायाए करीने ॥ तस्स ॥ तेसावद्य व्यापार पापने ॥ भंते ॥ हे भगवंत ॥ पडिक्कमामि ॥ निवर्तुंछुं ॥ निंदामि ॥ हुं आत्मानी साखे निंदुछुं ॥ गरिहामि ॥ गुरुनी साखे हुं बिशेषे निंदुछुं ॥ अप्पाणं ॥ म्हारी आत्माने ते दुष्ट क्रियाथकी ॥ वोसरामि ॥ वोसिरावुंछुं एतले विशेष करीने तजुंछुं ॥ अथ नमस्कार महिमा नमुत्थुणंका पाठ तिस्का शब्दार्थः ॥ नमुत्थुणं ॥ इहां नमोस्तु एतले नमस्कारहो अने ॥ णं ॥ कार जेछे ते वाक्यालंकारने माटे छे कोने नमस्कारहो तोके ॥ अरिहंताणं ॥ श्री अरिहंत देवने ॥ भगवंताणं ॥ भगवंतने ॥ आइगराणं ॥ धर्मना आदिनाकरणारेन ॥ ति

त्थयराणं ॥ तीर्थनास्थापनार एतले साधु साधवी श्रावक श्राविका ए ४ जातिना तीर्थना स्थापनारने ॥ सयंसुबुद्धाणं ॥ पोताने मेले सम्यक्त प्रकारे तत्वना जाण थया ॥ पुरिसुत्तमाणं ॥ पुरस मांहिं उत्तम ॥ पुरिससींहाणं ॥ पुरुष मांहें पुरुषार्थ सिंहसमान ॥ पुरिस बर पुंडरीयाणं पुरिसमाहे पुंडरीक कमल समान ॥पुरिस ॥ पुरुष माहिं ॥ बर ॥ ॥ प्रधान गंधहत्थीणं गंध हस्ती समानछे॥ लोगुत्तमाणं ॥ लोक मांहिं उत्तमछे ॥ लोगनाहाण ॥ लोकना नाथछे ॥ लोगहियाणं ॥ लोकना हितकारीछे ॥ लोगपईवाणं ॥ लोकने विशे प्रदीप समानछे ॥ लोगपज्जोयगराणं ॥ लोकमाहे उद्योतना करणारछे ॥ अभयदयाणं ॥ अभयदानना देणारछे ॥ चखुदयाणं ॥ ज्ञानरूपी नेत्रोना देणारछे [मग्गदयाणं] मोक्ष मार्गना देणारछे (सरणदयाणं) सरणना देणारछे [जीवदयाणं] संजमरूप जीवतना दातारछे (बोहिदयाणं) समकितरूप बोधना दातारछे (धम्मदयाणं) धर्मना दातारछे॥ धम्मदेसियाणं ॥ धर्मना उपदेसना दातारछे (धम्मनायगाणं) धर्मना नायकछे (धम्म सारहीणं) धर्मरूपरथना सारथिछे (धम्म) धर्मने विशे (बर) प्रधान (चाउंरत) च्यार गतिना अंत करवा माटे (चक्कवट्टीणं) चक्रवर्ती समानछे (दिवोताणं) संसार समुद्रमां द्वीप समान दुखना निवार्ण करनारछे (सरण) आधार [गइ) चार गति

माहिं [पइठा) पडतां जीवने (अप्पडिहय) न
ही हणाय यहवो (बर) प्रधान [नाण] ज्ञान (दं
सण) दर्शन एतले देखवो तेने (धराणं) धरणार
॥ वियट्ट ॥ गयुछे (छउमाणं) छदमस्थपणो एतले
कर्म रूपी आवर्ण जेहने एहवा ॥ जिणाणं ॥ रागद्वे
षजीत्याछे जेणे (जावयाणं) बीजाने राग द्वेषथी जि
ताव्याछे ॥ तिन्नाणं ॥ संसार रूपी समुद्रसे पोते त
र्याछे अने ॥ तारयाणं ॥ बीजाने संसार समुद्रथी
तारनारछे ॥ बुद्धाणं ॥ पोते तत्व ज्ञानने समझ्याछे
॥ बोहियाणं ॥ बीजाने तत्व ज्ञान समझावणार ॥ मुत्ता
णं ॥ पोते चातुर्गतिक बिपाक विचित्र कर्मथी मुकाणा
छे तथा ॥ मोयगाणं ॥ बीजा भव्य प्राणीने कर्मथी मु
कावणारछे ॥ सद्दनुणं ॥ सर्वज्ञछे ॥ सबदरिसिणं ॥ स
र्व पदार्थना देखणारछे ॥ सिव ॥ सर्व उपद्रव रहित
एहवा ॥ मयल ॥ अचल ॥ मरूय ॥ रोग रहित ॥ म
णंत ॥ अनंत अंत करी रहित ॥ मखय ॥ अक्षय
सास्वताछे ॥ मव्वावाह ॥ व्याधि पीडा रहित ॥ मपुण
रावति ॥ जे गतिसे फिर संसारने विशे अवतार ले
वो नथी एहवी ॥ सिद्धिगइ ॥ सिद्ध गतिछे एहवो
॥ नामधेयं ॥ नाम जेहनु एहवा ॥ ठाणं ॥ स्थान
कने ॥ संपत्ताणं ॥ पाम्याछे अर्थात मोक्ष नगर प्रते
पाम्याछे एहवा अरिहंत भणी ॥ नमो ॥ म्हारे नम
स्कार होजो ते जिन भगवांन केहवाछे तो के ॥ जि

णाणं ॥ कर्मरूपी शत्रुने जीतणार तथा ॥ जियम्न याणं ॥ इह लोकादिक सातम्नय प्रते जीतणारछे ॥ अथ सामाइक पारवानो पाठ तिसको शब्दार्थः ॥ नवमा सामायक ब्रतके विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ नोमा सामाइक ब्रतमे जो कोइ दोस लग्या होय ते कहुंछुं ॥ मन १ बचन २ काया ३ जोग माठा बरताया होय ॥ मन बचन काय ए तीनो योग खोटे बरताये होय ॥ सामाइक मे समता न आणी होय ॥ सामाइक करतां समता न्नाव नहीं कीया होय ४ ॥ अण पूगीपारी होय ॥ महुर्त पूरा हुया पहिले पारी होय ५ ॥ तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ते दुष्कृत मिथ्या होजो ॥ दस दोष मनके दस दोषवचनके बार दोष कायाके ए ३२ दोषांमे जो कोइ पाप दोष लाग्या होय तस्स मिछामि दूकरुं ॥ दस दोष मनके तेना नाम सामाइकमे जस बाछे १ वमाई बांछे २ लोन्न बाछे ३ न्नयर्थीकरे ४ नियाणे सहित करे ५ संदेह करे ६ सामाइकनो फलछे वा नहीं ७ गुरुकी बिने न्नक्ति रहित करे ८ अहंकार सहित करे ९ अकाले तथा औसर बिनाकरे १० दस दोष बचनके चपलताई से बोले १ क्रोध वचन बोले २ बिने रहित बोले ३ गुणगुणाट कर बोले ४ काम राग कर बोले ५ कलहकारी बचन बोले ६ बाद कर बोले ७ हास्य करी बोले ८ विकथा कहे ९ असंजतीने आवो जा

वो कहे १० कायाके १२ दोष वाइनी तथा वस्त्रनी पालठी घालीने बैठे १ अथिर पणे बैसे २ दृष्टि विकारे करवो ३ अनेराकाम करवो ४ सहारा लेइ बिना कार्णें ५ काया पसारे ६ अलस्य करे ७ कडका मोडे ८ मैल उतारे ९ बिण पूंजें खाज करे १० बिन कार्णें पग दबावे ११ ऊंघवो १२ ए ३२ दोष टालकर १ सामाइक करतां ९२ क्रोड ५९ लाख २५ हजार ९ से पचीस पल्ल एक पल्लका ८ भाग की जे जिस्मेसे तीन भाग ऊपर इतनो आउखो देव गतिनो बंधे नरक गतिरो आउखो इतनो क्षय करे यह एक सामाइकका फलछे इति सामाइक सूत्र शब्दार्थ संपूर्णम्

॥ अथ १० दश पच्चखाण सूत्र पाठ तथा शब्दार्थ सहित लिख्यते ॥ उग्गेसूरे नमुक्कार सहियं पच्चखामि चउविहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ वोसरामि ॥ १ ॥ भावार्थः सूर्यउग्यापछे नवकार सहित दोघडी प्रमान पूरा थया पछे जिहां लगें ३ नवकार पढ्या विना पारूं नहीं तालगे पचखुंछु ते ४ प्रकारे आहार अन्न १ पाणी २ मिठाइ ३ फलमेवादि ४ अजाणपणे भूलके मुखमे वस्तु पडेतो पचखाण फूटे नहीं १ जबरदस्त मुखमे घाले तो पचखाण फूटे नहीं ए दो आगारछे ॥ १ ॥ उग्गेसूरे पोरसी पच

खामी चउविहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाजोगेणं १ सहस्सागारेणं २ पछिन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ सवसमाहिवत्तीयागारेणं ६ वोसरामि एवं साढपोरसीयं जावार्थ ॥ इहां आगारमे २ आगारार्थ पूर्ववत जाणने मेघधूंवरि करि सूर्य ढाक्या होय तिस वास्ते पूरी खबर पोरसीमे नपडे तो पचखा ण पारता जंग नथी ३ दिसा जूला होय याने पूर्व पश्चिमकी खबर न रही भ्रमाचित करी पचखाण जं ग नथी ४ साधुकहे साधुसे पहर दिन तथा दोढ पहर दिन आयो इम सुणीने पचखाण पारे तो जंग नही ५ वली जिहांताई समाधि सरीरमे होवे तिहां तांई जिवारे सूलादिक असमाध होवे तिवारे बिकल थयो रोग दूर करवाने अर्थे उषधी लेवोतो जंग नही ६ ॥ उग्गए सूरे पुरमढं पचखामि चउविहंपिआहारं अ सणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाजोगेणं १ सहस्सा गारेणं २ पछन्न कालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवय णेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सवसमाहि वत्तीयागारेणं ७ वोसरामि ॥ ३ ॥ अर्थ इहां आगार ७ छहतो पू र्ववत जाणणे १ मोटो कोई धर्म कार्य वास्ते पचखा ण पारे तो जंग नही मित्यर्थ ॥ उग्गए सूरे एगा सणं बिआसणं पचखामि दुविहं तिविहं पिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अनत्थणाजोगेणं १ स हसागारेणं २ सागारियागारेणं ३ आउंट पसारेणं ४

गुरु ऊठाणेणं ५ परिठावणियागारेणं ६ महत्तरागारे णं ७ सवसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसरामि ॥ ४ ॥ भावार्थ इस एकासनमे एक वक्त आहारकरे वा दो वक्त ते उपरांत पचखान जो दो आहार पचखेतो अ सनखादिम पचखे और तीन आहार पचखेतो अ सन खादिम स्वादिम पचखे तथा ४ आहार पाणी सहित पचखे तिसमे ८ आगार ४ आगारके अर्थ पहिले लिखआयेहै और ४ आगारार्थ येहै एक आ सन बैठा और गृहस्थ आवे तव आसन उरहा प रहा करता पचखान भंग नथी ३ हाथ पग संको चतां पसारता आसन चलावे तो नेम भंग नथी ४ एक आसन बैठया गुरु आवे तिनकी आसनसे उ तर कर विनयकरे तो नेम भंग नथी ५ आचार्य उ पाध्याय ग्लान थया ते आहारादिक आण्यो तिनके वास्ते पिण उनसे किया न जाय तो एकासनं मा हि वा आयंबल उपवास मांहिं खाता नेम भंग नथी ए आगार साधुके पचखाणमेहै परंतु श्रावकके पचखान करानेमे नहीं [परिठावणियागारेणं] ६ मित्यर्थ सूरे उ ग्गे एकलठाणं पचखामि चउविहंपि आहारं असणंपाणं खाइमं साइमं अनत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ सा गारियागारेणं ३ गुरु ऊठाणं ४ परिठावणियागारेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सवसमाहि वत्तियागारेणं ७ वोसरामि ॥ ५ ॥ भावार्थ एक आसन पर बैठकर हाथपग घ

णा हलावे नही एक हाथसे जिमे फिर ४ आहारमे
से कोईसा आहार करे नही तेह एकलठाणा इसमे
आगार ७ है तिनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थ ॥ सूरे उग्गे
आयंबिलं पच्चखामि तिविहंपि आहारं असणं खाइ
मं साइमं अन्नत्थणा जोगेणं सहस्सागारेणं २ लेवा
लेवेणं ३ गिहत्थ संसठेणं ४ उखित्तविवेगेणं ५ परिठा
वणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सवसमाहि वत्ति
यागारेणं ८ वोसरामि ॥ ६ ॥ जावार्थ आंबिल ते घृता
दि तथा रसादि रहित एक पाणीसेती आहार करे
एक वार उप्रांत पाणी आगार रखकर तीन आहार
का त्याग करे जिसमे ८ आगार माहिथी ५ आगा
रार्थ पूर्ववत और तीन आगार अर्थ इस तरेहै ते ले
प विगय खरड्यो बरतन वा सागादिक बरतन तथा
हाथ खरड्या होय तिसके हाथसे तथा सागादिक र
हित बरतनसे आहार कर्ता नेम जंग नही ३ और
जो गृहस्थे अपने वास्ते हाथ वा करछा आदिक वि
गयमे खरड्या होय तिसी हाथसे वा करछादिकसे
आहार देयतो ते आहार करता नेम जंग नही ४
और जो घृतादि विगय बरतन ऊपरसे आहार लेइ
तो नेम जंग नही ५ इत्यर्थ ॥ उग्गएसूरे अनतठं पच्च
खामी तिविहंपिआहारं असणं खाइमं साइमं अण
त्थणा जोगेणं १ सहस्सागारेणं २ (परिठावणीयागारेणं
३) महत्तरागारेणं ४ सवसमाहिवत्तियागारेणं ५ वो

सरामि ॥ ७ ॥ भावार्थ सूर्यउदय पछे भक्तार्थ जिहां कोई भक्त नथी ते अभक्तार्थ उपवास कहिए जैसे उपवासकुं चउथभक्त पचखाण कहतेहैं ते चार भक्त कौणसी प्रथम भक्तमे सांझके शेस दिनकीमे आहारादिक त्याग दूसरी भक्त वो जोकि ४ प्रहर रात्रीकी तिसरी भक्त वो जो कि ४ प्रहर दिन हुआ चोथी भक्त वह जोकि ४ प्रहर की अगली रात्री हुई और पांचमी भक्तके दिवसेमे आहार लेवे इसवास्ते उपवासकुं चउथ भक्त आहारके त्यागनेसे अभक्तार्थ कहिये तिसमे च्यार आगार तथा ५ आगार (परिठावणीयागारेणं) ए पाठ गृहस्थके पचखाणमे नही इनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थः॥ उग्गएसूरे पाण अहार पुरमड्ढं पचखामि अन्नत्थणा भोगेणं १ सहस्सागारेणं २ पछन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सवसमाहि वत्तियागारेणं ७ पाणस्सलेवेणवा १ अलेवेणवा २ अछेणवा ३ वहुलेणवा ४ ससित्थेणवा ५ असित्थेणवा ६ वोसरामि भावार्थ सूर्यउदयसे दो प्रहर दिवस ताई पाणीनो पचखाण जिसमे ७ आगारार्थ पूर्ववत परंतु पाणी ६ प्रकारका आगार खजूर पाठा भिगोयानो पाणी १ अलेपजल ते कांजी प्रमुख उकाल्यो पाणी २ धोलो चावलानो धोवण पाणी ३ उण्ण निर्मल पाणी ४ सीथसहित उसामणादि पाणी ५ सी

तते नाज आदिक अंस रहित मेवादि धोवण फा सु पाणी ६ ए पाणी आगार उप्रांत ३ आहारका नेम ॥ ७ ॥ दिवस चरम पचखामी चउबिहंपि आ हारं असणं पाणं खायमं साइमं आणत्थणाभोगेणं १ सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिबत्तीयागारेणं ४ बोसरामि ॥ ८ ॥ भावार्थ इहां एकतो दिवस चर्म तथा भव चर्म दिवस चर्म त संध्यासमे पचखे जि हांतक सूर्य उदय नही होय और जे भव चर्म जा व जीव ताई करे ते संथारा कहिये अपनी आयूका ओसर जाणीनें करे जिस दिवस चर्मके ४ आगार तिनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थ उग्गए सूरे गंठि सहि अं मुठि सहिअं पचखामि चउविहं पिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहस्सागारे णं २ महत्तरागारेणं ३ सवसमाहि वत्तियागारेणं ४ वो सरामि ॥ ९ ॥ भावार्थ इस पचखाणमे वस्त्र तथा डो रेमे गांठ देई खोले तिहां तक पचखान तथा मुठि पचखाणं समे करी खोलते समे मुठि भीडीकर खोलुं नही तिहांतक ४ आहारनो पचखाण ते इहां ४ आगा र पूर्ववत इत्यादि अभिग्रह नेम मित्यर्थ ॥ उग्गए सूरे निविगइ एकासणं पचखामि तिविहंपि आहारं अस णं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसठेणं ४ उखित्तविवेगेणं ५ पडुचमखिएणं ६ पारिठावणीयागारेणं ७ महत्तरागा

रेणं ८ सवसमाहि वत्तियागारेणं ९ वोसरामि ॥ १०॥ भावार्थ इह विगय पचखानेमे तो यथा प्रमाण करया होय तैसा करे ते दूध दही घृत तेल गुड और निविगइनुं एकासण सहित ते उप्रांत तीन तथा ४ आहार नो पचखाण मे ९ आगार ते आठ आगार अर्थ पूर्ववत (पडुचमखीएणं) ते रोटी करणे वाली स्त्री थोमा सा मोंण रोटीमे दीधा होय तथा हाथ घृतका मसल्या हो नरम रोटीके होणेकुं ते रोटी लेता पचखाण भंगे नही ते आगारहै मित्यर्थ ॥ देसावगासीयं उवभोगं परिभोगं पचखामी अणत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ वोसरामि ॥ १ ॥ भावार्थ दिसनी मर्यादा जिस मांहिं करीये ते देसाविगासी संभर नाम (उपभोग) एकबार जे वस्तु भोगमे आवे दंत्तणादिक (परिभोग) जे वस्तु वारबार भोगनेमे आवे ते स्त्री वस्त्रादिक तेहनी मर्याद करे जिसमे आगार ३ पूर्ववत इत्यर्थ ॥ अथ १४ नेम के नाम सचित्त १ दव २ विगइ ३ पणही ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७ सयण ८ वाहण ९ विलवण १० अवंभ ११ दिसि १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ इति श्री प्रत्याख्यानागाराणि संपूर्णम्

अथ सामाइक करनेकि विधि लिख्यते

प्रथम तिखुतोके पाठसे वंदना करि निज गुरुकी आज्ञा लेय जो अपने गुरु और किसी देसमे हो

थतो नावैं करी आज्ञा लेवे क्योंकि गुरां का उपदेस और आज्ञा धर्म कार्यमे हमेसा करने कीहै तथा अपने नगरमे जो साधु होय तिनकी आज्ञा लेवे और नवकार एकऔर पढे और अरिहंत्तो का पाठ इछा कारेणका पाठ तिस्सउत्तरी का पाठ कहीने लोगस्स उज्जोयगरे के पाठका काउसग १ करे पढे णमो अरिहंताणं शब्द कहीने काउसग्ग पारे (ध्यानके विषे मन वचन कायाका जोग माठा बरता होय तस्स मिछामि दुक्कडं) कहे खुली लोगस्स उज्जोयगरे कहै गुरु तथा साधुकी आज्ञा लेईने करेमी भंते के पाठ से सामाइक करे आपकरे जिसमे तो (वोसरामि) पाठ कहै और किसी साधर्मी भाई को पचखांन करावे तो वोसिरे २ कहै फिर वामा गोडा उभा याने उंचा करीने दाहिणा गोडा जिमीसे लगाइ कर दोय बार नमुत्थुणं का पाठ पढे दूसरा नमुत्थुणं के आगे [ठाणं संपाविओ कामस्स नमोजिणाणं] इम कहै और सामाइक पारता इछा कारेण तस्स उत्तरी कहिकर पूर्ववत काउसग्ग करीने दोय नमुत्थुणं पढीने नवमा सामाइक व्रतका पाठ पढकर तीन नवकार पढे ॥ इति श्री सामाइक अर्थ विधि तथा दस पचखान शद्धार्थ संपूर्णम्

॥ अथ अष्टादश दोष रहित जिनस्तवन लिख्यते ॥

परमेष्टी पद मनमे धारी, कहुं मे देव स्वरूप ॥

दोप अष्टादश रहित जिनेश्वर, सुंदररूप अनूप ॥ १ ॥ चतुर नर बीतराग जिन सेवो, जिम उत्तम पद तुम लेवो ॥ चतुर० ॥ टेक ॥ दान लाभ भोग उपभोगजु, बलवीर्य अंत्राय ॥ पाचोंक्षयकर अंनत बली के, सुरनर सेवे पाय ॥ च० ॥ २ ॥ हास्य रतारति भय दुगंछा, सोक नहीलवलेस ॥ मनमत्थ मोह अग्यानरू निंद्रा, नही अविरत जिनेस ॥ च० ॥ ३ ॥ राग द्वेष ए दोष अठारे, त्यागे श्री जिनराय ॥ और देव ऐसा नही जगमे, जो अरिहंत पदवीपाय ॥ च० ॥ ४ ॥ अनंत ग्यान दरसनके धारी, चारित्र तपजु अनंत ॥ अनंत बली तारक जग स्वामी, भय भंजन भगवंत ॥ च० ॥ ५ ॥ नरक देव तिर्यंच मनुष्यनी, आवा गमन विचार ॥ अविचलपदवी सिद्ध तणी तुम, पामी अधिक उदार ॥ च० ॥ ६ ॥ ऋपराज कहे करनाल नगरमे, देव स्वरूप बखान ॥ जिन आग्या आराधिक प्राणी, पामे शिवसुखथान ॥ च० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नमीराज ऋषीकी सिझाय लिख्यते ॥

॥ बीतराग पद सेवीयेजी, कीजै सुध परिणाम ॥ नमी राजा मिथुला तणोजी, भोगे सुख अभिराम ॥ सोभागी धनधन नेमीराय ॥ १ ॥ पूर्व करम उदेथकीजी, उपन्यो दाघजु रोग ॥ नारी तव चंदन घिसेजी, सीतलताके जोग ॥ सोभागी धनधन

नेमीराय ॥ २ ॥ शौर शब्द सुणता थकाजी, उप
ज्यो मन वैराग ॥ जीवसदाछे एकलोजी, इम
जाणी जग त्याग ॥ सो० ॥ ३ ॥ जातीसुमरण ज्ञान
सैजी, लीधो संजम भार ॥ नगरी बाहिर आवियाजी,
तनसे ममत निवार ॥ सो० ॥ ४ ॥ सक्रइंद्रातिहां आ
इकेजी, प्रश्न बहुबिध कीध ॥ निर्मल बुद्धि जोगसें
जी, उत्तर सगले दीध ॥ सो० ॥ ५ ॥ अहो अच
र्जछे ताहिराजी, खिमावंतगुणगेह ॥ करजोडी सिर
नामकेजी, गयोसुधर्में तेह ॥ ॥ सो० ॥ ६ ॥ नमी
ऋषीतपसाधकेजी, मुक्तगये महाराय ॥ जन्म मरण स
हु टालकेजी, अजर अमर पद पाय ॥ सो० ॥ ७ ॥
श्री जिन वाणीछे खरीजी, उत्राध्येनाविचार ॥ नोंमे
अध्ययने भाखीयाजी श्री जिन बहु विस्तार ॥ सो० ८ ॥
संवत उनीसे इक्यावनेजी, कछप नामे ग्राम ॥ नेमी
गुण चौमासमेजी, कहै ऋषरायजुस्वाम ॥ सो० ॥ ९ ॥

॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ रामचंद्र लक्ष्मण कथा सझाय लिख्यते ॥

कालसे डररे, नादान कालसे डररे ॥ कालका सब ज
गहै खाजा, कि खयगये बडे बडे राजा ॥ कालेगर
दन पकड उठावे इंद्र और चक्री राजाक्या कालसे
डररे ॥ १ ॥ निज समकितकु तुंगहिरे, निर्ग्रंथ धर्म
तुलहिरे ॥ नर भवको सुफल करलेरे ॥ जगतका ख्या
लसबकूठा ग्यानी निज आतम् मीठा ॥ का० ॥ २ ॥

है क्रोधमान दुखदाई, मायाकी गिरहलगाइ, लालच से लाज गमाई, हुवा मोहकरम बिच अंधा, जगत का सब कुठा धंदा ॥ का० ॥ ३ ॥ भूमपरबडे चक्रधारी कां पत जिन प्रथवीसारी, अरे तेरी कालसे यारी विचार कर मनमे तुं प्रानी सुफल कर अपनी जिंदगानी ॥ का० ॥ ४ लंकाका राजा रावन, दल फौज घटा जिम साव न सुत, इंद्रजीत मेघबाहन, आनमरयादा जिन तोरी ॥ करी परनारीकी चोरी ॥ का० ॥ ५ ॥ कुंभकरन भविक्षन भाई, औरांकी गिनती नाही, सोनेकी लंकबनाई हु ॥ वा भूपत सिरताज करेता तीन खंमकाराज ॥ का० ॥ ६ ॥ एक दिन दरबार. सजीला कर रह्याथाराव हठीला, रंग विनोदमे खुसनीला राजतपरहाथा अखंडित आ या इक जोतिसका पंमित ॥ का० ॥ ७ ॥ भूपत कहे पांडि तसें यूं, में तीन खंमराजा हुं, नही लडने लायक को इमोसुं ॥ पंडितकह आगमका हाल होवेगा, किस्के हा थमेरा काल ॥ का० ॥ ८ ॥ तबपंडित यूं बतलावे परनारी तुम मन भावे; तुं उस्को चुराकरल्यावे, जद उसका पति चढि आवेगा ॥ दखल वहतेरा उठावेगा ॥ का० ॥ ९ ॥ है सती सतवंती, उतकृष्टी सीलगुनवं ती, तीन लोकमे जसवंती ॥ कंत उस्केका बीर होगा के, रावणसोतुजमारेगा ॥ का० ॥ १० ॥ नलकुबेर समान जोडी, जो धनुप अर्नवाव्रत मोडी, जोवर राय वंध तोमी ॥ संबुकका सीसउतारेगा, कि रावण

सोतुक मारेगा ॥ का० ॥ ११ ॥ जो नव सुग्रीव मि
टावे, तारा उसको दिलवावे, कपियोंको दासबनावे ॥
साहसकी विद्या नगावैगा के, रावण सोतुकमारेगा ॥
का० ॥ १२ ॥ अरे अंजनीसूत जाकपायक, हो ती
न लोकमे नायक, परजा कहती सुखदायक ॥ सि
ला जो कोड उठावेगा के, रावनसोतुकमारेगा ॥ का०
॥ १३ ॥ लज्जातेरी सक्तीसेती, जो सती बिसल्याव
रसी, जो चक्रसुदर्सन लेसी, नविक्तनको दासबना
वेगाके, रावनसोतुक मारेगा ॥ का० ॥ १४ ॥ है नग
र अजुध्यास्वामी, हो जसरथ के घर आमी, सुतराम
लक्ष्मन दो नामी ॥ ले आठमां बासुदेव अवतार, करे
रावन तेरा संहार ॥ का० ॥ १५ ॥ जोतिसकी बाता
सुनकर, नूपतगुस्सेमे नरकर, पंफितसें बोल्यात्रसक
र सिरउन दोनोका मंगवाताहुं, कि निमतीको जूठकह
लाता हुं ॥ का० ॥ १६ ॥ मेरे बीर नविक्तन आओ
तुम नगर अजुध्याजाओ, सिर नसरथजनक लेआ
ओ ॥ चैनतो मुझे उसदम आवेगा, कि उनका खो
ज मिटावेगा ॥ का० ॥ १७ ॥ अरे होनहार नही मि
टती, करमोकी बडीहै सकती, ततबीर कुछ नही च
लती ॥ नविक्तन बलसीर उतार आया, पर उनका
नेद नपाया ॥ का० ॥ १८ ॥ तव हुवा नचिंता राजा
कर आनंद मंगल बाजा, धन दौलत संपत साजा
॥ हुई रामलक्ष्मनकी जोफी, महोत्त्वव मंदिरमे कोफी

॥ का० ॥ १९ ॥ वह जनक राजाकी जाई, जसरथ सुतको परनाई, सब लोगोंके मनभाई ॥ बढे दिन पर दिन हररोज, अनीतका नही राजमे खोज ॥का० ॥ २० ॥ जसरथ वैरागमे आया, रामजीको तिलक कराया केकईके मन नही भाया ॥ बचन पूरनप्री तमकीजे, भरथको राजतिलक दीजे ॥ का० ॥ २१ ॥ छत्रीयोंका वचनहे अणमिट्ट, मशहूर त्रियाकी ए हट्ट, दिख्योमे कर दई खटपट ॥ रामजी पिता पासआया, भरथको टीका दिलवाया ॥ का० ॥ २२ ॥ तव राम चलेथेवनको, लीयासाथ बीरलछमनको, सतवंती के हैथी उनको ॥ रामजी लारे मुझलीजे, दगा अवला को क्या दीजे ॥ का० ॥ २३ ॥ तव नगर रोवेथा सा रा, रामज वनखंड सिधारा, परजाको कोंनसहारा ॥ भरथ सिरपीटे दोनु हाथा, गजबकरदीयाकेकई मा ता ॥ का० ॥ २४ ॥ परकारज जग करते, दूखीया जन के दूखहरते, जो दुरजन सो सहुभरते ॥ रामजी दं डक वनमे आये, कि जटायू पंख्यादि हरखाये ॥ का० ॥ २५ ॥ वनफलका आहारनितकरणा, अरिहंत दे वका सरणा, सिंहोंको किससे भरणा ॥ गुजरे वरस जव बारा, तवमुनीये होनीका चारा ॥ का० ॥ २६ ॥ इक दिन लछमनजु अकेला, फल लेण गया अल वेला, हुआ खडग हांससे मेला ॥ परिख्या कार खभग चलाया, सीस संवूकका उडाया ॥ का० ॥ २७ ॥

जब सरूपनखा चढि आई, सिरकटा ल्हास सुतपाई जाय लंकादई दूहाई ॥ बीरातेरे राजमंझारे, मुझप तिदेवर सुतमारे ॥ का० ॥ २८ ॥ हैं दंडकमे दो आ दम, ऐसे को नही देखे हम, रूपतो उनका इंदरसम ॥ रावनमुझन जरआवे ऐसी, राजयह तेरा नही रह सी ॥ का० ॥ २९ ॥ इकबात में और कहतीहुं, नारी उ नकी इंद्राणीजुं, बरनन नही होवेमुझसुं ॥ अगर तुं उसको देखेगा, कि राजकुं साराभूलैगा ॥ का० ॥ ३० ॥ अबलाहै रूपें एहवी, मनषनी नही वहदेवी, एक बा रजो देखे तेवी ॥ मंदोदरि आदिकसबरांनी, सगली जाय खिस्यांणी ॥ का० ॥ ३१ ॥ अकासे मेह जिमगरजे, मोरसुनत हियोलरजे, अरेहोनी आके सरजे बैठी पु ष्पक नाम बिमान; वहरावन पहोचा अटवी आन ॥ का० ॥ ३२ ॥ तिहां देवी राव बिचारो, कहो कारज हमरासारो, रामजीको इहांसेटारो ॥ रामजी जबतक नही जावे, हाथसीता नही आवे ॥ का० ॥ ३३ ॥ देवीने भेदबतायो, सिंघनाद करीभरमायो, हरलछन न पासे आयो ॥ रावनने पकडसीयाकाहाथ, चलवो ले अपनीसाथ ॥ का० ॥ ३४ ॥ जिममूसापकड मंझारी, कु छ बस नही चलतानारी, योंतडफैथीराजदुलारी ॥ बा गमे लंकाके दरम्यान, उतारा पुष्पनाम बिमाण ॥ का० ॥ ३५ ॥ हुई रावन दिलखुस्याली, वो रोती सिता बाली, हरलछमन बिपतनिहाली ॥ फिरे सिता कार

न भमते, के आंसूहरके नहींथमते ॥ का० ॥ ३६ ॥ सुग्रीव कपियोकाराजा, आया निज दुखके काजा लछ मनजी दीना साजा ॥ सोहसको परभव दिखलाई कि ताराउनकी दिलवाई ॥ का० ॥ ३७ ॥ उपगार कपी ने मान्या, बासुदेव आठमाजान्या, हुये एकठे सब रांना ॥ लक्ष्मनने कोम सिलाउठाई, कि संक्यासब उनकी मिटाई ॥ का० ॥३८॥ लंकाकी करी तईयारे, हुयेसुभट एकठे सारे, सबने फोजा श्रृंगारे ॥ लंकाप रचढकरआये, रामजी दलबादल ल्याये ॥ का० ॥ ३९ ॥ रावण घरमचती खलबल, भविक्षन आयाथाचल बीरामोहिन पडतीकल ॥ सिता कारन पतिक्योंखो वे, हासिलइसमे क्याहोवे ॥ का० ॥ ४० ॥ रीसाना रावहठीला, होकर कह्या नीलापीला, ते वचन घाव क्योंलेला, भविक्षण मुहपति दिखलावे ॥ वचन मु झे तेरा नही भावे ॥ का० ॥ ४१ ॥ खिस्यानाभवि क्षन भाई, आया रामदलाके मांहिं, हरजीसुनमान व धाई ॥ हुवापुन्य पूरा रावनका, बिगडाजब भाईतनका ॥ का० ॥ ४२ ॥ मंदोदरी यौं समझावे, कंतसीया हा थ नही आवे, सीता सतीसत न डिगावे ॥ जो आप इंद्र घर आवे, तोभी सीया हाथ नही आवे ॥ का० ॥ ४३ ॥ हर भांतरावमे चेरी, प्रीतम तु मानलेमेरी, यह हठ नही भगी तेरी ॥ सतीको जो सतावेगा, कि चैन हरगिज नही पावेगा ॥ का० ॥ ४४ ॥

सीताको उलटी देकर, बिन अंदेसे राज अपनाकर, जो रामनमाने तिसपर ॥ निसंक तुं लमीयोउनसे ती. कवीन होगी तेरी हठी ॥ का० ॥ ४५ ॥ सीता को जानले होनी, यह घरमेटीभीदेनी, तीन खंड की संपत खोनी ॥ कंथमे जोडु दोनो हाथ; छोडदे तु यह हठकी बात ॥ का० ॥ ४६ ॥ जब होनहार जो आवे, नावे कोई समझावे. हरगिज नही आडी आवे ॥ करम गति जब आके सरजे, चले नही कोई कितना बरजे ॥ का० ॥ ४७ ॥ वे येक समेमे नृपति. गरजाया देखकर संपति, मान कीहै करमागति ॥ हठीला लडनेको ध्याया, साम्हने लछमनजी आया ॥ का० ॥ ४८ ॥ इंद्रकी दई जो सक्ती, जगमे बी जलीयों चमकती. लछमनके अंगे लगती ॥ बीर जब मरछामे आया, रामदलसारा घबराया ॥ का० ॥ ४९ ॥ है सील बिरत अधिकाई; जब सती बिसल्या आई, सक्तीको दई नगाई ॥ चेत हुवा दसरथराज कुंवार, रामके दलमे जै जै कार ॥ का० ॥ ५० ॥ जब मरन मोत दिन आया, रावणने चक्रचलाया; लछमनने हाथ फैलाया ॥ हाथपर चक्र आन बैठा, सोचैतवराव मन घेठा ॥ का० ॥ ५१ ॥ मेंजूठीराडउठाई, जो सीता सती चुराई, नाहकको लाजगमाई ॥ निमती होता दीसे साचा, कह्या था जो ज्ञानीने बांचा ॥ का० ॥ ५२ ॥ तिन ओसर नविक्षन बीरा. कहे नाई म

त होइ अधीरा, यह जान मतखोवे धीरा ॥ सीता तुं दे मिल हरसे, राजकर अपना सुखसे ॥ का० ॥ ५३ ॥ अयलोनी नरपत राजा, सबनर हे काल के खाजा, छत्रीयोको यह नही साजा ॥ होवैगी जो कुछ होनी, बात नही जीतो सीता देनी ॥ का० ॥ ५४ ॥ चक्रगयातो क्याहै, मेरा मुष्टप्रहार बुराहै, मैं छत्री जन्मलीयाहै ॥ नबिछन जानदे वाको, मारुंगा हाथो हाथ ताको ॥ का० ॥ ५५ ॥ लछमनने चक्रचलाया, रावणने बहोत हठाया,आखिरको राव गिराया ॥ मारागयात्रिखंडी राजा, ये सब है पुन्यके काजा ॥ का० ॥ ५६ ॥ ये जगहै निसकासुपना. मूरख इसमे क्यों खपना, साचा है निज गुणका जपना मोहमे क्यों हो रह्या अंधा, जगतका सब झूठा धंधा ॥ का० ॥ ५७ ॥ सीताको रामजी लेकर; फिर आए अजुध्या चलकर, तब आनंद हुए घरघर ॥ काल जब लछमनका आया, धरी रही सब इहांकी इहां माया ॥ का० ॥ ५८ ॥ हारे झूठा जग यह जाना, जिन लियासाधका बाना, जाय सिवपुरकीना थाना ॥ रामकी कथा जो गावेगा, अचलपद निश्चे पावेगा ॥ का० ॥ ५९ ॥ पुज्य पंडित रतनचंद स्वामी जस कीरत जगमे नामी. सिख तारन नवियनकामी ॥ उन्नीसे इकीसके साल. आगरे आन पहुंचा काल ॥ का० ॥ ६० ॥ जिन समकित धर्म बताया, मिथ्यात अं

धेर मिटाया, दूखजामन मरण हटाया ॥ चैन तो उ सदम पावेगा, ग्यानी निज आतमध्यावेगा ॥ का० ॥ ६१ ॥तु दान सुपातर देरे, तपकर लाहा लेरे, निज शुकल भावनाकररे ॥ सीलसतसुखकाहै साजा, पूरण हो मन वंछित काजा कालसे डररे ॥ ६२ ॥ इति ॥

॥ श्री वीतरागायनमः ॥

॥ अथ श्री कृष्ण जन्म सिझाय लिख्यते ॥

गाफिल मतिरहरे, नादान गाफिलमतरहरे ॥ गाफिलगरवाणां, चलेगये बडे बडेराणा ॥ गाफिलमत रहरे ॥ टेक ॥ साधांकी संगति गहिरे, जिनबानी को सरदाहिरे, नरभवको सुफलकरलहिरे ॥ यह कुटंब सब स्वार्थका, भला तु करलेनिजजीयका ॥ गा० ॥ १ ॥ हारेक्रोधमानवस डोले, मायाकी गाठ न खोले ॥ लालचसुं झुकता तोले ॥ बनातुंभावसुधजीका, तमासा चहलवाजीका ॥ गा० ॥ २ ॥ हारे जुगां बीच बडबड राया, होगये दलबादलकी छाया, तुझेक्याबडाबनवा या ॥ दिलोवीच खोजनाकीजे, किलाहासु मरण का लीजे ॥ गा० ॥ ३ ॥ मथुराको राजा कंस, तेह उप न्यो जादो वंस, पकडयो उग्रसेन अवतंस ॥ कुलकी मर्यादा जिनमेटी, कि परणी जरासिंधबेटी ॥ गा० ॥ ४ ॥ देवसेन भूपकी जाई, वसुदेवको परणाई, कंसकी पूर्वमित्राई ॥ जीवजसा देवकी संगे, करती क्रीडा मनरंगे ॥ गा० ॥ ५ ॥ तब ऐवंता मुनिराय, तप

कर दुर्बलकाय, तिसही आंगणमे आय जीवजसाम
दमे बाकी, मुनिवरमे बाणिकहे वांकी ॥ गा० ॥ ६ ॥
तुमने घर क्यों त्यागा, तप कठिन करणक्यों लाग्या.
इमसुन मुनितामसजाग्या ॥ है मुग्धा कहे क्यावा
णी, है कोई वरसाकी राणी ॥ गा० ॥ ७ ॥ यह है
देवकी राणी, इसके पुन्यवंत प्रानी, गरभ जनम सा
तमो जाणी ॥ तुझ पतिको वो मारेगा, कि तेरा मान
उतारेगा ॥ गा० ॥ ८ ॥ मुनिवरकीसुण इमवाणी,
जीवजसा मन मुरझाणी, यह वाता कंसने जाणी ॥
जतन करे हो अगवांनी, झूठी करवा मुनवाणी ॥ गा०
॥ ९ ॥ हारे बसुदेव पै आवे, वातासुंललचावे, व
सुदेव भेद नही पावे ॥ माग्या गरभ देवकीका, सा
तों तीन भवनटीका ॥ गा० ॥ १० ॥ सुलसा देव
ता सुमरी, जिनमाग्या कुमरनेकुमरी, देवने सक्तहे
जबरी ॥ वह नंदन उठवाया, कि सेठ घर महोत्छव मंडवा
या ॥ गा० ॥ ११ ॥ जव जनमे सारंगपानी, तालोकी
झडतो झलपानी, सिंहोंकी दाढा वंधानी ॥ ऐसे पु
न्यवंत प्रांनी, कि जमना भेददीयो पानी ॥ गा०
॥ १२ ॥ जसोदा पुत्री जाई, तिसही रात्री माई, ते
राजा देवे आई ॥ कंसके नर तव जागे, सातमा
गर्भ तदा मागे ॥ गा० ॥ १३ ॥ कंसने कन्या ली
धी, तस छिन्ननासिका कीधी, अवलाजाणी दीधी ॥
मनसे भय सहुभाग्या, कि सुखमे राज करणलाग्या

॥ गा० ॥ १४ ॥ मुरारी नंद घर आया, गवालन
नाला ग्रिदवाया, जसोधा हाथाहुलराया ॥ कान्हजी
कुमर पद खेले, कि माखन गोरसमे मेले ॥ गा०
॥ १५ ॥ कदोही सापनको साहे, कदोही महीगहि
लावे, कदोही अंगनजलवाहे ॥ फिरेलालजी निसंका,
बजावे कंसपरमंका ॥ गा० ॥ १६ ॥है पिताम्बर तन
धारी, तस सूरति मोहनप्यारी, देखे सहूनरओरनारी,
अधरपर बंसरीरागे कि, दान महियनका मागे
॥ गा० ॥ १७ ॥ देवकी दरसनको आवे, नवीनवी
बस्तुजु ल्यावे, भले भले वस्त्र पहिरावे ॥ चिरंजीवो
नंदके लाल कि, बैरी भंजन जदूपाला ॥ गा० ॥ १८ ॥
एक दिन सन्नापुरानी, तिहां आया जोतिसग्यानी,
तिहां बोले नृपतिबानी ॥ नही कोई या जगमे ऐसा,
कि मुझसुं जंगकरे जैसा ॥ गा० ॥ १९ ॥ तव बिबु
ध वचन इम बोले, नृपतिनाश्रुतं पटखोले, तुम भो
ले भावे भोले ॥ जो जादो बंस उद्धारेगा कि, नृप
ति सो तुझ मारेगा ॥ गा० ॥ २० ॥ हारे पूतना द
मसी ॥ जाकी नीतमे द्दष्टीजमसी, जो बिंद्रावनमे रम
सी, गोवरधन गिरधारेगा कि, नृपत सो तूझमारे
गा ॥ गा० ॥ २१ ॥ हारे नाग है काली, नाथेगा
नाथा डाली, अरी जन पे नजर कराली ॥ गोकलगा
म बधारेगा कि, नृपतसो तुझमारेगा ॥ गा० ॥ २२ ॥
हारे जु मल्लसे जंगी, संतनसे होइकरंगी, जाकी ज

गमे कीरतचंगी ॥ जो गज दंत उखाडेगा कि, नूपति सो तुझ मारेगा ॥ गा० ॥ २३ ॥ हांरे सोवैनाग की सिज्या, जाकी सतनामा होय नज्जा, धारे तीन खंडीकी लज्जा ॥ जो मनमान बिडारेगाकि, नूपति सो तुझ मारेगा ॥ गा० ॥ २४ ॥ हांरे सारंग धनुष चढावे, जो गवाकोमदी बाहे, पंचायन संख बजावे ॥ ऐसा बलधारक प्रानी, अज्ञा तीन खंडमे मानी ॥ गा० ॥ २५ ॥ हांरे देवकी नंदा; बसुदेवतनुज आनंदा, द्वारापति तेज दिनंदा यह सुनी विबुधतनी बानी कंसकी छाती धुजाणी ॥ गा० ॥ २६ ॥ गोवरधन धार्यो निजहाथे, ते काली नागने नाथे, गोपीया फिरती हरी साथें ॥ ऐसे पुन्यके पुंजे कि, फिरतेमधुबनके कुंजे ॥ गा० ॥ २७ ॥ जाई बलभद्र सहाई, किसको संक्या नही काई, गुजरी दधि बेचन जाई ॥ मुरारिकाण नही राखे, कि दाहिनर अंगुलीया चाखे ॥ गा० ॥ २८ ॥ लालजी मुझकुं मत छेडे, कंसकी नगरी अतिनेडे, वध्यो तुं गूजरके खेडे ॥ कंसकी चढती पुन्याई, कि फिरे तीन खंड दूहाई ॥ गा० २९ ॥ कहै कृष्णमे किस्से डरहुं; कंसको कीटोमे करहुं, अवरनको राज पद धरहुं ॥ जाय पुकारो कंस आगें के, मोपे डंड सदामागे ॥ गा० ॥ ३० ॥ इम वरस सोलाजबवीते, कंसको बाता सवाचिते, नामाकाव्याह मंडलीते ॥ सब नूपत बुलवायेको, स्वयंवर मंडप मं

हाए ॥ गा० ॥ ३१ ॥ हांरे नृपते सब बैठे. मुरारी मथुरामें पैठे, मल्लसे युद्ध करणसेठे ॥ कंसकी नजरादआया. खड गलै मारणको ध्याया ॥ गा० ॥ ३२ ॥ कर मांहिं बां सकी लकड़ी, कंसकी चोटी तब पकडी, फिरतजुं डोर की चक्री ॥ माराहै घाव लकड़ीका, चलाजु चाक च क्रीका ॥ गा० ॥ ३३ ॥ हांरे सन्नासबसंकी आई जीव जसा सकलंकी, बोले बांणी बंकी मारयामुझप्राय अति प्यारा, ऐसा अहीर हत्यारा ॥ गा० ॥ ३४ ॥ बुला या उग्रसेन राजा. कंसको अबकारि काजा, बजायाजी तकावाजा ॥ जीवजसा कहे इअबानी, करूंगी मो समसबरांनी ॥ गा० ॥ ३५ ॥ तब उग्रसेन वो हक्कारी पिता पै जाय पुकारी, कहीवात तिन बिस्तारी ॥ सु नीने जरासिंधकोप्यो, के जादोंपे झंडोरोप्यो ॥ गा० ॥ ३६ ॥ सन्ना सब मिलमसलतकीनी, विबुधपै बात पुछलीनी, भोमकी ममता तजदीनी ॥ दिसाश्रुध प श्चिमको जाना; जिहांहै खारा महिराना ॥ गा० ॥ ३७ ॥ हांरे जादो सब भाजे, राजाके बेटे गाजे, जादो जाय किहां पाजे ॥ जोर कर काली कुमर चढीयो, बिचमे द वी भूंगडीयो ॥ गा० ॥ ३८ ॥ हांरे समुद्र पै आये, तप तेला करवाये, लौनास्थित देवत आये ॥ तिन इंद्रपै बिनती कीनी, यांतो नगरी बसादेनी ॥ गा० ॥ ३९ ॥ हांरे सोवनमई दगरे, जहां है मनीके कंगुरे, सोवनमई घरसगरे ॥ नौ जोजनकी चौडाईके, लंबो

बारे जोजनताई ॥ गा० ॥ ४० ॥ बसे जादो इस पुरमे, ऐसी नगरी नही कोई दूरमे, कीये गोख जालीयां जरमे ॥ यह सुरगपुरी समनगरी, बस्तु तिन मांहिं भरी सगरी ॥ गा० ॥ ४१ ॥ रवी किरण कांति समदीसे, हरि मंदिर अधिक जगीसे. सबबचानवे सहस बतीसे ॥ सबही महिल ऊंचेके, इकवीस मज लोके ॥ गा० ॥ ४२ ॥ हारे मंदिरकीसानी, सब सप्त भूम गिणलीनी, बसे जहां पुन्यवंत प्रानी ॥ जहां है राज माधोंका, जगमे जोरा जादोंका ॥ गा० ॥ ४३ ॥ तहा जब नदीपके नाये, व्योहारी चलकर आये, निजवस्तमोल नही पाये ॥ सब ही राजग्रहीआवे, जीवजसासे बतलावे ॥ गा० ॥ ४४ ॥ हारे जब नदीपकी बाता, हम देखी द्वारका आतां हरिजसको पारन पाता ॥ यह सुनी जीव जसा बानी, कि मनमे रीस बहुआणी ॥ गा० ॥ ४५ ॥ तिहां जरासिंध चढध्यायो. हरजी पिन साम्हो आयो, हरजोर देख दुख पायो ॥ तिन तब विद्या जरा मूंकीके. गिरे सब पत्थरकीटूंकी ॥ गा० ॥ ४६ ॥ तब नेमनाथ बरदीनो, हरजी सब जाग्रतकीनो, कर चक्र सुदरसन लीनो ॥ हरजी पर आय जसथुनीयो, कि वलतो जरासिंध हणीयो ॥ गा० ॥ ४७ ॥ हारे राज सबलीनो. भयो नाथ सकल प्रथवीनो. नोंसे बर्स चुरासीकीनो ॥ उदय जब पाप दसा आई. नगरी द्वारका विरलाई

॥ गा० ॥ ४८ ॥ हांरे हरिसम सूरा, यह तो राज गुणाकरपूरा, पिण करम कटे नहीं कूरा तिने ॥ पिण एह दसा पामीके, अवरा केमटले खामी ॥ गा० ॥ ४९ ॥ भजो श्री नेमनाथ राया, सब पापपटलहटाया, अचल सुख मोखना पाया ॥ दिलोधर बिने चंद बंदे कि, मन मांहिं अती आनंदे॥ गाफिल मति रहोरे ॥ ५० ॥

॥ अथ उपदेशी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ चतुर नर चेतीए, नीकोनर भव पाया रे ए देशी ॥ मनुष जमारो पायकेरे, सेवो श्री अरिहंत ॥ निर्ग्रंथ गुरु मन धारकेरे, दयाधर्म ल्योतंत ॥ १ ॥ मिथ्यामत त्याग जो, सुधसमकित धारोरे ॥ टेक धर्म बिहुणी जेघडीरे, बीती निर्फल होय ॥ धर्म सहित जे मानवीरे, सुफल जनम तसुजोय ॥ मि० ॥ २ ॥ अलप पुण्ये नर ऊपजेरे, पंचमदुखम काल ॥ धर्म पावे ते दोहिलारे, परे मोहके जाल ॥ मि० ॥ ॥ ३ ॥ कुविश्नमे रातारहेरे, सेवे चार कषाय ॥ दान सील तपकिमरुचेरे, सुद्द भाव नही भाय ॥ मि० ॥ ४ ॥ निंद्या बिकथानातजेरे, पाप अठारा सेय ॥ सुमता मनसे बीसरीरे, कुमतामे चितदेय ॥ मि० ॥ ५ ॥ तन धन जोबनपाईकेरे, केरे अती अभिमान ॥ पर भवका तसडर नहीरे, ते मूरख अज्ञान ॥ मि० ॥ ६ ॥ थोरी उमरके बीचमेरे; बांधे गाढा पाप ॥ दुरगतिमे ते ऊपजेरे, भोगे बहु संताप ॥ मि०

॥ ७ ॥ नर तिर्यंच और नारकीरे, किलमुखी देव सुजान ॥ च्यारो गतिके दुखकार, श्री जिन कियाहै बखान ॥ मि० ॥ ८ ॥ दोस नदीजे परसिरेरे- नोगवता दुखकार ॥ सुन करणीकर निर्मलीरे- पर नवको आधार ॥ मि० ॥ ९ ॥ मात पिता सुत नारजारे, उनका स्वारथ प्यार ॥ परनव साथीको नहीरे, एक धर्महै सार ॥ मि० ॥ १० ॥ बिक्रम संवत आवीयारे, उन्नीसै सेतीस ॥ ऋखराज कहै जिन धर्मथीरे. पूगेमनकी जगीस ॥ मि० ॥ ११ ॥ थेसेनपुर ग्रामेरे, कह्यो लिहां सुविचार ॥ सुणता नणता नावसुंरे, आतमको निस्तार ॥ मि० ॥ १२ ॥ इति

॥ अथ बारे नावना सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ जीवरे तु सीलतणा कर संग, एदेसी ॥ सकल करम दल जीतकेरे, सिद्धथये जिनराय ॥ नाखी नावना रे नविजनने सुखदाय ॥ १ ॥ जीवरे तु नावन ज्ञान बिचार ॥ टेक ॥ तन धन जोबन थिर नहीरे, अथिर कह्या नगवांन ॥ इण ऊपर मुरछो मतीरे, रंग पतंग समान ॥ जी० ॥ २ ॥ मात पिता सुत कामनीरे, इणमे सर्णन कोय ॥ च्यारो सर्ण धारतांरे, निश्चेकु गति न होय ॥ जी० ॥ ३ ॥ नरसुरपशु नव नारकीरे, इन च्यारो गतिमे होय पुन्य पाप करमावसेरे. हिये विचारी जोय ॥ जी० ॥ ४ ॥ धनधा कुटंबजेरे. कोईन साथी होयँ ॥ पुन्य पाप निज नो

गवेरे, सदाही इकेलो जाय ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीव देहमे रम रह्यारे, ज्यूं फूलनमे बास ॥ ममता तज समता करोरे. सुध चेतनपरकास ॥ जी० ॥ ६ ॥ सरीर अपावन जाणीयेरे, गर्वन धर मनमांय ॥ शुद्ध आतमाधर्मथीरे. कहै श्री जिन राय ॥ जी० ॥ ७ ॥ करम आवे अविरतथीरे, तेहनो आश्रवनाम ॥ जैसें नावा छिद्रमेरे. पाणी आवणरो काम ॥ जी० ॥ ८ ॥ समकित सूधी बिरतसेरे, आवतरोके कर्म ॥ ज्ञानी भाखे एहवारे, संबर मोटो धर्म ॥ जी० ॥ ९ ॥ पूर्वे कर्म कीया घणारे, कहत न आवे पार ॥ द्वादस तपसे निर्झरारे, कर्ता करम निवार ॥ जी० ॥ १० ॥ धर्म विना इस जीवकुंरे; कोई न राखणहार ॥ नर्क कूप दुखजाणकेरे, धर्म ग्रहो सुखकार ॥ जी० ॥ ११ ॥ स्वर्ग मृत रचना कहीरे. और पाताल विचार ॥ इन से अनादी बायरारे, धन तन दाधिआधार ॥ जी० ॥ १२ ॥ उत्तम कुल संगत मुनीरे, श्रद्धापावन सार ॥ दूर्लभ श्री जिनवर कहीरे, मनुष जनम मतिहार ॥ जी० ॥ १३ ॥ एकही बारे भावनारे, भावतां जन्म सुधार ॥ ऋषराज कहे सुधभावसुंरे, करनाल नगरमंझार जी० ॥ १४॥ संवत उनीसे कह्यारे, उपरअधिक पंचास तब कहीबारे भावनारे ॥ भाविजन पुरण आस ॥ १५

॥ अथ बारे भावनाके नाम लिख्यते ॥

अनित्य भावना ॥ असर्ण भावना २ संसार भा

वना ३ एकत्व भावना ४ अन्य भावना ५ अशु
चि भावना ६ आश्रव भावना ७ संवर भावना ८
निर्जरा भावना ९ धर्म भावना १० लोक स्वरूप
भावना ११ बोध दूर्लभ भावना १२ इति

॥ अथ स्याद्वाद सिज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ जिनेस्वर धन धन थारा ज्ञान ॥ एदे
सी ॥ सत गुरु चरण. नमी करीजी, ॥ जिन वाणि
मनधार ॥ स्याद्वाद बाणी कहीजी ॥ नही एकंत वि
चार, चतुर नर जोवो जिन उपदेश ॥ १ ॥ एटे
क ॥ एकांत मती मिथ्यामतीरे, नही समझे जिणवे
ण ॥ सूत्र सिद्धांत सहु देखताजी, खुले अभिंत्रनैण
॥ च० ॥ २ ॥ स्त्री बासोमुनी तजेजी, उत्राध्येन वि
चार ॥ साध साधवी रहे एकठाजी, ठाणांगे पंचप्र
कार ॥ च० ॥ ३ ॥ असंखजीव अपबिंदमेजी, कहे
पन्नवणामांय ॥ कल्प सूत्रमाहे कहेजी, नदी उलं
घीजाय ॥ च० ॥ ४ ॥ श्रावक करमादानकाजी. त्रि
विधकर परिहार ॥ हलनिहावा, सातमेजी. अंग मां
हिं अधिकार ॥ च० ॥ ५ ॥ करफरसंतांहो सहीजी, ब
हुवेदन हरीकाय ॥ पफतां मुनिवरते ग्रहेजी, आचा
रागे मांहिं ॥ च० ॥ ६ ॥ नूणलीयो अणजाणतेजी,
ते भोगे अणगार ॥ आचारांगे इम कह्याजी, स्या
द्वाद अधिकार ॥ च० ॥ ७ ॥ समय मात्र परमादकुं
जी, न करे उत्राध्येन ॥ तीजो पोरसी परमादमेजी

दसविकालक बैण ॥ च० ॥ ८ ॥ अंधाने अंध नहीं कहेजी, दसविकालक मर्याद ॥ न्याता सूत्रमे मुनि कहेजी, नाग श्री अवगुनवाद ॥ च० ॥ ९ ॥ सहंस बती से कृष्णकेजी, नारी न्याता माय ॥ सोलासहंस अं तगढेजी, भाखी श्री जिनराय ॥ च० ॥ १० ॥ अ बिरती सुरसूत्रभेजी, पिणसीलव्रत तप जाण ॥ ठा णांगे भाष्यासहीजी, एस्याद्वाद परिमाण ॥ च० ॥ ११ ॥ आठमे अंगे जिन कह्याजी, कृष्ण बारमाजाण ॥ चोथे अंगे तेरमाजी, दोनो सत्य व्यारूयान ॥ च० ॥ १२ ॥ असंघेणि सुरनारकीजी, जीवाभिगम मांहिं ॥ उत्रा ध्येन उनीसमेजी, मासजु पिंडकहाय ॥ च० ॥ १३ ॥ बिराधक पंचमांगमेजी, भवनपती सुरथाय ॥ ज्ञाता मे सुकमालिकाजी, दूजेस्वरगे जाय ॥ च० ॥ १४ ॥ बिनव्याकरणे अर्थेजजी, करे ते अनर्थ होय शब्द शास्त्र जिसरी तिसेजी, तिसवीध अर्थजु जोय ॥ च० ॥ १५ ॥ हेय त्याग गेय जाणीयेजी, और उपादेय साध उत्सर्ग अने अपवादनेजी, विधि चरितानुबाद ॥ च० ॥ १६ ॥ नय संस्थित निश्चै वलीरे; नयवि वहार मर्याद ॥ जिनवर आगममे कह्याजी, अनेकां त बिधिबाद ॥ च० ॥ १७ ॥ बहुश्रुती जाणेसहीजी जिन बाणी रसस्वाद ॥ मूरख तो समझे नहीजी, झूठोकरे बिबाद ॥ च० ॥ १८ ॥ ज्ञानी गुरुने सेवता जी. कुमती जावे दुर ॥ सुमती आवे शुध मनेजी,

पावे सुखनरपूर ॥ च० ॥ ॥ १९ ॥ ऋषराज कहे न विघन भलेजी, न करोखेचाताम ॥ जिन बाणी जैवं तलेजी; ल्यो तुम धर्म पिछान ॥ च० ॥ २० ॥ विक्रम संवत वरततांजी, उन्नीसे पंचास ॥ चतुर मास करनालमेजी, तिहां स्याद्वाद प्रकास ॥ च० ॥ २१ ॥

अथ स्याद्वाद के प्रश्न उत्तर लिख्यते

॥ प्रश्न ॥ श्री कृष्णके ३२ हजार तथा १६ हजार राणी किसतरे ॥ उत्तर ॥ सोले तो बडी राणी गिण लिधी १६ हजार छोटी राणी न गिणी ते कार्णे १६ हजार और ३२ हजार हजारमे दोनो तरे की गिणलीधी १ ॥ प्रश्न ॥ कृष्णजीका जीव बारवा तथा तेरवां तीर्थंकर किसतरे ॥ उत्तर ॥ अवसर्प्पणी कालके हिसाबसे १२ उतसर्प्पणी कालके हिसाबसे १३ आदनाथजी अवसर्प्पणी कालके प्रथम भगवान हुये इनके गिणतसे बारमे और उतसर्प्पणी कालमे जैसे महाबीर सरीखे प्रथम श्रेणक राजाकाजी पद्मनाभ भगवान होवेंगे इनकी गिणतसे तेरवा १३ कृष्णजीव भगवान होवेंगे २ ॥ प्रश्न ॥ देव वा नारकी संघणी असंघैणी किसतरे ॥ उत्तर ॥ देव वा नारकीमे सक्तिरूपहै हाडरूपनही तिस वास्ते संघैणी वा असंघैणी दोनो कह्या ३ ॥ प्रश्न ॥ ४ विराधक सुकमालको साधवी दुसरे स्वर्गमे गई ते किसतरे ॥ उत्तर ॥ मुल महाव्रताम दोस नही लगाया उत्तर

गुण आधक हुई ४ इत्यादि सूत्रोमे अनेक अपेक्षा अर्थात रीती है सो बुद्धीमान पुरुषो के समझने योग्य है

॥ अथ ग्रंथ पूर्ण संग्रह कर्ताके विषे वर्णन लिख्यते ॥

॥ श्री जिन धर्म मांहिं मोक्षमारग ग्यान दर्सन चारित्र तप इनकार्णसे जीव आत्मानिर्मल करिके अनंत ज्ञान अनंत दर्सनका धारक होताहै इस वास्ते इहां इन प्रश्नोमे सूत्राके पाठ विशेष करिके लिखेहै दया धर्मसे प्रणाम स्थिर करणे वास्ते क्यों कि जब प्रणाम धर्ममे स्थिर होय तब व्रतादि धर्म करणेका विशेष लाभ होताहै और यहां जो सूत्र सिद्धांतसे विरुद्ध लिख्याहै तथा सूत्र पाठ वा अर्थमे जो कोई तरेका फर्क लिख्या होय तिस्की साध साधवी श्रावक श्राविका इन च्यार तीर्थोकी शाखसे मुझको तस्स मिछामि दूक्कडं और सत्यार्थ सागर नाम ग्रंथ अनेक सूत्र वा शास्त्राके अनुसार संग्रह कर लिख्याहै सोई इसमे तुछ बुद्धी करिके कोई वचन अजाणते अशुद्ध लिखाहो यतो सूत्रानुसार सुधारकर चतुरविध संघ मेरे ऊपर क्षिमा करे और मैने यह ग्रंथ किसीसे चरचा के लीये नही लिखा और न बाद विदाद के वास्ते सिर्फ एक स्वधर्मी जनोके स्वधर्म जाणने के लिये लिखाहै परंतु मेरी जो कोई अज्ञान बुद्धी का लेख होय तो तिसपर कोई

ल न करे बीतरागकी आज्ञा मुजब समकित धर्म वा श्रावक धर्म तथा साधु धर्म इनमेसे यथा शक्ति अंगीकार करे और बहुश्रुती अनेक अपेक्षा नयादिक के जाणकार गुरु महाराजकी आज्ञा माफिक सूत्र अर्थ श्रावक धारण करे जिसते जनम सुफल होवे परंतु राग द्वेष करमो का बीजहै सो इह राग द्वेष मिथ्यात अंधेर जिसके अंतर मनसे जब दूर होगा तब यथार्थ धर्म लक्षणके ज्ञान भानुका प्रकास होगा और सज्जन पुरुषोको चाहिये कि च्यार इस सत्यार्थ सागर ग्रंथके च्यार भाग आदिसे अंत पर्यंत बांचने और समझनेसे तत्व धर्मके जाणकार होवेंगे और मेरे लिखनेका परिश्रम तबही सुफलताको प्राप्त होवेगा और निर्मल बुद्धीवाला प्राणी ग्रंथ करताके ग्रंथकी सार समझताहै और जिन धर्म को अंगीकार कर अपना जन्म सुफल करताहै ॥ श्लोक ॥ अनुष्टुब वृतम् ॥ चातुर्यमासकंकृत्वा, कर्नालस्य नगरं शुभं ॥ विक्रमा ब्ध्यसहश्रंच, नोसत पंचसाधिकं ॥ १ ॥ भविज्जन प्रतिबोधार्थं, सत्यार्थ सागरमिदं ॥ लिखितं ऋखराजस्य, नानाग्रंथानु सारतः ॥ २ ॥ यावद् मेरुगिरोश्रृंगं शोभतेच महीतले ॥ तावद कालमयं ग्रंथं, धार्यतेयः विद्वज्जनान् ॥ ३ ॥

इति सत्यार्थ सागर ग्रंथका सम्यक्त स्थिर कर्ण नाम चतुर्थो भाग संपूर्णम्